पितृदोष

पीड़ा मुक्ति के उपाय

पितृदोष के ज्योतिषीय योग एवं चामत्कारिक उपायों पर आधारित

- सुधाकर पुरोहित

पितृदोष :
पीड़ा मुक्ति के उपाय

पितृदोष पीड़ा के कारण व्यक्ति को अपने जीवन में अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी बनते हुए काम अचानक बिगड़ जाते हैं और कभी परिवार में होने वाले मांगलिक कार्यों में अनावश्यक रूप से व्यवधान उत्पन्न होने लगते हैं, इन सबके पीछे कहीं न कहीं पितृदोष एक बड़ा कारण हो सकता है।

लेखक :

सुधाकर पुरोहित 'ज्योतिषाचार्य'

समर्पण राशि :

पेपर बैक संस्करण : 150/-

पत्र व्यवहार यहां करें-

जयपुर बुक हाउस

389, जोशी भवन, मनिहारों का रास्ता, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर-3

फोन: ऑफिस: 0141-2321373 मो. 9352218776, 9799906705

E-mail : jaipurbookhouse05@yahoo.in

सुधाकर पुरोहित 'ज्योतिषाचार्य'
ज्योतिषाचार्य, नेट, एम.फिल (ज्योतिष)
33, भैरव नगर, हटवाड़ा रोड, जयपुर-302006
मोबाइल- 9314220993
e-mail : sudhakar83pareek@yahoo.com.
astro.purohitsk@gmail.com

ISBN No. 978-93-85151-13-2

प्रथम संस्करण : 2013 (जून)
द्वितीय संस्करण : 2014 (जनवरी)
तृतीय संस्करण : 2015 (जून)
चतुर्थ संस्करण : 2016 (अप्रैल)

समर्पण राशि : 150/-

कम्प्यूटर कम्पोजिंग :
अपराईज लेजर ग्राफिक्स
शाह बिल्डिंग, चौड़ा रास्ता, जयपुर-3 मो. 9829019063

मुद्रक :
मुस्कान प्रिन्टर्स, जयपुर
मो. : 9929309478

प्रमुख वितरक :

जयपुर बुक हाउस

389, जोशी भवन, मनिहारों का रास्ता, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर-3
फोन: ऑफिस: 0141-2321373 मोबाइल- 9352218776, 9799906705

इस पुस्तक में बताये गये समस्त उपाय एवं उपलब्ध सामग्री का आधार हमारे अनेक प्राचीन ग्रंथ, पुरातनकाल से हमारे पूर्वजों द्वारा बताये गये उपायों के साथ-साथ लेखक के अनुभव, विश्वास एवं गहन अध्ययन पर आधारित हैं। उपलब्ध सामग्री से आपकी सहमति अथवा असहमति आप पर ही निर्भर करती है। आप जिस उपाय का प्रयोग करना चाहे वह यदि आस्था, निष्ठा एवं विश्वास के द्वारा किया जाता है, तो फल अवश्य मिलता है, लेकिन फल देने वाला केवल ईश्वर है। यदि पुस्तक में वर्णित किसी उपाय से आप सहमत नहीं हैं तो कृपया उपाय का प्रयोग कदापि न करें। अविश्वास में किये गये उपायों से प्राप्त होने वाला लाभ हमेशा संदिग्ध होता है। इसके लिये लेखक एवं प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होंगे।

अनुक्रमणिका

- हाँ, पितर होते हैं ? 5
- पितृदोष जीवन को प्रभावित करता है 8
- जीवन यात्रा का अन्त- मृत्युद्वार 9
- पितर कौन हैं ? 21
- क्या प्रत्येक मृतक परिजन पितर होता है? 27
- पितृदोष और प्रेतदोष में अन्तर 31
- क्यों होता है- पितृदोष? 36
- पितर क्या चाहते हैं? 40
- पितर कष्ट भी देते हैं... 44
- देवतुल्य हैं- पितर आत्मायें 51
- पितरों की सन्तुष्टि आवश्यक क्यों ? 60
- श्राद्ध कर्म 64
- श्राद्ध में रखी जाने वाली सावधानियां 76
- पितृयज्ञ और श्राद्धकर्म से सन्तुष्ट होते हैं- पितर 80
- अन्त्येष्टि संस्कार में त्रुटि भी होती है- पितृदोष का कारण 84
- विधि-विधान से किया गया श्राद्ध ही सन्तुष्ट करता है पितरों को 88
- त्रिपिण्डी श्राद्ध और पितृदोष निवारण 90
- पितृकर्म एवं पितृदोष निवारण के श्रेष्ठ तीर्थ 93
- पगड़ी की रस्म के बाद क्या...? 101
- पितर भविष्य भी बताते हैं 110
- विभिन्न बाधाओं से बचाते हैं- पितर 113
- विश्व स्तर पर पितर आत्माओं का प्रभाव 115
- पितृदोष निवारण के उपाय 123
  - पितृदोष निवारण हेतु उपयुक्त समय 123
  - पितृकृपा प्राप्ति हेतु उपाय 124
  - पितरों से विशेष मनोकामना पूर्ति हेतु उपाय 125
  - पितरों के आवाहन एवं पूजन से समृद्धि हेतु उपाय 126
  - पितरों की प्रसन्नता हेतु धूप प्रयोग 127
  - ग्रहों के उपाय से पितृदोष का निवारण 128
  - पितरों की स्थापना द्वारा पितृदोष से मुक्ति 129
  - पितरों के भजन और स्तोत्र पाठ एवं श्रवण के द्वारा-पितृदोष से मुक्ति का उपाय 131
  - पितृगायत्री मंत्र की उपासना से पितृदोष निवारण 133
  - वेदोक्त पितृसूक्त से पितृदोष का परिहार 134
  - पितृदोष निवारण के लिये पितृसूक्त 134
  - पितृकृपा प्राप्ति के लिये पितृसूक्त 136
  - नित्य पितर तर्पण से पितृकृपा प्राप्ति का उपाय 136

- पितरों के स्थान की शुद्धता का उपाय 137
- पीपल वृक्ष की पूजा से पितृदोष का निवारण 138
- पितृदोष निवारण के लिये श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ 139
- पितृदोष मुक्ति का अचूक उपाय 140
- पितरों के रात्रि जागरण से पितृकृपा प्राप्ति का उपाय 141
- भगवान विष्णु के पूजन से पितृदोष निवारण 142
- एकादशी के व्रत से पितृदोष का निवारण 143
- भगवान शिव के पूजन से पितृदोष निवारण 143
- गया श्राद्ध के द्वारा पितृदोष से मुक्ति 144
- श्रीमद्भागवत पुराण के पाठ से पितृदोष निवारण 145
- श्रीमद्भगवद्गीता के विशेष पाठ से पितृदोष निवारण 151
- पितृशान्ति स्तोत्र के प्रयोग से पितृदोष निवारण 152
- पितृदोष निवारण का चामात्कारिक शाबर मंत्र 154
- पितरों के साक्षात् दर्शन का चामात्कारिक प्रयोग 155
- पितरों को संकट से निकालकर उनकी मुक्ति हेतु श्रेष्ठ उपाय 156
- दिव्य पितरों की कृपा प्राप्ति हेतु विशिष्ट उपाय 157
- यंत्र धारण-पूजन से पितृदोष निवारण 158

- पितृदोष पीड़ामुक्ति के अति विशिष्ट उपाय 159
- पितृदोष बाधायें एवं उपचार 169
- पितृदोष के कारण आती हैं- आर्थिक समस्यायें 173
- आर्थिक समृद्धि हेतु उपाय 175
- पितृदोष के कारण होती हैं- पारिवारिक समस्यायें 180
- पारिवारिक सुख प्राप्ति हेतु उपाय 183
- पितृदोष के कारण आती हैं- भवन सुख प्राप्ति में बाधायें 188
- भवन सुख प्राप्ति हेतु उपाय 190
- पितृदोष के कारण संतानोत्पत्ति में बाधा 195
- सन्तान सुख प्राप्ति हेतु उपाय 198
- पितृदोष के कारण बाधित होती है- व्यापार उन्नति 203
- व्यापार में अनुकूलता हेतु उपाय 205
- पितृदोष के कारण होता है- विवाह में विलम्ब 210
- शीघ्र विवाह हेतु उपाय 213
- पितृदोष के कारण आती हैं- नौकरी प्राप्ति में बाधायें 219
- नौकरी प्राप्ति के उपाय 222
- शारीरिक समस्याओं का कारण बनता है- पितृदोष 227
- स्वास्थ्य की अनुकूलता हेतु उपाय 230
- ज्योतिष में पितृदोष का विचार 235
- जन्मपत्रिकाओं में पितृदोष 242
- ऐसे पायें पितरों की कृपा एवं आशीर्वाद 252

क के उपाय
137
138
139
140
141
142
143
143
144
145
151
152
154
155
156
157
158
159
169
173
175
180
183
188
190
195
198
203
205
210
213
219
222
227
230
235
242
252

लेखकीय-

हाँ, पितर होते हैं

यदि हम पितरों को मानते हैं, तो पितृदोष को भी स्वीकार करना पड़ेगा। पितरों की मान्यता नई नहीं है। वैदिककाल से ही पितरों की पूजा-अर्चना और यज्ञ की परम्परा रही है। वैदिक युग के पश्चात् पौराणिक काल में पितरों की उपासना की परम्परा बढ़ी है और इससे सम्बन्धित नये तथ्य हिन्दू संस्कृति में समावेशित हुए हैं। जब हम पितरों के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं, तो ऐसी स्थिति में पितृदोष कोरी-कल्पना कैसे हो सकता है? पितृदोष से तात्पर्य होता है, पितरों की असन्तुष्टि से अर्थात् पितर असन्तुष्ट और अप्रसन्न होंगे, तो अपने परिजनों को कष्ट एवं पीड़ा देंगे अथवा उनके अहित की परिस्थितियां निर्मित करेंगे, यही पितृदोष है।

पितृदोष क्यों होता है, इससे क्या नुकसान हो सकता है, पितृदोष निवारण हेतु किस प्रकार के उपाय करने चाहिये, ऐसे प्रश्नों के उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेंगे। पितृदोष और इसके प्रभाव को स्पष्ट करने के लिये अनेक उदाहरण बताये गये हैं, जो किसी न किसी रूप से लोगों की परेशानी का कारण बने हुए थे। इन कारणों को पढ़ लेने के बाद आपको स्पष्ट हो जायेगा कि आखिर पितृदोष इतना कष्टकारक क्यों होता है?

पितृदोष : पीड़ा मुक्ति के उपाय पुस्तक के लेखन के दौरान मेरी मुलाकात पितृदोष से अनेक व्यक्तियों के साथ-साथ ऐसे अनेक विद्वानों से भी हुई जिनके कारण मैं पितरों के वास्तविक स्वरूप को समझ पाया। अपनी पूर्व प्रकाशित पुस्तक **ऊपरी बाधा : पीड़ा मुक्ति के दुर्लभ उपाय** में पितृदोष और पितरों से सम्बन्धित संक्षिप्त वर्णन को लिखने के पश्चात् मैं इस विषय को गहनता के साथ समझना चाहता था। पितरों के स्वरूप को लेकर भी मन में अनेक प्रश्न थे। **ऊपरी बाधा...** पुस्तक के विषयों पर चर्चा के सम्बन्ध में एक दिन जब मेरी बात देवकुमार कीराडू जी से हो रही थी, तो उन्होंने मुझे बताया कि उपरोक्त पुस्तक में जो पितरों के लिये उल्लिखित किया है, वह अच्छा है, परन्तु उसमें पूर्णता नहीं है, विशेष रूप से पितरों के स्वरूप से सम्बन्धित तथ्य नहीं हैं। कीराडू जी ज्योतिष और अध्यात्म विषय के परम विद्वान हैं, जो श्रीविद्या साधक होने के साथ ही मेरे आध्यात्मिक गुरु श्रीमद्दण्डी स्वामी जोगेन्द्राश्रम जी के गुरु भाई भी हैं। कीराडू जी ने मुझे इस बात के लिये प्रोत्साहित किया कि मैं शीघ्र ही पितृदोष और पितरों से सम्बन्धित ऐसी पुस्तक का लेखन करूँ, जिसे पितरों और उनकी असन्तुष्टि से उत्पन्न पितृदोष को पाठक पूर्ण रूप से समझ सकें। कीराडू जी द्वारा दी गई प्रारम्भिक जानकारी से मैंने इस विषय पर गहन चिन्तन प्रारम्भ किया। मैंने इस पुस्तक के लेखन की चर्चा इस विषय के अनेक विद्वानों से की तो उन्होंने मुझे प्रोत्साहित करते हुए लेखन का परामर्श दिया। साथ ही उन्होंने प्रत्येक सम्भव सहयोग भी प्रदान किया। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि इस पुस्तक के लेखन में अनेक विद्वानों ने मेरा न केवल मार्गदर्शन किया अपितु पूर्ण सहयोग भी दिया। इस सहयोग के कारण पितृदोष से सम्बन्धित अनेक

भ्रामक विचारधाराओं को दूर करते हुए वास्तविक रूप से इस विषय को स्पष्ट करने में मैं सफल रहा।

पितृदोष : पीड़ा मुक्ति के उपाय पुस्तक का लेखन इतना सरल नहीं था। इस विषय पर अब तक कि प्रकाशित पुस्तकों में पितृदोष के नाम पर पितृकर्मों की चर्चा अधिक होती थी, परन्तु पितरों के वास्तविक स्वरूप और पितृदोष को समझाने में पूर्ण सफल नहीं थी। मुझे इस बात का आभास हो रहा था कि इस पुस्तक की सार्थकता तब ही सिद्ध होगी, जब इस पुस्तक में पितृदोष के बारे में व्यापक चर्चा हो। पितृदोष क्यों होता है... कैसे होता है... पितृदोष निवारण के लिये किस प्रकार के उपाय करने चाहिये... पितृदोष नहीं हो, इस हेतु किस प्रकार के उपाय करने चाहिये... इत्यादि विषयों पर समायोजन करते हुए तर्कपूर्ण दृष्टिकोण से स्पष्ट करना अत्यन्त आवश्यक था, तभी इस जटिल विषय को समझने में आसानी रहती। मैंने ऐसा ही करने का भरसक प्रयास किया है।

कीराडू जी के सहयोग और प्रोत्साहन से मैंने **पितृदोष : पीड़ा मुक्ति के उपाय** पुस्तक पर लेखन कार्य प्रारम्भ किया। इस हेतु वेद, पुराण, स्मृति ग्रंथ, रामायण, महाभारत तथा श्राद्ध पर लिखे गये विशेष ग्रंथों का अध्ययन करने के पश्चात् पितृकर्म, श्राद्ध, पितर इत्यादि से सम्बन्धित विशेष तथ्यों को इस पुस्तक में समाहित किया है। जब आप इस पुस्तक का अध्ययन करेंगे, तो पितृकर्म, पितर और पितृदोष के बारे में ऐसी अनेक जानकारियों को प्राप्त करेंगे, जो आपने इससे पूर्व कभी नहीं पढ़ी होंगी और न ही सुनी होंगी। शास्त्रों के अतिरिक्त लोकोपचार और वर्तमान में पितृदोष के स्वरूप को समझना भी आवश्यक था। केवल शास्त्र कथित सिद्धान्तों से इस पुस्तक का लेखन पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता था। इस पुस्तक के लेखन के दौरान ऐसे व्यक्तियों से भी मिला, जो ये दावा करते थे कि हम पितृदोष से पीड़ित रहे हैं अथवा उनका अपने पितरों से सम्प्रेषण हुआ है। ऐसे व्यक्ति जिनके पितर अपने होने का प्रमाण दे चुके हों, उनसे भी मुलाकात हुई और इससे मैंने विभिन्न तथ्यों को जाना तथा उनकी जन्मपत्रिकाओं का अध्ययन कर यह जानने का प्रयास किया कि किन योगों में पितृदोष होता है और किन योगों में पितृकृपा प्राप्त होती है?

इस विषय के अनेक विद्वान लोग यह दावा करते हैं कि वे लोगों को उनके पितरों से सम्प्रेषण करवाने की क्षमता रखते हैं। मैंने ऐसे विद्वानों के पास जाकर भी पितर और पितृदोष के बारे में विभिन्न तथ्य जुटाये। अनेक व्यक्तियों से मिलकर और उनसे प्रश्न पूछकर उन घटनाओं की सत्यता को परखने का प्रयास किया। एक व्यक्ति ने मुझे यह बताया कि उन्होंने जब अपने पितरों के निमित्त श्राद्धकर्म किया था, तो उसमें यह भावना रखते हुए कि मेरे सभी पितर इस श्राद्ध में उपस्थित होकर भोजन ग्रहण करेंगे, आमंत्रित ब्राह्मण एवं रिश्तेदारों की तुलना में चारगुणा अधिक भोजन बनवाया। भोजन बनाने वाले हलवाई और परिवार में कुछ परिजनों ने इस पर आश्चर्य प्रकट किया कि जब भोजन करने वाले लोग इतने कम हैं, तो भोजन सामग्री अधिक क्यों बनवाई जा रही है? जब भोजन प्रसादी शुरू हुई, तो लगभग 25-30 लोगों ने 100 लोगों जितनी भोजन सामग्री ग्रहण कर ली। यहाँ तक कि घर के लोगों के लिये तो भोजन भी पूरा नहीं बचा, उनके लिये दुबारा बनवाना पड़ा। इस घटना की पुष्टि उस घर के प्रत्येक सदस्य, हलवाई और अन्य लोगों ने की। इससे यह निश्चित हो गया कि श्राद्ध

के समय किसी न किसी माध्यम से पितर सीधे रूप में भोजन सामग्री ग्रहण करते हैं। शास्त्र भी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि श्राद्ध के लिये आमंत्रित ब्राह्मण के शरीर में आकर पितर भोजन ग्रहण करते हैं।

ऊपरी बाधा : पीड़ा मुक्ति के दुर्लभ उपाय पुस्तक के लेखन में कीराड़ू जी के समान ही श्री राजेन्द्र जी यादव ने भी मेरा प्रस्तुत पुस्तक में पूर्ण सहयोग किया। इस विषय पर उनका कार्य तथा अनुभव अनेक वर्षों का रहा है। उनके सहयोग से मैंने पितृदोष के उदाहरण और पितृदोष निवारण के कुछ महत्त्वपूर्ण उपाय भी ज्ञात किये, जिनका उल्लेख मैंने इस पुस्तक में किया है। उनके इस सहयोग का मैं सदैव आभारी रहूँगा।

पितृदोष निवारण के उपायों के संकलन में मेरा भरपूर सहयोग श्रीमान् बालेन्दु जी पाण्डेय ने किया। इन्हें भारतीय संस्कृत वाङ्मय सहित अनेक विषयों के साहित्य का भरपूर ज्ञान है। इनके सहयोग से यह पुस्तक पितृदोष ओर उसके निवारण जैसे जटिल विषयों को समझाने में श्रेष्ठ सिद्ध होगी। इस सहयोग के लिये पाण्डेयजी को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

पितृदोष के योगों का ज्योतिष के फलित ग्रंथों में स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं है। बृहत्पाराशरहोराशास्त्र ग्रंथ का श्रापाध्याय इस विषय की ज्योतिषीय पुष्टि करता है, परन्तु वह विस्तृत एवं स्पष्ट नहीं है। मैं अनेक ऐसे व्यक्तियों से मिला, जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में पितृदोष से पीड़ित रहे हैं तथा उनकी जन्मपत्रिका के अध्ययनों से पितृदोष के ज्योतिषीय योगों को पुष्ट किया है। इस पुस्तक में कुछ पितृदोष से पीड़ित व्यक्तियों की जन्मपत्रिकाओं को भी उदाहरण के रूप में दिया है। इससे पितृदोष की ज्योतिषीय व्याख्या पुष्ट हुई है।

अन्त में अपने आध्यात्मिक गुरु श्रीमद्दण्डी स्वामी जोगेन्द्राश्रम (प्रमुख भद्रकाली शक्तिपीठ, राजलदेसर, चूरू और मनकामेश्वर महादेव गुणेश्वराश्रम, ऋषिकेश) का नमन तथा लेखन सहयोगी श्री देवकुमार कीराड़ूजी, बालेन्दुजी पाण्डेय एवं राजेन्द्रजी यादव सहित अपने सभी मित्र तथा परिजनों का आभार व्यक्त करता हूँ। मैंने इस पुस्तक को अत्यन्त उपयोगी बनाने का भरपूर प्रयास किया है। पुस्तक में लीक से अलग हटते हुए अनेक ऐसे व्यावहारिक उपायों के बारे में बताया गया है जिनका प्रयोग पितृदोष की स्थिति में करने से तो निश्चित लाभ की प्राप्ति होगी ही, इसके अलावा भी यदि जीवन में इनका निरन्तर प्रयोग किया जाता है, तो सुख-सौभाग्य में कभी न्यूनता नहीं आयेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। इसके साथ-साथ एक कटु सत्य यह भी है कि एक लेखक कितने भी प्रयास कर ले, कुछ त्रुटियों की सम्भावना हमेशा बनी रहती है। इसलिये मैं आप सभी पाठकों से यह आशा करता हूँ कि वे इस पुस्तक का अध्ययन कर मुझे कमियों से अवगत करायें और इस विषय के सम्बन्ध में जो भी नई जानकारी हो, वह अवश्य प्रदान करें। इससे यह विषय भविष्य में और भी अधिक पुष्ट हो सकेगा।

जो व्यक्ति पितृदोष के कारण से अपने जीवन में अनेक प्रकार की समस्यायें एवं कष्टों की पीड़ा भोग रहे हैं, उन सभी के शुभ की कामना करता हूँ। यह पुस्तक लिखने की प्रेरणा मुझे मेरे पितरों से प्राप्त हुई है, इसलिये यह पुस्तक मैं अपने पितरों को समर्पित करता हूँ।

- सुधाकर पुरोहित

प्रकाशकीय-

पितृदोष जीवन को प्रभावित करता है...

आज अधिकांश व्यक्ति पितृदोष से पीड़ित देखे जाते हैं। इसका कारण यह है कि वर्तमान समय में अधिकांश व्यक्ति एक समय में अनेक समस्याओं से घिरे दिखाई देते हैं। यह समस्यायें आर्थिक पक्ष की हो सकती हैं, व्यवसाय के साथ जुड़ी हो सकती हैं अथवा इनका प्रभाव पारिवारिक सुख-शान्ति पर भी हो सकता है। दूसरे शब्दों में इस बारे में कहा जा सकता है कि पितृदोष किसी भी व्यक्ति को उन सभी सुखों से वंचित कर सकता है जिन्हें प्राप्त करने के लिये वह जीवन भर प्रयास करता है तथा जिनका सुख-भोग करने का अधिकारी भी होता है। यह अलग बात है कि आज व्यक्तियों को पितृदोष की वास्तविकता के बारे में अधिक ज्ञान नहीं है, जो कुछ थोड़ी-बहुत जानकारी है, वह भ्रामक धारणाओं पर आधारित होती है अथवा सुनी-सुनाई बातों के आधार पर वह मान लेता है कि पितरों के कारण उसे कष्ट हो रहे हैं। इसी कारण से अनेक लोग पितरों एवं प्रेतों को एक ही मान लेते हैं, इस कारण उन्हें समस्या तो पितरों के कारण से होती है लेकिन वे उपचार प्रेत से मुक्ति का करते दिखाई देते हैं। स्वाभाविक है कि इससे उन्हें किसी भी प्रकार का लाभ नहीं हो सकता है लेकिन समस्यायें यथावत् रहती हैं। इनकी मुक्ति के लिये वे काफी धन व्यय भी कर देते हैं। इसमें एक समस्या और भी दिखाई देती है कि अनेक ज्योतिषी पितृदोष को कोई समस्या ही नहीं मानते हैं। इसलिये जब कोई व्यक्ति पितृदोष की समस्या के बारे में जानने के लिये किसी ज्योतिषी के पास जाता है, तो वह ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा के आधार पर कुछ उपाय बता देता है। इसका भी कुछ विशेष लाभ होता दिखाई नहीं देता है। बार-बार समस्याओं से घिरे रहने वाले तथा अनेक उपाय करने के बाद भी लाभ नहीं मिलने पर लोग यह सोचने पर भी विवश हो जाते हैं कि क्या इस समस्या का कोई समाधान नहीं है? ऐसी बात नहीं है क्योंकि ऐसी कोई समस्या नहीं होती जिसका कोई समाधान न हो लेकिन इसके साथ यह भी देखना होता है कि समाधान बताने के पहले समस्या को ठीक से समझा जाये। समस्या को ठीक से जाने बिना समाधान कैसे किया जा सकता है? इसके साथ-साथ यह भी सत्य है कि पितृदोष व्यक्ति के जीवन को प्रभावित अवश्य करते हैं, इसलिये यह आवश्यक है कि पितृदोष को ठीक से समझने का प्रयास करते हुए इससे मुक्ति के उपायों के बारे में विचार किया जाये और फिर विशिष्ट उपायों का प्रयोग करके पितृशांति करके जीवन को सम्पूर्ण सुखों के साथ जीया जाये। जिस व्यक्ति के जीवन में दु:ख अधिक आयें, वह सुखों का ठीक से भोग नहीं कर पाये तो उसके लिये जीवन व्यर्थ हो जाता है।

पितृदोष क्या है, यह प्रेतदोष से कैसे अलग है, यह जीवन को किस प्रकार से प्रभावित करता है और कैसे इसकी शांति और मुक्ति हो सकती है, इन सभी विषयों को विस्तार से **पितृदोष : पीड़ा मुक्ति के उपाय** पुस्तक में बताने का प्रयास किया गया है। यह विषय अत्यन्त जटिल होने के साथ-साथ भ्रामक धारणाओं से भी प्रभावित है, इसलिये इसकी वास्तविकता को सामने लाना और फिर इस दोष के समाधान के बारे में बताना अत्यन्त कठिन कार्य था। पुस्तक के लेखक **सुधाकर पुरोहित** ने इस विषय को चुनौती के रूप में लेकर लम्बे समय तक इसकी गहराई में जाने के अथक प्रयास किये हैं। यह प्रयास एक प्रकार से इस विषय पर किया जाने वाला शोध कार्य ही माना जाना चाहिये। अब, जबकि पुस्तक आपके हाथों में है, हमें पूर्ण विश्वास है कि यह आपकी अपेक्षाओं पर खरी उतरेगी और आप इसके माध्यम से जीवन के दु:खों को दूर कर सम्पूर्ण सुखों से साक्षात्कार करने में सफल होंगे।

- प्रकाशक

जीवन यात्रा का अन्त- मृत्युद्वार

जन्म के बाद जब व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियों को समझ कर उनको पूरा करने में लग जाता है, तभी से वह अत्यन्त व्यस्त हो जाता है। उसकी दिनचर्या में आराम करने का समय सबसे कम रहता है। पूरा दिन अपने विभिन्न कार्यों को पूरा करते-करते कैसे व्यतीत हो जाता है, इसका पता ही नहीं चल पाता। इसके उपरान्त भी हर दिन ऐसा लगता है कि उसके अनेक काम किये जाने से रह गये हैं। इतना सब करने के बाद भी वह सभी को सन्तुष्ट नहीं कर पाता, सभी को खुश नहीं रख पाता। कार्य व्यवसाय में अति व्यस्तता के कारण वह अपने परिवार को पर्याप्त समय नहीं दे पाता है, इस कारण से पत्नी, बच्चों के साथ सारा परिवार नाराज हो जाता है। वह उन्हें खुश करने का प्रयास करता है, तो उसके काम बाकी रह जाते हैं। दिन भर की भागदौड़ व्यक्ति को थका डालती है। इसके उपरांत भी वह हर दिन नई योजनायें बनाने में लगा रहता है, नये सपने बुने जाते हैं, पहले इन सपनों का कल्पनाओं में आनन्द लिया जाता है, फिर इन्हें पूरा करने के प्रयास प्रारम्भ हो जाते हैं। व्यक्ति के भीतर कामनाओं एवं लालसाओं का ज्वार भी बहता रहता है। महान लोग कहते हैं कामनायें मत करो, किसी प्रकार की लालसा मत रखो। अगर कामनायें एवं लालसायें नहीं हों तो जीवन जीने का उद्देश्य क्या रह जायेगा? यह कामनायें एवं लालसायें ही हैं जो थकने के उपरांत भी व्यक्ति को हमेशा चलते रहने को विवश करती हैं, उन्हें चलते रहने की ऊर्जा देती है। परिणामस्वरूप व्यक्ति जीवनभर चलता रहता है, बिना रुके, बिना थके और बिना आराम किये। रुकने, थकने और आराम करने के लिये जीवन नहीं मिला है। इन सबके लिये जीवन के उस पार का मृत्युद्वार है। यह द्वार व्यक्ति के लिये एक बार ही खुलता है। इसके खुलते ही व्यक्ति शांत हो जाता है। समस्त प्रकार की भागदौड़ थम जाती है। जिसके लिये एक-एक पल कार्य-व्यवसाय तथा अपने दायित्वों के लिये समर्पित था, उसके लिये अब इन सबका कोई महत्त्व नहीं रह जाता। जिस व्यक्ति की सांसें अपने परिवार के सदस्यों के शुभ में अटकी रहती थी, जिनके बारे में उसने कई बार सोचा होगा कि उसके मरने के बाद इन सबका क्या होगा, मरने के बाद उसे किसी की कोई चिंता नहीं रहती।

एक व्यक्ति कितने दिन जीयेगा, इसके बारे में निश्चित तौर पर कोई कुछ नहीं जानता, लेकिन एक सत्य से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि सभी व्यक्तियों की एक दिन मृत्यु अवश्य होने वाली है। बहुत से लोग कहते हैं कि मरने के बाद मनुष्य अपने साथ क्या लेकर जायेगा? वह धन-सम्पत्ति ही छोड़ कर जाता है, बाकी सब कुछ अपने साथ ले जाता है। उसके साथ उसके द्वारा किये गये प्रत्येक छोटे-बडे, अच्छे-बूरे कर्म

जाते हैं, जो मृत्यु के उस द्वार के पार उसकी स्थिति को निर्धारित करते हैं। वह अब किस योनि में जायेगा.... स्वर्ग का सुख भोगेगा अथवा नरक की आग में जलेगा, सब कुछ उसके कर्मों के आधार पर ही निश्चित होता है, इसलिये एक सच्चाई जीवन का अन्त अर्थात् मृत्यु है तो दूसरी सच्चाई यह है कि अपनी जीवन यात्रा में हमेशा अच्छे कर्म करने का प्रयास करें क्योंकि इस जीवन के बाद अनेक जीवन और भी भोगने होते हैं।

मानव जीवन की यात्रा को मृत्युद्वार पर आकर विराम लग जाता है। मृत्यु के पश्चात् पांच तत्त्वों से निर्मित इस शरीर को अग्नि को समर्पित कर दिया जाता है ताकि यह पंच तत्त्व पुन: अपने-अपने तत्त्वों में मिल जायें। इसके पश्चात् निरन्तर पन्द्रह दिन तक की जाने वाली अनेक क्रियायें मृतक की आत्मा की मुक्ति के लिये की जाती हैं। अनेक परिवारों में यह क्रियायें सत्रह दिनों तक भी की जाती हैं। जन्म के पश्चात् किये जाने वाले समस्त संस्कार व्यक्ति की उन्नति और ईश्वरीय आश्रय प्राप्ति के लिये किये जाते हैं किन्तु अन्त्येष्टि संस्कार मृतक की आत्मा की मुक्ति के लिये किया जाता है। मृत्यु से पहले व्यक्ति यह प्रयास करता है कि उसका परिवार सभी प्रकार के भौतिक सुखों का भोग करे, जब उसकी मृत्यु हो जाती है तो परिवार के सदस्य मिलकर यह प्रयास करते हैं कि उसकी आत्मा को शान्ति मिले, मोक्ष प्राप्त हो। इसके लिये अन्त्येष्टि के बाद कुछ दिनों तक तो महत्त्वपूर्ण क्रियायें एवं कर्म किये जाते हैं, किन्तु मुख्य कर्म अन्त्येष्टि का ही होता है। सोलह संस्कारों में अन्त्येष्टि संस्कार अन्तिम माना गया है क्योंकि इसके बाद मृतक के करने के लिये कुछ भी शेष नहीं रह जाता है। इस संस्कार के द्वारा मृतक का संबंध इस लोक से समाप्त होकर परलोक से जुड़ जाता है।

हिन्दू धर्म के अनुसार मानव शरीर नश्वर है और आत्मा अमर है। मानव का शरीर पंच तत्त्व अग्नि, वायु, जल, आकाश एवं पृथ्वी से बना है। जब तक इस शरीर में आत्मा का वास रहता है, तब तक व्यक्ति सभी प्रकार के कार्यों में प्रवृत्त होता है, अनेक लोगों से मिलता है, मिलने-मिलाने में आनन्द एवं उमंग का अनुभव होता है किंन्तु जैसे ही आत्मा इस शरीर से अलग हो जाती है, वैसे ही शरीर की समस्त गतिविधियों पर हमेशा के लिये विराम लग जाता है। इसी के साथ इस शरीर को अपवित्र मान लिया जाता है। परिवार में जिन सदस्यों के बीच वह अनेक वर्ष व्यतीत कर चुका होता है, मृत्यु के पश्चात् उनके लिये भी वह अपवित्र हो जाता है। इसीलिये किसी मृतक को छूने अथवा उसकी शवयात्रा में सम्मिलित होने के पश्चात् शरीर शुद्धि के लिये स्नान आदि को आवश्यक माना गया है।

प्रकृति निर्जीव वस्तुओं के साथ एक समान व्यवहार करती है। वह उन्हें सड़ाने और गलाने लगती है ताकि उनसे मुक्ति प्राप्त करके नवसृजन का मार्ग प्रशस्त किया जा सके। यह स्थिति मृत शरीर के साथ भी देखने को मिलती है। अधिक समय तक शव

को रखने से उसमें दुर्गंध उठने लगती है। इसलिये मृतक की अन्त्येष्टि में विलम्ब नहीं किया जाता है। अगर मृतक के विशेष परिजनों के आने की प्रतीक्षा करना आवश्यक हो और इस कारण अन्त्येष्टि को यदि टाला जाता है तो शव को बर्फ की शिलाओं पर अथवा तेल में रखा जाता है। ऐसा भी अधिक समय तक नहीं किया जा सकता। अधिकतम चौबीस घंटे तक ही शव को घर में रखा जा सकता है, इससे अधिक समय तक रख पाना सम्भव नहीं होता है। इसके बाद आवश्यक रूप से दाह कर्म कर दिया जाता है। सामान्य स्थिति में मृतक की अन्त्येष्टि उसी दिन कर दी जाती है, जब उसकी मृत्यु होती है।

जीवन का शाश्वत सत्य केवल मृत्यु है। जिसने जन्म लिया है, उसकी एक दिन मृत्यु अवश्य होती है। जितने समय का जीवन विधाता व्यक्ति के भाग्य में लिख देता है, उतने दिन वह जीवित रहता है। इसके बाद मृत्यु निश्चित होती है। इस बारे में किसी भी धर्म अथवा सम्प्रदाय में मत भिन्नता देखने को नहीं मिलती है, इसलिये मृत्यु के पश्चात् मृतक की अन्त्येष्टि करने का विधान सभी सम्प्रदायों में अपनी परम्पराओं द्वारा किया जाता है। विभिन्न सम्प्रदायों में उनके अपने रीति-रिवाज एवं धर्मानुसार इसका विधान होता है। अन्त्येष्टि का यह विधान चार रूपों में प्राप्त होता है- अग्नि दाह, भूमि समाधि, वायु दाह एवं जल प्रवाह। पुस्तक पितृदोष से सम्बन्धित है लेकिन इसका मृत्यु के साथ भी गहरा सम्बन्ध है। पितृदोष अथवा प्रेतदोष, इन सबका आधार मृत्यु ही है। अगर मृत्यु नहीं होती तो पितर-प्रेत कहाँ से आते? पितृदोष के बारे में पूरी पुस्तक में विभिन अध्याय दिये गये हैं, लेकिन इसके साथ-साथ मृत्यु को भी समझना आवश्यक है, इसलिये इस अध्याय में विभिन सम्प्रदायों में मृत्यु के पश्चात् शव की अन्त्येष्टि किस विधि से की जाती है, इस बारे में संक्षिप्त रूप से बताने का प्रयास किया गया है। इस अध्याय का उद्देश्य अन्त्येष्टि के बारे में पाठकों को परिचित कराना मात्र है।

अग्नि दाह

दाह संस्कार द्वारा मृत शरीर को अग्नि को समर्पित कर दिया जाता है। अग्नि को समर्पित कर देने से पंच तत्त्व से निर्मित शरीर पुन: पंच तत्त्व में ही विलीन हो जाता है। प्राचीनकाल से ऐसी मान्यता रही है कि आत्मा द्वारा शरीर को छोड़ने के कुछ समय पश्चात् तक वह आत्मा मृतक के निवास के आस-पास मंडराती रहती है। हिन्दू समाज में ऐसा समझा जाता है कि आत्मा के द्वारा शरीर का त्याग कर दिये जाने के कुछ समय पश्चात् तक उसका मोह अथवा बंधन उस परिवार एवं परिजनों के प्रति विद्यमान रहता है। इसलिये हिन्दू सम्प्रदाय में आत्मा की मुक्ति के लिये पूर्ण विधि-विधान के साथ अन्त्येष्टि संस्कार किया जाता है ताकि आत्मा का इस लोक से सम्बन्ध समाप्त हो सके। शरीर को अग्नि के सुपुर्द करने के पश्चात् अन्य अनेक प्रकार के क्रियाकर्म किये जाते हैं ताकि आत्मा को इस लोक से मुक्ति प्राप्त हो और वह अपने लोक को प्रस्थान करे। यही

अन्त्येष्टि संस्कार है।

मिट्टी समाधि

अनेक सम्प्रदायों में मृत शरीर को जमीन में गाड़ दिया जाता है। बोलचाल की भाषा में इसे दफन करना भी कहते हैं। इन सम्प्रदायों का यह विश्वास है कि एक बार आत्मा के द्वारा शरीर को छोड़ दिये जाने के पश्चात् वह आत्मा पुनः शरीर में प्रवेश करेगी। प्राचीनकाल में मिश्रवासी पूरी तरह से इसी अवधारणा को अपनाये रहे। इसलिये वहां पर राजा-महाराजाओं की मृत्यु के पश्चात् विभिन्न रसायनों के लेप के द्वारा मृत शरीर को सुरक्षित करके विशाल इमारत के भीतर रखा जाता था जिसे पिरामिड के नाम से जाना जाता है। अनेक विद्वानों का यह विश्वास है कि मृत्यु के पश्चात् आत्मा जमीन में गाड़े हुए शरीर के आस-पास ही मंडराती रहती है। इसलिये इन्हीं सम्प्रदायों में ऊपरी हवाओं की घटनायें अधिक देखने को मिलती हैं। हिन्दुओं में भी संन्यासियों, विश्नोइयों, छोटे बालकों को भू-समाधि दी जाती है। संन्यासियों को भू-समाधि देने के बारे में कहा गया है- **माटी खाये जिनावरां, महामहोच्छव होय।**

जल प्रवाह

कहीं-कहीं पर विशेष रूप से संन्यासियों की मृत्यु के पश्चात् उनकी देह को न जमीन में गाड़ा जाता है और न जलाया जाता है अपितु उनके मृत शरीर को जल में प्रवाहित कर दिया जाता है। ऐसा माना जाता है कि जो संन्यासी है, वह अपना श्राद्ध कर्म अपने हाथों से करके ही संन्यासी बनता है। इसलिये पुनः उसको जलाने की अथवा गाड़ने की आवश्यकता नहीं रहती है। प्राचीनकाल में जो व्यक्ति संन्यासी बनता था उसके द्वारा संन्यास धर्म ग्रहण करने से पूर्व हवन कुण्ड की राख को अपने समस्त शरीर पर लेप किया जाता था। इसके पश्चात् वह स्नान करके अपने हाथों से अपना श्राद्ध करता था। ऐसा करने का तात्पर्य यह था कि वह अपने वर्तमान जीवन के समस्त सम्बन्धों को समाप्त करके एक नये जीवन में प्रवेश कर रहा है। संन्यासियों की यह मान्यता रहती थी कि जीवन भर वे दूसरों के काम आते रहें, मृत्यु के पश्चात् भी उनका शरीर अन्य किसी प्राणी के काम आये इसलिये उनके मृत शरीर को जल में प्रवाहित कर दिया जाता था ताकि उनके शरीर को जलचर अथवा अन्य प्राणी खा जायें।

वायु दाह

अनेक सम्प्रदायों में मृत्यु के पश्चात् मृत शरीर को जंगल या पहाड़ों पर खुले स्थान में रख दिया जाता था। इसे वायु दाह कहा जाता था। ऐसा करने के पीछे यह मान्यता रही है कि मृत्यु के पश्चात् मृतक का शरीर अन्य जंगली पशु-पक्षियों के काम आ सके। ऐसे संस्कार हमारे यहां बहुत कम देखने को मिलते हैं किन्तु विश्व के अनेक देशों में वायु दाह अभी भी देखा जाता है।

जीव की सद्गति के लिये और्ध्व दैहिक संस्कारों का विशेष महत्त्व एवं विधान

बताया गया है। इसमें व्यक्ति की मरणासन्न स्थिति के समय पूर्ण विधि-विधान के अनुसार किये जाने वाले दस प्रकार के दान का विशेष महत्त्व है। यह दान सवत्सा गौ, स्वर्ण, घृत, गुड़, तिल, भूमि, धान्य, वस्त्र, चांदी तथा लवण आदि प्रमुख माने गये हैं। उपरोक्त दानों में से जितना भी दान किया जा सके, उतना अवश्य करना चाहिये। ऐसा करने से जीवात्मा को अनेक सुखों की प्राप्ति होती है। इस बारे में गरुड पुराण में भी कहा गया है- **महादानेषु दत्तेषु गतस्तत्र सुखी भवेत्** अर्थात् इन दानों को देने से जीव को परलोक में सुख की प्राप्ति होती है। अनेक व्यक्ति मृत्यु के समय बहुत कष्ट पाते हैं। उनके प्राण नहीं निकलते जबकि वह स्वयं ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उन्हें शीघ्र मृत्यु प्राप्त हो ताकि मृत्यु पूर्व होने वाले कष्टों से मुक्ति मिल सके। सम्भवतः मृत्यु पूर्व अत्यधिक कष्ट इस जन्म अथवा पूर्वजन्म के पापकर्मों के कारण प्राप्त होते हैं। ऐसी स्थिति में उस व्यक्ति के निमित्त दान किया जाये तो उसके प्राण तत्काल शरीर का साथ छोड़ देते हैं। इसलिये मृत्यु पूर्व दान करने की परम्परा रही है।

व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् उसकी मृत देह को शुद्ध जल अथवा गंगाजल से स्नान कराया जाता है। एकदम नये वस्त्रों (कफन) में लपेटा जाता है। शरीर को गोपी चन्दन लगाया जाता है। पुष्प एवं माला अर्पित किये जाते हैं। दोनों नासिकाओं में शुद्ध घी डालकर रूई लगाई जाती है। कहीं-कहीं दोनों आंखों तथा कानों में भी घी डाला जाता है। यह ठीक वैसा ही होता है कि जैसे कि कोई व्यक्ति किसी यात्रा पर जाने से पूर्व स्नान-ध्यान करके नवीन वस्त्र धारण करता है, सुगन्ध लगाता है। व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् यह उसकी अन्तिम और महायात्रा होती है। इसलिये उसे ठीक प्रकार से नहला कर नये वस्त्र आदि पहनाये जाते हैं। अनेक स्थानों पर ऐसा विश्वास किया जाता है कि मृत्यु के पश्चात् व्यक्ति सीधा स्वर्ग जाता है, इसलिये उसे ठीक से तैयार करके भेजा जाता है। अनेक विद्वान ऐसा भी जानते हैं कि मृत्यु के पश्चात् मृत शरीर को अग्नि को समर्पित किया जाना है, इसलिये मृत देह को पूर्ण रूप से शुद्ध कर लेना आवश्यक है ताकि अग्निदेव मृत देह को अपने में भस्मीभूत कर लें। विचार चाहे जैसे हों, मृतक को अर्थी पर लिटाने से पूर्व स्नान कराया जाता है, नये वस्त्र पहनाये जाते हैं। सुगंध लगाई जाती है। शव को रजस्वला स्त्री तथा किसी भी अपवित्र व्यक्ति से बचाया जाता है। अर्थी के आगे पुत्र कन्धा देते हैं। बहनोई एवं जामाता का शव को स्पर्श करना एवं अर्थी को कन्धा देना वर्जित माना गया है। शव को नहलाने आदि से भी उन्हें अलग रखा जाता है। जामाता अथवा बहनोई अगर शव को नहलाते अथवा कन्धा देते हैं तो ऐसा करने से मृतक पाप का भागी बनता है। संतों, गुरुओं आदि को बैठी हुई अवस्था में बैकुण्ठी में ले जाकर चिता पर बैठा कर अग्नि दी जाती है। साधारणजन को सीधे लेटी अवस्था में लिटा कर दाह संस्कार करते हैं।

व्यक्ति के जीवन में अन्त्येष्टि संस्कार का बहुत अधिक महत्त्व माना जाता है। यह संस्कार व्यक्ति की मृत्यु वाले दिन से तेरह दिन तक चलता है। कहीं-कहीं पर यह तेरह के स्थान पर सत्रह दिनों तक चलता है। कहीं-कहीं पर दाह क्रिया से बारह दिन तक यह संस्कार किये जाते हैं। इस संस्कार का महत्त्व अनेक कारणों से देखने को मिलता है। आम धारणा है कि यदि मृतक का उचित प्रकार से क्रियाकर्म और मुक्ति आदि नहीं कराई जाती तो वह प्रेतयोनि में चला जाता है और अपने परिवार के सदस्यों को अनेक प्रकार से परेशान करता है। इसलिये मृतक के परिवार वाले उसकी मुक्ति की सभी क्रियायें पूर्ण विधि-विधान से करते हैं। यही सब अन्त्येष्टि संस्कार के अन्तर्गत आते हैं। इसके अनेक पक्ष हैं जिन्हें समझ लेना आवश्यक है।

जन्म से मृत्यु तक व्यक्ति एक लम्बा समय अपने परिवार के साथ व्यतीत करता है। जीवन काल में वह अनेक दायित्वों का निर्वाह करता है। परिवार के सदस्यों के साथ गहरे संबंध बन जाते हैं। जब वह व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त होता है तो उसके काम आने वाली सभी वस्तुओं को घर से बाहर करने के प्रयास किये जाने लगते हैं। प्रयास यह किया जाता है कि व्यक्ति की मृत्यु शय्या पर नहीं हो। अत: मृत्यु से पूर्व उसे भूमि पर लिटाया जाता है। पहले मृत्यु की ओर अग्रसर व्यक्ति की स्थिति देख कर परिवार के बड़े और समझदार सदस्य जान लेते थे कि अब उसकी मृत्यु निकट है। इसलिये भूमि पर सफेद वस्त्र बिछा कर उस पर लिटा दिया जाता था। सिर की तरफ दीपक जला दिया जाता था। ऐसे में व्यक्ति के प्राण सहज रूप में और बिना अधिक कष्ट दिये निकल जाते थे। यदि व्यक्ति के प्राण बिस्तर पर लेटे हुये ही निकल जाते हैं तो जिस बिस्तर पर व्यक्ति देह का त्याग करता है, उस बिस्तर को उसी दिन बाहर फेंक दिया जाता है। उसके अन्य पहने जाने वाले वस्त्रों को भी या तो फेंक दिया जाता है अथवा किसी को दे दिया जाता है। इसके पीछे विचारधारा यह होती है कि मरने के बाद भी मृतक की आत्मा पुराने घर तथा वहाँ रहने वालों के आस-पास विचरण करने लगती है। इसलिये मृतक से संबंध रखती अधिकांश वस्तुओं को हटा दिया जाता है ताकि मृतक की जीवात्मा का मोह अथवा लगाव उस परिवार अथवा वहाँ रहने वाले सदस्यों के साथ पूरी तरह से समाप्त हो जाये। इसके पश्चात् आत्मा की मुक्ति तक के सभी कार्य किये जाते हैं। अन्त में मृत्युभोज पर जाकर यह कार्य सम्पन्न हो जाता है। कुछ समय पूर्व तक मृत्युभोज किया जाना आवश्यक समझा जाता था। एक प्रकार से पुत्र पर समाज की तरफ से यह दबाव रहता था कि वह अपने पिता की मृत्यु पर मृत्युभोज अवश्य करे। ऐसा न करने वाले को प्रताड़ित किया जाता था। इसलिये पुत्र भारी कर्ज लेकर भी मृत्युभोज किया करता था। ग्रामीण अंचल में रहने वाले गरीब व्यक्तियों के घर अथवा खेत तक मृत्युभोज के कारण गिरवी रख दिये जाते थे क्योंकि मृत्युभोज पर बहुत अधिक व्यय होता था। अनेक गाँव के लोगों को इस भोज पर बुलाया जाता था।

मृत्युभोज के कारण उत्पन्न होने वाली विषम स्थितियों को देखकर इस रूढ़िप्रथा को सरकार द्वारा बन्द कर दिया गया। इसके विपरीत आज भी अनेक परिवारों में, विशेष रूप से ग्रामीण अंचल में मृत्युभोज देखे जा सकते हैं।

मृत्यु के पश्चात् मृतक की जीवात्मा प्रेतयोनि में जाने की मान्यता रही है। पंचतत्त्व से निर्मित शरीर को छोड़ कर जब सूक्ष्म जीव निकलता है तो उसकी रक्षा के लिये उसे वायवीय शरीर प्राप्त होता है। वायवीय शरीर को धारण कर वह वायु के समान हल्का और वायु की गति से विचरण करने में सक्षम हो जाता है। इसी को प्रेतयोनि कहा जाता है। जीव की इस प्रेतयोनि से मुक्ति के लिये ही शास्त्रों में विभिन्न श्राद्ध क्रियायें बताई गई हैं। अग्नि संस्कार से मृत शरीर का कण-कण जल कर भस्म के रूप में रूपांतरित हो जाता है। इस भस्म रूप (अस्थियों) को गंगा आदि पवित्र नदी अथवा सरोवर में प्रवाहित कर दिया जाता है। माँ गंगा अस्थियों को अपने पवित्र जल के भीतर समेट कर उस जीव का इस लोक से संबंध पूरी तरह से विच्छेद कर देती है। इसके पश्चात् शास्त्रसम्मत श्राद्ध क्रियाओं के द्वारा अर्पित जल आदि सामग्री से तृप्त होकर वह सूक्ष्म जीव प्रेत शरीर को छोड़ देता है।

प्रेतयोनि के संदर्भ में यह स्पष्ट करना उचित रहेगा कि चौरासी लाख योनियों में एक प्रेतयोनि भी मानी गई है। इस बारे में विभिन्न मत हैं। कुछ विद्वान ऐसा मानते हैं कि पापों का फल भोगने के लिये जीव को प्रेतयोनि प्राप्त होती है। कुछ का मानना है कि जो व्यक्ति अपनी पूरी आयु भोगने से पूर्व ही किसी दुर्घटना में अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं, वे प्रेतयोनि में जाते हैं और तब तक इसी अवस्था में रहते हैं जब तक कि वे अपनी शेष आयु भोग नहीं लेते हैं। कुछ विद्वानों का ऐसा भी विचार है कि जिन व्यक्तियों का जीवित अवस्था में किसी से विशेष लगाव अथवा आसक्ति हो जाती है, किसी विशेष स्थिति में उनका मन अटका रहता है अथवा जिनकी कुछ प्रबल इच्छायें अधूरी रह जाती हैं, वे प्रेतयोनि में चले जाते हैं। कुछ व्यक्ति अपने जीवनकाल में अपना धन जमीन में दबा देते हैं और इस बारे में किसी को कुछ बता भी नहीं पाते, ऐसे व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् उसका सूक्ष्म जीव प्रेतयोनि को प्राप्त होता है और जहां उसका धन दबा हुआ होता है, उसके आस-पास मंडराता रहता है। इसके लिये वह अन्य जीवों का शरीर भी धारण कर लेता है, जैसे- सांप, कुत्ता आदि। इस रूप में वह अपने धन की रक्षा करता है। जमीन में दबे धन की रक्षार्थ उसके आस-पास सांपों के विचरण करने के अनेक उदाहरण समय-समय पर सामने आते रहते हैं।

इसके अतिरिक्त परिवार में जिससे वह सबसे अधिक लगाव रखता है, जिसे किसी कष्ट में वह देखना नहीं चाहता, उसकी रक्षार्थ भी वह प्रेतयोनि में जाकर समय-समय पर उसकी रक्षा करता है। वह इस शरीर में अधिक समय तक नहीं रह सकता।

कुछ समय पश्चात् ही उसे वह शरीर छोड़कर जाना होता है। जब शास्त्रोक्त विधि से उसका प्रेत संस्कार, षोडश-श्राद्ध, सपिण्डन-विधान किया जाता है तो वह प्रेत शरीर से मुक्त हो जाता है। शास्त्रों के अनुसार मृत्यु के पश्चात् वार्षिक श्राद्ध होने तक सभी प्राणी अनिवार्यत: प्रेतयोनि में ही रहते हैं। बारह दिन बाद इन प्रेतों का ऊंचा पद पितर (पितृ) हो जाता है।

ऐसी मान्यता रही है कि जो जीवात्मायें पितर बन जाती हैं, उनकी गति-मुक्ति नहीं हो पाती, इसलिये वे पितृलोक में वास करके अपने वंशजों द्वारा श्राद्ध आदि के अवसर पर अर्पित किये गये कव्य को ग्रहण करती हैं। इसी कव्य से उन्हें शक्ति प्राप्त होती है। यह पितर आत्मायें नियमपूर्वक श्राद्ध करने वाले अपने वंशजों का कल्याण करती हैं और उन्हें समस्त भौतिक सुख प्राप्त करवाने के मार्ग प्रशस्त करती हैं। कहीं-कहीं पर पितर आत्मायें अपनी कुछ इच्छाओं को पूरा करवाने के लिये वंशजों पर दबाव बनाती हैं, और यदा-कदा उन्हें दण्ड भी देती हैं। पितरों को प्रेतों से अलग करके देखा जाना चाहिये क्योंकि यह पितर हमारे अपने दिवंगत पूर्वजों की ही जीवात्मायें होते हैं और हमारा कल्याण करने का ही प्रयास करते हैं।

देह त्याग से अग्नि दाह तक

प्राचीनकाल से ही व्यक्ति की मृत्यु एवं उसके पश्चात् किये जाने वाले क्रिया कर्म आदि के बारे में सचेतना दिखाई देती रहती है। तब भी व्यक्ति इस 'लोक' तथा 'उस लोक' के बारे में अवश्य कुछ ज्ञान रखते थे। इसीलिये मृत्यु के निकट होते व्यक्ति को मृत्यु पश्चात् स्वर्ग की प्राप्ति हो, इसके अनेक प्रयास किये जाते रहे हैं। अन्त्येष्टि संस्कार के अन्तर्गत मृत्यु के पश्चात् की जाने वाली क्रियाओं का ही उल्लेख किया जाता है। मृतक को अर्थी पर ले जाने से पूर्व स्नान कराया जाता है। तत्पश्चात् स्वच्छ वस्त्र (कफन) पहनाये जाते हैं। इसके पीछे धारण सम्भवत: यह है कि अब यह दूसरे लोक की यात्रा पर जा रहा है, इसलिये स्वच्छ होकर नवीन वस्त्र धारण करके ही जाना चाहिये। इसके बाद शव को अर्थी पर रखा जाता है। उसे गोपी चंदन का लेप किया जाता है। कुछ व्यक्ति चन्दन के स्थान पर गंगाजी की मिट्टी का लेप करते हैं। पुष्प की मालाओं से शव को ढक दिया जाता है। अनेक परिवारों में शव पर चादर अथवा शॉल डालते हैं। ऐसा मृतक के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिये किया जाता है। बाद में इन शॉल-चादर को दाह क्रिया करवाने वाला महाब्राह्मण उतार लेता है। अर्थी को उठाने से पूर्व मृत्यु वाले स्थान पर **शव** नामक पिण्ड मृतक के नाम एवं गोत्र से अर्पित किया जाता है। ऐसा करने से भूमि और भूमि के अधिष्ठातृ देवता प्रसन्न होते हैं तथा उसे भूमि छोड़ने का आशीर्वाद देते हैं। इसके बाद मृतक के नाम एवं गोत्र का उच्चारण करते हुये घर के मुख्यद्वार पर **पान्थ** नामक पिण्ड अर्पित किया जाता है। ऐसा करने से गृह वास्त्वधिदेवता

प्रसन्न होते हैं। इसका उल्लेख गरुड पुराण (215/31-33) में इस प्रकार से प्राप्त होता है-

मृतस्थाने शवो नाम तेन नाम्ना प्रदीयते।
तेन भूमिर्भवेत्तुष्टा तदधिष्ठातृदेवता॥
द्वारदेशे भवेत् पान्थस्तेन नाम्ना प्रदीयते।
तेन दत्तेन तुष्यन्ति गृहवास्त्वधिदेवताः॥

अर्थी उठाने से पूर्व शव के अन्तिम दर्शन किये जाते हैं। परिवार के सदस्य, मित्र, परिचित तथा अन्य संबंधी शव को हाथ जोड़ कर अन्तिम विदाई देते हैं। कुछ परिजन शव की प्रदक्षिणा करते हैं। सभी मृतक की मुक्ति एवं कल्याण की प्रार्थना करते हैं। कहीं-कहीं पर अर्थी को आम के पत्तों से सजाया जाता है। इसके पश्चात् शवयात्रा के लिये अन्य संबंधियों के साथ ज्येष्ठ पुत्र आगे की तरफ से अर्थी को कंधा देता है। शास्त्रों में इस बारे में उल्लेख मिलता है कि जो पुत्र अपने पिता की अन्तिम यात्रा को सबसे आगे होकर कन्धा देता है, उसे प्रत्येक आगे बढ़ते कदम के साथ असंख्य पुण्य लाभ की प्राप्ति होती है। इस बारे में गरुड पुराण (सारोद्धार 10/12) में कहा गया है-

धृत्वा स्कन्धे स्वपितरं यः श्मशानाय गच्छति।
सोऽश्वमेधफलं पुत्रो लभते च पदे पदे॥

अर्थात् अपने पिता को कंधे पर धारण करके श्मशान ले जाने वाला पुत्र अपने प्रत्येक कदम पर अश्वमेध का फल प्राप्त करता है। इस प्रकार जो पुत्र अपने माता-पिता की अर्थी को कन्धा नहीं देता वह इस लाभ से वंचित होकर अनेक कष्टों को भोगने के लिये अभिशप्त होता है। पुत्र द्वारा किये जाने वाले विशेष दायित्वों में माता-पिता की अर्थी को कन्धा देना प्रमुख माना गया है जिसकी किसी भी रूप से उपेक्षा नहीं की जा सकती।

इसके साथ ही शव की अन्तिम यात्रा प्रारम्भ होती है। मृतक यदि परिवार का बुजुर्ग व्यक्ति है, जिसने अपने समस्त दायित्वों को पूरा कर लिया है अर्थात् अपने समस्त पुत्र एवं पुत्रियों का विवाह कर दिया है, तो उसकी शवयात्रा धूमधाम से निकाली जाती है। शवयात्रा के साथ-साथ ढोल-ताशे बजाते हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि जिस व्यक्ति ने अपने जीवन के समस्त उत्तरदायित्व पूर्ण कर लिये हैं, वह मृत्यु के पश्चात् सीधे स्वर्गलोक को जाता है। इसलिये ऐसे व्यक्ति की शवयात्रा को धूमधाम के साथ निकाला जाता है। रास्ते भर में **राम-नाम सत्य है** का सम्वेत स्वर में उच्चारण किया जाता है।

मोक्षधाम से पूर्व शव को आराम करवाने के लिये विशेष स्थान की व्यवस्था होती है। इस स्थान को घर से मोक्षद्वार का आधा मार्ग माना जाता है। इस स्थान पर बने चबूतरे पर शव को विश्राम हेतु रखा जाता है। यहां पर **भूत** नामक पिण्ड का दान किया जाता है। विभिन्न सम्प्रदायों में विभिन्न प्रकार की रस्में भी की जाती हैं। पिण्डदान करने से चारों दिशाओं में रहने वाले राक्षस, यक्ष, पिशाच आदि मृत देह के योग्य तत्त्व को क्षति

नहीं पहुंचाते हैं। पहले शवयात्रा के समय यमगाथा गाई जाती थी और यमसूक्त का जप किया जाता था। इसके लिये कहा गया है कि-

यमगाथां गायन्तो यमसूक्तं च जपन्त इत्येके

श्मशान में पहुंच कर शव के दाह की तैयारी की जाती है। वर्तमान में समस्त श्मशान घाट में चिताओं की व्यवस्था रहती है किन्तु पहले ऐसा नहीं था। तब शवदाह के लिये वेदिका बनायी जाती थी, उसे शुद्ध जल अथवा गंगाजल से स्वच्छ किया जाता था। इसके बाद विधि-विधान से अग्नि प्रज्वलित करके स्थापित की जाती थी। पुष्प, अक्षत आदि से पहले अग्निदेव की पूजा-अर्चना की जाती थी कि हे अग्निदेव, इस मृत देह को अपने में समा कर इसे सद्‌गति प्रदान करें। अनेक स्थानों पर अग्रांकित वैदिक मंत्रों से होम किया जाता था-

लोमभ्यः स्वाहा लोमभ्यः स्वाहा, त्वचे स्वाहा त्वचे स्वाहा।
लोहिताय स्वाहा, लोहिताय स्वाहा, मेदोभ्यः स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा।
माँ्सेभ्यः स्वाहा, माँ्सेभ्य स्वाहा, स्नावभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहा।
ऽस्थभ्यः स्वाहा ऽस्थभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा।
रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा॥

इसके पश्चात् चिता का निर्माण किया जाता है। धनी वर्ग के व्यक्ति इसके लिये चंदन की लकड़ियों का प्रयोग करते हैं। आमतौर पर पलाश, पिप्पल अथवा आम की लकड़ियों से चिता बनायी जाती है। शव को चिता पर लिटा कर दो पिण्ड रखे जाते हैं। इनमें से एक पिण्ड **साधक** के नाम से चिता पर तथा दूसरा पिण्ड **प्रेत** के नाम से शव के हाथ पर दिया जाता है। इसके पश्चात् तिनकों में अग्नि को प्रज्वलित करके बड़ा पुत्र चिता को मुखाग्नि देता है। अनेक परिवारों में मृतक के घर से नये धातु अथवा मिट्टी के पात्र में अग्नि प्रज्वलित करके शवयात्रा के साथ लायी जाती है और उसी से चिता को अग्नि दी जाती है। शवयात्रा के समय परिवार का एक सदस्य इस अग्नि को साथ लेकर चलता है। इसे गृह्याग्नि कहा जाता है। जहां गृह्याग्नि की स्थापना नहीं की जाती, वहां मौन रह कर लौकिक अग्नि दी जाती है।

शवदाह के पश्चात् सचैल (वस्त्रों सहित) स्नान करने का विधान है। पहले नदी अथवा सरोवर में स्नान करने का विधान था। स्नान करते समय अधोवस्त्र ही पहने जाते थे। जो यज्ञोपवीत धारण करते थे, वे स्नान करते समय यज्ञोपवीत को बायें कंधे से हटा कर दायें कंधे पर कर लेते थे। स्नान दक्षिण दिशा की तरफ मुंह करके किया जाता था। वर्तमान में नदी, सरोवर के अभाव में या तो श्मशान में ही स्नान कर लिया जाता है अथवा घर लौट कर स्नान किया जाता है। स्नान के पश्चात् नूतन यज्ञोपवीत धारण करते हैं, शिव दर्शन करते हैं। मृतक के परिजन नूतन यज्ञोपवीत दस दिन बाद पहनते हैं।

स्नान के पश्चात् **अमुक प्रेत एतत्ते उदकम्** मंत्र का उच्चारण करते हुये मृतक को एक बार जलांजलि दी जाती है। इसके बाद समस्त परिजन पवित्र घास वाली धरती पर अथवा स्वच्छ स्थान पर बैठ जाते हैं। उन सभी को एक-एक तिनका अथवा छोटा पत्थर दे दिया जाता है। फिर सभी को पुराणों की कथाओं के आधार पर सांत्वना दी जाती है कि जो व्यक्ति इस संसार से चला गया है, आप सभी का उससे यहीं तक का साथ था। उसकी देह पंचतत्त्वों में विलीन हो चुकी है, इसलिये अब उसकी मुक्ति की कामना करते हुये अपने-अपने घर को जायें। मृतक से संबंध समाप्त होने की स्थिति को स्वीकारने के लिये प्रतीकात्मक रूप से हाथ में रखे तिनके को तोड़ कर सिर के पीछे फेंक दिया जाता है। जिनको इसके लिये छोटे पत्थर दिये जाते हैं, वे उन पत्थरों को सिर के पीछे उछाल देते हैं। यहीं पर सभी को अस्थि संग्रह वाले दिन के बारे में भी जानकारी दे दी जाती है। इसके पश्चात् सभी बिना पीछे देखे वापिस लौट जाते हैं।

वहां से सभी मृतक के घर आते हैं। घर के सामने आकर वे सभी एक साथ खड़े हो जाते हैं। वापिस आते समय कोई व्यक्ति धातु के पात्र को मांज-धोकर उसमें जल तथा हरी वनस्पति लेकर आता है। यह घर की स्त्रियों को दे दिया जाता है। घर की कोई महिला गंगाजल अथवा स्वच्छ जल में स्वर्ण का कोई आभूषण डाल कर उस पानी के छींटे उन सभी पर देती है जो श्मशान से लौटे हैं। इसके बाद घर के सदस्य भीतर प्रवेश करते हैं और जो अपने घर जाना चाहते हैं, वे उसी समय बाहर से ही अपने घर चले जाते हैं। कहीं-कहीं पर घर में प्रवेश करने से पूर्व दरवाजे पर रखे नीम के पत्तों को दांतों से चबाते हैं, फिर कुल्ला करके मुंह साफ करते हैं। इसके बाद पुन: जल, आग, गोबर, सरसों तथा तिल के तेल का स्पर्श करते हैं और फिर घर में प्रवेश करते हैं। इसके लिये **पारस्करगृह्यसूत्र** में कहा गया है-

निवेशनद्वारे पिचुमन्दपत्राणि विदश्याचम्योदकमग्निं गोमयं
गौरसर्षपांस्तैलमालभ्याश्मानमाक्रम्य प्रविशन्ति ॥

इसके पश्चात् अस्थि संचय का कार्य किया जाता है। प्राय: यह तीसरे दिन अथवा कहीं पर चौथे दिन किया जाता है। अस्थि संचय का कार्य प्रात: ही किया जाता है। इसमें जिस व्यक्ति ने चिता को मुखाग्नि दी थी, वह पहले चिता स्थल की तीन बार परिक्रमा करता है। स्वच्छ जल के छींटे देता है और इसके पश्चात् वह धीरे-धीरे चिता की भस्म को एक तरफ करके अस्थियों को निकालता है। अन्य परिजन भी इसमें उसकी मदद करते हैं। जब समस्त अस्थियां चिता की भस्म से निकाल ली जाती हैं, तब चिता भस्म को एक बोरे में भर दिया जाता है। अस्थियों को पहले दूध से, फिर स्वच्छ जल से धोकर किसी लोहे के डिब्बे में अथवा कपड़े की थैली में डाल दिया जाता है। फिर चिता स्थल को दूध एवं जल से स्वच्छ किया जाता है। इसके बाद क्रियाकर्म और

श्राद्धादि के विशेष ज्ञाता पण्डित के द्वारा कुछ धार्मिक क्रियायें सम्पन्न की जाती हैं। फिर अस्थियों को एवं चिता की भस्म को वहीं श्मशान स्थल में ही सुरक्षित रख दिया जाता है। जब अस्थि विसर्जन के लिये हरिद्वार अथवा अन्य पवित्र सरोवर में प्रवाहित करने के लिये जाना होता है, तब इन्हें प्राप्त कर साथ ले लिया जाता है। गंगाघाट पर विधि-विधान के साथ अस्थियों एवं चिता भस्म को प्रवाहित कर दिया जाता है। जैसे ही गंगा के पवित्र जल में अस्थियों को विसर्जित किया जाता है, वैसे ही मृतक के समस्त अणुओं को माँ गंगा अपने पवित्र जल में समाहित कर लेती है और जीवात्मा का संबंध इस लोक से पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है। इस संबंध में गरुड पुराण में कहा गया है-

अन्तर्दशाहं यस्यास्थि गङ्गातोये निमज्जति।
न तस्य पुनरावृत्तिर्ब्रह्मलोकात्कदाचन॥

अर्थात् जिस व्यक्ति की अस्थियां गंगाजल में दस दिन के भीतर प्रवाहित की जाती हैं, उसका ब्रह्मलोक से कभी भी पुनरागमन नहीं होता है अर्थात् उसे जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति मिल जाती है।

प्राचीनकाल से ही माना जाता रहा है कि शरीर नश्वर है। जहां जीवन है, वहां मृत्यु भी अवश्य है। इसलिये मृत्यु के पश्चात् जीवात्मा को सद्गति प्राप्त हो, उसे ब्रह्मलोक में स्थान मिले और वह जीवन-मरण के बंधन से मुक्त हो जाये, इसी कामना की पूर्ति के लिये अन्त्येष्टि संस्कार किया जाता है। इस संस्कार के द्वारा मृतक के समस्त पापों का विनाश हो जाता है। अपने जीवनकाल में व्यक्ति चाहे-अनचाहे अनेक प्रकार के पापकर्मों में लिप्त रहता है। इन पापों के साथ ब्रह्मलोक की प्राप्ति सम्भव नहीं है। इस दृष्टि से अन्त्येष्टि संस्कार जीवात्मा को ब्रह्मलोक पहुंचाने वाला और्ध्व दैहिक कृत्य है। इस संस्कार में उच्चारित किये जाने वाले वैदिक मंत्रों के प्रभाव से जीवात्मा को ब्रह्मलोक की प्राप्ति सम्भव हो जाती है। इस बारे में कहा गया है-

प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्व्येभिर्यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुः।
उभा राजाना स्वधया मदन्ता यमं पश्यासि वरुणं च देवम्॥
सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेनेष्टापूर्तेन परमे व्योमन्।
हित्वायावद्यं पुनरस्तमेहि सं गच्छस्व तन्वा सुवर्चाः॥

अर्थात् इस संस्कार के समय पढ़े जाने वाले वैदिक मंत्रों के प्रभाव से मृतक पुरातन पितरों के सुखप्रद मार्गों से पितृलोक जाता है और वहां से स्वधा से तृप्त यम एवं वरुण का दर्शन करता है। वहां अपने पितरों से मिलता है और इष्टापूर्त दान आदि कृत्यों के पुण्य-फलों को प्राप्त करता है। वहां वह समस्त मलिनता का त्याग कर दिव्य ज्योति से परिपूर्ण नवीन शरीर धारण करके परम आनन्द प्राप्त करता है।

पितर कौन हैं ?

'पितृ' शब्द से तात्पर्य माता-पिता, पूर्व पुरुष, पूर्वज, पितर इत्यादि है। यहाँ 'पितृ' शब्द से पितर अर्थ ही ग्राह्य है। पितरों से तात्पर्य पूर्वजों से है। वे पूर्वज, जो अपने स्थूल शरीर में विद्यमान नहीं है, लेकिन पितृलोक में स्थित होकर अपने वंशजों का कल्याण करने के लिये तत्पर हैं। पितृलोक और पितरों की कल्पना मिथक नहीं हैं, वरन् वैदिक साहित्य से लेकर पुराण, स्मृति इत्यादि ग्रंथों में इनसे सम्बन्धित वर्णन प्राप्त होता है। ये पितर भिन्न-भिन्न रूप वाले हैं, इन्हें मुख्य रूप में तीन श्रेणियों उत्तम, मध्यम तथा निम्न श्रेणी वाले पितरों में विभक्त किया जा सकता है:-

1. देवताओं, राक्षसों एवं मनुष्यों के जनक उत्तम श्रेणी वाले पितर।
2. वे परिजन, जो अपने सद्कर्मों और परिवार तथा समाज के कल्याण से पितृयोनि में जाकर अमर हो जाते हैं, इन्हें मध्यम श्रेणी के पितर कहा जा सकता है।
3. वे परिजन, जो अपनी वासनाओं और मोहवश मुक्ति नहीं होने अथवा पुनर्जन्म नहीं होने पर प्रेतयोनि में रहते हैं और अपने परिजनों के लिये पितर एवं अन्यों के लिये प्रेत समान होते हैं, इन्हें अधोगति और निम्न श्रेणी वाले पितर कहा जा सकता है।

इन तीनों ही श्रेणियों वाले पितरों के बारे में विस्तृत वर्णन के द्वारा इनसे सम्बन्धित अन्य तथ्यों और इनके महत्त्व का ज्ञान होगा।

(1) उत्तम श्रेणी वाले पितर

पृथ्वी सहित समस्त ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति ब्रह्माजी से मानी जाती है। ब्रह्माजी त्रिदेवों में से एक देव हैं, जो जगत्पिता आदि कई नामों से जाने जाते हैं। सृष्टि के क्रम को आगे बढ़ाने के लिये ब्रह्माजी से मनु की उत्पत्ति हुई। मनु से मरीचि, भृगु, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, वसिष्ठ इत्यादि ऋषि उत्पन्न हुए। इन्हीं ऋषियों से सोमपा इत्यादि पितर उत्पन्न हुए हैं।

मरीचि ऋषि के पुत्र अग्निष्वांत देवताओं के पितर हैं। इनसे ही समस्त देवों की उत्पत्ति मानी जाती है और ये देवताओं के लिये सदैव वन्दनीय हैं। अत्रि ऋषि के पुत्र बर्हिषद राक्षस, यक्ष, गंधर्व, सर्प, किन्नर इत्यादि के पितर हैं, जो इनके लिये वन्दनीय हैं। भृगु ऋषि के पुत्र सोमपा मनुष्य जाति में ब्राह्मणों के पितर हैं। अंगिरा ऋषि के पुत्र हविर्भव क्षत्रिय वर्ण वाले व्यक्तियों के पितर हैं। पुलस्त्य ऋषि के पुत्र आज्यपा वैश्य वर्ण वाले व्यक्तियों के पितर हैं और वसिष्ठ ऋषि के पुत्र सुकाली शूद्र वर्ण वाले व्यक्तियों के

पितर हैं। विराट ऋषि के पुत्र सोमसद साध्यों (दिव्य प्राणियों का एक विशेष वर्ग) के पितर माने गये हैं। इन पितरों के गण भी हैं। अग्निदग्ध, अनग्निदग्ध, काव्य, बर्हिषद, अग्निष्वात्ता और सौम्य इन पितरों के गण माने जाते हैं, जो कव्य और यज्ञ फल को इन तक पहुँचाते हैं।

इन दिव्य पितरों का निवास पितृलोक में होता है, जो देवलोक से भी ऊपर है। जिस प्रकार देवताओं के लिये यज्ञादि कर्म से हव्य की व्यवस्था है, उसी प्रकार श्राद्धकर्म द्वारा पितरों के लिये कव्य की व्यवस्था की जाती है। ये श्रेष्ठ और ऊर्ध्व गति वाले पितर सदैव देवता, राक्षस, मनुष्य इत्यादि के लिये शुभत्व की कामना करते हैं। सन्तुष्ट होकर इच्छापूर्ति करते हैं और भौतिक इच्छाओं की सन्तुष्टि में भी सहायक होते हैं।

वेद एवं पुराणों में इनसे सम्बन्धित विभिन्न कथायें और तथ्य मिलते हैं, जिनमें इन दिव्य पितरों ने संतुष्ट होकर अपने भक्तों की इच्छापूर्ति की है। ये गलत राह पर चल रहे अपने वंशजों को सावचेत करके उन्हें सही राह दिखाते हैं और पृथ्वी पर मानव जाति के विकास में भी सहायक के रूप में कार्य करते हैं। मार्कण्डेय पुराण में रुचि को उपदेश देकर इन्हीं दिव्य पितरों ने विवाह कर सृष्टिक्रम को आगे बढ़ाने का आदेश दिया था। आदेश पाकर रुचि जब विवाह के लिये कन्या के वरण हेतु प्रयासरत थे, तो मार्गदर्शन के लिये रुचि ने ब्रह्माजी की तपस्या की। तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी ने रुचि को विवाह के लिये जीवनसाथी की प्राप्ति हेतु पितरों की उपासना बताई। रुचि द्वारा पितरों के निमित्त श्राद्ध, तर्पणादि कर्म से प्रसन्न होकर उन्होंने रुचि को आशीर्वाद प्रदान किया और प्रम्लोचा अप्सरा और पुष्कर की पुत्री मालिनी को उनसे सम्बन्ध के लिये मनाकर उनका विवाह सम्पन्न करवाया।

उक्त प्रसंग से दिव्य पितरों का महत्त्व इंगित होता है। इस जगत् में जो भी व्यक्ति अपने दिव्य पितरों के निमित्त श्राद्ध, तर्पणादि पितृकर्म करता है, उन पर ये पितर अपनी विशेष कृपा रखते हैं। उनकी भौतिक आदि सभी इच्छाओं की पूर्ति करते हैं।

(2) मध्यम श्रेणी वाले पितर

मध्यम श्रेणी वाले पितरों से तात्पर्य उन दिव्यात्माओं से है, जो मानव शरीर त्याग कर मोक्ष रूप में पितृलोक को प्राप्त करती हैं और अपने परिजनों, वंश और समाज के कल्याण के लिये सदैव तत्पर रहती हैं। अपने पुण्यकर्मों के कारण ये आत्मायें जन्म-जन्मान्तर के चक्र से मुक्त होकर पितृलोक में जाती हैं और अपने परिजनों द्वारा प्रदत्त हव्य अर्थात् श्राद्धादि कर्म में दिये जाने वाले अन्नादि से संतुष्ट होकर अनेक आशीर्वाद प्रदान करती हैं। इनके पितृलोक में जाने का कारण कोई विशेष कामना अथवा मोह नहीं होता है। ये दिव्यात्मायें अपनी इच्छा से इस लोक को चुनती हैं और सभी के लिये कल्याण की भावना रखती हैं। लौकिक देवता, जुझार आदि दिव्यात्मायें भी इसी श्रेणी में

आते हैं। प्राचीनकाल में वे महान् योद्धा, जो अपना मस्तक कटने के पश्चात् भी लड़ते रहते थे और अपने समाज की रक्षा के लिये सदैव तत्पर रहते थे, उन्हें जुझार कहा जाता है। इन जुझारों के लिये स्थान बनाये जाते हैं और इनकी पूजा-उपासना भी की जाती है। इन जुझारों के स्मारकों को किसी स्थान की रक्षा के लिये भी स्थापित किया जाता है। भारत के प्रसिद्ध दुर्गों में ऐसे अमर योद्धाओं के स्मारक देखे जा सकते हैं। कई किलों के नाम तो इन जुझार रूपी अमर आत्मा के नाम पर ही रखे गये हैं। ये जुझार पूरे समाज की रक्षा करते हैं। वर्ष में किसी निश्चित दिन इनके समाधिस्थल पर विशेष आयोजन होते हैं। मेला भरता है और इनके स्मरण में विभिन्न गीत गाये जाते हैं। इनकी पूजा-उपासना पितरों के रूप में नहीं होकर लौकिक देवताओं और दिव्यात्मा के रूप में होती है।

उक्त के अतिरिक्त किसी परिवार में कोई व्यक्ति मृत्यु के पश्चात् अपने सद्कर्मों के कारण सदा के लिये पितृलोक में निवास करता है। ये पितृगण अपने परिवार की रक्षा और समृद्धि के लिये सदैव तत्पर रहते हैं। अपने परिजनों को विभिन्न प्रकार की समस्याओं से बचाते हैं। अपने परिजनों से सम्प्रेषण कर उन्हें मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। इनकी प्रसन्नता अपने परिजनों द्वारा प्रदत्त पितृयज्ञ अर्थात् श्राद्ध, तर्पणादि कर्म पर निर्भर करती है। उनके द्वारा दिये जाने वाले हव्य से ही ये पितर सन्तुष्ट होते हैं। उस परिवार के लिये जिनसे इनका सम्बन्ध होता है, ये देवताओं से भी अधिक वन्दनीय होते हैं। इसलिये देवकर्म से पूर्व विशेष रूप से इन पितरों के निमित्त पितृकर्म किये जाने से ये संतुष्ट होते हैं। इनका विशेष स्नेह अपने परिजनों तक ही होता है, लेकिन कई बार ये लोककल्याण भी करते हैं। अपने परिवार से इनका सम्बन्ध अनन्त पीढ़ियों तक रहता है। इनकी अप्रसन्नता से विभिन्न प्रकार की समस्यायें और कष्ट भी होते हैं।

(3) अधोगति वाले पितर

आत्मा जब मनुष्य योनि में आकर अपने कर्मों के कारण विभिन्न प्रकार की कामनाओं और अपने परिजनों के मोहवश शरीर त्याग के पश्चात् भी न तो मुक्त होती है और न ही अगला शरीर धारण करती है, तो वह प्रेतयोनि में जाकर अपनी वासनाओं की पूर्ति का प्रयास करती है। उसकी वासनायें अपनी धन-सम्पत्ति, पुत्र, पौत्र इत्यादि को लेकर होती है। मृत्यु के पश्चात् जब पुत्र, पौत्रों द्वारा आदर नहीं दिया जाता है, तो ऐसी आत्मायें प्रेतलोक में रहती हुई पीड़ित होती हैं।

इन मृतकों की आत्मायें भले ही प्रेतलोक में निवास करें, लेकिन अपने परिजनों के लिये ये पितृतुल्य होती हैं, इसलिये इनकी मुक्ति के लिये श्राद्ध, तर्पणादि कर्म अवश्य करने चाहिये। इन कर्मों से संतुष्ट होकर ये आत्मायें अपने परिजनों के हित की कामना करती हैं। यदि ये असंतुष्ट हो जायें, तो अपने घर में अथवा परिजनों के जीवन में भयंकर स्थिति बना देती हैं। ये आत्मायें अपने परिजनों को मानसिक, शारीरिक और आर्थिक

नुकसान पहुँचा सकती हैं। जिन विशिष्ट कामनाओं की पूर्तिवश इनकी मुक्ति बाधित हो रही होती है, उसकी पूर्ति होने पर इनकी गति हो जाती है। गति के पश्चात् इन्हें अपने कर्म के अनुसार अगला जन्म प्राप्त होता है। अपनी इच्छापूर्ति नहीं होने पर तथा परिजनों द्वारा उपेक्षित होने पर ये प्रेतयोनि में रहते हुए उत्पात करती हैं और अपने परिजनों के साथ ही अन्य के लिये भी घातक हो जाती हैं।

अपने इस व्यवहार के कारण ही ये अधोगति वाले पितर कहलाते हैं। इनका सम्बन्ध केवल अपने पूर्वज के रूप में होने के कारण ही ये पितर होते हैं, लेकिन इनका पितृलोक से कोई सम्बन्ध नहीं होता। श्राद्ध-तर्पण के समय इनका आवाहन करने पर अवश्य ये कव्य प्राप्त कर तृप्त होते हैं। मोहवश प्रेतयोनि में भटकती ऐसी पूर्वजों की आत्माओं के लिये भी श्राद्ध-तर्पणादि की व्यवस्था होती है, जिनसे इन्हें तृप्ति और मुक्ति मिल सके। साथ ही ऐसे उपायों का उल्लेख है, जिनसे इनके मोह को हटाकर इनकी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया जाता है। इनकी मुक्ति नहीं होना ही पितर ऋण को दर्शाती है और यही पितृदोष भी होता है।

उक्त उत्तम, मध्यम और उधोगति वाले पितरों का वर्णन वैदिक साहित्य से लेकर पुराण, स्मृति, आयुर्वेद और लौकिक ग्रंथों में हुआ है। इनके इतिहास से यह स्पष्ट है कि वैदिककाल से ही पितरों का पूजन-अर्चन होता रहा है, इसलिये पितर यज्ञ और पूजन को व्यर्थ और अंधविश्वास मानकर अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

पितरों का उल्लेख

वैदिक एवं पौराणिक साहित्य में पितरों से सम्बन्धित विभिन्न भ्रान्तियों के कारण यह विषय वर्तमान में मनीषियों द्वारा अछूता एवं अविकसित है। विभिन्न प्रान्तों में पितरों को लेकर लोकोपचार की कई प्रथायें पनप गई हैं, इसलिये इस विषय को कई विद्वान व्यक्ति हेय दृष्टि से भी देखते हैं। क्या पितृदोष अथवा पितृबाधा एक मनगढ़ंत समस्या है? क्या पितरों के पूजन और अर्चन का कोई इतिहास है? पितरों का पूजन क्यों महत्त्वपूर्ण माना गया है, इत्यादि ऐसे कई प्रश्न हैं, जिनका उत्तर निम्नांकित तथ्यों से सिद्ध हो सकता है:-

पितरों के अस्तित्व को ऋग्वेदकाल से ही स्वीकार किया गया था। ऋग्वेद आर्यों की सबसे प्राचीन कृति है या यूं कहें कि आर्यों के उद्भव के समय से ही पितरों का अस्तित्व मान लिया गया था। इतना ही नहीं, विभिन्न देवताओं और असुरों के अतिरिक्त पितरों के पृथक् लोक का वर्णन भी मिलता है। ऋग्वेद (10/15) में पितरों को मनुष्य जाति को शुभ और अशुभ फल देने वाला बतलाया है अर्थात् पितर मनुष्य की उन्नति अथवा अवनति में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। यही कारण है कि ऋग्वेद में उनकी स्तुति की गई है और उन्हें यज्ञ के द्वारा आमन्त्रित कर प्रसन्न करने का प्रयास भी किया गया है।

ऋग्वेद (10/15) में जिस सूक्त का वर्णन हुआ है, वह **पितृसूक्त** के नाम से जाना जाता है और उसमें पितरों की ही स्तुति की गई है। ऋग्वेद के समान ही यजुर्वेद के 35वें अध्याय में भी पितृसूक्त का वर्णन हुआ है। ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् में भी पितरों से सम्बन्धित वर्णन मिलता है। तैत्तिरीय ब्राह्मण में पितृलोक के पृथक् अस्तित्व को स्वीकार किया गया है। शतपथ ब्राह्मण में वसन्त, ग्रीष्म और वर्षा ऋतु में ईश्वर के लिये यज्ञ और अन्य ऋतुओं में पितरों के लिये यज्ञ का उपयुक्त समय कहा है। ऋग्वेद में सूर्य के दक्षिण अयन में गोचर को पित्रायण कहा है। उपनिषदों में छान्दोग्य, बृहदारण्यक आदि में पितृलोक को मान्यता दी गई है। अथर्ववेद में पितरों से सम्बन्धित वर्णन मिलता है। पुराणों में वायुपुराण, श्रीमद्भागवत पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, हरिवंश पुराण, गरुड पुराण, मत्स्य पुराण, पद्मपुराण, मार्कण्डेय पुराण इत्यादि में पितरों से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार का वर्णन मिलता है। पुराणों से पूर्व महाभारत में भी पितृलोक और पितरों का वर्णन हो चुका है। महाभारत में भीष्म पितामह ने अपने पिता के श्राद्ध सम्बन्धित वर्णन में श्राद्धकर्म के नियमों को महत्त्वपूर्ण माना है।

संस्कृत साहित्य से सम्बन्धित **स्मृति ग्रंथ, धर्म ग्रंथ, आयुर्वेद ग्रंथ** और **ज्योतिष ग्रंथों** में भी पितरों से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के तथ्यों का उल्लेख हो चुका है। इन ग्रंथों में मनुस्मृति सर्वाधिक रूप से उल्लेखनीय है, जिसमें विस्तृत रूप से पितरों से सम्बन्धित उल्लेख मिलता है। मनुस्मृति के तीसरे अध्याय में विस्तृत रूप से और 8वें अध्याय में संक्षिप्त रूप में पितरों से सम्बन्धित विभिन्न तथ्यों को बतलाया है। उक्त ग्रंथों में श्राद्ध का महत्त्व, पितर तीर्थों के परिचय सहित पितृगणों के अप्रसन्न होने से सम्बन्धित तथ्यों को भी स्पष्ट किया है। **महाभारत** के सभापर्व (52/16) में गया श्राद्ध और गया तीर्थ का महत्त्व बतलाया है। **देवीभागवत** के दशम स्कन्ध में भी इसी प्रकार का वर्णन और पितरों से सम्बन्धित अन्य वर्णन मिलता है। **चरक, सुश्रुत संहिता** इत्यादि आयुर्वेद ग्रंथों में असन्तुष्ट पितरों के द्वारा होने वाले रोगों का वर्णन मिलता है। सुश्रुत संहिता में तो यहाँ तक कहा गया है कि जिस घर में देवताओं एवं पितरों के लिये यज्ञ नहीं होता, उस घर के बच्चों को कष्टसाध्य रोग हो सकते हैं।

ज्योतिष के ग्रंथ भी इस विषय से अछूते नहीं है। **सूर्यसिद्धान्त** में पितरों से सम्बन्धित कालगणना का उल्लेख मिलता है। सूर्यसिद्धान्त के कालमानाध्याय में नवविधकालमानों में ब्रह्मा, दिव्य, पित्र्य, प्राजापत्य, गौरव, सौर, चान्द्र और नाक्षत्र कालमान बताये गये हैं। इनमें प्रारम्भिक चार मान क्रमशः ब्रह्मा, देवता, पितर और मनु अर्थात् मन्वन्तर व्यवस्था के लिये बताये गये हैं। सूर्यसिद्धान्त के द्वादश (12/5, 74) और चतुर्दश (14/1, 6, 14) अध्यायों में पितरों से सम्बन्धित वर्णन मिलता है। यहाँ पितरों का अहोरात्र अर्थात् दिन-रात भूलोक के चान्द्रमास के तुल्य माना है। यह

पितृलोक चन्द्रमा के पृष्ठभाग में है, जहाँ पितृगणों की 15 दिनों तक रात्रि एवं 15 दिनों तक दिन होता है। अमावस्या को पितरों का मध्याह्न और पूर्णिमा को मध्यरात्रि होती है।

ज्योतिष के प्रसिद्ध फलित ग्रंथ **बृहत्पाराशर होराशास्त्र** में स्पष्ट किया है कि पितरों के निमित्त किये जाने वाले कर्मों को यदि सम्पन्न नहीं किया जाये, तो वह पितर प्रेत बन जाता है और फिर वह श्राप देता है, जिससे वंशवृद्धि रुक जाती है। बृहत्पाराशरहोराशास्त्र के 85वें अध्याय में इन योगों का विस्तृत वर्णन मिलता है।

उक्त ग्रंथों के अतिरिक्त इस विषय पर स्वतंत्र रूप से भी ग्रंथ लिखे गये हैं, जिनमें **वीरमित्रोदय, श्राद्धकल्पलता, श्राद्धतत्त्व, पितृदयिता** उल्लेखनीय हैं, लेकिन इनमें क्रियाकर्म और श्राद्ध से सम्बन्धित विभिन्न तथ्यों का उल्लेख अधिक हुआ है। ये सभी ग्रंथ प्रथम शताब्दी से पिछली शताब्दियों तक रचे गये हैं।

उक्त उल्लेख से यह स्पष्ट हो जाता है कि पितरों का अस्तित्व वर्तमान में की गई केवल कल्पना मात्र नहीं है, वरन् वैदिक काल से ही पितरों के अस्तित्व को स्वीकार किया जाता रहा है और उनको प्रसन्न रखने के लिये नान्दिश्राद्ध, त्रिपिण्डीश्राद्ध, नारायणबली, गयाश्राद्ध इत्यादि की व्यवस्था विशेष रूप से की गई है। साथ ही विभिन्न प्रकार के उपायों का भी उल्लेख हुआ है। संस्कृत साहित्य का किसी भी विषय से सम्बन्धित ग्रंथ पितरों से सम्बन्धित तथ्यों से अछूता नहीं रहा है।

प्रारम्भिक काल में पितरों के बारे में लोगों का विश्वास एवं आस्था बहुत अधिक दिखाई देती थी। तब पितरों का आवाहन एवं पूजा प्रत्येक महत्त्वपूर्ण दिवस पर अवश्य श्रद्धापूर्वक किया जाता था। परिणामस्वरूप पितरों की उन पर कृपा भी पूर्ण रूप से रहती थी। इस प्रकार से यह विषय हमारे विश्वास के साथ-साथ श्रद्धा से भी जुड़ा हुआ है। आधुनिक सोच-विचार वाले व्यक्ति यदि पितरों आदि पर विश्वास करके स्मरण एवं श्राद्ध आदि करें, तो निश्चित रूप से उनके जीवन में आने वाली समस्यायें समाप्त होकर सुख-समृद्धि के मार्ग प्रशस्त होंगे।

क्या प्रत्येक मृतक परिजन पितर होता है?

परिवार में किसी व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् क्या वह परिजन पितृयोनि को प्राप्त करता है, यह तथ्य अत्यधिक रहस्यमयी है, क्योंकि उस मृतक परिजन के पितृलोक में जाने से सम्बन्धित तथ्य को शीघ्र नहीं जाना जा सकता। हिन्दू धर्म में किसी व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् एक वर्ष तक उसकी मुक्ति के लिये विभिन्न प्रकार के क्रियाकर्म किये जाते हैं। इसके बाद प्रत्येक वर्ष उसकी पुण्यतिथि तथा श्राद्धपक्ष में श्राद्धकर्म के द्वारा उसे कव्य प्रदान किया जाता है। सामान्यत: जनमानस में यह मान्यता प्रसिद्ध है कि जब किसी व्यक्ति की अकाल मृत्यु होती है, तो वह निश्चित रूप से पितृलोक को प्राप्त करता है अर्थात् उसकी मुक्ति नहीं हो पाती और वह अपने परिजनों के मोह में बंधा रहता है। यहाँ अकाल मृत्यु से तात्पर्य ऐसी मृत्यु से है, जो वृद्धावस्था से पूर्व बाल्यावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था में हो जाये अथवा वृद्धावस्था में भी किसी दुर्घटना अथवा रहस्यमयी मृत्यु होने पर उसे अकाल मृत्यु की श्रेणी में रखा जाता है।

अकाल मृत्यु में मृतक का अपने परिजनों के प्रति विशेष स्नेह होने से उसकी मुक्ति बाधित हो सकती है, लेकिन प्रत्येक स्थिति में यह आवश्यक नहीं है कि वह मृतक मुक्ति को प्राप्त न हो। अनेक बार यह भी देखा जाता है कि परिजनों द्वारा, जिसे पितृयोनि में समझा जाता है, वास्तव में उसकी मुक्ति हो चुकी होती है। यह विषय अत्यधिक गूढ़ रहस्य वाला है। अनेक व्यक्तियों को यह संशय रहता है कि अपनी पूर्ण आयु भोगे बिना मृत्यु को प्राप्त होने वाला प्रत्येक व्यक्ति पितृयोनि को प्राप्त करता है, लेकिन इस विषय पर हुए अनेक शोधों में यह ज्ञात हुआ है कि ऐसे वृद्ध व्यक्ति जो अपनी आयु को पूर्ण रूप से भोग चुके थे, वे भी मृत्यु के पश्चात् पितृयोनि को प्राप्त हुए हैं। इस तथ्य से यह निश्चित है कि कोई भी मृतक पितृयोनि को प्राप्त कर सकता है, लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक परिजन, जो समय अथवा असमय मृत्यु को प्राप्त होता है, वह पितृयोनि में अवश्य जाये।

अक्सर उन मृतक व्यक्तियों की मुक्ति नहीं होती है, जो मरते समय कोई विशेष कामना रखते हैं। उनकी ये विशेष कामनायें अपने परिजन, समाज, सम्पत्ति, धन इत्यादि में हो सकती हैं। ये विशेष मोह ही उनकी मुक्ति में बाधक बनता है। प्रारम्भ में ऐसा व्यक्ति प्रेतयोनि में जाकर अपनी इच्छापूर्ति का प्रयास करता है। उसके परिजनों के द्वारा दिये जाने वाले कव्य को ग्रहण करके उसकी सन्तुष्टि होती है। वह अपने परिजनों के लिये 'पितर' होता है, तो अन्यों के लिये 'प्रेत'। अपनी कामना पूर्ण होने के पश्चात् उसकी मुक्ति हो जाती है और वह अगला जन्म प्राप्त कर लेता है। अनेक महान आत्मायें

अपने परिवार अथवा समाज के कल्याण के लिये प्रेतयोनि से पितरयोनि को प्राप्त करती हैं और वे पितृलोक में निवास करती हुई हमेशा अपने परिजनों का कल्याण करती हैं।

अनेक स्थितियों में जब कोई मृतक व्यक्ति की आत्मा किसी विशेष मोह में फंसे होने के कारण मुक्त नहीं हो पाती है, तो वह भटकती रहती है और अपनी कामनापूर्ति का प्रयास करती है। ऐसी स्थिति में यदि उसके परिजनों के द्वारा कव्य प्रदान नहीं किया जाये, तो उसकी क्षुधापूर्ति भी नहीं हो पाती। अतृप्ति के कारण वह पीड़ित होकर अपने परिजनों को श्राप देती है और उनकी अवनति का कारण बनती है।

किसी व्यक्ति के पितृयोनि में जाने के मुख्य कारणों में उसका अपने परिजनों से अथवा किसी अन्य से विशेष मोह होता है। यदि यह मोह आवश्यकता से अधिक हो, तो निश्चित रूप से ऐसा व्यक्ति मृत्यु के पश्चात् पितृयोनि को प्राप्त करता है।

एक युवक की जब नौकरी लगी तो वह अपने माता-पिता से अक्सर कहा करता था कि उन्हें एक बार अवश्य ही चारधाम की यात्रा करवायेगा। इस बारे में उसने कई बार कहा। एक बार वह अपने काम के सिलसिले में दिल्ली जा रहा था। रास्ते में दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गई। उसका शव घर लाया गया। विधि-विधान से उसकी अन्त्येष्टि कर दी गई। इसके कुछ समय बाद वह माता-पिता को सपने में दिखाई देने लगा। वह कुछ बोलता नहीं था, केवल गुम-सुम बना रहता था। प्रारम्भ में माता-पिता ने इसे सामान्य रूप में लिया कि दिन में उसे याद करने से वह सपने में आता है। काफी दिनों तक जब यह क्रम बना रहा तो उन्होंने इस बारे में अपने परिचित एक पण्डितजी से चर्चा की। पण्डित ने बताया कि यह विषय पितर से सम्बन्ध रखता प्रतीत होता है। उसने पूछा कि क्या आपके बेटे की ऐसी कोई इच्छा थी, जिसे वह पूरा करना चाहता था लेकिन पूरा कर पाने से पहले उसकी मृत्यु हो गई हो। याद करने पर उन्होंने बताया कि वह उन्हें चारधाम की यात्रा करवाना चाहता था लेकिन इससे पहले ही उसकी मृत्यु हो गई। तब पण्डितजी ने बताया कि आपके बेटे की आत्मा पितर योनि में भटक रही है, इसलिये इसकी मुक्ति के लिये आप दोनों चारधाम की यात्रा करें। कुछ समय के बाद उन्होंने चारधाम की यात्रा की। प्रत्येक पूजन के समय वे अपने बेटे के लिये मोक्ष की प्रार्थना करते। यात्रा सम्पन्न करके वापिस आने के एक सप्ताह बाद माँ के सपने में बेटा फिर दिखा, इस बार वह गुम-सुम नहीं, काफी प्रसन्न लग रहा था। इसके बाद वह फिर कभी सपने में नहीं आया। इसके अलावा पितर योनि में जाने का एक अन्य कारण भी हो सकता है। इसमें मृतक के परिजनों के द्वारा दु:ख प्रकट करने के कारण उस मृतक की आत्मा अपनी मुक्ति नहीं चाहती है और अपने पुराने अस्तित्व को छोड़कर नहीं जाना चाहती है। यदि यह मोह उस मृतक व्यक्ति में नहीं हो, तो निश्चित रूप से उसका अगला जन्म हो जाता है। इस प्रकार किसी मृतक व्यक्ति के पितृयोनि में जाने को लेकर कुछ

ऐसे तथ्य हैं, जो इस बात को निश्चित करते हैं कि वह पितृयोनि में जायेगा अथवा उस व्यक्ति की मुक्ति हो जायेगी:-

1. एक ऐसा व्यक्ति, जो युवा है, जिसका विवाह हो चुका है और उस पर अपने परिवार, माता-पिता इत्यादि के भरण-पोषण की जिम्मेदारी है, वह व्यक्ति किसी कारणवश अचानक मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, तो ऐसी स्थिति में उसके पितृयोनि में जाने को लेकर संशय रहता है, क्योंकि उसके सभी कार्य और जिम्मेदारियां जो अपने परिवार के प्रति थी, वे पूर्ण नहीं हो पायी, इसलिये वह इन कामनाओं में और मोह में फंसकर अपनी मुक्ति को बाधित करता है। ऐसे व्यक्ति की मुक्ति नहीं हो पाती। जब उसके परिजन अच्छी स्थिति में हो जाते हैं, तो उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं रहता, तब मृतक की आत्मा मुक्ति प्राप्त कर लेती है।

2. एक वृद्ध व्यक्ति, जिसकी मृत्यु पूर्ण आयु भोगने के पश्चात् हुई है, लेकिन उसके मन में अपने परिजनों के प्रति विशेष मोह था, वह मोह वृद्धावस्था में भी लगातार बना हुआ रहे, परिजनों के साथ ही उसका यह मोह अपने धन, सम्पत्ति इत्यादि के साथ भी जुड़ा रहे, तो ऐसे व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् पितृयोनि में जाने की सम्भावना रहती है।

3. कोई किशोर अथवा बालक, जिसकी मृत्यु अचानक किसी दुर्घटना में हो जाये, तो उसके माता-पिता इस स्थिति को स्वीकार नहीं कर पाते हैं। उनके द्वारा अत्यधिक दुःख प्रकट करने के कारण मृतक की जीवात्मा का मोह अपने माता-पिता से जुड़ा रहता है और मुक्त नहीं होने के कारण वे पितृयोनि में चले जाते हैं।

4. किसी व्यक्ति की मृत्यु ऐसी स्थिति में हुई हो, जिसे वह स्वीकार नहीं कर पाता। अनेक बार हत्या, जालसाजी और विभिन्न स्वार्थों के कारण किसी व्यक्ति को जान से मार दिया जाता है, तब उस मृतक की जीवात्मा की बदले की भावना के कारण मुक्ति नहीं हो पाती है। इस स्थिति में वह अपनी मृत्यु का कारण बनने वाले दोषियों को सजा देने के पश्चात् अगले जन्म को प्राप्त करता है।

5. अनेक बार ऐसे व्यक्ति जो अपने समाज, परिवार, नगर इत्यादि का कल्याण चाहते हैं और इसी मोह में उनकी मृत्यु हो जाती है, इस स्थिति में आत्मा मुक्ति का मार्ग अपनाने की अपेक्षा पितृयोनि में जाकर अपनी इच्छाओं की पूर्ति करती है और अपने कार्य को मृत्यु के पश्चात् भी जारी रखने का प्रयास करती है।

उपरोक्त के अतिरिक्त भी अनेक ऐसी स्थितियां होती हैं, जिनमें किसी मृतक का पितृयोनि में जाना एक प्रमुख कारण बनता है। विशेष रूप से मोह ही वह कारण होता है, जो व्यक्ति की मुक्ति में बाधक होता है। इस मोह के पृथक्-पृथक् रूप होते हैं जिनका वर्णन ऊपर किया गया है। अनेक बार उपरोक्त स्थिति में मरने वाले व्यक्ति की जीवात्मा भी मुक्ति को प्राप्त कर लेती है। उसका मुख्य कारण यह होता है कि इन जीवात्माओं ने

अपने जन्म-जन्मान्तर में जो कर्म किये हैं, वे उसकी मुक्ति में सहायक सिद्ध हो जाते हैं। जीवात्मा कर्मों के बंधन से जब तक मुक्त नहीं होती है, तब तक वह विभिन्न जन्म-जन्मान्तरों में तथा प्रेतयोनि, पितृयोनि इत्यादि में भटकती रहती है। जहाँ कर्मों की शून्यता आ जाये अर्थात् कर्मों के बंधन से मुक्त हो जाये, वहीं उस जीवात्मा का मोक्ष हो जाता है।

इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए ही सनातन धर्म में किसी व्यक्ति के जीवन को जीने के श्रेष्ठ साधन बताये हैं, जिनमें ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास के रूप में वे चार आश्रम हैं, जिनके अनुसार यदि व्यक्ति अपना जीवन जीये तो निश्चित रूप से उसकी गति होती है। वानप्रस्थ के पश्चात् अपने कार्यों से मुक्त होने के कारण जब व्यक्ति संन्यास आश्रम में प्रवेश करता है, तो यह उसके जीवन का एक नया अध्याय प्रारम्भ हो जाता है। वह मातृ ऋण, पितृ ऋण और ऋषि ऋण से मुक्त होकर ईश्वर की आराधना में लग जाता है। उसे मृत्यु का भय भी नहीं रहता, बल्कि मृत्यु का अर्थ इस जन्म से मुक्ति को लेकर होता है। निर्धारित की गई ये परम्परायें व्यक्ति के मोक्ष का कारण बनती हैं, हालांकि वर्तमान में इन परम्पराओं का पालन करना बहुत ही कठिन कार्य है। इसी कारण मृत्यु के पश्चात् मुक्ति प्राप्त नहीं होने के कारण व्यक्ति प्रेतलोक अथवा पितृलोक को प्राप्त करते हैं। हिन्दू धर्म में व्यक्ति की मृत्यु हो जाने के पश्चात् भी उसके परिजनों को यह निर्देश दिया जाता है कि वे उसकी मुक्ति के मार्ग को प्रशस्त करें, उसे श्राद्ध के द्वारा कव्य प्रदान करें और उसकी मुक्ति के लिये विभिन्न प्रकार की प्रार्थनायें करें। यदि हम अपने इस कार्य को पूरी तत्परता एवं जिम्मेदारी के साथ करें, तो यह निश्चित है कि हमारे परिवार में मृत्यु को प्राप्त होने वाला कोई भी परिजन प्रेतयोनि अथवा पितृयोनि में नहीं जायेगा, वरन् वह मुक्ति को प्राप्त करेगा।

इससे सम्बन्धित एक तथ्य यह भी विचारणीय है कि व्यक्ति मुक्ति को प्राप्त करेगा अथवा नहीं, यह उसके पूर्व कर्मों के द्वारा निर्धारित होता है। व्यक्ति पूर्ण रूप से अपने कर्मबंधन के जाल में फंसा हुआ है। वह आज जो भी अच्छे अथवा बुरे कर्म कर रहा है, वे उसके आने वाले जीवन को नहीं, वरन् अनेक जन्मों को प्रभावित करते हैं। इस तथ्य को अनेक शोध कार्यों के द्वारा परखा गया है, जिसमें व्यक्ति की मुक्ति उसके पूर्व जन्म कर्मों के कारण ही प्रभावित हुई है। इसलिये अपने कर्मों में पवित्रता लाना आवश्यक है। कर्मबंधनों को काटने के लिये श्रीमद्भगवतगीता, श्रीमद्भागवतपुराण जैसे ग्रंथों का अध्ययन अथवा श्रवण करना आवश्यक है। इनके द्वारा प्राप्त होने वाले ज्ञान से कोई भी व्यक्ति मुक्ति को प्राप्त कर जाता है।

पितृदोष और प्रेतदोष में अन्तर

पितृदोष और प्रेतदोष दोनों ही अदृश्य बाधायें हैं, हालांकि इन दोनों प्रकार की बाधाओं में बहुत अन्तर होता है, लेकिन अनेक व्यक्ति इस अन्तर को समझ नहीं पाते हैं और वे पितृदोष को ही प्रेतदोष समझकर उसका उपचार प्रेतदोष की मुक्ति के उपाय से करने लग जाते हैं। इससे न तो पितृदोष दूर होता है और न ही किसी प्रकार का लाभ होता है। इसलिये पितृदोष और प्रेतदोष को समझना आवश्यक है, तब ही इन दोनों की समस्याओं को जानकर इसका उपचार किया जा सकेगा।

पितृदोष से तात्पर्य ऊर्ध्वगति अथवा अधोगति के पितरों का श्राप होता है, वहीं प्रेतबाधा से तात्पर्य किसी मृतक की आत्मा का विशेष प्रयोजन से दिया गया श्राप होता है। श्राप के स्थान पर कई बार अपने विशेष स्वार्थ के कारण भी प्रेतात्मायें प्रेतबाधा का कारण बनती हैं। इस स्थिति में प्रेत व्यक्ति के शरीर पर अधिकार कर लेते हैं और उनके द्वारा अपनी मनचाही इच्छायें पूरी करते हैं। पितृदोष और प्रेतदोष में पृथक्-पृथक् प्रकार के लक्षण प्रकट होते हैं। प्रारम्भ में यह दोनों ही दोष एक जैसे लगते हैं, परन्तु धीरे-धीरे ऐसी स्थितियां उत्पन्न होने लगती हैं, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यह अदृश्य बाधा पितृदोष है अथवा प्रेतदोष? पितृदोष सम्बन्धी कुफलों को जानना कठिन हो जाता है, क्योंकि वे अपने परिजनों का बड़ा अहित नहीं करते। उनके श्राप के कारण जीवन में आर्थिक बाधायें उत्पन्न होना, कार्यक्षेत्र में समस्या उत्पन्न होना, परिजनों में व्यापक वैचारिक मतभेद रहना जैसी समस्यायें उत्पन्न होने लगती हैं, हालांकि इन समस्याओं के आधार पर पितृदोषों को भांप लेना आसान नहीं होता। प्रेत अवश्य ही अपनी अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति के लिये किसी स्त्री-पुरुष, युवक अथवा किशोर आदि के शरीर पर अधिकार करके उन्हें अनेक प्रकार के कष्ट देते हैं किन्तु पितर ऐसा नहीं करते हैं। पितर अपने परिजनों, वंशजों से विशिष्ट कार्यों को करवाने हेतु उन्हें विवश करने के लिये उनके कार्यों में बाधायें उत्पन्न करते हैं। पितर अपने वंशजों से किसी कारण से रुष्ट होने पर भी उन्हें कष्ट दे सकते हैं किन्तु वे प्रेतों की भांति किसी के शरीर पर अधिकार करने का प्रयास नहीं करते हैं। जब कभी उनका आवाहन किया जाता है, तब वे अपने किसी परिजन के शरीर में आकर पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देकर वापिस चले जाते हैं। किसी के शरीर में वे अधिक समय तक नहीं रुकते हैं।

प्रेतबाधा होने पर घर में कुछ समय के पश्चात् ही विचित्र प्रकार की घटनायें घटित होने लगती है। प्रेतबाधा जब किसी व्यक्ति को परेशान करती है, तो वह व्यक्ति प्रारम्भ में बहुत बीमार रहने लगता है। शीघ्र ही उसकी विचित्र प्रकार की गतिविधियों से यह

आभास हो जाता है कि या तो वह मानसिक रूप से रुग्ण है अथवा प्रेताधिकार में आ चुका है। मानसिक रूप से रुग्ण व्यक्ति सामान्यत: दूसरों को नुकसान नहीं पहुँचाते, परन्तु प्रेताधिकार में आया हुआ व्यक्ति किसी को भी नुकसान पहुँचा सकता है। वह स्वयं के शरीर को प्रताड़ित करता है और दूसरों को भी शारीरिक पीड़ा पहुँचाता है।

प्रेतबाधा से ग्रस्त व्यक्ति के शरीर में अचानक परिवर्तन होने लगते हैं। आँखें वीभत्स दिखाई देती हैं, शरीर का रंग काला पड़ने लग जाता है, आँखों के नीचे काली झाइयां पड़ जाती हैं तथा शरीर एकदम दुबला-पतला होने लग जाता है। घर में रहने में ऐसे व्यक्ति को सदैव बेचैनी होने लगती है। उसकी भोजन की मात्रा बहुत अधिक हो जाती है। खाने-पीने का ध्यान नहीं रहता तथा अपशिष्ट पदार्थ भी खाने लगता है। प्रेतबाधा का फल अनेक बार इस रूप में भी प्राप्त होता है कि वह किसी व्यक्ति के शरीर में प्रवेश नहीं करती, लेकिन घर में विलक्षण घटनायें होने लगती हैं। दरवाजे अपने आप खुल जाते हैं अथवा बंद हो जाते हैं। रखी हुई वस्तुयें स्वत: गिर जाती हैं, नल अपने आप खुल जाते हैं। खिड़कियों के शीशे टूट जाते हैं। घर में जली हुई लाइटें अपने आप खराब हो जाती हैं। घर में सदैव दुर्गंध फैली रहती है। उस घर में रहने वाले सभी व्यक्तियों में शारीरिक विकार उत्पन्न होने लगते हैं। हमेशा सिरदर्द की समस्या बनी रहती है। ऐसा तब होता है, जब उस घर में किसी प्रेतात्मा का निवास हो जाये और वह आपको वहाँ से हटाना चाहती हो।

पितृदोष में ऐसा नहीं होता। यदि कोई अधोगति वाले पितर आपके मकान में निवास कर रहे हों, तो वह इस प्रकार की परेशानी उत्पन्न नहीं करते हैं। यह अवश्य है कि वे अपनी उपस्थिति का अहसास कई बार करवा देते हैं। अत्यधिक रुष्ट होने पर प्रेतदोष जैसी समस्यायें कभी-कभी हो जाती हैं, परन्तु उनका रूप इतना भयंकर नहीं होता। पितृदोष में मृतक परिजनों की जीवात्माओं का शरीर पर अधिकार होने जैसी घटनायें घटित नहीं होती हैं। जब पितरों के निमित्त जागरण करवाया जाता है, तो पितरों की आत्माओं का आवाहन भी किया जा सकता है, उस समय अवश्य कुछ निश्चित समय के लिये वे किसी परिजन के शरीर में आ जाती हैं।

पितृदोष और प्रेतदोष, दोनों ही अदृश्य बाधायें हैं। पितृदोष होने पर पितरों को प्रसन्न करने से यह बाधा धीरे-धीरे करके समाप्त हो जाती है। पितरों के निमित्त नियमित रूप से श्राद्ध, पिण्डदान, तर्पण इत्यादि कर्म किये जायें, तो पितृदोष दूर हो जाता है और पितरों के द्वारा व्यक्ति को आशीर्वाद प्राप्त होता है तथा उसकी भौतिक कामनायें भी पूर्ण होती हैं। वहीं प्रेतदोष होने पर उसे दूर करना ही असम्भव हो जाता है। चाहे कितने ही पूजा-पाठ किये जायें, इसका कोई लाभ दिखाई नहीं देता, केवल बलात् शक्ति से ही उसे दूर किया जा सकता है। प्रेत को प्रसन्न करके प्रेतदोष से मुक्ति पाना असम्भव है।

प्रेत पीड़ा से मुक्ति के जो उपाय किये जाते हैं, वे भी अत्यधिक कष्टसाध्य होते हैं। जब प्रेतबाधा दूर होती है, तो उससे पहले व्यक्ति को अत्यधिक समस्याओं से गुजरना पड़ता है, जबकि पितरों के निमित्त शांति हेतु उपाय करने पर पितरदोष दूर होने लगते हैं, तो मन में प्रसन्नता का भाव उत्पन्न होता है और कार्यों में जो बाधायें आती हैं, वे दूर होने लगती हैं। इसके बाद सभी कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न होने लग जाते हैं। घर में होने वाली अवांछित घटनायें समाप्त हो जाती हैं। सभी परिजनों के मध्य सद्भावना और स्नेह बढ़ता है।

प्रेतों के विषय में एक विशेष बात देखने में आती है कि जो प्रेत किसी के शरीर पर अधिकार करके अपनी विषय वासनाओं को पूरा करने का प्रयास करते हैं, वे ऐसा करते समय उस व्यक्ति को काफी पीड़ा भी देते हैं जिस पर उन्होंने अधिकार किया होता है। प्रेत कभी चलकर किसी व्यक्ति के पास आकर उसके शरीर पर अधिकार नहीं करते हैं। ऐसे प्रेत किन्हीं विशिष्ट स्थानों पर छिपे रहते हैं। अगर वहाँ से निकलने वाला कोई व्यक्ति इन प्रेतों को उत्तेजित अथवा क्रोधित कर दे तो वे तत्काल उसके शरीर पर अधिकार कर लेते हैं। आमतौर पर वीराने में बरगद वृक्ष पर, कब्रिस्तान के पास, किन्हीं विशेष पीरों की मजारों के पास इनका निवास बताया जाता है। प्रेत तीव्र गंध से जल्दी उत्तेजित होते हैं। इन स्थानों पर कोई तीव्र गंध का इत्र, तेल आदि लगा कर जाये अथवा उस स्थान के पास से निकले तो वहाँ छिपे प्रेतों में से कोई उस पर अपना अधिकार कर लेता है। अधिकांशत: महिलायें अथवा युवतियां इस स्थिति में प्रेतों के शिकंजे में अधिक आती हैं। दूसरी स्थिति में प्रेतों के स्थानों पर मल-मूत्र का त्याग करके गंदगी फैलाई जाती है, तब वे प्रेत क्रोधित होकर ऐसा करने वाले के शरीर पर अपना अधिकार कर लेते हैं। ऐसे शिकारों में पुरुषों एवं युवकों की संख्या अधिक हाती है। यह भ्रामक धारणा है कि किसी के शरीर पर प्रेत के द्वारा अधिकार करने के तत्काल बाद ही उत्पात करना प्रारम्भ कर देते हैं। अपना प्रभाव दिखाने में अथवा ऐसा कहें कि उसके शरीर पर पूरी तरह से अधिकार करने में 8-10 दिन से लेकर एक महीने तक का समय लगा सकता है। इसके बाद ही समय-समय पर प्रेत उस व्यक्ति को कष्ट देने लगता है। इसे एक प्रकार का दौरा कह सकते हैं। जब प्रेत का प्रभाव रहता है, तब पीड़ित व्यक्ति असामान्य व्यवहार करने लगता है, अनर्गल प्रलाप करता है, दूसरों को अपशब्द कहता है, सामान उठाकर फेंकने लगता है। इस समय उसके शरीर में इतनी शक्ति आ जाती है कि उसे सम्भालने के लिये चार-छह व्यक्तियों की आवश्यकता रहती है। प्रेत का प्रभाव समाप्त होते ही वह सामान्य अवस्था में आ जाता है। आवेश के समय अगर अपने शरीर को चोट पहुँचाई होती है तो उसकी पीड़ा का आभास तो अवश्य होता है किन्तु उस समय उसने क्या किया, इसका ज्ञान नहीं होता है। प्रेत बाधा से मुक्ति के लिये अत्यन्त

कठोर प्रयासों की आवश्यकता रहती है। प्रेतमुक्ति के लिये कुछ विशेष स्थान भी हैं जहाँ जाकर इस समस्या से मुक्ति मिल जाती है।

पितृदोष में यह स्थिति देखने में प्राय: नहीं आती है। जैसा कि मैंने पहले स्पष्ट किया है कि पितर भी प्रेत ही होते हैं लेकिन इनकी प्रकृति बिलकुल भिन्न होती है। इन पितरों का केवल अपने वंशजों के साथ ही सम्बन्ध देखा जाता है। किसी व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् उसका सूक्ष्म शरीर अथवा जीवात्मा जब अपनी निश्चित यात्रा पर नहीं जा पाती है तो वह इसी लोक में रुक कर प्रेत रूप में निवास करने लगती है, यहाँ रुकने का इनका विशिष्ट उद्देश्य होता है। इनकी कुछ अतृप्त कामनायें एवं इच्छायें होती हैं, कुछ विशेष कार्य बाकी रह जाते हैं, उनको यह अपने वंशजों के द्वारा करवाने का प्रयास करते हैं। चूंकि इनके पास किसी कार्य को प्रत्यक्ष रूप से करने के लिये स्थूल शरीर नहीं होता है, इसलिये अपने वंशजों के कार्यों में अवरोध उत्पन्न करके, उनके लिये अनावश्यक रूप से समस्यायें खड़ी करके वे उन्हें विशिष्ट कार्यों को करने के लिये बाध्य करती हैं। इन पितर आत्माओं में भावनाओं की कमी होती है अथवा कहें कि इनमें भावनायें होती ही नहीं हैं, इसलिये जब ये अपने वंशजों को पीड़ा पहुँचाती हैं तो इन पर कोई प्रभाव नहीं आता है। जब इनकी इच्छायें पूरी हो जाती हैं, तब वे अपने वंशजों को पर्याप्त रूप से सुख-समृद्धि का आशीर्वाद देकर पितर लोक को लौट जाती हैं। अगर कोई व्यक्ति पितरों को प्रसन्न करने के लिये कुछ विशेष उपाय करता रहे और प्रतिवर्ष श्रद्धा सहित श्राद्ध करे तो पितरदोष की समस्या प्राय: नहीं होती है। अगर इसको स्थूल रूप से स्पष्ट करना हो, तो इतना ही लिखना पर्याप्त होगा कि प्रेत शारीरिक रूप से प्रताड़ित करते हैं जबकि पितृदोष में व्यक्ति के कार्यों में बाधायें आने लगती हैं, पितृदोष से पीड़ित व्यक्ति उसे प्राप्त होने वाले सुखों का भोग इसी कारण से नहीं कर पाता है।

पितृदोष का निवारण केवल पितरों को सन्तुष्ट करके ही किया जा सकता है। पितृदोष एक बार होने के पश्चात् दुबारा नियमित पितृकर्म करने पर नहीं होता, वहीं प्रेतदोष एक बार दूर करने के पश्चात् भी दुबारा होने की आशंका रहती है। इस प्रकार अनेक उदाहरणों से यह स्पष्ट हो चुका है कि पितृदोष और प्रेतदोष में काफी अन्तर होता है। इससे सम्बन्धित एक घटना का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है, जिससे आप समझ सकते हैं कि पितृदोष को पितर कृपा प्राप्ति से ही दूर किया जा सकता है, न कि जबर्दस्ती उनकी आत्माओं को वश में करके।

श्यामचरण के घर में अचानक से विचित्र घटनायें उत्पन्न होने लगीं। उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति पर बहुत विपरीत प्रभाव दिखाई देने लगा था। घर में भी कभी-कभी यह अहसास होता था कि कोई अदृश्य शक्ति उनके घर में उपस्थित थी। ऐसी स्थिति में उन्होंने एक तांत्रिक को बुलाकर अपने घर को दिखाया। तांत्रिक ने आकर

घर में देखा, तो उसे एक प्रेत आत्मा के वहाँ होने का अंदेशा हुआ। अपने विशिष्ट प्रयासों के द्वारा उसने उस प्रेतात्मा को कैद किया और अपने साथ ले गया। उसने उस प्रेतात्मा को एक निर्जन स्थान ले जाकर बंदी बनाकर रख दिया। इस प्रकार की क्रिया करने के पश्चात् श्यामचरण का कुछ समय तो अच्छा बीता, लेकिन लगभग तीन महीने पश्चात् ही जीवन में पुन: अत्यधिक समस्यायें होने लगीं। उन्होंने दुबारा उस तांत्रिक से सम्पर्क किया। तांत्रिक ने फिर से वही कार्य किया, ऐसा करने पर पुन: तीन महीने के लिये सब कुछ अनुकूल हो गया, लेकिन इस बार तीन महीने बीत जाने पर श्यामचरण का जीवन नारकीय से भी अधिक भयावह हो गया। ऐसी स्थिति में वह एक दिन मेरे परिचित के माध्यम से मेरे पास आया। मैंने उसकी जन्मपत्रिका का अध्ययन करने के पश्चात् देखा कि श्यामचरण किसी प्रेतबाधा से पीड़ित नहीं, वरन् पितृदोष से पीड़ित थे और जो अदृश्य शक्ति उनके घर में विद्यमान थी, वह उनके कोई पूर्वज ही थे। यह जानकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ और मैंने उनको पितृदोष के निवारणार्थ कुछ महत्त्वपूर्ण उपाय बताये।

लगभग तीन महीने तक निरन्तर उपाय करने के पश्चात् श्यामचरण को राहत प्राप्त होने लगी और जीवन धीरे-धीरे व्यवस्थित होने लगा। जब मेरी दुबारा उनसे मुलाकात हुई, तो वे काफी प्रसन्न दिखाई दे रहे थे। मैंने उनको पितृदोष निवारण वाले उपाय निरन्तर करते रहने के लिये कहा, जिससे लगभग एक वर्ष बाद उनका जीवन सामान्य हो गया। इस घटना से मुझे यह प्रेरणा मिली कि हर व्यक्ति को यह जानकारी होनी चाहिये कि प्रेतबाधा और पितृबाधा में क्या अन्तर होता है? यदि आप अपने पितरों को प्रेत समझकर कोई उपाय कर रहे हैं अथवा करवा रहे हैं, तो इससे आपको लाभ के स्थान पर हानि ही होगी।

विशेष- यह पुस्तक पूर्ण रूप से पितरों पर आधारित है, इसलिये प्रेतात्माओं के बारे में सन्दर्भवश ही उल्लेख किया गया है। यदि आप प्रेतात्माओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के इच्छुक हैं, तो **निरोगी दुनिया प्रकाशन** द्वारा प्रकाशित पुस्तक **ऊपरी बाधा : पीड़ा मुक्ति के दुर्लभ उपाय** अवश्य पढ़ें।

क्यों होता है- पितृदोष ?

पितृदोष एक अदृश्य बाधा है। यह किसी भी धर्म के व्यक्ति के जीवन में कभी भी घटित हो सकती है। पितृदोष का सीधा तात्पर्य है आपके पूर्वजों की असन्तुष्टि और उनके द्वारा दिया गया श्राप। यहाँ सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि किसी भी व्यक्ति के जीवन में पितृदोष उत्पन्न क्यों होता है? इस विषय को जानने के लिये पितृदोष होने की विभिन्न उन परिस्थितियों को जानना पड़ेगा, जिनके कारण अनेक लोग पितृदोष से पीड़ित हुए हैं। सभी व्यक्तियों को किसी एक ही कारण से पितृदोष हो, यह आवश्यक नहीं है। विभिन्न लोगों को अन्यान्य कारणों से पितृदोष की पीड़ा भोगनी पड़ती है। उनमें से ही कुछ प्रमुख पितृदोष के कारणों को यहाँ स्पष्ट किया जा रहा है।

पितृदोष का प्रमुख कारण पितरों की असन्तुष्टि है, लेकिन वे असन्तुष्ट क्यों होते हैं, इसका मुख्य कारण है कि मोह में फंसे उन पितरों को परिजनों के द्वारा स्मरण नहीं करना अथवा परिजनों का अनुचित व्यवहार अर्थात् ऐसा व्यवहार जो उनके पूर्वज पसंद नहीं करते थे। अनेक लोगों के मन में यह शंका उत्पन्न होती है कि पूर्वकाल में न तो यह दोष इतना व्यापक था और न ही इससे अधिक लोग पीड़ित होते थे, फिर वर्तमान में अचानक पितृदोष के कारण इतने लोगों के जीवन में समस्यायें क्यों आने लगी हैं? क्यों यह दोष वर्तमान में इतना अधिक भयानक हो गया कि प्रत्येक पीड़ित व्यक्ति यह सोचता है कि उसे पितृदोष के कारण ही जीवन में इतनी अधिक असफलताओं का सामना करना पड़ रहा है?

प्राचीनकाल में हमारी सामाजिक व्यवस्था इस प्रकार की थी कि एक गृहस्थ व्यक्ति जब अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त हो जाता था अर्थात् अपनी सभी संतानों का विवाह कर देता, उसके पश्चात् वह वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश कर लेता। वानप्रस्थ आश्रम का तात्पर्य यह होता था कि वह अपने परिवार से अलग तो रहता था, लेकिन समय-समय पर परिजनों के पास जाकर उनके बारे में जानकारी भी लेता रहता था। वानप्रस्थ आश्रम में प्रवास के दौरान व्यक्तियों में अपने परिवार के प्रति मोह की भावना इतनी अधिक नहीं रहती थी और जब वे संन्यास आश्रम में प्रवेश करते, तो उनका एक नया जीवन प्रारम्भ हो जाता था। ऐसे में उनका नया जन्म होता और वे ईश्वर आराधना में अपना शेष जीवन अर्पित कर देते थे। सनातन धर्म ही वह महान धर्म है, जो एक व्यक्ति के लिये जीवन के सभी कर्त्तव्यों को पूर्ण कराने के पश्चात् उसके मोक्ष के मार्ग को खोल देता है, परन्तु यह तभी सम्भव है, जब इसके नियमों के अनुसार कोई व्यक्ति चले। संन्यास आश्रम के पश्चात् व्यक्ति का अपने परिवार से बिलकुल मोह समाप्त हो जाता और वह मृत्यु के समय केवल ईश्वर की आराधना में तत्पर रहता, ऐसे में उसका प्रेत अथवा पितर योनि में जाना सम्भव ही नहीं हो सकता था। इसलिये वह अपने परिवार के

लिये पितृदोष का कारण नहीं बनता था। वर्तमान में इस परम्परा का निर्वहण बहुत कम लोगों के द्वारा किया जाता है। अधिकतर लोग वृद्धावस्था में भी अपने परिजनों और सम्पत्ति से मोह बनाये रखते हैं। इस स्थिति में जब उनकी मृत्यु हो जाती है, तब भी यह मोह बना रहता है। बाद में यही मोह पितृदोष का कारण बनता है, क्योंकि वे अपने परिजनों से जो आकांक्षा रखते हैं, वह पूर्ण हो यह आवश्यक नहीं है।

प्राचीनकाल में देवी-देवताओं की पूजा-उपासना के साथ ही कुलदेवी, कुलदेवता, ग्रामदेवता तथा पितरों की पूजा-उपासना का क्रम निर्धारित रहता था। नित्य सभी देवी-देवताओं के साथ पितरों के निमित्त भी पूजन-अर्चन किया जाता था। इससे किसी व्यक्ति के जो भी पितर थे, वे उनसे सन्तुष्ट रहते थे। इस क्रम को पितृयज्ञ के रूप में जाना जाता था। पितरों को नित्य तर्पण देना अनिवार्य समझा जाता था। वर्तमान में व्यस्तता एवं अन्य कारणों से व्यक्ति जब अपने रिश्तेदारों और पड़ोसियों से मिलने तक का समय ही नहीं निकाल पाता तो नित्य पूजन कर्म के लिये उसके पास कहाँ से समय होगा? अपने कार्यक्षेत्र में बढ़ती व्यस्तताओं के कारण यह परम्परा समाप्त हो चुकी है। अब यह ज्ञान केवल प्राचीन ग्रंथों के उल्लेख के रूप में सीमित रह गया है। पितरों की तृप्ति के नाम पर केवल एकोद्दिष्ट और पार्वण श्राद्ध जैसी क्रियायें सम्पन्न की जाती हैं। उनमें भी श्रद्धा हो, यह आवश्यक नहीं है। ऐसे में पितरों के प्रति जो कर्म पूर्ण रूप से किये जाने चाहिये, वे नहीं होते हैं। इससे पितर असन्तुष्ट हो जाते हैं और श्राप देते हैं, जिससे पितृदोष उत्पन्न होता है। पितृदोष ज्ञात होने के पश्चात् भी लोग पूर्ण तत्परता के साथ अपने पितरों की सन्तुष्टि नहीं कर पाते हैं। यही कारण है कि वे लगातार पितृदोष से पीड़ित रहते हैं और उनके जीवन के सुख इससे बाधित होने लगते हैं।

परिजनों द्वारा स्मरण नहीं किया जाना पितृदोष का एक प्रमुख कारण है। अधिकतर व्यक्तियों का मोह अपने माता-पिता एवं पूर्वजों से अधिक उनकी सम्पत्ति में रहता है। जब उनकी मृत्यु हो जाती है, तो वह उत्तराधिकारी के रूप में उनकी सम्पत्ति तो प्राप्त कर लेते हैं, परन्तु अपने उन कर्तव्यों को भूल जाते हैं, जो अपने पूर्वजों के प्रति होने चाहिये। मृत्यु के पश्चात् अपने वंशजों के मोह में फंसे पूर्वज उनसे यह आशा रखते हैं कि वह उनकी सभी इच्छाओं को पूर्ण करें। अनेक स्थितियों में तो यह भी देखा गया है कि व्यक्ति अपने पूर्वजों के क्रियाकर्म में भी पूरी तत्परता नहीं रखते हैं और लापरवाही के कारण उनके पूर्वजों की आत्मा पितृयोनि में चली जाती है। इससे पितर प्रसन्न नहीं होते हैं और क्षुब्ध होकर कष्ट एवं समस्यायें उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं। अनेक बार अति व्यस्तता के कारण व्यक्ति अपने पूर्वजों का श्राद्ध तक नहीं कर पाते हैं। यदि श्राद्धादि कर्म करवाये जाते हैं तो भी उसमें कोई त्रुटि रह जाये, तो वह पितृदोष का कारण बनती है। इसलिये पूर्ण रीति-रिवाज और नियम के अनुसार श्राद्ध करने के साथ ही उनकी प्रिय वस्तुओं का दान भी नियमित रूप से करते रहना चाहिये। जब कोई व्यक्ति अपने पितरों को सन्तुष्ट रखने का प्रयास करते हैं, तो पितर भी उसकी सभी इच्छाओं को पूरा करने के मार्ग प्रशस्त करते हैं। जब भी घर में कोई मांगलिक कार्य सम्पन्न हो अथवा

विवाह आदि कोई विशेष कार्य हो, तो ऐसे समय में अपने सभी पूर्वजों को याद करना चाहिये और उनके प्रति नांदि श्राद्ध सम्पन्न करना चाहिये। ऐसे समय में यदि पितरों को याद नहीं किया जाये, तो वे बहुत अप्रसन्न होते हैं और पितृदोष जैसी समस्या भी उत्पन्न कर सकते हैं। अपने पूर्वजों के स्मरण का तात्पर्य यह नहीं है कि आप उन्हें दिन-रात याद करें, वरन् दिन में एक बार जैसे भगवान को याद करते हैं, वैसे उन्हें स्मरण कर उनका आशीर्वाद लें और श्राद्ध से सम्बन्धित सभी महत्त्वपूर्ण तिथियों पर उनका श्राद्धकर्म सम्पन्न करें। ऐसा कार्य करने वाले व्यक्ति को पितर कदापि किसी प्रकार का कष्ट अथवा पीड़ा नहीं देते हैं।

परिजनों का अनुचित व्यवहार पितृबाधा का एक प्रमुख कारण है। ऐसा व्यवहार कई प्रकार की समस्याओं से सम्बन्धित है। सामान्यत: किसी परिवार की परम्पराओं के विरुद्ध जब कोई व्यक्ति आचरण करने लगता है, तो उसके पितर उससे नाराज हो जाते हैं। अनेक परिवारों में शराब सेवन और माँस भक्षण नहीं किया जाता है। ऐसे परिवार में कोई सदस्य अचानक इन सबका सेवन करने लगे और उसके पूर्वज पितृयोनि में हों, तो वे इससे अत्यधिक अप्रसन्न होते हैं। इसके अतिरिक्त व्यक्ति के अनैतिक कर्मों से भी पितर अप्रसन्न हो जाते हैं। अप्रसन्न होकर घर में नुकसान पहुँचाने लगते हैं। इसका एक उदाहरण मुझे ज्ञात हुआ था। एक घर में पितृदोष की समस्या काफी समय से चल रही थी। उस घर में पितृदोष इतना घातक था कि श्राद्ध के दौरान जब गोबलि, श्वानबलि इत्यादि निकलवायी जाती थी, तो गाय और कुत्ता उस भोजन को ग्रहण ही नहीं करते थे। यदि जबरदस्ती मुँह में भी डाला जाये, तो वे उसे निकालकर उससे दूर चले जाते। पितृदोष के कारण उस व्यक्ति का आर्थिक पक्ष बहुत अधिक प्रभावित हो रहा था, व्यवसाय चौपट हो गया था। उसे अनेक बार यह अनुभव होता था कि उसके घर में कोई न कोई अदृश्य बाधा है, जिसके कारण यह समस्यायें हो रही हैं। जब उनकी समस्या पर गहनता से विचार किया गया तो यह ज्ञात हुआ कि अपने पुत्र के द्वारा किये जाने वाले अनैतिक कार्यों से पितर अत्यधिक नाराज थे और इस कारण अहित कर रहे थे। उस व्यक्ति ने जब अपने कर्मों में सुधार किया अर्थात् जो वह अनैतिक कार्य कर रहा था, उसे करना बंद किया और सीधे रास्ते चलने लगा, तो धीरे-धीरे उनके घर में खुशहाली लौट आयी। अब श्राद्ध के दौरान भी घर में शांति रहती और गाय, कुत्ता इत्यादि सभी श्राद्ध का भोजन ग्रहण कर लेते। परिजनों द्वारा अनुचित व्यवहार अनेक बार पितर किसी न किसी रूप में प्रकट भी कर देते हैं। पितरों के आवाहन के दौरान वे किसी के शरीर में आकर परिजनों के द्वारा की जा रही गलतियों को बताते हैं और उन्हें सुधारने के लिये कहते हैं। इसलिये कोई भी ऐसा अनैतिक कार्य नहीं करना चाहिये, जिसके कारण घर के नियम और परम्पराओं पर विपरीत प्रभाव आये।

पितरों का पीड़ित होना पितृदोष का एक प्रमुख कारण माना जाता है। यहाँ पितरों के पीड़ित होने से तात्पर्य है, जब किसी व्यक्ति के पूर्वज पितृयोनि में जाकर उसमें विचरण करते हैं, तो किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा अथवा परिवार में ही उन पितरों को

किसी न किसी कर्म के द्वारा बंधक बना लिया जाता है। इसका एक मुख्य कारण यह भी है कि जब व्यक्ति अपने पितरों के प्रति श्रद्धा नहीं रखता है, तो वे बलहीन हो जाते हैं और ऐसे में उन्हें कोई भी बांध सकता है। जब पितरों को किसी के द्वारा बांध लिया जाता है और वे पीड़ित होते हैं, तो इस दौरान घर में अत्यधिक विपदायें आने लगती हैं। परिजनों के मध्य वैचारिक मतभेद रहते हैं। घर में कोई भी कार्य पूर्ण संतुष्टि के साथ नहीं हो पाता। आर्थिक समस्यायें उत्पन्न होने लगती हैं। ऐसी स्थिति में उस पीड़ित पितर का मुक्त होना बहुत जरूरी होता है। इस प्रकार का पितृदोष मैंने एक परिवार का सुना था। एक व्यक्ति के चार पुत्र थे। सबसे छोटे वाले पुत्र ने किशोरावस्था के दौरान किसी बात से परेशान होकर आत्महत्या कर ली थी। यह परिवार संयुक्त रूप से अपने अन्य कुटुम्बियों के साथ रहा करता था। आत्महत्या करने के पश्चात् वह छोटा पुत्र पितृयोनि में चला गया था। यह बात उस परिवार के मुखिया को मालूम नहीं थी। घर में होने वाली कुछ घटनाओं को देखकर उनके ही कुटुम्बजनों में से किसी को यह ज्ञात हो गया कि वह किशोर पितृयोनि में है। इस तथ्य को जानने के पश्चात् उसने इस विषय के जानकार के साथ मिलकर उस पितर को अपने घर में स्थापित कर लिया और विभिन्न साधनों से सन्तुष्ट करके उससे लाभ लेने का प्रयास किया। उस व्यक्ति को जब यह ज्ञात हुआ कि उसका छोटा बेटा पितरों में है और उसे उसके ही कुटुम्ब के ही किसी व्यक्ति ने बांधकर अपने घर में बैठा लिया है, तो उसने अपने पितर को छुड़वाकर अपने घर में लाने के लिये प्रयास किया। इस प्रयास के पूर्व ही उसकी एक दुर्घटना में पैर की हड्डी टूट गई, लेकिन ऐसा होने पर भी उसने अपने अनुष्ठान को निश्चित समय पर सम्पन्न करने का प्रयास किया। इसी के फलस्वरूप इसका वह बेटा उस परिवार के चंगुल से मुक्त हो पाया। इस प्रकार की घटनायें अनेक परिवारों में देखी जा सकती हैं। अधिकतर मामलों में पितरों को बांध लिये जाने का पता ही नहीं लगता है और पता लग भी जाये, तो उन्हें छुड़वाना बहुत मुश्किल होता है, इसके लिये सबसे श्रेष्ठ उपाय यही है कि आप इस विषय के किसी श्रेष्ठ जानकार से मिले।

पितृदोष होने का कोई एक निश्चित कारण हो, यह आवश्यक नहीं है, यह अनेक कारणों से हो सकता है। कई बार यह देखा जाता है कि किसी परिवार के पितर अपने होने का अहसास नहीं करवाते हैं। उनकी संतुष्टि के लिये चाहे उपाय किये जायें अथवा नहीं, वे सदा अपने वंशजों का कल्याण चाहते हैं। इस स्थिति में पितृयोनि में रहते हुए उन्हें अनेक बार विभिन्न प्रकार के संकटों का सामना करना पड़ता है। यह संकट भी पितृदोष का कारण बन सकते हैं। इसलिये पितृदोष न हो, इस हेतु अपने पितरों को श्राद्धादि कर्म के द्वारा नियमित रूप से कव्य प्रदान करके बलिष्ठ रखना चाहिये। यदि वे अपने होने का अहसास कराते हैं, तो उनके निमित्त अपने घर में स्थान बनाना चाहिये। प्रत्येक कार्य में उनका अवश्य स्मरण करना चाहिये।

पितर क्या चाहते हैं...?

बहुत से ऐसे व्यक्ति हैं जो बार-बार हानि उठाते हैं, लेकिन ऐसा क्यों हो रहा है, इस बारे में जानने के लिये कभी ज्योतिषी के पास नहीं जाते हैं। जब वे ज्योतिषी से मिलते हैं तब तक बहुत देर हो चुकी होती है और वे काफी कष्ट तथा विभिन्न प्रकार की हानियां भोग चुके होते हैं। वे इस बात को समझ नहीं पाते हैं कि यह सब क्यों हो रहा है? कई बार जब अप्रत्याशित रूप से कोई कष्ट अथवा हानि होती है, तब भी इसके लिये अन्य स्थितियों को जिम्मेदार ठहरा देते हैं। कुछ लोग इसे भाग्य का लिखा तो कुछ इसे समय की मार मान लेते हैं। अगर वे समय पर किसी विद्वान ज्योतिषी से इस बारे में जानकारी लें तो उन्हें इस बारे में पता चल सकता है कि इन घटनाओं के पिछे पितृदोष सम्बन्धी कारण भी हो सकते हैं। अधिकांश व्यक्ति इसे मानते नहीं हैं, इसलिये वे लम्बे समय तक अनावश्यक रूप से उत्पन्न होने वाले कष्टों को भोगने के लिये अभिशप्त होते हैं। अगर बार-बार कोई घटना अथवा दुर्घटना घटित होती है तो इसके पीछे कोई न कोई ऐसा छिपा हुआ कारण होता है जिसे जानना कुछ कठिन हो सकता है लेकिन उतना ही आवश्यक इसे जानना भी होता है। अचानक से घटित होने वाली घटना संयोग से हो सकती है, अकारण हो सकती है लेकिन जब उसी प्रकार की घटना दोबारा हो तो समझें कि इसके पीछे अवश्य ही कोई कारण निर्मित हो रहा है, वही घटना जब तीसरी बार हो तो समझें कि वास्तव में इसके पीछे कोई विशेष एवं गम्भीर कारण है, इसके बाद अगर चौथी बार वैसी ही घटना घटे तो निश्चय जानें कि इस बारे में अगर गम्भीरता से सोच-विचार कर इसके निराकरण के प्रयास नहीं किये तो इस प्रकार की घटनायें होती रहेंगी और यह किसी भी सीमा तक हानिकारक हो सकती हैं। इसलिये अपनी सोच को बदलना होगा। अनेक समस्यायें अपनी संस्कृति की उपेक्षा कर पश्चिमी विचारधारा के अनुरूप चलने के कारण भी उत्पन्न होती हैं। पश्चिमी सोच और संस्कृति को जरूर अपनायें लेकिन अपनी संस्कृति को भूलने की कीमत पर ऐसा कभी नहीं होना चाहिये।

इस बारे में कुछ बातें ऐसी हो सकती हैं जो स्पष्टीकरण चाहती हैं, इनमें से एक बात अक्सर लोग जानने को उत्सुक रहते हैं कि पितर अपने ही परिवार के सदस्यों को दण्ड क्यों देते हैं? क्या इससे उन्हें पीड़ा नहीं होती है? इसके उत्तर में आप यह जान लें कि व्यक्ति जब तक जीवित रहता है, तब तक उसकी आसक्ति भोग-विलास में अधिक होती है, मरने के बाद जब वह पितर अथवा प्रेतयोनि में चला जाता है तो भोग-विलास की स्थिति समाप्त हो जाती है। अगर वह पितर योनि को प्राप्त हुआ है तो उसका पूरा ध्यान अपने परिवार की तरफ लगा रहता है। अगर वह प्रेतयोनि में है तो अपनी प्रकृति

के अनुसार या तो वह किसी अन्धेरे स्थान पर पड़ा रहेगा अथवा अन्य किसी मनुष्य के शरीर पर अधिकार करके उसे कष्ट देगा। यहाँ हम बात केवल पितर की कर रहे हैं कि वे परिवार के सदस्यों को कष्ट क्यों देते हैं? इस बारे में अनेक विद्वानों का ऐसा विचार है कि मृत्यु पूर्व उसकी कुछ अभिलाषायें ऐसी होती हैं जिन्हें वह पूरा करना चाहता है लेकिन अनायास मृत्यु होने के कारण वह उन्हें पूरा नहीं कर पाता है। मृत्यु के बाद पितर योनि में आकर भी कुछ पितरों की आसक्ति रहती है कि उसके अधूरे कार्य पूरे हों। परिवार के कार्य हैं तो निश्चित रूप से उसे परिवार के ही सदस्यों द्वारा पूरा किया जाना होता है और अक्सर व्यक्ति की मृत्यु के बाद परिवार के सदस्य, विशेष रूप से बेटे-पोते उस तरफ ध्यान ही नहीं देते हैं और अपने-अपने कार्यों में ही लगे रहते हैं। चूंकि किये जाने वाले कार्यों के लिये परिवार के सदस्यों को प्रेरित करने के लिये उनके पास स्थूल शरीर नहीं होता है, इसलिये पितर उनके कार्यों में अवरोध उत्पन्न करने लगते हैं। यह अवरोध अनेक प्रकार के हो सकते हैं और प्रत्येक अवरोध के कारण परिवार के सदस्यों को कष्ट उठाना पड़ता है।

परिवार के किसी बड़े सदस्य की मृत्यु के कुछ समय बाद ही इसका प्रभाव परिवार के सदस्यों पर दिखाई देने लगता है। जो व्यक्ति व्यवसाय करते हैं, उनके व्यवसाय में समस्यायें आने लगती हैं, व्यवसाय में हानि, ग्राहकों का कम आना, बिना किसी विशेष कारण के कर्मचारियों का काम छोड़ कर चले जाना, चोरी हो जाना, आगजनी होना, किसी कारण से राजदण्ड की स्थिति बन जाना आदि स्थितियां व्यक्ति को परेशान करने लगती हैं। अगर कोई व्यक्ति नौकरी में है तो उसका स्थानान्तरण ऐसी जगह हो जाना, जहाँ वह जाना ही नहीं चाहता, किसी प्रकार का लांछन लगना, रिश्वत आदि लेते पकड़े जाना जैसी घटनायें घटित होने लगती हैं। इसके अलावा अन्य समस्यायें भी देखने में आ सकती हैं जैसे कि किसी को संतान सुख में बाधा आ सकती है तो कुछ लोगों को अपनी संतानों के विवाह में समस्यायें भोगनी पड़ती हैं। रिश्ते आते नहीं, आते हैं तो बनते नहीं और अगर बनते हैं तो टूट जाते हैं, विवाह नहीं हो पाता। ऐसी स्थितियां अगर किसी के सामने आती हैं तो समझें कि किसी न किसी रूप में वह व्यक्ति पितरदोष से पीड़ित है। अगर ऐसे व्यक्ति इन समस्याओं के समाधान के लिये किसी विद्वान ज्योतिषी से परामर्श करते हैं तो पितरदोष की समस्या का अवश्य ही पता चल जाता है। इसके बाद ज्योतिषी द्वारा बताये गये उपायों का प्रयोग करने से समस्याओं में कमी आने लगती है।

इस प्रकार के कष्ट इस कारण से मिलते हैं कि परिवार के सदस्य उनके संकेतों को समझें और फिर जो पितर चाहते हैं, वह कार्य सम्पन्न करें। समस्या यहाँ पर यह आ सकती है कि ज्योतिष विज्ञान में बताये गये उपायों में इन बातों का उल्लेख नहीं होता है। आमतौर पर ज्योतिषीय सिद्धान्तों पर बताये गये उपायों के बारे में ही जातकों को विशेष

उपाय बता दिये जाते हैं। कई बार कुछ समय तक उन्हें इन उपायों का लाभ मिलता दिखाई देता है लेकिन फिर बाद में वैसी ही स्थिति बन जाती है। मेरे पास अनेक ऐसे जातक आते हैं जो बताते हैं कि उन्हें जीवन में अनेक प्रकार की समस्यायें आती रहती हैं, अनेक ज्योतिषियों से परामर्श भी लिया है, उनके द्वारा बताये गये उपाय भी किये लेकिन लाभ नहीं मिला। वे जानना चाहते हैं कि ऐसा क्यों होता है और यह भी जानना चाहते हैं कि इसका उपचार क्या है? वे शीघ्र से शीघ्र इस समस्या से मुक्ति चाहते हैं।

ऐसे जातकों की परिस्थितियों का विश्लेषण विशिष्ट प्रकार से करके ही उन्हें लाभ दिया जा सकता है। मुझे इस बात का उल्लेख करते हुए बहुत गर्व का अनुभव होता है कि जिन जातकों को मैंने इस सम्बन्ध में परामर्श दिया है, उन्हें आशा से कहीं अधिक लाभ की प्राप्ति हुई है। इस समस्या से मुक्ति के लिये ज्योतिषीय सिद्धान्तों के अलावा अन्य पक्षों की तरफ भी ध्यान देना आवश्यक होता है। उसकी पारिवारिक स्थिति कैसी है, इस बारे में जानने की आवश्यकता रहती है। उसके बारे में अनेक बातों की जानकारी लेकर जो उपाय आदि बताये जाते हैं, उनसे अवश्य लाभ की प्राप्ति होती है। वे क्या उपाय हैं, इसके बारे में लिखने से कोई लाभ नहीं है क्योंकि स्थितियां अलग-अलग जातकों के साथ अलग-अलग रूप में हो सकती हैं, इनका ज्योतिषीय सिद्धान्तों के साथ समायोजन करके विशिष्ट उपाय बताने पर ही लाभ हो सकता है। किसी जातक को उपायों का प्रयोग करने के कुछ समय बाद, तो कुछ को विलम्ब से लाभ मिलता है, लेकिन लाभ मिलता अवश्य है।

किसी भी जातक को उपाय बताने से पहले इस बात का अनुमान लगाया जाना आवश्यक है कि सम्बन्धित जातक के पितर आखिर उससे क्या चाहते हैं। इस बारे में जानना बहुत आसान नहीं होता है लेकिन विश्लेषण करने से स्थिति जल्दी ही स्पष्ट हो जाती है। मैं अनेक ऐसे उपाय भी जातकों को बताता हूँ जिनसे पितृदोष की समस्या दूर होकर पितर कृपा भी प्राप्त होने लगती है। पितृदोष के कारण से जितनी समस्यायें व्यक्ति के सामने आती हैं और इन समस्याओं के कारण जितने कष्ट भोगने पड़ते हैं, पितर कृपा से उससे कहीं अधिक सुख-शान्ति तथा समृद्धि, सौभाग्य की प्राप्ति होती है। इतना समझ लेना सबके लिये आवश्यक होगा कि हमारे पूर्वज जिस कार्य को करने की इच्छा रखते थे और जिसे वे करना चाहते थे किन्तु अकाल मृत्यु के कारण अथवा मृत्यु होने तक वे उनको नहीं कर पाये तो उन कार्यों को पूरा करने का दायित्व परिवार के सदस्यों का होता है, विशेष रूप से बेटे-पोतों का। मेरा यह अनुभव है कि अगर पितृदोष का सही समाधान नहीं हो पाता है तो व्यक्ति को आने वाले समय में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इसलिये पितरों की इच्छाओं को जानें, उन्हें पूरा करें, फिर देखें कि आपको पितर कृपा से कितने सुखों की प्राप्ति हो सकती है।

उपचारों से सम्बन्धित एक बात और भी है जिस पर प्रायः ध्यान कम ही दिया

जाता है, वह है पितरों के श्राद्धकर्म की उपेक्षा करना अथवा इसे श्रद्धाभाव से न करना। इसमें किसी को किसी प्रकार की आपत्ति नहीं होनी चाहिये कि प्राचीनकाल से हमारे शुभ और सुख-समृद्धि के लिये जो व्यवस्था की गई है, उनका पालन किया जाये। पितरों के अस्तित्व को स्वीकारते हुए ही श्राद्ध कर्म की व्यवस्था की गई है, इसलिये प्राचीनकाल से ही श्राद्धकर्म पूरी श्रद्धा से किया जाता रहा है लेकिन आज इसके प्रति विशेष रूप से युवावर्ग में आस्था एवं विश्वास कम हुआ है। यह स्थिति अनेक समस्याओं को अप्रत्यक्ष रूप से या तो उत्पन्न कर रही है अथवा पहले से उत्पन्न समस्याओं में वृद्धि कर रही है। यह हमारी विकृत मानसिकता है कि अपनी परम्पराओं का निर्वाह करते समय इस बात पर ध्यान अधिक देते हैं कि अगर हमने यह किया तो दूसरे क्या सोचेंगे? इस कारण से या तो अधिकांश लोग इनसे दूर होने लगते हैं अथवा आधे-अधूरे मन से सम्पन्न कर देते हैं। श्राद्ध के बारे में बार-बार याद दिलाया जाता है कि श्रद्धा के साथ किया गया श्राद्ध ही फलकारक होता है। श्रद्धारहित होकर श्राद्ध करने का कोई लाभ नहीं है। ऐसे अनेक भारतीय हैं जो विदेशों में बसने के बाद भी श्राद्धकर्म को पूरी श्रद्धा से सम्पन्न करते हैं, वहाँ वे इस बात की चिंता नहीं करते कि श्राद्ध करते देख दूसरे क्या सोचेंगे। उनका मानना है कि यह अपने पूर्वजों का स्मरण करने तथा उनके निमित्त अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का बहुत बड़ा अवसर होता है, इसे गंवाना नहीं चाहिये। उन्हें इसका पूरा लाभ भी अवश्य मिलता है। अगर हम अपने देश में रहते हुए भी अपनी परिपाटियों तथा परम्पराओं का पालन नहीं करेंगे तो उससे मिलने वाले लाभ भी कैसे मिलेंगे? इस बारे में अनेक विद्वानों का भी यही विचार है कि अपने पूर्वजों को आप जितनी श्रद्धा से याद करेंगे, उनके प्रति अच्छी भावनायें रखेंगे, उतना ही अधिक लाभ प्राप्त होगा।

श्राद्ध के सम्बन्ध में अलग अध्याय में विस्तार से विवरण दिया गया है, आप उसके अनुसार श्राद्ध सम्पन्न कर सकते हैं। अपने पूर्वजों की अथवा माता-पिता, दादा-दादी आदि की तस्वीरें लगाकर उन पर माला चढ़ा देना ही पर्याप्त नहीं है, इससे एक कदम आगे बढ़ा कर देखें, आपके जीवन में आने वाली समस्यायें काफी कम हो जायेंगी। अधिकांश विद्वान एक स्वर में इस बात का समर्थन करते हैं कि स्वयं पितर भी चाहते हैं कि उनके वंशज उनका श्राद्ध करें क्योंकि इसी से उन्हें ऊर्जा की प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति श्रद्धा सहित श्राद्ध करता है, पितर उस पर बहुत अधिक प्रसन्न होते हैं और उनको जीवन के सभी सुख प्रदान करते हैं जो ऐसा नहीं करते, वे उन पर कुपित होते हैं। अगर हम अपने सोच-विचार में थोड़ा परिवर्तन करके अपने पितरों का सम्मान करना सीख लें और उनको प्रसन्न करने के विशिष्ट उपाय कर लें तो जीवन में पितृदोष जैसी बात समाप्त हो जायेगी।

पितर कष्ट भी देते हैं...

आमतौर पर अधिकांश व्यक्ति पितरों को लेकर हमेशा भयभीत रहते हैं। यह स्थिति विचित्र ही समझी जायेगी कि एक तरफ तो पितर हमारे ही परिवार के सदस्य होते थे जो मृत्यु पश्चात् पितर बन गये हैं और दूसरी तरफ वही हमारे लिये भय का कारण भी बने दिखाई देते हैं। यह दोनों ही बातें सही हैं किन्तु इन बातों को समझने के लिये कुछ अन्य बातों को भी समझना होगा। प्राय: यह धारणा होती है कि पितर हमारे ही परिवार के बड़े-बुजुर्ग थे जो मरने के पश्चात् पितर हो गये हैं तो उन्हें हमारी मदद करनी चाहिये, हमारी सभी मनोकामनाओं को पूरा करना चाहिये और किसी भी प्रकार की समस्या को दूर करना चाहिये, लेकिन अक्सर ऐसा नहीं होता है। कई परिवारों में ऐसा देखने में आता है कि घर के किसी बड़े सदस्य की मृत्यु के बाद एकाएक कुछ समय के बाद वहाँ समस्यायें आने लग जाती हैं। ऐसा कितने समय के बाद होता है, इस बारे में निश्चित रूप से कहना सम्भव नहीं है, लेकिन ऐसा होता है, इसमें कोई शंका नहीं है। विभिन्न लोगों के सामने अलग-अलग प्रकार की समस्यायें आने लग जाती हैं, किसी का अच्छा लाभ देने वाला व्यवसाय अचानक हानि देने लग जाता है, तो किसी की पूर्ण योग्यता होते हुए भी नौकरी नहीं लग पाती जबकि अन्य को अच्छी नौकरी आसानी से मिल जाती है। कुछ लोगों के घर विभिन्न प्रकार के रोग होकर परिवार के सदस्यों को सताने लगते हैं। कई घरों में विवाह सम्बन्धी समस्यायें आने लगती हैं। या तो रिश्ते आते ही नहीं हैं या रिश्ता होकर कुछ समय के बाद टूट जाता है। कई घरों में संतान सम्बन्धी समस्यायें भी देखने में आती हैं। इन समस्याओं से पीड़ित अनेक व्यक्ति इसे भाग्य का लिखा मानकर इसकी पीड़ा को भोगते हैं और अनेक व्यक्ति इनके कारणों को जानने के लिये ज्योतिषियों के पास जाते हैं। तब उन्हें मालूम चलता है कि इनका कारण पितृदोष है। अनेक समझदार लोग भी ऐसी स्थितियों को देख कर अपने अनुभव के आधार पर बता देते हैं कि इन सबके पीछे उनके पितरों की नाराजगी हो सकती है, इसलिये पितरों को खुश करने की कोशिश करो। पितरों की अवधारणा हमारे यहाँ प्राचीनकाल से रही है, इसलिये परिवार के बड़े-बुजुर्ग इसके बारे में काफी कुछ जानते हैं। पहले अनेक व्यक्ति अपने मकानों में एक स्थान पितरों के लिये भी सुरक्षित रखते थे जिसके सामने प्रतिदिन संध्या समय दीपक लगाया जाता था। ऐसे लोगों पर पितरों की पूर्ण कृपा रहा करती थी।

यह एक अलग विषय हो जाता है कि पितृ शान्ति के लिये अर्थात् पितरों को प्रसन्न करने के लिये क्या किया जाये, यहाँ इस बारे में चर्चा करनी आवश्यक है कि आखिर पितर नाराज क्यों होते हैं, जब वे हमारे ही अपने परिवार के बड़े होते हैं तो फिर कष्ट क्यों

देते हैं? यह चर्चा इसलिये आवश्यक है कि इस जानकारी के बाद ऐसे कार्य-व्यवहार से बचा जाये जिससे सम्भवत: पितरों को नाराजगी होती है। यह देखना भी उचित रहेगा कि पितर जब नाराज होते हैं तो कैसे दण्डित करते हैं और जब प्रसन्न होते हैं तो कैसे वारे-न्यारे कर देते हैं? इस बारे में विस्तार से अलग अध्याय में बताया गया है फिर भी सन्दर्भ के रूप में पुन: लिखा जाता है कि हमारे पूर्वज, जो पितर योनि में आ जाते हैं, वे अपने परिवार के सदस्यों से अपेक्षा करते हैं कि उन्होंने जो अधूरे कार्य छोड़े हैं, उन्हें पूरा किया जाये। आमतौर पर देखा जाता है कि घर के बड़े-बुजुर्ग यथा पिता-दादा आदि की मृत्यु के बाद परिवार के बेटे आदि मिलकर सम्पत्ति का बंटवारा तो तुरन्त कर लेते हैं किन्तु उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने की तरफ कोई गम्भीरता से विचार नहीं करता। पितर इस प्रकार के व्यवहार से दु:खी होते हैं और फिर वे क्रोध से भरने लगते हैं। उनके पास ऐसा कोई साधन अथवा माध्यम नहीं होता जिससे वे अपने बेटों-पोतों को अपने अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिये बाध्य कर सकें, इसलिये वे उन्हें प्रताड़ित करने लगते हैं। उनके कार्यों में रुकावट तथा बाधायें उत्पन्न करने लगते हैं। पितरों में भावनाओं का अभाव रहता है, इसलिये वे अपने निकट के किसी भी व्यक्ति को दण्ड देने अथवा प्रताड़ित करने में विलम्ब नहीं करते हैं। ऐसा करके वे अपने क्रोध तथा अप्रसन्नता को व्यक्त करते हैं। इन सब स्थितियों के परिणामस्वरूप व्यक्ति पितर शांति की तरफ ध्यान देने को बाध्य होता है। इस सन्दर्भ में पितरों से सम्बन्धित दो बातों को विशेष रूप से समझना होगा। अपने किसी अधूरे कार्य को पूरा करने के लिये पितर अपने बेटों को इस बारे में संकेत करते हैं कि गम्भीरता से उनके कार्यों को पूरा करें। आमतौर पर बेटे इन संकेतों को समझते नहीं अथवा समझ कर भी इसे अनदेखा कर जाते हैं। ऐसी स्थिति में वे निरन्तर उन्हीं कार्यों में संलग्न रहते हैं, जिन्हें पितर नहीं चाहते। जब यह सब मर्यादाओं एवं दायित्वों की सीमा से बाहर हो जाता है, तब पितरों की क्रोधाग्नि भड़क उठती है और वे अपने ही वंशजों को ऐसा दण्ड देते हैं कि देखने-सुनने वालों की आत्मा तक कांप जाये। कई बार पितरों की यह क्रोधाग्नि इतनी भयानक होती है कि वह अपने वंशजों को पूरी तरह बर्बाद कर देती है। इसलिये पितरों का सम्मान करते हुए उनकी आशाओं एवं आकांक्षाओं पर खरा उतरने का भरसक प्रयास किया जाना आवश्यक है। यहाँ फिर यही प्रश्न उत्पन्न होता है कि आम व्यक्ति को किन बातों का ध्यान रखना चाहिये जिससे पितरों द्वारा पीड़ा प्राप्त न होने पाये।

घर में किसी वरिष्ठ व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् अपने-अपने रीति-रिवाज के अनुसार तेरहवीं अथवा सत्रहवीं के दिन पगड़ी की रस्म की जाती है। इस दिन परिवार के बड़े सदस्य को पगड़ी पहनाई जाती है। ***(पगड़ी के बारे में अलग अध्याय में विस्तार से उल्लेख किया गया है। इस अध्याय को गम्भीरता से पढ़ें)***। यह इस बात की सूचक होती है कि अब घर की समस्त जिम्मेदारियों का निर्वाह यह व्यक्ति करेगा अर्थात् जिसे पगड़ी पहनाई जाती है, उसे मृतक का उत्तराधिकारी मान लिया जाता है।

आमतौर पर पगड़ी की रस्म को भी आम रस्मों की तरह मान लिया जाता है किन्तु इसका क्या महत्त्व होता है, इसके बारे में कोई सोचता नहीं है। पगड़ी की रस्म के साथ ही मृतक की सम्पूर्ण क्रियाकर्म की रस्में पूरी हो गई मान ली जाती हैं। इसके बाद सब अपने-अपने कार्यों में व्यस्त हो जाते हैं। अगर मृतक कुछ सम्पत्ति छोड़ कर गया है बेटे शीघ्र ही उसका बंटवारा कर लेते हैं और अपना-अपना हिस्सा लेकर सब कुछ भूल जाते हैं। कई बार मृतक की सम्पत्ति का बंटवारा भी शांतिपूर्वक नहीं होता है। इसके लिये झगड़े होते हैं, घर के झगड़े थानों से होते हुए कोर्ट तक चले जाते हैं। यह सब व्यक्तिगत हित साधने के लिये होता है लेकिन पगड़ी की मूल भावना का कोई सम्मान नहीं करता है। मृतक की क्या जिम्मेदारियां बाकी थी, वह मरने से पहले क्या चाहता था और क्या करना चाहता था, इस बारे में मृतक के बेटे बहुत ध्यान देने की आवश्यकता ही नहीं समझते हैं। सभी रस्मों को पूरा करके अपने-अपने कार्यों में व्यस्त हो जाते हैं। इसके बाद से ही पितरों का कोप परिवार के सदस्यों पर बरसने लगता है। अधिकांश व्यक्तियों की सोच होती है कि पितर उनके अपने ही होते हैं, वे कृपालु होते हैं, शांत-दयावान तथा सौम्य होते हैं किन्तु कभी-कभी जब वे क्रोध में आते हैं तो प्रेतों से भी भयंकर कष्ट देते हैं। इस प्रकार की अनेक घटनायें हमारे-आपके समक्ष समय-समय पर घटित होती रही हैं, विडम्बना है कि इन घटनाओं को सही परिप्रेक्ष्य में देखा-समझा नहीं जाता है। इसी प्रकार की एक दिल को हिला देने वाली घटना का उल्लेख करना उचित होगा-

रामपाल के चार बेटे तथा एक बेटी थी। बेटी सबसे छोटी थी। रामपाल ने कठोर मेहनत करके अपना घर बना लिया था, अपना व्यापार भी काफी फैला लिया था। कहीं किसी प्रकार की समस्या नहीं थी। समय पर बड़े बेटे देव का विवाह कर दिया। बहू का नाम कामना था। इसी बीच रामपाल ने चार बीघा जमीन का सौदा कर लिया। जमीन शहर से कुछ दूर थी लेकिन ऐसा विश्वास था कि दो-चार साल के बाद इसके मूल्य में भी पर्याप्त वृद्धि होगी। बड़ा बेटा देव उनके व्यवसाय को देखने लगा। छोटे दो बेटे भी अपने-अपने कार्यों में लग गये थे। अभी तीन बेटों तथा रमा का विवाह करना था। देव से छोटे बेटे का अच्छे तथा सम्पन्न घर में रिश्ता कर दिया गया था। रामपाल ने निश्चय किया था कि रमा का विवाह धूमधाम से किया जायेगा। इसी समय एक ऐसी अनहोनी घटना घटित हो गई जिसने सब कुछ अस्त-व्यस्त कर दिया। एक दिन कॉलेज जाते हुए रमा को पीछे से एक कार ने टक्कर मार दी। इससे रमा को अधिक चोटें तो नहीं आई लेकिन टक्कर लगने से वह उछल कर दूर गिरी। गिरते समय उसका दायें पैर का घुटना एक पत्थर से टकरा गया और उसे आंतरिक रूप से काफी क्षति हुई थी। डॉक्टर्स का कहना था कि घुटना पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया था, उपचार के द्वारा दर्द से तो मुक्ति मिल सकती है किन्तु पूरी तरह से ठीक-ठीक चलने के लिये आवश्यक है कि घुटने का प्रत्यारोपण कराया जाये। इस पर लगभग दो लाख का खर्च बताया गया। किसी भी

माता-पिता के लिये अपने बच्चों से बढ़कर कुछ नहीं होता है। विशेष रूप से पिता के प्राण तो बेटी में ही अटके रहते हैं। रामपाल के पास इतना पैसा एक साथ निकाल पाना सम्भव नहीं था लेकिन रमा का उपचार भी आवश्यक था। वे तो दो-चार वर्ष बाद उसकी शादी करने का विचार कर रहे थे। इस अवस्था में उसके लिये अच्छा घर और वर तलाश कर पाना बहुत कठिन था। तब उन्होंने निश्चय किया कि चार बीघा जमीन को बेच कर जो पैसा आयेगा, वह बेटी के उपचार पर खर्च कर देंगे। इस बारे में उन्होंने घर पर सभी से बात की, किसी को कोई आपत्ति नहीं थी।

कई बार ऐसा होता है कि जो कुछ व्यक्ति सोचता है, वह वैसा ही सम्पन्न नहीं हो पाता। विद्वानों का इस बारे में कहना है कि व्यक्ति जो करने का निश्चय करता है, प्रकृति इसके विरुद्ध परिस्थितियां उत्पन्न कर देती है, इसलिये कई बार व्यक्ति के सोचे गये कार्य पूरे नहीं हो पाते हैं। ऐसा ही कुछ रामपाल के साथ भी घटित हुआ। वह अपनी बेटी रमा के उपचार के बारे में सोच ही रहे थे कि एक दिन अचानक उन्हें दिल का दौरा पड़ा और घर पर ही मृत्यु हो गई। घर में किसी को अनुमान तक नहीं हो सका कि यह दिल का दौरा है, इसलिये वे उनकी देखभाल में व्यस्त रहे और रामपाल के प्राण निकल गये। घर में मानो तूफान आ गया, सब कुछ अस्त-व्यस्त हो गया। अन्त्येष्टि से लेकर पगड़ी की रस्म सम्पन्न की गई और फिर सब धीरे-धीरे अपनी सामान्य दिनचर्या की तरफ लौट गये।

रामपाल की मृत्यु से सबसे बड़ा धक्का उनकी पत्नी को तथा बेटी रमा को लगा था। बेटे अपने-अपने कार्यों में व्यस्त हो गये। सबसे छोटे बेटे अखिल की एक निजी कम्पनी में नौकरी लग गई थी, काम का बोझ अधिक था लेकिन वेतन भी अच्छा था। रामपाल की मृत्यु के बाद माँ ने अपने बड़े बेटे देव को रमा के उपचार की याद दिलाई और जमीन बेचने की तरफ ध्यान देने को कहा। देव ने सुना किन्तु इस बारे में गम्भीर नहीं हुआ। धीरे-धीरे दो महीने निकल गेये। देव ने रमा के इलाज के बारे में बात नहीं की लेकिन चार बीघा जमीन का सौदा अवश्य कर दिया। माँ खुश हो गई कि रमा का इलाज शीघ्र हो पायेगा लेकिन इसके लिये उसने मना कर दिया कि अभी इलाज के लिये दो लाख निकालना सम्भव नहीं होगा क्योंकि बाजार का कर्ज काफी हो गया है, इसलिये जमीन बेचने से जो पैसा आयेगा, उससे कर्ज ही मुश्किल से चुकता हो पायेगा। माँ की आँखों के सामने अन्धेरा छा गया। देव बहुत तेज था। उसने बाकी भाइयों से भी बात की और जमीन बेचने से मिलने वाले पैसे में उनका हिस्सा देने का प्रलोभन दिया। अखिल ने इसे नहीं माना, बाकी दोनों भाई मान गये थे। जमीन बिक गई, पैसा तीनों भाइयों में बंट गया। इसके बाद बेटे-बहू का व्यवहार भी रमा तथा माँ के साथ बदलने लगा। अखिल काम से कांफी समय घर से बाहर ही रहता था। देव ने साफ कह दिया कि वह रमा का इलाज करवाने में सक्षम नहीं है; उसके पास इतना पैसा नहीं है। यह जरूरी नहीं कि उसकी शादी किसी बड़े खानदान में ही हो, शादी हो जायेगी, वह हम

करवायेंगे। बेटे की बात सुनकर माँ-बेटी फूट-फूट कर रोने लगी लेकिन किसी बेटे ने अथवा बहू ने उनको चुप करवाने का प्रयास नहीं किया। अखिल ने इस बारे में सुना तो उसे बहुत दु:ख हुआ, लेकिन वह कुछ कर नहीं सकता था।

इस घटना के एक सप्ताह बाद अखिल का स्थानान्तरण गुड़गाँव कर दिया गया। माँ ने सुना तो उसने उसके साथ जाने की जिद की, रमा भी अब यहाँ नहीं रहना चाहती थी। चार दिन बाद अखिल, रमा और माँ तीनों गुड़गाँव आ गये। रमा की परीक्षा में काफी परेशानी आने वाली थी, किन्तु कोई रास्ता नहीं था। यहाँ आकर अखिल ने सबसे पहले वरिष्ठ प्रबंधक गोयल से विशिष्ट एवं व्यक्तिगत मुलाकात का समय लिया। गोयल बहुत अच्छे व्यक्ति थे, इसलिये जल्दी ही उन्होंने समय दे दिया। तब अखिल ने बिना कुछ छिपाये अपने बारे में सब कुछ बता दिया और साथ ही यह भी आग्रह किया कि वह रमा का इलाज करवाना चाहता है, इसके लिये कम्पनी उसे कर्ज दे। गोयल ने गम्भीरता के साथ सारी बात सुनी और फिर दूसरे दिन मिलने को कहा। अखिल को नहीं पता था कि वह क्या निर्णय लेने वाले हैं लेकिन उसने तय कर लिया था कि इस समय उसके जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य रमा का उपचार कराना था।

दूसरे दिन वह गोयल से मिला। उन्होंने ने जो बताया, उसे सुनकर वह प्रसन्न हो गया। उन्होंने चार लाख का कर्ज स्वीकृत करवा दिया था। इसमें रमा के उपचार पर जितना खर्च होगा, वह करके बाकी का पैसा वापिस जमा हो जायेगा, अगर इलाज के लिये और पैसे की आवश्यकता हुई तो वह भी कम्पनी देगी। इस समाचार को रमा और माँ ने सुना तो सभी प्रसन्न हो गये। इसके बाद दिल्ली के एक अस्पताल में रमा के घुटने के ऑपरेशन की व्यवस्था की गई। समय पर ऑपरेशन हुआ जो पूरी तरह से सफल रहा। इन सब कार्यों में गोयल ने अपनी सीमा से बाहर जाकर सहायता की। कुछ ही समय के बाद रमा पूरी तरह से ठीक हो गई। अखिल पूरी जिम्मेदारी तथा मेहनत से काम कर रहा था, सभी उससे प्रसन्न थे।

अब दूसरी तरफ का हाल जानना भी आवश्यक है। अखिल, रमा और माँ के घर से चले जाने के बाद देव और कामना बहुत खुश थे। मकान और व्यवसाय पर उनका नियंत्रण हो गया था। जिस समय रमा के उपचार की बात चल रही थी, उस समय एक रात को कामना चीख कर उठ बैठी। देव ने उसके चीखने का कारण पूछा तो उसने बताया कि उसे साक्षात् ससुर दिखाई दिये थे जो लाल आँखों से घूर रहे थे। आँखें इतनी लाल थी कि मानो उनमें से आग निकल रही हो। देव ने कामना को सांत्वना दी और शांत कराया। बात यहीं पर समाप्त नहीं हुई, अब कामना को बार-बार ससुर की घूरती आँखों का सामना करना पड़ने लगा था। पहले यह सब रात को होता था, अब दिन में भी वह दिखाई देने लगे थे। कामना बताती कि वे बोलते कुछ नहीं थे लेकिन आँखों में भयंकर क्रोंध की ज्वाला निकलती दिखाई देती। ऐसा लगता कि वह अभी उसे जलाकर मार डालेगी।

देव महसूस कर रहा था कि यह उसके पिता का प्रेत अथवा आत्मा ही होगी। मरने के बाद किसी व्यक्ति का साक्षात् रूप में इस प्रकार दिखाई देने की बात पहले कभी नहीं सुनी थी। वह स्वयं भी परेशान रहने लगा था और उसके दोनों भाई भी सकते में थे।

इसी समय देव को अपने व्यापार में भी समस्या आने लगी थी। इस बात का उसे पता काफी समय के बाद चला कि प्राप्त होने वाला लाभ धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। बाजार की देनदारियां बढ़ रही थीं, दूसरे शब्दों में इसे इस प्रकार भी कह सकते हैं कि उस पर कर्ज बढ़ने लगा था। वह परेशान हो गया था। इन पर एक परेशानी अभी और आने वाली थी। देव से छोटे भाई का रिश्ता एक पैसे वाले व्यक्ति की बेटी से पहले ही कर दिया था। उसे मालूम था कि विवाह के समय दहेज में काफी माल मिलेगा। वह विचार करने लगा कि अगर यह विवाह जल्दी कर दें तो उसकी स्थिति कुछ ठीक हो सकती है। उसने माँ, रमा और अखिल को बताये बिना विवाह का निश्चय कर लिया। वह इस बारे में बात करता, इससे पहले ही लड़की के पिता की तरफ से संदेश आया कि वे यह रिश्ता नहीं करना चाहते। देव उनसे मिलने गया, यह जानने के लिये कि रिश्ता क्यों तोड़ रहे हैं, लेकिन उन्होंने उससे बात करने का भी प्रयास नहीं किया। छोटे भाई का रिश्ता टूट गया। सब परेशान हो गये।

अब रामपाल की छाया, घूरती आँखें देव को भी दिखाई देने लगी थी। वह उससे पूछती हुई लगती कि उसने रमा का उपचार क्यों नहीं कराया? वह अपनी गलती की माफी मांगना चाहता था किन्तु उसके मुँह से आवाज नहीं निकल पाती। धीरे-धीरे कर्ज बढ़ता चला जा रहा था। अनेक व्यापारियों ने उसे माल देना बंद कर दिया। उसे डूबते देख जिन लोगों ने उसे पैसा देना था, उन्होंने पैसा रोक लिया। इस दो तरफ से पड़ने वाली मार से वह टूट गया। वेतन नहीं देने के कारण कर्मचारी काम छोड़ कर चले गये। एक दिन अचानक आधी रात को उसकी दुकान में एकाएक ऐसी आग लगी कि सब कुछ नष्ट हो गया। अब देव पूरी तरह से जमीन पर आ गया था। इस समय उसकी सहायता करने वाला कोई भी नहीं था। उसने सोचा कि वह मकान बेच कर दूसरी जगह चला जाये, लेकिन वह ऐसा भी नहीं कर सकता था। रामपाल की मृत्यु के बाद मकान की वारिस देव की माँ थी। यह मकान तभी बेचा जा सकता था जब वह माँ को मरा हुआ सिद्ध कर दे। ऐसा वह कर नहीं सकता था। इसलिये घर का खर्च चलाने के लिये उसे तथा उसकी पत्नी को नौकरी करनी पड़ी। अब प्रयास करने के बाद भी छोटे भाई के लिये रिश्ता नहीं मिल पा रहा था, उससे छोटा भाई एक दिन घर छोड़कर चला गया। इतना सब होने के बाद रामपाल की छाया का दिखना भी बंद हो गया।

अब थोड़ा उल्लेख अखिल तथा रमा आदि के बारे में करना आवश्यक है। रमा अब पूरी तरह से ठीक हो गई थी। उसे एक बहुत बड़ी कम्पनी में नौकरी मिल गई थी। गोयल उनके पारिवारिक शुभचिंतक बन गये थे। एक दिन उन्होंने रमा के रिश्ते की बात

की। उनके एक परिचित का लड़का था, वह डॉक्टर था और उसका अपना अस्पताल था। वह चाहते थे कि रमा की शादी वहाँ कर दी जाये। अखिल तथा उसकी माँ ने सुना तो काफी खुश हुये। एक दिन उन्होंने गोयल के साथ लड़के के घर जाने की इच्छा व्यक्त की। स्वयं गोयल उन्हें लड़के वालों के यहाँ लेकर गये। परिवार अच्छा और भला था। लड़का भी उन्हें पसंद आ गया था। उन्होंने इस रिश्ते के लिये हाँ कर दी। बाद में रमा को भी लड़के ने एवं उसके परिवार वालों ने देखा और तुरन्त पसंद कर लिया। रिश्ता पक्का हो गया। माँ ने तय किया कि इस शादी में वे अपने अन्य बेटों को नहीं बुलायेंगी। रमा की शादी हो गई। दो साल बाद अखिल की शादी भी हो गई। बाद में वह उसी ब्रांच का प्रबंधक बन गया था।

उपरोक्त कथानक एकदम सत्य घटना पर आधारित है, केवल नाम और स्थान बदले हैं। इसमें बड़े बेटे के परिवार के साथ बाद में बहुत बुरा घटित हुआ। इसलिये इसके बारे में चर्चा करना उचित नहीं है। इस पूरी घटना का इस प्रकार विस्तार से उल्लेख करने का तात्पर्य केवल इतना ही है कि जो लोग सोचते हैं कि पितर आदि कुछ नहीं होते, उनका कोई प्रभाव नहीं होता, वे अपनी सोच में परिवर्तन लायें और गम्भीरता से इस पर विचार करें कि पितरों का अस्तित्व है और वह हमारे बीच में ही होते हैं, चाहे हम हर समय उन्हें न देख पायें। अधिकांश लोगों की समस्या यह होती है कि वे अपनी सोच तथा विचारधारा के अनुसार ही अपने तर्क बना लेते हैं। जो लोग पितरों के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हैं, वे कभी इस तथ्य को स्वीकार नहीं करेंगे कि पितर अपनी संतानों को दण्डित भी कर सकते हैं। वास्तविकता यह है कि वे दण्डित भी करते हैं, उनके कार्यों में व्यवधान भी डालते हैं और उन्हें मिलने वाले सुखों से वंचित भी कर देते हैं।

यहाँ कुछ सामान्य प्रश्न उभर कर सामने आने लगते हैं कि व्यक्ति अपने बच्चों के लिये तो सब कुछ करने को तैयार रहता है किन्तु जब अपने छोटे भाई-बहिन अथवा परिवार के लिये कुछ करना पड़े तो क्यों नहीं कर पाता? क्या परिवार के प्रति उसका कोई दायित्व नहीं होता? अनेक बार ऐसी स्थितियां देखने को मिलती हैं कि किसी का भी मन विचलित हो जाये। अक्सर देखने में आता है कि कोई व्यक्ति किसी प्रकार के भय से तो कुछ भी काम करने को तैयार हो जायेगा लेकिन स्वेच्छा से कुछ भी काम सहजता के साथ नहीं होते हैं। सम्भवतः इसी कारण से पितृदोष जैसी समस्यायें बढ़ रही हैं। पितृदोष की समस्या से बचने के लिये आपको ही अपने भीतर झांकना होगा, तभी इन समस्याओं का समाधान मिल पायेगा।

देवतुल्य हैं- पितर आत्मायें

जीवन के इस पार क्या है, यह हम सब देखते-समझते हैं। जीवन के इस पार से तात्पर्य जन्म से लेकर मृत्यु तक का समय है। जीवन के उस पार अर्थात् मृत्यु के बाद भी ऐसा बहुत कुछ है जिसे गहराई से जानना तथा समझना आवश्यक है किन्तु हम ठीक से जान नहीं पाते हैं। जीवन के इस पार जैसे प्राणियों का अस्तित्व है, वैसे ही उस पार इन प्राणियों की आत्माओं का साम्राज्य है। यह सब क्या है, इसके बारे में ठीक-ठीक बता पाना सम्भव नहीं है किन्तु इस बारे में की जाने वाली कल्पना तथा हमारे ग्रंथों एवं विद्वान ऋषि-मुनियों द्वारा प्रदत्त जानकारी अवश्य रौंगटे खड़े कर देती है। आमतौर पर मान लिया जाता है कि मृत्यु के साथ ही व्यक्ति का जीवन समाप्त हो जाता है। इसके बाद क्या होता है और कैसे होता है, इस बारे में जानने की उत्सुकता प्राय: कम ही होती है। परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु के बाद उसके क्रियाकर्म की रस्म तक मृतक के निमित्त अनेक क्रियायें की जाती हैं, इसके बाद सब कुछ समाप्त मान लिया जाता है लेकिन सब कुछ समाप्त होता नहीं है। जो शरीर मरता है, उसका महत्त्व केवल इतना ही होता है कि वह शरीर को चलायमान रखने वाली आत्मा को अपने भीतर आश्रय देता है जिसने जन्म लिया है, एक दिन उसकी मृत्यु निश्चित है, इसलिये कहा जाता है कि **शरी मरणधर्मा** है। या तो व्यक्ति अपनी निश्चित आयु का भोग करते हुए सामान्य रूप से मृत्यु को प्राप्त करता है, या वह किसी गम्भीर रोग के चंगुल में फंस कर कष्टपूर्ण स्थिति भोगता हुआ मरता है या फिर अकस्मात किसी दुर्घटना द्वारा अथवा किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा मार दिया जाता है। इसी के साथ शरीर समाप्त तथा आत्मा स्वतंत्र। शरीर और आत्मा एक साथ एक-दूसरे को धारण करते हैं किन्तु बिना किसी समझौते के। शरीर कभी आत्मा से समझौता नहीं करता कि वह इतने समय तक उसे अपने शरीर में धारण करता रहेगा और न आत्मा का कोई अनुबंध होता है कि वह इतने समय तक शरीर को जीवित बनाये रखेगी। आत्मा और शरीर का मेल केवल शरीर के जीवित रहने तक का ही होता है। इसके आगे कुछ नहीं.... बस यहीं तक।

शरीर जब तक जीवित रहता है, तब तक सारे खेल जीवन के इस तरफ चलते रहते हैं। शरीर के समाप्त होते ही जीवन के उस पार की हल-चल प्रारम्भ हो जाती है। बहुत से लोग यह जानने को उत्सुक रहते हैं कि शरीर का त्याग करने के बाद आत्मा का अर्थात् जीवात्मा का अर्थात् जीव के सूक्ष्म शरीर का क्या होता है? क्या वह एक शरीर का त्याग करके दूसरा शरीर धारण कर लेती है, क्या वह आत्मा प्रेतों के संसार में चली जाती है अथवा क्या उस आत्मा को मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है? मृत्यु के बाद शरीर का

त्याग करके जीवात्मा कितने समय तक वायवीय रूप में वायुमण्डल में विचरण करती रहेगी, कब और कितने समय बाद किस रूप में वह कहाँ जन्म लेगी अथवा उसे मोक्ष प्राप्त हो जायेगी, इस बारे में प्रत्यक्ष रूप से प्रमाण बहुत कम मिलते हैं। इन सबके बीच पुनर्जन्म की अवधारणा का भी अपना महत्त्व है। माना जाता है कि कभी-कभी व्यक्ति का पुनंर्जन्म भी होता है। पुनर्जन्म से तात्पर्य मृत्यु के तत्काल बाद कहीं जन्म होना अर्थात् एक शरीर का त्याग करके उस जीवात्मा का शीघ्र ही एक अन्य शरीर धारण कर कहीं जन्म ले लेना और जन्म लेने वाले के पूर्वजन्म के बारे में बहुत कुछ ज्ञात होना। ऐसे कुछ उदाहरण हमारे सामने आते रहते हैं जब किसी व्यक्ति के मरने के बाद उसकी आत्मा एक नये शरीर को धारण कर लेती है। वह बालक जब कुछ बड़ा होने लगता है तो उसे अपने पूर्वजन्म के बारे में धुंधली बातों का स्मरण होने लगता है। वह अपने पहले जन्म के माता-पिता, गांव, घर, देहात आदि को बताने लगता है, उसकी मृत्यु कैसे हुई, इस बारे में भी वह सही-सही बताने लगता है। कई ऐसे उदाहरण भी हमारे सामने आये हैं जब पूर्वजन्म के स्थान पर बच्चे को ले जाया गया और उसने वहाँ सभी को पहचान लिया लेकिन जैसे-जैसे वह बालक बड़ा होता जाता है, वैसे-वैसे पूर्वजन्म की यादें धुंधली होकर समाप्त हो जाती हैं फिर उसे कुछ याद नहीं रहता। इस प्रकार की घटनाओं से केवल इतनी ही जानकारी मिल पाती है कि पूर्वजन्म की घटनायें घटित तो होती हैं लेकिन यह सब यदा-कदा ही देखने में आता है अर्थात् ऐसी घटनायें अधिक होती दिखाई नहीं देती हैं।

मृत्यु के बाद कुछ जीवात्मायें प्रेत बन जाती हैं। मनुष्य का जीवन अधिकांशतः आसक्ति और विरक्ति के बीच चलता रहता है, इसी के चलते वह जीवन भर अनेक प्रकार के भोग-विलास में डूबा रहता है। उसके कुछ मित्र बनते हैं तो कुछ शत्रु, इसलिये व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसकी जीवात्मा अपने लोक को न जाकर बीच में ही रुक जाती है अथवा भटक जाती है। यह प्रेतात्मायें बनकर अपनी आसक्ति एवं भोग-विलास की इच्छाओं को पूरा करने में लग जाती हैं। कुछ दुष्ट प्रकृति की आत्मायें किसी अन्य व्यक्ति अथवा बच्चे के शरीर पर अधिकार कर उन्हें परेशान करने लगती हैं। कुछ आत्मायें, जो भटक जाती हैं वे अपनी गति-मुक्ति होने तक किसी अन्धेरे स्थान पर दुबकी रहती हैं। दुष्ट प्रकार की आत्माओं पर नियंत्रण करना कुछ कठिन होता है किन्तु फिर भी हो जाता है।•

इसके बाद ऐसा विश्वास किया जाता है कि कुछ आत्माओं को मोक्ष प्राप्त हो जाती है। किसे मोक्ष मिली और किसे नहीं, यह सब अज्ञात एवं रहस्य है। इसके बारे में कोई

- अगर आप प्रेतात्माओं के बारे में अधिक जानना चाहते हैं, तो लेखक की पुस्तक **ऊपरी बाधा : पीड़ा मुक्ति के उपाय** अवश्य पढ़ें।

कुछ स्पष्ट रूप से नहीं बता सकता।

सम्भवत: आत्माओं की बात यहाँ समाप्त हो जानी चाहिये किन्तु इस कड़ी में एक भाग छूट गया है और वह भाग पितर आत्माओं से सम्बन्ध रखता है, सबसे अधिक प्रभाव पितर आत्माओं का ही देखने में आता है। पितर आत्माओं को कुछ व्यक्ति प्रेतात्मा ही मान लेते हैं लेकिन यह प्रेतात्मायें नहीं होती हैं लेकिन प्रेतात्माओं से बहुत अलग भी नहीं होती हैं। इन दोनों के बीच हल्की सी दीवार अर्थात् अन्तर रहता है। यह अन्तर क्या होता है, इसे यहाँ संक्षिप्त में समझने का प्रयास करते हैं-

❒ पितर आत्माओं का स्थान पितृलोक माना जाता है जबकि प्रेत आत्मायें अपने लोक को न जाकर पृथ्वीलोक पर ही अटकी रहती हैं तथा अपनी अतृप्त इच्छाओं को पूर्ण करने का प्रयास करती हैं।

❒ पितर आत्मायें किसी को अनावश्यक रूप से परेशान नहीं करती हैं जबकि प्रेतात्मायें चाहे जिसे परेशान करने लगती हैं।

❒ पितर आत्माओं की आसक्ति विशेष रूप से अपने परिवार के प्रति बनी रहती है और कभी-कभी अन्य लोगों की भी सहायता करती हैं जबकि प्रेतात्माओं की किसी के भी प्रति आसक्ति अथवा मोह नहीं होता और न उनका अपना कोई होता है। शरीर के मरने के बाद उसकी जीवात्मा का सभी से सम्बन्ध समाप्त हो जाता है, वह किसी को जानती-पहचानती नहीं हैं।

❒ पितर आत्माओं को देवताओं के समान समझा जाता है, जबकि प्रेतात्मायें अपनी दुष्टता के कारण सभी में भय का संचार करती हैं।

❒ पितर आत्मायें भोग के प्रति आकर्षित नहीं होती हैं जबकि प्रेतात्मायें प्रेत बनकर भी भोग अथवा प्रतिशोध के प्रति आसक्ति रखती हैं।

❒ पितर आत्माओं का सम्बन्ध केवल अपने वंशजों के परिवार तथा परिवार के सदस्यों के साथ ही रहता है जबकि प्रेतात्माओं का अपना कोई नहीं होता है, इसलिये उनकी प्रकृति उद्दण्ड प्रकार की होती है।

❒ पितर आत्मायें अपने अधूरे दायित्वों को पूरा करने के लिये परिवार के पुरुष सदस्यों को प्रताड़ित करती है, जब परिवार का सदस्य पितर आत्मा का कार्य कर देता है, तो बदले में वे उस मनुष्य को सब कुछ दे देती हैं, इसके विपरीत प्रेतात्मायें किसी के भी शरीर पर अधिकार करके उसे पीड़ा पहुँचाती हैं।

किसी को इस बात की शंका नहीं करनी चाहिये कि वास्तव में पितर आत्मायें व्यक्ति को किसी कार्य विशेष को पूरा करने के लिये दबाव बनाती हैं और अपने वंशजों के द्वारा वह कार्य न करने पर दण्डित भी करती हैं लेकिन कार्य सम्पन्न हो जाने के बाद वे उसे भारी पुरस्कार भी प्रदान करती हैं।

पितर एवं प्रेतात्माओं में अन्य और भी अनेक आधारभूत अन्तर हैं किन्तु वे सब

यहाँ उल्लेख करने योग्य नहीं हैं। उपरोक्त में इनके बारे में जो भी कुछ बताया गया है, वह केवल इस बात को स्पष्ट करने के लिये है कि पितरों को प्रेतों के समकक्ष न रखा जाये और न उस दृष्टि से देखा जाये क्योंकि पितर इन सबसे बहुत ऊँचे स्तर के होते हैं। मानव शरीर का त्याग करने के बाद भी कुछ जीवात्मायें अपने परिवार के प्रति मोह बंधन में बंधी रहती हैं। ऐसा सभी के साथ हो, यह आवश्यक नहीं है लेकिन कुछ के साथ ऐसा अवश्य होता है।

बहुत से लोग पितर आदि को स्वीकार नहीं करते हैं और इस बारे में जब भी कभी किसी सन्दर्भ में बात होती है तो उसका मजाक भी उड़ाते हैं। किसी के बारे में बिना कुछ जाने-समझे उसका मजाक बनाने का प्रयास नहीं करना चाहिये। यह एक विडम्बना ही कही जायेगी कि पितर आदि की अवधारण हमारे देश में प्राचीनकाल से चली आ रही है, तब पश्चिमी देशों में इस बारे में इतनी जानकारी नहीं थी, उनकी खोज-खबर केवल अलौकिक शक्तियों एवं प्रेतात्माओं पर ही अधिक थी। आज विश्वभर में पितरों के बारे में काफी अनुसंधान हुए हैं और हो रहे हैं लेकिन हमारे यहाँ इसके प्रति ज्ञान और सम्मान दोनों ही घटता जा रहा है।

इस बारे में पहले चर्चा की जा चुकी है कि शरीर मरता है किन्तु आत्मा कभी नहीं मरती है लेकिन यह भी रहस्य ही है कि मृत्यु के बाद आत्मा का होता क्या है? अभी तक आत्मा और शरीर के बारे में सबसे अच्छी व्याख्या गीता में श्रीकृष्ण के द्वारा की गई है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है-

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

– गीता 2 अध्याय/20

अर्थात् यह आत्मा न कभी जन्म लेती है और न कभी मरती है, यह अजन्मी, नित्य शाश्वत और पुरातन है। मरना-जीना केवल शरीर का धर्म है। शरीर का नाश हो जाने पर भी आत्मा का नाश नहीं होता है। योग वशिष्ठ के अनुसार लाखों शरीरों का अन्त होने के उपरांत भी आत्मा अक्षय स्थित रहती है।

आत्मा के बारे में विद्वानों का मत है कि सत्संस्कार होने पर व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् यही अक्षय आत्मा 'पितर' रूप में क्रियाशील रहती है। यह अपनी आत्मा की उन्नति के लिये प्रयासरत रहने के साथ ही अपने स्वजनों के प्रति विशेष अनुराग रखती है और समय-समय पर उनकी सहायता करती है। इन पितरों से सम्पर्क करने पर लाभ ही लाभ होते हैं। ऐसा माना जाता है कि पहले योग द्वारा मनुष्य के मरने के बाद सूक्ष्म शरीर के रहस्यों को स्थूल रूप से जानने के सफल प्रयास किये जाते थे। कुछ लोग पितरों से सीधा सम्बन्ध स्थापित करने में सफल रहते। चूंकि ऐसे लोगों की संख्या कम होती थी इसलिये वे इसका उपयोग अपना स्वार्थ साधने में करने लगे। जहाँ स्वयं का

स्वार्थ प्रबल हो जाये, वहाँ मानव कल्याण तथा जनकल्याण हो ही नहीं सकता। यही कारण है कि लोक कल्याण का भाव उनमें पनप ही नहीं पाया, परिणामस्वरूप पितर सम्बन्धी ज्ञान एवं विद्या पश्चिमी देशों को जाने लगी है, पिछले लगभग 100 वर्षों में वहाँ इस सम्बन्ध में अनेक अनुसंधान तथा खोजें हुई हैं और इसके माध्यम से अनेक गहरे तथा अनसुलझे रहस्य भी सामने आने लगे हैं।

इस बारे में कुछ व्यक्तियों को अपनी साधना शक्ति द्वारा इतनी सिद्धि प्राप्त होती है कि वे अपने योगबल द्वारा किसी पितर का प्रवेश किसी व्यक्ति के शरीर में करवा कर उससे अनेक काम की जानकारी ली जाती थी। ऐसी पितर आत्मायें अनेक लोगों की विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान चुटकी बजाते ही कर देती थी। ऐसा करने वाले लोगों से दान के रूप में धन लिया करते थे। बाद में इस विद्या में भी ढोंग होने लगा। कुछ लोग इस प्रकार का नाटक करने लगे कि उनमें पितर आत्मायें आती हैं, वे लोगों की समस्याओं को दूर करने के नाम पर काफी पैसा ले लेते थे। कोई व्यक्ति स्वयं ही ऐसा ढोंग करने लगता मानो उसके शरीर में किसी पितर आत्मा का प्रवेश हुआ है, लेकिन इस ढोंग करने वाली बात को छोड़ दिया जाये तो आज भी पितरों से सम्पर्क करके उनसे लाभ लिया जा सकता है। इस विषय पर शोध करने वाले वैज्ञानिकों का भी यही निष्कर्ष है कि आत्मायें दूसरे लोकों में होने के उपरांत भी अपने प्रियजनों को संकेत भेजना चाहती हैं। यह संकेत इतने सूक्ष्म होते हैं कि इनको परिजन पकड़ नहीं पाते हैं और यह व्यर्थ चले जाते हैं। कुछ आत्मायें बहुत शक्तिशाली होती हैं जो अपनी बात को किसी के माध्यम से कह सकती हैं अथवा लिख सकती हैं। कुछ आत्मायें किसी माध्यम के शरीर में आकर अनेक लोगों की समस्याओं को दूर करने में भी सहायता करती हैं। हमारे देश में अनेक स्थानों पर विशिष्ट माध्यमों के शरीर में आत्मायें आती हैं, जो अन्य लोगों के द्वारा पूछे गये प्रश्नों का सही-सही उत्तर देती हैं। कई बार माध्यम के शरीर में एक आत्मा आकर अन्य आत्माओं से मिलवाने का काम भी करती हैं। इनकी बताई गई बातें, एकदम सही होती हैं।

इन बातों में किसी प्रकार की बनावट अथवा कल्पना मात्र नहीं है बल्कि यह पूरी तरह से सही है। हमारे यहाँ समस्या यह है कि पितर अथवा आत्मा जैसी बातों को लेकर कुछ पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित व्यक्ति इनका मजाक बनाते हैं जबकि पश्चिमी देशों में इन्हीं विषयों में शोध कार्य किये जाते हैं, खोजें की जाती हैं। इन खोजों के जो परिणाम हमारे सामने आते हैं, तो उन्हें मानने में बिलकुल विलम्ब नहीं करते हैं। उन्हें स्वीकार भी करते हैं और उन पर आश्चर्य भी करते हैं।

अमेरिका के रेवरेंड आर्थर फोर्ड ने आत्माओं के बारे में काफी शोध किया था। वे स्वयं आत्माओं के लिये माध्यम बन जाते थे। फोर्ड इतने प्रसिद्ध हो गये थे कि उन पर पुस्तकें लिखी जाने लगी। शेरवुड एडी ने अपनी एक पुस्तक 'यू विल सरवाइव आफ्टर

डेथ (आप मृत्यु के बाद भी जीवित रहेंगे)' में फोर्ड की उपलब्धियों के बारे में काफी कुछ लिखा। अमेरिका की ही रूथ मान्टगुमरी महिला की भी इस विषय में काफी दिलचस्पी थी। वे आत्माओं द्वारा भविष्य के बारे में बताने वाली महिला जीन डिक्सन के सम्पर्क में आने के बाद इस विषय में काफी कुछ और जानने को उत्सुक थी। उन्होंने जब शेरवुड एडी की पुस्तक पढ़ी तो वे फोर्ड से मिलने को व्यग्र हो उठीं। वे उनसे मिलकर आत्माओं के बारे में काफी कुछ जानना चाहती थी। तभी सौभाग्य से वाशिंगटन के किसी चर्च में अध्यात्म के आख्यान के लिये फोर्ड का आना हुआ। रूथ ने इस अवसर का लाभ उठाने का निश्चय किया। वे फोर्ड से मिलीं और अपने अभिप्राय के बारे में बताया। फोर्ड ने उन्हें दो दिन बाद मिलने का समय दिया।

रूथ दो दिन के बाद फोर्ड से मिली और अपने मन में जो जिज्ञासायें एवं संदेह थे, उनके बारे में बात की। फोर्ड ने सब प्रश्नों का उचित एवं संतुष्टिपूर्वक उत्तर दिया। फिर रूथ ने प्रश्न किया कि क्या आत्माओं का आवाहन किया जा सकता है? फोर्ड ने कहां कि हाँ, किया जा सकता है। रूथ ने कहा कि ठीक है, किसी ऐसी आत्मा को बुलायें जो मेरा परिचय उन लोगों से कराये जिनसे मेरा पहले से ही परिचय हो ताकि मैं पता लगा सकूं कि जो कहा जा रहा है, वह कितना सही है और कितना गलत है?

फोर्ड ने उसकी बात स्वीकार कर ली। वे एक सोफे पर आराम की मुद्रा में बैठ गये। रूथ को उन्होंने अपने सामने अन्य सोफे पर बैठने का संकेत किया। फिर अपनी आँखों पर काले कपड़े की पट्टी बांधी और सोफे की पुश्त पर अपना सिर टिका दिया। वातावरण एकाएक रहस्यमय हो गया था। तभी फोर्ड के मुँह से आवाज आने लगी लेकिन वह उनकी आवाज न होकर किसी अन्य व्यक्ति की विचित्र प्रकार की घरघराती आवाज लग रही थी। आवाज कह रही थी कि श्रीमती रूथ, आपके चाचा आपसे मिलना चाहते हैं। इनका नाम फ्रेंड बैनेट है, जो काफी समय पहले अफ्रीका के किसी चर्च में पादरी थे। इस पर रूथ तत्काल बोल पड़ी कि नहीं, यह गलत है, इस नाम के व्यक्ति को मैं नहीं जानती, तब ये मेरे चाचा कैसे हो सकते हैं, तब माध्यम बने फोर्ड के मुँह से आवाज आई कि यह भी तुम्हें नहीं जानते हैं लेकिन तुम्हारे पति इनको खूब अच्छी तरह जानते हैं, उन्होंने ही इनको तुम्हारे बारे में बताया है। तुम्हारे पति का नाम 'बॉब' है, चाहो तो इस बारे में अपने पति से पूछ लें। आवाज कुछ पलों को शांत हो गई। रूथ को आश्चर्य हुआ क्योंकि वास्तव में उसके पति का नाम सही बताया गया था।

रूथ अभी आश्चर्य में ही थी कि फोर्ड के मुख से फिर आवाज आई कि जरा ठहरो, तुम्हारे पिता भी यहीं पर हैं, वे तुमसे बात करना चाहते हैं, वह अपना नाम 'ट्रा' बता रहे हैं। रूथ को फिर आश्चर्य हुआ। उनके पिता का नाम बिलकुल सही था। माध्यम फोर्ड के मुख से फिर आवाज आई- तुम्हारे पिता तुमसे और तुम्हारी माँ से बहुत प्यार करते थे। जब उनकी मृत्यु हुई उस समय वे किसी बीमारी से पीड़ित थे और तुम उनके

पास नहीं थी। मैं तुम्हारी माँ को भी देख रहा हूँ। वह अभी तुमसे बहुत दूर हैं और कुछ समय बाद आयेंगी। उनकी दायीं टांग में दर्द की समस्या है। इसके बाद फोर्ड शांत हो गये। थोड़ी देर वे और इसी प्रकार निश्चल बैठे रहे, फिर आँखों से पट्टी हटा दी। रूथ से प्राप्त अनुभव के बारे में पूछा तो उसने बताया कि जो कुछ कहा गया था, वह बिलकुल सही था। जब उसके पिता की मृत्यु हुई, उससे पहले वे बीमार थे। इस बारे में उसे माँ ने बताया था। जब पिता की मृत्यु हुई, तब वह अखबार के काम से मिस्र गई थी। वहाँ पर टेलीग्राम के द्वारा उनकी मृत्यु का समाचार मिला था।

विद्वानों का ऐसा मत है कि पितर आत्मायें हमेशा ही मनुष्यों के कल्याण की भावना से ओत-प्रोत रहती हैं। उनका प्रथम प्रयास अपने परिवार के सदस्यों के कल्याण का होता है, इसके बाद वे अन्य किसी की भी सहायता कर सकती हैं। बहुत से लोग इस भ्रम में रहते हैं कि आत्मायें अथवा पितर केवल अपने परिवार के लोगों के बारे में ही सोचते हैं, यह ठीक नहीं है। वे अपने परिवार के सदस्यों के सुख के लिये हमेशा संवेदनशील रहते हैं, उन्हें कभी-कभी प्रताड़ित भी करते हैं लेकिन वे अन्य दु:खी और परेशान लोगों की सहायता भी करते हैं। ऐसी घटनायें कभी-कभी इतना आश्चर्य उत्पन्न कर देती हैं कि इनसे शीघ्र उबरना भी कठिन हो जाता है। मुझे एक जातक ने इसी प्रकार की एक सत्य घटना के बारे में बताया जिससे मेरा इस बात में विश्वास बढ़ गया कि पितर सभी की मदद कर सकते हैं। यह घटना कुछ इस प्रकार थी-

शंकर लाल का कपड़े का व्यवसाय था। वह कुछ दुकानों के लिये दलाली भी करता था अर्थात् कुछ बड़ी दुकानों का माल बिकवाने के लिये मध्यस्थता करता था। उसकी केवल दो बेटियां थी। बड़ी बेटी का रिश्ता तय कर दिया था। दिसम्बर में उसकी शादी तय कर दी गई थी। घर एवं वर, दोनों अच्छे थे। तभी एकाएक बाजार में बहुत मंदी आ गई। व्यवसाय सब चौपट हो गया। ऐसे समय में जो पैसा मांगते हैं, वे पीछे पड़ जाते हैं और जिन्होंने पैसा देना होता है, वे रोक कर बैठ जाते हैं। शंकर लाल के साथ भी यही हुआ। सबने उसका पैसा रोक लिया और लेने वाले पीछे पड़ गये। उसने सबका पैसा चुकाया। शादी के लिये जो पैसा रखा था, वह भी भुगतान करने में चला गया। घर के आभूषण तक गिरवी रखने पड़ गये थे। यह बात मई माह की थी। छह महीने बाद बेटी की शादी करनी थी और पास में पैसा नहीं था। उसकी नींद उड़ गई। दुकान पर काम करने वाले दोनों नौकर भी चले गये। स्थिति कुछ ऐसी बनी कि घर का खर्चा चलाना कठिन हो गया था। एक-एक करके चार महीने और चले गये। विवाह सिर पर खड़ा था और पैसों की कोई व्यवस्था नहीं थी। पत्नी का भी हाल बुरा था। एक मन होता कि विवाह को कुछ समय के लिये आगे कर दें, लेकिन लड़के वाले तैयार नहीं थे। क्या करें और क्या न करें, कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

एक दिन संध्या समय वह छत पर काफी चिन्तित तथा उदास बैठा हुआ था।

उसने आसमान की तरफ सिर किया और धीमे स्वर में कहा कि मेरे ईश्वर अब तू ही मेरी इज्जत बचा सकता है। कोई ऐसा रास्ता दिखा कि बिगड़े काम बन जायें। वह बार-बार इसी बात को दोहरा रहा था। तभी उसे अपने बिलकुल पास से आवाज आई कि चिंता मत कर, सब काम ठीक से होंगे। यह घरघराती आवाज लग रही थी और ऐसा लग रहा था कि बहुत दूर से आ रही थी। इस आवाज को सुनकर शंकर लाल आश्चर्य में भर गया। आस-पास कोई नहीं था लेकिन आवाज तो उसने सुनी थी। कौन था बोलने वाला? इस बारे में पत्नी को बताया तो उसने वहम बताकर बात समाप्त कर दी। वह भी भारी चिंता में थी, इसलिये इस प्रकार की बातें भी ठीक नहीं लग रही थी। रात को शंकर लाल सोया तो उसे इस बात का अहसास हुआ कि कोई उसके आस-पास है, वह केवल छाया जैसी आकृति थी जिसका चेहरा वह ठीक से देख नहीं पा रहा था। वह आकृति भी कह रही थी कि चिंता मत कर, सब काम ठीक से होंगे। इतना सुनते ही आँख खुल गई। शरीर पसीने से भीग चुका था। उस रात बड़ी देर तक नींद नहीं आई, फिर वह सो गया।

दूसरा दिन उसके लिये आश्चर्यजनक सिद्ध हुआ। उसने जैसे ही दुकान खोली, वैसे ही दोनों नौकर वापिस आ गये। काम छोड़कर जाने की जो गलती उन्होंने की थी, उसके लिये माफी मांग रहे थे। शंकर लाल ने उनको माफ कर दिया। दोनों तुरन्त काम पर लग गये। शंकर लाल के लिये यह अच्छी बात थी, लेकिन अभी काफी कुछ अच्छा होना बाकी था। ग्यारह बजते-बजते उसकी दो बड़ी पार्टियां दुकान पर आईं। उनसे दो लाख से अधिक का भुगतान लेना था। दोनों ने पूरे भुगतान के चेक उसे सौंप दिये। दोनों ने एक जैसी बात बताई कि रात को सपने में कोई अदृश्य शक्ति उनके पास आई और कहा कि अगर तुम्हारा पैसा नहीं लौटाया तो वह हमें बर्बाद कर देगा। दिन चढ़ते ही उन्होंने पैमेंट की व्यवस्था की और उसके पास चले आये। शंकर लाल को आश्चर्य हुआ। उसे इस बात का विश्वास होने लगा था कि यह सब उसी शक्ति का चमत्कार था जो उसे सपने में दिखाई दी थी और जिसकी आवाज संध्या समय सुनी थी। इसके बाद दिन में चार-पांच लोग और आये। उन्होंने भी शंकर लाल का पैसा रोक रखा था और अब पूरा पैसा लौटा दिया था। शाम को घर आकर जब इसके बारे में पत्नी को बताया तो उसे इन सब पर विश्वास नहीं हो रहा था जबकि सब कुछ वास्तव में घटित हुआ था। वह संध्या समय छत पर गया। आसमान की तरफ हाथ जोड़ते हुए कहा कि आप जो भी कोई हैं, मेरे लिये ईश्वर से बढ़कर हैं। मेरी मदद करके आपने मेरी इज्जत बचा ली। मैं आपको प्रणाम करता हूँ। इसका प्रत्युत्तर तो शंकर लाल को नहीं मिला लेकिन उसे ऐसा लगा कि वहाँ उसके अलावा भी कोई है लेकिन दिखाई नहीं दे रहा। कुछ देर ऊपर रुक कर वह नीचे आ गया। अब उसमें उत्साह का संचार हो गया था। आने वाले दिनों में लोगों ने उसका रोका हुआ सारा पैसा लौटा दिया। जिन लोगों ने उसे माल देना बंद कर

दिया था, उन्होंने वापिस माल देना चालू कर दिया। अब ऐसा लग रहा था कि चारों तरफ से पैसा चल कर उसके पास आ रहा था। समय पर बेटी का विवाह हुआ। किसी भी कार्य में कोई बाधा अथवा समस्या नहीं आई और सभी कार्य अच्छे ढंग से सम्पन्न हो गये थे।

बहुत से विद्वान मानते हैं कि पितर देवताओं से भी श्रेष्ठ होते हैं क्योंकि वर्तमान में किसी देवी अथवा देवता को प्रसन्न करके उनसे वांछित वरदान की प्राप्ति करना अथवा अपने लिये किसी सहायता को प्राप्त करना कठिन हो सकता है लेकिन अगर हम अपने पितरों को प्रसन्न कर लें तो हमें शीघ्र ही उनकी कृपा तथा आशीर्वाद प्राप्त हो सकता है। यह कैसे प्राप्त हो सकेगा, इस बारे में मैं आपको विस्तार से अलग अध्याय में बताने का प्रयास करूँगा। यहाँ पर इनसे सम्बन्धित कुछ अन्य बातों की तरफ ध्यान देना आवश्यक होगा जिन बातों से पितर प्रसन्न होते हैं, वह सारी बातें व्यक्ति के परिवार के साथ जुड़ी होती हैं अर्थात् पितरों को प्रसन्न करने के साथ-साथ परिवार को भी सुखी एवं सम्पन्न बनाया जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो इसके साथ पारिवारिक मानवीयता का पक्ष काफी सीमा तक जुड़ा होता है। अगर ज्योतिषीय परिभाषा को छोड़ दें तो पितृदोष जैसी कोई स्थिति होती ही नहीं है, यह व्यक्ति के स्वयं के कर्मों के साथ जुड़ी होती है। सम्भवत: इसी कारण से अनेक ज्योतिषी पितृदोष को ज्योतिष का विषय मानते भी नहीं हैं क्योंकि वे मानते हैं कि इसका निदान एवं समाधान केवल व्यक्ति के स्वयं के कार्यों द्वारा ही सम्भव है, फिर भी इसके ज्योतिषीय पक्ष की उपेक्षा नहीं की जा सकती क्योंकि अनेक ज्योतिषी आज भी इसे ज्योतिष से जुड़ा विषय मानते हैं और ज्योतिषीय आधार पर ही इसका समाधान बताते हैं।

ऐसा सभी मानते हैं कि देवता भावनाओं के भूखे होते हैं, उनकी पूजा-अर्चना सच्ची भावनाओं के साथ की जाये तो वे शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं चाहे इसके लिये पूजा के साधनों का उपयोग बिलकुल भी न किया जाये। जब हम यह मानते हैं कि पितर देवताओं से भी श्रेष्ठ होते हैं तो फिर वे हमारी भावनाओं से क्यों प्रसन्न नहीं होंगे? मैं सभी से यह बात स्पष्ट रूप से कहता हूँ कि पितर हमेशा कल्याणकारक होते हैं, लेकिन इसके लिये हमें उनकी अपेक्षाओं के अनुसार ही चलना होगा। मैंने ऐसे अनेक लोगों को देखा है जो पितृकृपा से जीवन में अपेक्षा से कहीं अधिक उन्नति कर पाने में सफल रहे हैं और जीवन की सभी सुख-सुविधायें उनके लिये सुलभ होती हैं। एक अन्य अध्याय में मैंने सभी के लिये विशिष्ट उपायों का उल्लेख किया है जिनका प्रयोग आप आसानी के साथ कर सकते हैं और इससे आपको मानसिक शांति की प्राप्ति भी होगी।

पितरों की सन्तुष्टि आवश्यक क्यों ?

पितरों की सन्तुष्टि किये बिना व्यक्ति अपने जीवन में सभी सुखों को प्राप्त नहीं कर सकता। मनुष्य योनि में जन्म के साथ ही कुछ दोष और ऋण व्यक्ति के सांथ जुड़ जाते हैं, उनमें पितृ ऋण भी प्रमुख है। इस ऋण से मुक्त हुए बिना किसी भी व्यक्ति की सद्गति नहीं हो सकती। यही वह ऋण है, जिससे मुक्त होने के पश्चात् व्यक्ति मोक्ष की आकांक्षा कर सकता है। जिस प्रकार विवाह के पश्चात् जब संतान उत्पन्न होती है, तो उसके लालन-पालन, अध्ययन-अध्यापन तथा संस्कारों का निर्वहण का दायित्व हमारे ऊपर होता है, वैसे ही अपने पितरों के प्रति पूजन-अर्चन इत्यादि की जिम्मेदारी हमारी ही होती है।

यदि पितर असन्तुष्ट हो जायें, तो वे आशीर्वाद के स्थान पर श्राप देते हैं और यही श्राप मनुष्य जीवन को नरकमय बना देता है। इसलिये पितरों की सन्तुष्टि करना आवश्यक है। जिस प्रकार मनुष्य अपनी विशिष्ट कामनाओं की प्राप्ति के लिये विभिन्न देवी-देवताओं की उपासना करता है, वैसे ही विभिन्न भौतिक कामनाओं और समृद्धि के लिये पितरों की पूजा करने का विधान धर्मग्रंथों में मिलता है। जो कोई व्यक्ति अपने पितरों के निमित्त पूजा-उपासना करता है, पितृकर्मों को श्रद्धा के साथ पूर्ण करता है, तो उसे निश्चित रूप से अपने पितरों का आशीर्वाद मिलता है। हालांकि ऊर्ध्वगति वाले वे पितर, जो हमारे अनेक पुरानी पीढ़ियों से सम्बन्धित हैं, वे हमें असन्तुष्ट होकर किसी प्रकार का श्राप भले ही नहीं दें, परन्तु वे अधोगति वाले पितर, जो अपनी इच्छाओं के लिये पूर्ण रूप से हमारे ऊपर ही आश्रित हैं, यदि वे असंतुष्ट हो जायें, तो अवश्य ही श्राप देते हैं। इन श्रापों के प्रभाव से पीड़ित के समक्ष विवाह नहीं होना, संतति बाधा जैसी समस्यायें होने लगती हैं।

मनुष्य अपनी भौतिक कामनाओं के लिये विभिन्न कार्यों के साथ ही अपने इष्ट की पूजा-अर्चना भी करता है। अनेक बार प्रयास करने के उपरान्त भी उसे सफलता प्राप्त नहीं हो पाती है, तो वह इसका दोष अपने भाग्य को देने लगता है। फिर अपने इष्ट को संतुष्ट करने के लिये अतिरिक्त प्रयास करता है। यदि वह अपने इष्ट के साथ-साथ अपने पितरों को संतुष्ट करने का भी प्रयास करे, तो निश्चित रूप से उसकी भौतिक कामनायें शीघ्र पूर्ण हो सकती हैं। अनेक परिस्थितियों में यह देखा गया है कि पितरों के असंतुष्ट हो जाने पर व्यक्ति का भौतिक विकास पूर्ण रूप से बाधित हो जाता है और उन्हें कई प्रकार की शारीरिक पीड़ाओं से गुजरना पड़ सकता है। ऐसी स्थिति में जीवन में कोई भी सुख निरन्तर रूप से नहीं रह पाता और अत्यधिक परिश्रम करने के पश्चात् भी सफलता

प्राप्त नहीं हो पाती। इसलिये पितरों को सन्तुष्ट रखना अत्यधिक आवश्यक माना जाता है।

पितरों की सन्तुष्टि से केवल यह नहीं समझना चाहिये कि आप उन्हें मानते हैं और उनके निमित्त पितृकार्य निरन्तर रूप से करते हैं। अनेक बार यह देखा गया है कि गलत आचरण और अपने दायित्वों का निर्वाह नहीं करने से भी पितर असन्तुष्ट हो जाते हैं, इसलिये अपने आचरण में आदर्शों का पालन करना अत्यधिक जरूरी होता है। साथ ही व्यक्ति के जो दायित्व हैं, उन्हें भी पूरा करना आवश्यक है। सृष्टि के प्रारम्भ में वे पितर ही थे, जिनसे हमारी उत्पत्ति हुई थी, इसलिये यह हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम अपने पितरों को मानकर आदर्शों का पालन करें और उन्हें पितृकर्म के द्वारा कव्य प्रदान कर सन्तुष्ट रखने का सदैव प्रयास करें।

मार्कण्डेय पुराण में प्रजापति रुचि और पितरों के बीच जो संवाद हुआ उसके अन्तर्गत रुचि को पितरों ने यह बात समझाई थी कि जीवन से विरक्त होकर ईश्वर प्राप्ति के लिये उपासना करने से श्रेष्ठ है कि वह विवाह कर संतति उत्पन्न करें और गृहस्थ धर्म में रहकर ईश्वर की आराधना करें। अग्निहोत्र और यज्ञों में बैठने का अधिकार सपत्नीक गृहस्थ को ही होता है। यह कर्म निष्काम भाव से हो, तो मोक्ष प्रदान करने वाले होते हैं और सकाम भाव से किये जायें, तो स्वर्गादि फलों के कारण बनते हैं। गृहस्थ पुरुष समस्त देवी-देवताओं, पितरों, ऋषियों और अतिथियों की पूजा करके पुण्यमय लोगों को प्राप्त कर सकता है, इसलिये रुचि को पितरों ने गृहस्थ धर्म अपनाने का सुझाव दिया। अहंकार का त्याग कर चुके रुचि ने पितरों की बात को स्वीकार करते हुए विवाह हेतु उपयुक्त कन्या के वरण के लिये सम्पूर्ण पृथ्वीलोक पर विचरण किया, परन्तु उन्हें विवाह के योग्य कोई कन्या प्राप्त नहीं हुई। ऐसी स्थिति में उन्होंने परमपिता ब्रह्मा की कई वर्षों तक उपासना की। ब्रह्माजी ने उपासना से प्रसन्न होकर प्रकट होकर कहा कि स्त्री प्राप्ति के लिये तुम्हें पितरों का ही पूजन करना चाहिये, क्योंकि वे ही तुम्हें विवाह के योग्य स्त्री दे सकते हैं और वे ही तुम्हारी समस्त अभिलाषाओं को पूर्ण करेंगे।

ब्रह्माजी की सलाह पर रुचि ने नदी के तट पर जाकर सर्वप्रथम पितृकार्य पूर्ण किया और पूर्ण तत्परता के साथ संयमित होकर पितरों की उपासना प्रारम्भ कर दी। उनकी उपासना से प्रसन्न होकर पितर प्रकट हुए और मालिनी नामक अप्सरा से रुचि को विवाह का आदेश दिया। रुचि और मालिनी को पुत्र के रूप में रौच्य प्राप्त हुए, जो बाद में रौच्य मनु के नाम से विख्यात हुए। पुराणों का यह प्रसंग इस बात को दर्शाता है कि पितरों की कृपा के बिना व्यक्ति का मोक्ष प्राप्त करना भी असम्भव हो जाता है। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए देवी-देवताओं की उपासना के साथ पितरों की पूजा-उपासना का महत्त्व बताते हुए इसके विधि-विधान को भी समझाया गया है।

किसी भी व्यक्ति को मनुष्य जीवन से मुक्ति प्राप्ति में पितृ ऋण को चुकाना

आवश्यक माना गया है। इसके अतिरिक्त पुराणों में यह भी उल्लेख मिलता है कि मृत्यु के पश्चात् भी पितर अपने वंशजों से यह कामना रखते हैं कि वे उन्हें संतुष्टि के लिये कव्य प्रदान करते रहेंगे। श्राद्ध कर्म और पिण्डदान के द्वारा दिये जाने वाला कव्य ही पितरों की सन्तुष्टि का कारण बनता है। अनेक लोगों को यह शंका रहती है कि श्राद्ध में दिया जाने वाला कव्य अर्थात् भोजन पितरों को कैसे प्राप्त होगा। ऐसे प्रश्नों का उत्तर भी शास्त्रों में दिया गया है। तर्पण के दौरान जिन नाम और गोत्रों का उच्चारण किया जाता है, उनको जानकर अग्निष्वात्त और विश्वेदेव जैसे पितरों के दूत भोजन को पितृलोक में पहुँचा देते हैं। पितर चाहे पितृयोनि में हों, प्रेतयोनि में हों अथवा दूसरा जन्म लेकर किसी भी योनि में हों, उन्हें यह कव्य किसी न किसी रूप में प्राप्त हो जाता है। मनुष्य योनि में यह अन्न रूप में, पशुयोनि में तृण रूप में, नागयोनि में वायु रूप में, यक्षयोनि में पान रूप में तथा अन्य योनियों में श्राद्धीय वस्तु भोगजनक तृप्तिकर पदार्थों के रूप में प्राप्त हो जाती है। इसलिये श्राद्ध इत्यादि कर्मों पर किसी भी प्रकार की आशंका अथवा अविश्वास नहीं रखना चाहिये। पितरों की संतुष्टि के लिये व्यक्ति को सदैव पितृकर्मों को सुचारू रूप से करते रहना चाहिये।

जिस घर में पितरों की संतुष्टि निरन्तर होती रहती है, वहाँ किसी भी प्रकार की अकाल मृत्यु अथवा आर्थिक कष्ट नहीं होते हैं। यदि जन्मपत्रिका में ग्रहों की स्थिति अनुकूल नहीं होती है, तो भी सभी मनोकामनायें समय पर पूर्ण हो जाती हैं और बाधायें छोटे रूप में सामने आती हैं। इसलिये पितरों की सन्तुष्टि से व्यक्ति का जीवन सदैव अनुकूल रहता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए अपने पितरों की सन्तुष्टि के लिये प्रत्येक व्यक्ति को हमेशा तत्पर रहना चाहिये।

इस विषय से सम्बन्धित एक उदाहरण देना सार्थक रहेगा। गुजरात के अहमदाबाद के एक जातक काफी समय से मुझसे ज्योतिष सम्बन्धी परामर्श ले रहे थे। एक बार किसी कार्य से उनका जयपुर आना हुआ। वे समय लेकर मुझसे मिले। बातों ही बातों में पितरों से सम्बन्धित विषय पर चर्चा चल पड़ी। उन्होंने अपने साथ घटित घटना के बारे में विस्तार से बताया। इस जातक की कही गई बातों को सार रूप में आपको बता रहा हूँ। जातक का विवाह होने के बाद एकाएक उनके सामने अनेक प्रकार की समस्यायें उत्पन्न होने लगी। जातक का अपना व्यवसाय था, विवाह के बाद उसमें भी बाधायें आने लगीं। आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी थी। उनके मित्रों एवं कुछ सम्बन्धियों ने जातक को बताया कि उनकी पत्नी के पांव शुभ नहीं हैं, इसलिये विवाह के तत्काल बाद इस प्रकार की समस्यायें आने लगी थी। उसने स्वयं तथा उनके परिवार वालों ने इन बातों पर विश्वास नहीं किया। तब उन्होंने एक ज्योतिषी से परामर्श लिया। जन्मपत्रिका का अवलोकन करने के बाद उन्हें बताया गया कि उन पर सभी समस्यायें पितृदोष के प्रभाव के कारण आ रही हैं। जातक ने पितरों के बारे में जानकारी ली। ज्योतिषी ने उसे

चेतावनी दी कि अगर पितृशांति नहीं करवाई गई तो आने वाले समय में अनेक समस्यायें उत्पन्न हो सकती हैं। उन्हें ज्योतिषी ने बहुत सारे उपाय बता दिये। जातक सुनकर घर आ गया। माँ से अपने दिवंगत परिजनों के बारे में जानकारी ली। माँ ने बताया कि उनके दादा का पूजा-पाठ आदि में बहुत विश्वास था। वे मानते थे कि उनके पास जो कुछ है, वह ईश्वर की कृपा से ही है। एक बार उनके नगर में भगवान विष्णु का मन्दिर बना। तब उन्होंने इच्छा जताई कि मंदिर में प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा में वे ग्यारह हजार देंगे लेकिन इससे पहले ही उनकी मृत्यु हो गई थी। उनके पिता तो साधू स्वभाव के थे। उनकी मृत्यु के बाद घर में कभी कोई समस्या नहीं आयी। अब समस्यायें आने लगीं तो स्पष्ट हुआ कि इसके पीछे दादाजी की अतृप्त इच्छा कारण बनी हुई थी क्योंकि प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा में वे ग्यारह हजार देने से पूर्व ही मृत्यु को प्राप्त हो गये थे।

जातक की आर्थिक स्थिति हालांकि बहुत अच्छी नहीं थी, फिर भी उसने 10-15 दिन में ग्याहर हजार रुपये उसी मंदिर में दान कर दिये। घर में पूर्व दिशा की तरफ एक छोटा सा स्थान बनवाया, जिसे वह 'आला' कहते थे। वहाँ उसने कुछ नहीं रखा। वहाँ एक दीपक संध्या समय लगाया और मानसिक रूप से पितरों का स्मरण करके आग्रह किया कि यह स्थान आपका है, आप यहाँ सुख-शांति से रहें और हमें अपना आशीर्वाद दें। इस उपाय के बाद धीरे-धीरे उसकी समस्यायें दूर होने लगीं। व्यवसाय पहले से भी अच्छी स्थिति में आ गया था। विवाह के पौने दो साल बाद उसे पुत्र संतान की प्राप्ति हुई। जातक ने बताया कि उसने केवल अपने पितरों का स्मरण किया, उनकी वंदना की और सब ठीक हो गया। उस 'आले' में संध्या समय दीपक अवश्य लगाया जाता है। इसे परिवार का कोई भी सदस्य लगा दिया करता है।

जातक की सारी बातें सुनकर मुझे भी बहुत आश्चर्य हुआ था फिर मुझे लगा कि मेरी जो विचारधारा थी कि पितरों को प्रसन्न करने से सब ठीक हो जाता है, एकदम सही थी। फिर भी मैंने जातक की जन्मपत्रिका का फिर से विश्लेषण किया और ग्रहों की दशाओं के अनुसार कुछ विशेष उपाय बताये। उसे यह समझाया कि पितरों की शांति के साथ-साथ ग्रहों की शांति भी आवश्यक है, इसलिये बताये गये उपाय अवश्य करे। इसके बाद जातक चला गया।

मैं सभी पाठकों को यह बताना चाहता हूँ कि अपने पितरों की कृपा प्राप्ति के लिये अधिक कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। आप किसी भी प्रकार से स्मरण करें, उनका आशीर्वाद आपको अवश्य ही प्राप्त होगा। यह मान कर चलें कि पितर हमारे आस-पास ही हैं।

इस प्रकार करें- श्राद्ध कर्म

समय की गति अत्यन्त तीव्र मानी गई है। हर काल में समय तीव्रता के साथ आगे की ओर बढ़ता चला जाता है। इसी के साथ अनेक परम्परायें तथा विचारधारायें या तो समाप्त हो जाती हैं अथवा उनका प्रभाव कम हो जाता है और इसके साथ-साथ अनेक नवीन विचारधारायें एवं परम्परायें प्रकाश में आ जाती हैं। अधिकांशत: समय का कुठाराघात प्राचीन परम्पराओं तथा मान्यताओं पर होता है। अधिक पढ़े-लिखे तथा युवावर्ग अपनी प्राचीन मान्यताओं एवं परम्पराओं को मानने के स्थान पर पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित होने लगते हैं। ऐसी स्थिति चिंताजनक तो है किन्तु इसके उपरांत भी अनेक ऐसी परम्परायें तथा मान्यतायें हैं जो कभी समाप्त नहीं हो सकती हैं चाहे समय कितनी भी तीव्रगति से क्यों न भागता जाये। इन्हीं में श्राद्ध कर्म को भी समझा जा सकता है। आजकल श्राद्ध कर्म के प्रति आधुनिक विचारधारा वाले लोगों की आस्था तथा विश्वास कम हुआ है किन्तु इसकी वास्तविकता तथा महत्त्व से इन्कार नहीं किया जा सकता है। सम्भव है कि अधिकांश व्यक्तियों को इस बारे में अधिक जानकारी ही न हो, इसलिये यहां पर श्राद्ध की आवश्यकता तथा महत्त्व को स्पष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है, जिसे समझना सभी के लिये आवश्यक होगा।

श्राद्ध को केवल मात्र कर्मकाण्ड मानकर चलना भूल होगी। श्राद्ध का हमारे पितरों के साथ गहरा सम्बन्ध होता है और पितरों का हमारे जीवन के प्रत्येक पक्ष पर बहुत अधिक प्रभाव रहता है। आज पितृदोष की समस्या के बढ़ने का मुख्य कारण अपनी प्राचीन परम्पराओं की उपेक्षा करना है, इसमें श्राद्धकर्म की उपेक्षा का विषय भी सम्मिलित है। यह बात सर्वविदित है कि श्राद्ध के द्वारा ही हम अपने पितरों का स्मरण करते हैं, उन्हें भोजन आदि अर्पित करके अपने कल्याण की कामना करते हैं। प्राचीनकाल से ही इस विषय पर जोर दिया जाता रहा है कि जितनी श्रद्धा से श्राद्धकर्म सम्पादित किया जायेगा, उतनी ही हमारे पितरों की कृपा हमें प्राप्त होगी। इस प्रकार श्राद्ध के साथ श्रद्धा तथा श्रद्धा के साथ स्वकल्याण की कामना का सम्बन्ध स्वत: ही हो जाता है। जितनी श्रद्धा से श्राद्ध किया जायेगा, पितर भी उतने ही अधिक प्रसन्न होंगे और उतना ही अधिक हमारा कल्याण करेंगे, अपना आशीर्वाद प्रदान करेंगे।

श्राद्ध शब्द श्रद्धा से आया है। इसके लिये कहा गया है कि-

'श्रद्धया कृतं सम्पादितमिदम्', श्रद्धया दीयते यस्मात्तच्छ्राद्धम्,
'श्रद्धार्थमिदं श्राद्धम्', 'श्रद्धया इदं श्राद्धम्'।

अर्थात् पितरों की तृप्ति के लिये किया जाने वाला कर्म ही श्राद्ध माना जाता है।

विश्वभर में जितने भी सम्प्रदाय हैं, उन सभी में हिन्दू सम्प्रदाय में आत्मा के महत्त्व को सर्वाधिक माना गया है। शरीर को नश्वर तथा आत्मा को अमर कहा गया है। इसीलिये यह विश्वास बना है कि आत्मा कभी मरती नहीं है। इसी आधार पर पुनर्जन्म की अवधारणा स्थापित हुई है। यही कारण है कि व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् पितरों की सन्तुष्टि के लिये उन्हें यथायोग्य भोज्य सामग्री अर्पित की जाती है। यह क्रिया ही **श्राद्ध** कहलाती है।

विद्वान आचार्यों का मत है कि सभी को अपने पितरों की सुख-शांति एवं उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये श्राद्ध अवश्य करना चाहिये। हमारे अनेक प्राचीन ग्रंथों में भी इसका उल्लेख प्राप्त होता है। प्राचीन काल में श्राद्ध की अत्यधिक महत्ता थी तथा कोई भी परिवार ऐसा नहीं होता था जहाँ पितरों का श्राद्ध न किया जाता हो। वर्तमान में नयी विचारधारा तथा पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव के कारण श्राद्ध पर लोगों की श्रद्धा तथा विश्वास कम होने लगा है। कुछ लोग इसे व्यर्थ मानते हैं। उनका अपना तर्क होता है कि यहां पर पितरों के नाम को दी जाने वाली खाद्य सामग्री उन तक कैसे पहुंचती होगी ? यह ऐसे कुतर्क हैं जिनका उत्तर न दिया जाना ही श्रेयस्कर होगा। कुछ लोग पितरों का श्राद्ध करते तो अवश्य हैं किन्तु इसमें उनकी पूर्ण आस्था न होने के कारण इसे आधे-अधूरे मन से निपटा दिया जाता है। दोनों ही स्थितियां गलत हैं। इसलिये इसे भी आगे स्पष्ट किया जायेगा कि अपने पितरों को जो भोज्य सामग्री हम यहां पर देते हैं, वह उन तक कैसे और किस रूप में पहुंचती है।

इसे पूर्व में बताया गया है कि श्राद्ध शब्द श्रद्धा से आया है, इस दृष्टि से यह आवश्यक है कि जहां श्रद्धा होगी वहां विश्वास का होना भी आवश्यक है। विश्वास के अभाव में श्रद्धा उत्पन्न नहीं हो सकती। हिन्दू धर्म का आधार श्रद्धा एवं विश्वास ही है। इसी कारण हम पत्थर की मूर्तियों को भगवान मान कर पूजते हैं। श्रद्धा के अभाव में की गई पूजा का कोई महत्व नहीं होता और यदि श्रद्धारहित होकर पूजा की जाती है तो वह फलदायी सिद्ध नहीं होती है। श्राद्ध हम अपने उन पूर्वजों का करते हैं जिनके कारण आज हमारा अस्तित्व है, जिनका जीवन भर हम सम्मान करते आये हैं। उनकी मृत्यु के बाद अपने पूर्वजों का श्राद्ध पूरी आस्था, विश्वास एवं श्रद्धा से करके उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जाती है। इस कर्म में श्रद्धा की सर्वाधिक आवश्यकता रहती है, इसीलिये इस कर्म को श्राद्ध कहा गया है।

पूर्ण विधि-विधान एवं श्रद्धा भाव से किया गया श्राद्ध कर्म अत्यत फलदायक तथा आत्म-कल्याणकारक होता है। इससे पितर तो प्रसन्न होते ही हैं, साथ ही स्वयं के कल्याण एवं संतुष्टि के भी मार्ग प्रशस्त होते हैं। विभिन्न शास्त्रों में श्राद्ध के अनेक भेद बताये गये हैं। मत्स्य पुराण के अनुसार श्राद्ध तीन प्रकार के होते हैं- नित्य, नैमित्तिक तथा काम्य। इसके लिये कहा गया है- **नित्यं नैमित्तकं काम्यं त्रिविध श्राद्धमुच्यते।**

भविष्य पुराण में अग्रांकित बारह प्रकार के श्राद्ध का उल्लेख प्राप्त होता है- नित्य, नैमित्तिक, काम्य, वृद्धि, सपण्डिन, पार्वण, गोष्ठी, शुद्धयर्थ, कर्माङ्ग, दैविक, यात्रार्थ और पुष्टयर्थ।

श्रौत तथा स्मार्त भेद से श्राद्ध संस्कार को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है- श्रौत श्राद्ध तथा स्मार्त श्राद्ध। अमावस्या के दिन किये जाने वाले श्राद्ध को श्रौत श्राद्ध कहा जाता है। इसमें केवल श्रुति प्रतिपादित मंत्रों का ही प्रयोग किया जाता है। एकोद्दिष्ट, पार्वण एवं तीर्थ से मरण तक के श्राद्ध स्मार्त श्राद्ध संस्कार कहे जाते हैं। इसमें पौराणिक, वैदिक, तांत्रिक तथा धर्मशास्त्र आदि के मंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

बड़ों का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये उनका यथोचित सम्मान तथा सत्कार करना आवश्यक होता है। इसी प्रकार अपने पूर्वजों का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये श्राद्ध कर्म संस्कार अवश्य करना चाहिये। व्यक्ति यदि समस्त प्रकार के श्राद्ध नहीं कर सकता है तो आश्विन मास के पितृपक्ष में तथा पितृगण की मृत्यु की तिथियों पर श्राद्ध अवश्य करना चाहिये। पितृपक्ष में समस्त पितर पृथ्वी की ओर प्रस्थान करते हैं और आशा करते हैं कि उसके पुत्र, पौत्र आदि श्राद्ध कर्म द्वारा उन्हें तृप्ति प्रदान करेंगे। जो पुत्र ऐसा करता है, उसे उसके पितर ढेरों आशीर्वाद देते हुये अपने लोक को लौट जाते हैं। पितरों के इन आशीर्वाद के प्रभाव से वह बेटा अत्यधिक उन्नति करता है, सभी प्रकार के भौतिक सुखों को प्राप्त करता है। जो अश्रद्धा तथा अनास्था के कारण ऐसा नहीं करते, वे अपने जीवन में अनेक प्रकार की समस्याओं से घिरे रहते हैं। वे इनसे निकलने के लिये अनेक प्रयास करते हैं किन्तु निकल नहीं पाते हैं। यहां मैं एक ऐसे जातक का उल्लेख करना आवश्यक समझता हूं जो इस कारण से लम्बे समय तक विभिन्न प्रकार के कष्टों से घिरा रहा। इन कष्टों से मुक्ति प्राप्त करने के लिये अनेक प्रकार के उपाय एवं प्रयास किये, किन्तु निकल नहीं पाया।

कृष्णकान्त बचपन से देखता आ रहा था कि उसके पिता अपने पूर्वजों का पूर्ण भक्तिभाव से श्राद्ध करते थे। पहले उसे श्राद्ध आदि के बारे में अधिक कुछ मालूम नहीं था। इस दिन को वह इस कारण से याद रखता था कि तब विशेष भोजन की व्यवस्था होती थी। इसमें साग-पूड़ी के अलावा खीर भी बनाई जाती थी और खीर उसे बहुत पसंद थी। बातों-बातों में कभी उसकी माँ बताती कि आज उसके बड़ों का श्राद्ध है, तब उसे नहीं मालूम था कि श्राद्ध क्या होता है। जब कुछ बड़ा हुआ तो उसे श्राद्ध के बारे में समझ आने लगा कि जिन परिवार के बड़े-बुजुर्गों की मृत्यु हो चुकी थी, उनके लिये श्राद्ध किया जाता है। जब वह अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ़ने लगा और नई संस्कृति एवं नई सोच से उसका सामना हुआ तो उसे श्राद्ध आदि बेकार की बातें लगने लगी थी। उसके पिता का बिजली के उपकरणों का व्यवसाय था। काम काफी बड़ा था और आमदनी भी बहुत आती थी। वह अपने माता-पिता की एकमात्र संतान था, इसलिये

आगे चलकर उसे ही यह व्यवसाय करना था। जब वह युवा हो गया तब भी घर में वार्षिक श्राद्ध का कार्य नियम से चलता रहा था। वह देखता था कि माँ बड़ी श्रद्धा तथा निष्ठा से भोजन बनाती और पिता ब्राह्मणों को सम्मान के साथ भोजन खिलाते, उन्हें दक्षिणा तथा वस्त्रों का दान करते। बाद में एक मंदिर के बाहर बैठे भिखारियों को भी खाना बंटवाया जाता। पिता उसे भी अपने साथ इस कार्य में सम्मिलित करने का प्रयास करते। वह पिता का कहना मानता तो था लेकिन इसमें उसका कोई विश्वास नहीं था। श्रद्धा के बारे में बात करना ही व्यर्थ है।

कुछ समय पश्चात् उसकी शिक्षा पूरी हो गई। उसका विवाह कर दिया गया। उसके दो बच्चे हो गये, एक बेटा तथा एक बेटी। इसके बाद उसके पिता की मृत्यु हो गई। व्यवसाय उसने सम्भालना प्रारम्भ कर दिया था, अब वह इसका मालिक भी बन गया था। पिता की मृत्यु के बाद जब पहला श्राद्ध आया, तो माँ के दबाव में आकर उसने कहे अनुसार सारा काम कर दिया लेकिन साथ ही यह भी कह दिया कि उसे यह सब पसंद नहीं है। माँ ने प्रतिवाद नहीं किया। पिता की मृत्यु के दो वर्ष बाद ही माँ का भी देहान्त हो गया। इसके बाद जब पहला श्राद्ध पक्ष आया, तब उसके परिवार के पण्डित ने उसे याद दिलाया कि अमुक तिथि को पिता का एवं अमुक तिथि को माँ का श्राद्ध करना है। उसने पण्डित से साफ कह दिया कि वह इन श्राद्ध आदि को नहीं मानता। अगर आप कर सकते हैं, तो मेरे से पैसे ले जाओ और जो उचित समझो, वह कर लो। पण्डित ने विनम्रता के साथ कहा कि श्राद्ध करने का अधिकार एवं कर्त्तव्य केवल पुत्र को ही होता है, इसलिये इसे आपको ही सम्पन्न करना होगा। तब उसने स्पष्ट कह दिया कि श्राद्ध आदि में न उसका पहले विश्वास था और न अब है, इसलिये वह आगे से श्राद्ध नहीं करेगा। पण्डित ने कहा कि ऐसा करने से आपके पितर नाराज हो सकते हैं, तुम्हें परेशानी में भी डाल सकते हैं, इसलिये श्राद्ध करना बंद नहीं करें। कृष्णकांत ने पण्डित की बात अनदेखी करते हुए कहा कि ठीक है, तो जो परेशानी देंगे, मैं भोग लूंगा। इसके साथ ही बात समाप्त हो गई, और पहली बार घर में श्राद्ध सम्पन्न नहीं हुआ था।

इसके बाद दो साल व्यतीत हो गये। उसने श्राद्ध की तरफ ध्यान नहीं दिया। व्यवसाय ठीक चल रहा था, बच्चे बड़े हो रहे थे, घर में सभी प्रकार की सुख सुविधायें थी जो लगातार बढ़ रही थी। इसके बाद धीरे से दुर्भाग्य ने कृष्णकांत के जीवन में दस्तक देनी प्रारम्भ कर दी। उसका बेटा अपनी बहिन के साथ खेल रहा था। वह छत से तेजी के साथ नीचे उतरते समय सीढ़ियों से फिसल गया और लुढ़कता हुआ नीचे आ गिरा। उसकी कोई हड्डी आदि तो नहीं टूटी थी लेकिन चोटें बहुत आयी थी। बेटे के उपचार पर काफी पैसा लग गया। परेशानी हुई, सो अलग। इसके एक महीने बाद कार से उसकी भी दुर्घटना हो गई। वह कार से बाजार जा रहा था कि सामने से एक ट्रेक्टर से

उसकी टक्कर हो गई। उसे तो चोटें काफी कम आई लेकिन गाड़ी को बहुत नुकसान हुआ था। इसके चार दिन बाद ही दुकान में लाखों की चोरी हो गई। इन तीन घटनाओं ने उसे हिला दिया था। इसके बाद धीरे-धीरे व्यवसाय की आय कम होने लगी। ग्राहक कम होने लगे थे। बिना किसी विशेष कारण के दो नौकर काम छोड़ कर चले गये। इसी प्रकार की छोटी-बड़ी घटनाओं-दुर्घटनाओं के बीच समय निकलता चला गया और इसी समय में वह आसमान से जमीन पर आ गिरा था। बेटा चोटों से तो उभर गया था लेकिन वह अक्सर किसी न किसी रोग से बीमार रहने लगा था।

कृष्णकान्त की पत्नी अचानक से घटित होने वाली इन घटनाओं से घबरा गई थी। उसने उसे कहा कि आगे चलकर कुछ बड़ा अनर्थ हो जाये, इससे पहले ही किसी ज्योतिषी से मिल कर परामर्श करो कि यह सब क्यों हो रहा है। कृष्णकांत एक ज्योतिषी से मिला। ज्योतिषी ने उसकी जन्मपत्रिका देखी और उपाय बताये। उसने उपाय किये। इसी में दो महीने निकल गये। स्थितियां सुधरने की अपेक्षा और बिगड़ती चली गई। तब किसी माध्यम के द्वारा कृष्णकांत मेरे पास आया। वह बहुत अधिक परेशानी में दिखाई दे रहा था। उसने अपने साथ घटित होने वाली समस्त घटनाओं के बारे में बताया। पूर्व में लिये गये ज्योतिषीय परामर्श की भी जानकारी दी। मैंने गम्भीरता से जन्मपत्रिका का अवलोकन किया। जन्मपत्रिका के अनुसार उसकी स्थिति अच्छी होनी चाहिये थी लेकिन नहीं थी। तब मैंने अनुमान लगाया कि समस्या पितृदोष से सम्बन्धित हो सकती है। मैंने कृष्णकांत से पितरों एवं श्राद्ध आदि के बारे में पूछा। उसने बताया कि श्राद्ध आदि में उसका कोई विश्वास नहीं है, इसलिये वह घर में श्राद्ध नहीं करता है। अब समस्या मेरी समझ में आ गई थी। उसे पितृदोष ही परेशान कर रहा था। फिर मैंने कृष्णकांत को पितृदोष के बारे में विस्तार से बताया। कुछ उपाय बताने के साथ-साथ उसे परामर्श दिया कि वह अपने पितरों के निमित्त श्राद्ध अवश्य किया करें। उसने गम्भीरता से मेरी प्रत्येक बात को सुना और चला गया। इसके बाद उसने मेरे बताये उपाय किये। अपने पितरों के लिये श्राद्ध आदि किये। समय के साथ-साथ अब सभी स्थितियां उसके पक्ष में होने लगी थी। उसे सही स्थिति में आने में दो साल लग गये। अब वह श्रद्धा एवं आस्था के साथ पत्नी के सहयोग से पितृपक्ष में अपने पितरों का श्राद्ध अवश्य करता था।

इस प्रकार के अन्य अनेक उदाहरण हो सकते हैं जिनकी तरफ आमतौर पर ध्यान नहीं दिया जाता किन्तु यह कहीं न कहीं व्यक्ति के जीवन तथा उसकी गतिविधियों को अवश्य ही प्रभावित करते हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों में भी इस तथ्य को स्पष्ट किया गया है कि श्रद्धा एवं भक्ति द्वारा विधि-विधान से किया गया श्राद्ध हमेशा ही व्यक्ति के लिये कल्याणकारक होता है। इसलिये समस्त व्यक्तियों को पूरी श्रद्धा, आस्था एवं विश्वास के साथ पितृपक्ष में तथा अपने पूर्वजों की मरण तिथि को श्राद्ध करना चाहिये। पितृपक्ष के

साथ पितरों का विशेष संबंध होता है। इन दिनों वे अपने पुत्रों से आशा करते हैं कि वह श्राद्ध कर्म के माध्यम से उन्हें अन्न-जल अर्पित करें जिससे वे तृप्त हो सकें। पुत्र का भी यह दायित्व होता है कि वह श्राद्ध करके पितरों को सन्तुष्ट एवं प्रसन्न करे ताकि पितरों का आशीर्वाद उसे मिलता रहे। महर्षि जाबालि के कथन से भी इस विचार की पुष्टि होती है कि पुत्र द्वारा पितृपक्ष में श्राद्ध करने से पुत्र की एवं समस्त परिवार को दीर्घायु, आरोग्य, सभी प्रकार के सुख एवं ऐश्वर्य तथा वांछित अभिलाषाओं की पूर्ति एवं प्राप्ति होती है-

पुत्रानायुस्तथाऽऽरोग्यमैश्वर्यमतुलं तथा।
प्राप्नोति पञ्चेमान् कृत्वा श्राद्धं कामांश्च पुष्कलान्॥

आचार्यों का भी हमेशा यह उपदेश रहा है कि श्राद्ध करने वाले पुत्र के लिये इससे बढ़कर श्रेष्ठ तथा कल्याणकारक कार्य नहीं हो सकता। श्राद्ध को पुत्र द्वारा किये जाने वाले आवश्यक उत्तरदायित्वों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। इस कथन की पुष्टि महर्षि **सुमन्तु** भी अग्रांकित श्लोक द्वारा करते हैं-

श्राद्धात् परतरं नान्यच्छ्रेयस्करमुदाहृतम्।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन श्राद्धं कुर्याद् विचक्षणः॥

श्राद्ध संस्कार हमारी आस्था एवं श्रद्धा के साथ जुड़ा है जिसकी उपेक्षा करना उचित नहीं है। श्राद्ध करने से हमारे पितर तो अवश्य सन्तुष्ट एवं प्रसन्न होते हैं, लेकिन इसके साथ-साथ सगे-सम्बन्धियों से लेकर ब्रह्माजी तक सभी तृप्त एवं प्रसन्न होते हैं। श्राद्ध की महिमा एवं महत्त्व को **ब्रह्मपुराण** में इससे भी बढ़कर बताया गया है। ब्रह्मपुराण के अनुसार-

एवं विधानतः श्राद्धं कुर्यात् स्वविभवोचितम्।
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं जगत्प्रीणाति मानवः॥

इसी कथन की पुष्टि **विष्णु पुराण** में भी की गई है। श्राद्ध कर्म से केवल पितर ही प्रसन्न नहीं होते अपितु समस्त देव आदि भी प्रसन्न होते हैं और श्राद्ध करने वाले को अपनी अनुकम्पा एवं आशीर्वाद प्रदान करते हैं। विष्णु पुराण में कहा गया है कि-

ब्रह्मेन्द्ररुद्रनासत्यसूर्याग्निवसुमारुतान्।
विश्वेदेवान् पितृगणान् वयांसि मनुजान् पशून्॥
सरीसृपान् ऋषिगणान् यच्चान्यद्भूतसंज्ञितम्।
श्राद्धं श्रद्धान्वितः कुर्वन् प्रीणयत्यखिलं जगत्॥

अर्थात् पूर्ण श्रद्धा से श्राद्ध कर्म करने से पितर तो तृप्त होते ही हैं, इसके साथ-साथ ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्र, अश्विनी कुमार, सूर्य, अग्निदेव, वसु, मरुद्गण, विश्वदेव, पक्षी, मनुष्य, पशु, सरीसृप, ऋषिगण तथा भूतगण आदि भी तृप्त एवं प्रसन्न होते हैं। इससे भी स्पष्ट हो जाता है कि श्राद्ध करने से व्यक्ति को कितने लाभ मिल सकते हैं।

हमारे प्राचीन पुराणों में श्राद्ध कर्म के महत्त्व को स्पष्ट करने के लिये इसकी महिमा का गुणगान किया है। इसका उद्देश्य केवल यह हो सकता है कि समस्त व्यक्तियों को इस दिशा में प्रवृत्त करने के लिये प्रेरित किया जाये। विभिन्न ग्रंथों में श्राद्ध कर्म की श्रेष्ठता एवं महत्त्व को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। **मार्कण्डेय पुराण** के अनुसार-

आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानि च।
प्रयच्छन्ति तथा राज्यं पितरः श्राद्धतर्पिताः॥

अर्थात् श्राद्ध से तृप्त एवं प्रसन्न होकर पितरगण श्राद्ध करने वाले को लम्बी आयु, योग्य संतान, धन, विद्या-ज्ञान, सुख, राज्य, स्वर्ग तथा मोक्ष प्रदान करते हैं।

इसी प्रकार के विचारों को **यम स्मृति** में इस प्रकार कहा गया है-

आयुः पुत्रान् यशः स्वर्गं कीर्तिं पुष्टिं बलं श्रियम्।
पशून् सौख्यं धनं धान्यं प्राप्नुयात् पितृपूजनात्॥

अर्थात् पितृ श्राद्ध से प्रसन्न होकर पितर मनुष्यों के लिये आयु, पुत्र, यश, स्वर्ग, कीर्ति, पुष्टि, बल-वैभव, पशु, सुख एवं धन-धान्य प्रदान करते हैं। श्राद्ध करने वाला व्यक्ति अपने जीवन में उन सभी सुखों को प्राप्त करता है जिनकी अभिलाषा वह करता है। वैसे भी हमारे यहां इस बात का बहुत अधिक महत्त्व है कि यदि हम अपने बड़े बुजुर्गों का आदर-सम्मान करते हैं तो उनका आशीर्वाद हमें प्राप्त होता है जिससे हम दुःखों से मुक्त रहते हैं और सभी सुखों का भोग करते हैं। इसीलिये जब हम श्राद्ध करके पितरों को प्रसन्न करते हैं तो उनका भी आशीर्वाद हमें अवश्य ही मिलता है।

कूर्म पुराण में श्राद्ध कर्म के महत्त्व और महिमा को और भी अधिक बताया गया है। इसके अनुसार जो व्यक्ति आस्था एवं श्रद्धा के साथ श्राद्धकर्म करता है, उसे पितरों एवं देवगणों का आशीर्वाद तो प्राप्त होता ही है, बल्कि उसके पापों का भी नाश हो जाता है। इसके लिये कहा गया है-

यो येन विधिना श्राद्धं कुर्यादेकाग्रमानसः।
व्यपेतकल्मषो नित्यं याति नावर्तते पुनः॥

अर्थात् जो व्यक्ति किसी भी विधि से एकाग्रचित्त हो पूर्ण श्रद्धा के साथ श्राद्धकर्म करता है, उसके समस्त पापों का नाश हो जाता है और वह पुनः संसारचक्र में नहीं आता है अर्थात् वह जन्म-मरण के बंधन से मुक्त हो जाता है।

श्राद्धकर्म की महिमा को और अधिक विस्तार देने और इसके लाभ को आम व्यक्तियों तक पहुंचाने के लिये **ब्रह्मपुराण** में कहा गया है-

तस्माच्छ्राद्धं नरो भक्त्या शाकैरपि यथाविधि।
कुर्वीत श्रद्धया तस्य कुले कश्चिन्न सीदति॥

अर्थात् जो व्यक्ति श्रद्धा सहित शाक के द्वारा भी श्राद्ध करता है उसके कुल में कोई

भी दु:खी नहीं होता। ऐसा सम्भवत: इसलिये कहा गया होगा कि जो व्यक्ति अति निर्धन होते हैं, श्राद्ध के लिये अच्छा भोजन नहीं बना सकते वे भी मात्र शाक द्वारा श्राद्धकर्म सम्पन्न करके पितरों का आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं।

हमारे शास्त्रों द्वारा मनुष्य मात्र को सही राह पर चलने के लिये तथा अपने समस्त उत्तरदायित्वों को पूरा करने के लिये प्रेरित करने का कार्य किया जाता रहा है। इसीलिये श्राद्धकर्म की महिमा और महत्त्व का अनेक ग्रंथों में उल्लेख प्राप्त होता है। आज व्यक्ति अपने आपको कितना भी प्रगतिशील और आधुनिक विचारधाराओं से ओत-प्रोत क्यों न समझे, फिर भी हमारे ग्रंथों में उल्लेखित बातों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। वर्तमान में जब व्यक्ति दिशाहीन होकर अपने सद्‌मार्ग से भटक रहा है, तो ऐसे में इन ग्रंथों का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है। श्राद्धकर्म के महत्त्व को भी अनेक ग्रंथों में स्पष्ट किया गया है ताकि मनुष्य इनके बारे में सार्थक विचार उत्पन्न कर सके।

इस बात का पूर्व में उल्लेख किया गया है कि वर्तमान में अनेक व्यक्ति अपनी आधुनिक सोच तथा पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव से अपनी परम्पराओं तथा मान्यताओं की उपेक्षा करने लगे हैं। एकमात्र हिन्दू धर्म और हिन्दू सम्प्रदाय ही आत्मा के अमर अस्तित्व को मानता है। आत्मा अमर है, वह कभी नहीं मरती है। आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करने से ही पुनर्जन्म की अवधारणा को माना जाता है, इसी कारण से स्वर्ग और नरक को माना जाता है और इसी कारण से पितरों में विश्वास व्यक्त किया जाता है। पितरों की शांति के लिये ही श्राद्ध के महत्त्व को माना जाता है। इसलिये पश्चिम की भोगवादी संस्कृति से प्रभावित होकर अपनी संस्कृति और मान्यताओं की कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। जो व्यक्ति किसी भी कारण से यदि श्राद्धकर्म के महत्त्व को समझ पाने में असमर्थ हैं अथवा समझ कर भी वे इसकी उपेक्षा करते हैं, तो ऐसा करके वह गलत कार्य कर रहे हैं।

विभिन्न शास्त्रों से ज्ञात होता है कि मृत व्यक्ति का अपने परिवार के सदस्यों के साथ-साथ अन्य संबंधियों से बहुत अधिक लगाव होता है। यह लगाव इतना अधिक होता है उनके दिये बिना उन्हें न अन्न मिल पाता है और न जल मिलता है। वर्ष में केवल एक बार आश्विन माह के पितृपक्ष में सभी पितर धरती की तरफ देखते हैं और इस बात की आशा करते हैं कि उनके सगे-संबंधी विशेष रूप से उनके परिवार के सदस्य के रूप में पुत्र, पौत्र उन्हें अन्न व जल अर्पित करें। जो पुत्र अथवा पौत्र अपने पूर्वजों का श्राद्ध करते हैं, उन्हें उनके पितर ढेरों आशीर्वाद देते हुये अपने लोक को पूर्ण तृप्त एवं सन्तुष्ट होकर लौट जाते हैं। जो व्यक्ति श्राद्धकर्म में विश्वास एवं आस्था नहीं रखते वे श्राद्ध नहीं करते हैं। उनके इस व्यवहार से पितरों को अत्यन्त कष्ट होता है। भूख-प्यास से उन्हें दारुण दु:ख की प्राप्ति होती है। इस बारे में महर्षि सुमन्तु का कथन है कि-

लोकान्तरेषु ये तोयं लभन्ते नान्नमेव च।

दत्तं न वंशजैर्येषां ते व्यथां यान्ति दारुणाम् ॥

पुत्र द्वारा श्राद्ध कर्म न किये जाने पर पितरों को दुःख के साथ-साथ क्रोध भी उत्पन्न होता है। वे श्राद्ध न करने वालों को श्राप देते हैं। इस श्राप के प्रभाव से ऐसे श्रद्धाहीन व्यक्ति अनेक दुःखों को भोगते हैं। इस बारे में हारित स्मृति में इस प्रकार से कहा गया है-

न तत्र वीरा जायन्ते नारोग्यं न शतायुषः ।
न च श्रेयोऽधिगच्छन्ति यत्र श्राद्धं विवर्जितम् ॥

अर्थात् जो व्यक्ति (श्रद्धाहीन होकर) श्राद्ध नहीं करता उसके परिवार में वीरों का जन्म नहीं होता है, परिवार में कोई निरोग एवं स्वस्थ नहीं रहता, लम्बी आयु नहीं होती तथा किसी भी प्रकार का कल्याण प्राप्त नहीं होता है।

शास्त्रों से ज्ञात होता है कि गोत्र एवं नाम के उच्चारण के साथ श्राद्ध में पितरों के लिये दी गयी अन्न-जल आदि सामग्री पितरों के ग्रहण करने के अनुरूप होकर ही उनके पास पहुंच जाती है। इस बात का उल्लेख पद्मपुराण में भी किया गया है कि-

अग्निष्वात्तादयस्तेषामाधिपत्ये व्यवस्थिताः ।

मृत्यु के पश्चात् समस्त प्रकार के किये जाने वाले अन्त्येष्टि संस्कारों के द्वारा यदि पिता देवयोनि को प्राप्त हो गया हो तो श्राद्ध संस्कार में श्रद्धा सहित दिया गया अन्न वहां उन्हें अमृत के रूप में प्राप्त होता है। इसी प्रकार से मनुष्य योनि में अन्न के रूप में, पशु योनि में तृण के रूप में, नाग आदि योनियों में वायु के रूप में, यक्ष योनि में पान के रूप में तथा अन्य योनियों में भी उसी अनुरूप भोगजनक तथा तृप्तिकर पदार्थों के रूप में प्राप्त होता है, जिसे प्राप्त कर वे तृप्त एवं प्रसन्न होते हैं। इसकी पुष्टि के लिये कहा गया है-

देवो यदि पिता जातः शुभकर्मानुयोगतः ।
तस्यान्नममृतं भूत्वा देवत्वेऽप्यनुगच्छति ॥
मर्त्यत्वे ह्यन्नरूपेण पशुत्वे च तृणं भवेत् ।
श्राद्धान्नं वायुरूपेण नागत्वेऽप्युपतिष्ठति ॥
पानं भवति यक्षत्वे नानाभोगकरं तथा ।

यहां इस बारे में जान लेना भी आवश्यक होगा कि श्राद्ध किन अवसरों पर किया जाना उचित होता है ? श्राद्ध करने के अनेक अवसरों को उचित बताया गया है। इनमें मन्वन्तर की मन्वादि तिथियां तथा युगादि तिथियां, विषुव योग, व्यतीपात योग, अयन काल, संक्रांति काल, ग्रहण काल आदि प्रमुख हैं। इन तिथियों में स्नान करने के पश्चात् पितरों के उद्देश्य से तिल एवं कुश मिश्रित जल से तर्पण करने से अनेक पुण्य लाभ की प्राप्ति होती है तथा यह महान फल प्रदान करता है। शास्त्रों में इन कालों में भी अमावस्या को विशेष रूप से श्राद्ध करने की बात कहीं गई है। अमावस्या को किये गये श्राद्ध के

विशेष फल प्राप्त होते हैं।

उपरोक्त में बताये इन अवसरों को यदि छोड़ दिया जाये तो वर्ष में दो बार श्राद्ध किया जाना उचित माना गया है। यह है- 1. क्षयाह तिथि तथा 2. पितृपक्ष।

क्षयाह तिथि- जिस तिथि को व्यक्ति की मृत्यु होती है, उस तिथि पर वार्षिक श्राद्ध किया जाना चाहिये। शास्त्रों के अनुसार इस दिन एकोद्दिष्ट श्राद्ध करने का विधान है। इसमें केवल मृत जीव के निमित एक पिण्ड का दान तथा कम से कम एक तथा अधिक से अधिक तीन ब्राह्मणों को भोजन करवाया जाता है।

पितृपक्ष- पितृपक्ष में मुख्य रूप से व्यक्ति की मरण तिथि पर पार्वण श्राद्ध करने का विधान है। इसमें पिता, पितामह तथा प्रपितामह सपत्नीक तीन चट (पीढ़ियां) में छह व्यक्तियों का श्राद्ध होता है। इसके साथ ही मातामह, प्रमातामह, वृद्ध प्रमातामह (नाना, परनाना तथा वृद्ध परनाना) सपत्नीक के भी तीन चट में छह व्यक्तियों का श्राद्ध किया जाता है। इसी के समान रूप एक चट और लगायी जाती है जिस पर निकटतम सम्बन्धियों के निमित्त पिण्डदान किया जाता है। इसके अलावा विश्वदेव के दो चट लगते हैं।

इस प्रकार नौ चट लगा कर नौ ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है। यदि किसी कारण से ब्राह्मण उपलब्ध न हो तो कम से कम एक सन्ध्या-पूजा आदि करने वाले सात्विक ब्राह्मण को भोजन अवश्य कराना चाहिये।

यदि एकोद्दिष्ट एवं पार्वण श्राद्ध संस्कार किसी कारण से किया जाना सम्भव न हो तो संकल्प लेकर कम से कम एक ब्राह्मण को भोजन करवा देने से भी श्राद्ध सम्पन्न हो जाता है। श्राद्ध के दिन यदि व्यक्ति यात्रा में हो, रोगी हो, आर्थिक समस्या हो जिसके कारण भोजन बना कर कराना सम्भव न हो तो संकल्प करके केवल सूखा तथा कच्चा अन्न, चीनी, घी, नमक आदि पदार्थों को श्राद्ध के निमित्त किसी ब्राह्मण को दे देना चाहिये। यदि इतना भी सम्भव न हो तो केवल गाय को गोग्रास देना चाहिये। ऐसा करने से भी श्राद्ध सम्पन्न हो जाता है। यदि किसी व्यक्ति को अत्यधिक आर्थिक अभाव है और वह श्राद्ध को सम्पन्न करने के लिये कुछ भी कर सकने में असमर्थ है तो शास्त्रों में ऐसी स्थिति में विशेष व्यवस्था बतायी गई है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति वन अथवा निर्जन स्थल अथवा अपने मकान की छत पर जाकर अपने दोनों हाथों को ऊपर उठाकर सूर्यदेव को दिखाते हुये उच्च स्वर में कहे-

न मेऽस्ति वित्तं न धनं च नान्यच्छ्राद्धोपयोग्यं स्वपितृन्नतोऽस्मि।
तृप्यन्तु भक्त्या पितरो मयैतौ कृतौ भुजौ वर्त्मनि मारुतस्य।।

ऐसा विष्णु पुराण में कहा गया है जिसका भाव यह है कि हे मेरे पितृगण, मेरे पास श्राद्ध करने के लिये धन आदि कुछ भी वस्तु नहीं है। इसलिये मैं आपको अपनी श्रद्धा भक्ति समर्पित करता हूं, आपको प्रणाम करता हूं। आप तृप्त हो जायें और मुझे अपना

आशीर्वाद दें। यदि आप संस्कृत का श्लोक नहीं बोल पाते तो इस श्लोक के भाव को मन ही मन बोलें। इससे भी श्राद्ध संस्कार सम्पन्न माना जाता है।

श्राद्ध विधि : श्राद्ध में एक, तीन अथवा पांच ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये। यह श्राद्ध करने वाले की स्थिति पर निर्भर करता है कि वह कितने ब्राह्मणों को भोजन करवा सकता है। श्राद्ध में कुतप वेला अर्थात् दिन का आठवां मुहूर्त जिसे अभिंजित् भी कहते हैं, श्रेष्ठ माना जाता है। इसलिये इस समय का भी विशेष ध्यान रखना चाहिये। इसमें सात चीजों की शुद्धता का विशेष महत्त्व है। वे हैं- शरीर, द्रव्य, स्त्री, भूमि, मन, मंत्र और ब्राह्मण। तात्पर्य यह है कि श्राद्धकर्त्ता को स्वयं तथा उसकी स्त्री को स्नान आदि कर शुद्ध हो जाना चाहिये। जिन वस्तुओं का प्रयोग किया जाना है, वे भी शुद्ध होनी चाहिये। जहां भोजन बनाना है, जहां भोजन कराना है, उस भूमि को गंगाजल अथवा गो मूत्र द्वारा स्वच्छ एवं पवित्र कर लेना चाहिये। मन पूरी तरह शुद्ध, निष्कपट और क्रोध रहित होना चाहिये। जिन मंत्रों का उच्चारण करना है वे पूरी तरह से शुद्ध होने चाहिये, उनका उच्चारण भी शुद्ध होना चाहिये। जिस ब्राह्मण को आप भोजन करने हेतु आमंत्रित करते हैं, उसे भी पूर्ण रूप से शुद्ध होना चाहिये अर्थात् वह आपके द्वारा किये जाने वाले श्राद्ध कर्म में समर्पित भाव से भाग लें और निष्ठापूर्वक श्राद्ध सम्पन्न करके शांत मन से आपके द्वारा कराये जाने वाले भोजन को ग्रहण करें। आमतौर पर पितृपक्ष में अत्यधिक आमंत्रण होने के कारण ब्राह्मणों का कार्यक्रम बहुत व्यस्त रहता है। इसलिये कभी-कभी वे जल्दबाजी में कार्यों को निपटाने का प्रयास करते हैं। शुद्धि के अतिरिक्त दो अन्य बातों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिये। पहली बात, पूरे श्राद्धकर्म को शांतचित्त से करना चाहिये। किसी भी बात पर क्रोध नहीं होना चाहिये तथा दूसरी बात, किसी भी काम को जल्दबाजी में नहीं करना चाहिये। इसलिये समय पर कार्य प्रारम्भ करें ताकि सभी कार्य ठीक से सम्पन्न हो सकें।

श्राद्ध में ब्राह्मण भोजन में दूध तथा दूध से बने पदार्थों का विशेष रूप से समायोजन करें। इसमें दूध, दही, रबड़ी, मावे की मिठाई हो सकती है। चावल का प्रयोग भी आवश्यक रूप से किया जाना चाहिये। इसलिये खीर का विशेष महत्त्व माना गया है। इसमें बेसन से बने पदार्थ तथा चौरे की दाल को वर्जित माना गया है। इसलिये बेसन से बने लड्डू अथवा नमकीन का प्रयोग न करें। ब्राह्मणभोज के पश्चात् ब्राह्मण को नकद दक्षिणा अथवा वस्त्र अथवा दोनों, अपनी सामर्थ्य के अनुसार दिये जा सकते हैं।

विधि-विधान के अनुसार श्राद्ध प्रक्रिया इस प्रकार है-

सबसे पहले स्नान आदि से निवृत्त हो जायें। जहां श्राद्ध सम्पन्न करना है, उस भूमि को स्वच्छ कर लें। काम में आने वाली वस्तुओं को स्वच्छ एवं साफ कर लें। ब्राह्मणभोज बनाना प्रारम्भ करें। इसके साथ ही गयाधाम अथवा भगवान श्रीहरि विष्णु जी का स्मरण करें। पीली सरसों से दिशाओं की रक्षा हेतु दिग्रक्षण कर लें। फिर श्राद्ध का संकल्प

लेकर अग्रांकित पितृगायत्री मंत्र का तीन बार पाठ करें-

ॐ देवताभ्य: पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नम: स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नम: ॥

अब संकल्पपूर्वक विश्वेदेवों तथा पितरों को आसन दान दें और उनका श्रद्धापूर्वक आवाह्न करें। अर्घ्यपात्र से अर्घ्य दें तथा विश्वेदेवों एवं पितरों का पूजन करें। दीपक प्रज्वलित करें। अलग-अलग पात्रों में बनाया गया भोजन डालें। अन्नदान का संकल्प लें और पुन: पितृगायत्री का पाठ करें। इसके पश्चात् पिण्डवेदी बनायें, पिण्डवेदी पर कुश बिछाकर पिण्डदान करें। पिण्डों पर जल एवं दूध की धारा अर्पित करें। अर्घ्य दें। जो दक्षिणा देना चाहें, उसका संकल्प लें तथा विश्वेदेवों एवं पितरों को विजर्सन कर पुन: पितृगायत्री का पाठ करें और दीपक ठण्डा कर दें। श्राद्धकर्म की यह संक्षेप में सामान्य विधि है।

इतना कुछ यदि एक आम व्यक्ति नहीं कर सकता तो इससे भी अधिक सामान्य विधि से श्राद्ध किया जा सकता है। श्राद्ध तिथि को पूर्ण स्वच्छता तथा मनोयोग से भोजन बनायें। ब्राह्मण को पूर्व में आमंत्रण दे दें। ब्राह्मणभोज से पूर्व गाय, कौआ तथा कुत्ते के निमित्त भोजन निकाल कर अलग कर दें। श्रद्धापूर्वक ब्राह्मण को भोजन करायें तथा यथाशक्ति दक्षिणा दें। इसके बाद में गाय, कुत्ते तथा कौए को पूर्व में निकाला गया भोजन खिला दें। कहीं-कहीं पर पहले गाय, कुत्ते तथा कौए को भोजन दिया जाता है, फिर ब्राह्मण को भोजन कराया जाता है। यदि भोजन करने के लिये ब्राह्मण उपलब्ध न हो तो कच्चा भोजन तथा दक्षिणा भी दी जा सकती है। भोजन में आटा, चावल, घी, मावे की कोई मिठाई तथा नमक उचित मात्रा में निकाल कर अलग रख देना चाहिये। तत्पश्चात् गाय, कुत्ते तथा कौए को भोजन डालें। मानसिक रूप से पितरों से प्रार्थना करें कि वे हमेशा उन पर कृपा बनाये रखें। हम सभी को इतना ध्यान अवश्य रखना चाहिये कि अपने पूर्वजों के कारण से ही हमारा अस्तित्व सम्भव हो पाया है। इसलिये वर्ष में एक बार पितृपक्ष में अपने पितरों का अवश्य ही श्रद्धा सहित श्राद्ध करना चाहिये। आज कोई व्यक्ति चाहे कितना भी आधुनिक सोच-विचार का हो जाये, चाहे कितना भी पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित हो जाये किन्तु अपनी संस्कृति और परम्पराओं को न तो कभी भूलना चाहिये और न इनके प्रति अनास्था का प्रदर्शन करना चाहिये और न उपहास करना चाहिये। हम सभी की जड़ें इन्हीं परम्पराओं में ही हैं, इसी महान संस्कृति के द्वारा विश्व भर में हम अपनी विशेष पहचान बनाने में सफल हो पाये हैं। अत: इनका पालन और सम्मान होना चाहिये। हम सभी को अपने पितरों का श्राद्ध संस्कार सम्पन्न करना चाहिये ताकि हम सभी आधिदैविक, आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकें।

श्राद्ध में रखी जाने वाली सावधानियां

पितरों के निमित्त किये जाने वाले पितृकर्म में सर्वप्रमुख कर्म श्राद्ध माना जाता है। यह श्राद्ध विभिन्न प्रकार से किया जाता है, जिनमें **पार्वण** और **एकोद्दिष्ट श्राद्ध** सबसे प्रमुख होता है। आप जब भी अपने पितरों के निमित्त श्राद्ध आदि कर्म करें, तो उसमें कुछ सावधानियों का अवश्य पालन करें। कई ऐसी भ्रांतियां हैं, जो हमारे मन-मस्तिष्क में स्थापित हो गई हैं, जबकि ये भ्रांतियां व्यर्थ की होती हैं।

महर्षि पराशर के अनुसार देश, काल तथा पात्र में हविष्य आदि विधि के द्वारा तिल और कुश तथा मंत्रों से युक्त होकर श्रद्धापूर्वक जो कर्म किया जाये, वही श्राद्ध कहलाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी भी श्राद्धकर्म में तिल और कुश का होना अति आवश्यक होता है। भगवान विष्णु के शरीर से उत्पन्न होने के कारण कुश को श्राद्ध में उत्तम माना गया है।

श्राद्धकर्म में यदि सावधानियां नहीं बरती जायें और गलतियां हो जायें, तो ऐसे श्राद्ध को पितृगण स्वीकार नहीं करते हैं बल्कि अप्रसन्न होकर श्राप तक दे देते हैं। श्राद्ध से असंतुष्ट होकर पितृगण आयु, संतति, धन, सुख, राज्य, विद्या, स्वर्ग और मोक्ष में बाधक बन जाते हैं। प्रसन्न होने पर उक्त में सहायक सिद्ध होते हैं।

श्राद्ध का तात्पर्य है- श्रद्धापूर्वक किया जाने वाला कार्य। यदि कोई भी श्राद्ध चाहे कितना भी धन लगाकर क्यों न किया जा रहा हो, परन्तु उसमें कर्त्ता की श्रद्धा नहीं होगी, तो वह श्राद्ध कदापि सफल नहीं हो सकता। श्राद्ध क्रिया, तर्पण, पिण्डदान और ब्राह्मण भोजन के रूप में ही पूर्ण श्राद्ध सम्पन्न हो पाता है। इसमें से यदि एक प्रक्रिया भी छूट जाये, तो वह पूर्ण श्राद्ध क्रिया नहीं मानी जाती है। परिस्थितिवश किसी मजबूरी में इसके अतिरिक्त भी अन्य व्यवस्थाओं के द्वारा श्राद्ध किया जा सकता है।

श्राद्ध करने का अधिकार मुख्य रूप से ज्येष्ठ पुत्र को ही होता है, परन्तु ज्येष्ठ पुत्र के अतिरिक्त उसके असमर्थ होने पर कनिष्ठ पुत्र भी कर सकता है। यदि पुत्र नहीं हो, तो अन्य परिजन भी श्राद्धकर्म कर सकते हैं। पितृपक्ष के अतिरिक्त अपने पूर्वजों की पुण्यतिथि पर भी अवश्य श्राद्ध करना चाहिये। वैसे तो शास्त्रों में श्राद्ध के 96 मुख्य अवसर बताये गये हैं, परन्तु इनमें चैत्र, ज्येष्ठ इत्यादि द्वादश, माह की अमावस्या तथा पितृपक्ष ही श्राद्ध के दृष्टिकोण से श्रेष्ठ माने गये हैं। श्राद्ध करते समय अग्रांकित बातों पर ध्यान अवश्य रखना चाहिये-

❐ श्राद्ध के लिये दिन का आठवां मुहूर्त, जिसे **कुतप काल** कहते हैं, श्रेष्ठ माना गया है। यह अभिजित काल के समान होता है।

❒ श्राद्ध में लोहे के पात्रों का प्रयोग नहीं करना चाहिये। चाँदी अथवा पलाश और महुवा आदि वृक्षों के पत्तों के दोने तथा लकड़ी एवं हाथ से बनाये गये मिट्टी के पात्रों का प्रयोग श्रेष्ठ माना गया है। चाँदी के पात्रों का यदि प्रयोग किया जाये, तो सबसे श्रेष्ठ होता है। भगवान शिव के नेत्रों से उत्पन्न होने के कारण चाँदी पितरों को परम प्रिय है।

❒ श्राद्ध में दोहिते को अवश्य बुलाना चाहिये। दोहिते से तात्पर्य पुत्री के पुत्र से होता है। यदि किसी श्राद्ध में दोहिता आकर श्राद्ध ग्रहण करता है, तो उससे पूर्वज अत्यधिक प्रसन्न होते हैं।

❒ श्राद्ध के अनन्तर दान कर्म में चाँदी का दान अवश्य करना चाहिये। इसके अतिरिक्त दूध, गंगाजल, शहद और तसर के कपड़े का दान और प्रयोग करना भी उत्तम माना जाता है।

❒ श्राद्ध के भोजन में तुलसी के पत्तों को भी अवश्य शामिल करना चाहिये, क्योंकि तुलसी की गंध से पितृगण अत्यधिक प्रसन्न होते हैं। श्राद्धकर्म के दौरान पुष्पों में सफेद पुष्प का प्रयोग करना अत्यधिक उत्तम होता है। यदि ये सफेद पुष्प सुगन्धित हों, तो अत्यधिक श्रेष्ठ है। श्राद्ध में अगस्त्य, तुलसी, भृंगराज, चम्पा, तिलपुष्प, शतपत्रिका इत्यादि पुष्पों का प्रयोग करना अति उत्तम माना गया है।

❒ श्राद्ध में गाय का दूध, दही और घी का प्रयोग करना उत्तम माना जाता है। अन्न में जौ, गेहूँ, तिल, सांवा, सरसों का तेल, तिन्नी का चावल, धान इत्यादि का प्रयोग उत्तम माना गया है।

❒ श्राद्ध में फलों के अन्तर्गत आंवला, नारियल, आम, अनार, बेल, नारंगी, अंगूर, खजूर, नीलकैथ, चिरौंजी इत्यादि का प्रयोग करना उत्तम माना जाता है।

❒ श्राद्ध में भोजन करते समय मौन रहना श्रेष्ठ मानते हैं। मांगने अथवा प्रतिषेध करने का संकेत हाथ से करना चाहिये।

❒ श्राद्ध में भोजन करते समय ब्राह्मण को रेशमी, कम्बल, ऊन, तृण, लकड़ी, कुश, पर्ण इत्यादि के आसन का प्रयोग करना चाहिये। लोहे के आसन पर बिठाकर कदापि भोजन नहीं करवाना चाहिये। श्राद्ध में ब्राह्मणों को बिठाकर ही उनके पैर धोने चाहिये।

❒ श्राद्ध में कस्तूरी, लाल चन्दन, गोरोचन, पूतिक इत्यादि का निषेध होता है। इसी प्रकार कदम्ब, केवड़ा, मौलसिरी, बिल्वपत्र, करवीर, लाल तथा काले रंग के पुष्प भी वर्जित माने जाते हैं। गंध रहित पुष्प भी वर्जित होते हैं।

❒ श्राद्ध में ऐसे कुश वर्जित होते हैं, जिनका प्रयोग चिता में, आसन में, बिछौने में हो चुका हो। ऐसे कुशों को कदापि श्राद्धकर्म में काम में नहीं लिया जाना चाहिये।

❒ श्राद्धकर्म में चंदन, खस और कर्पूर ग्राह्य होते हैं, अत: श्राद्धकर्म में इनका प्रयोग अवश्य करना चाहिये।

❒ जिस दिन अपने घर में श्राद्ध हो, उस दिन दूसरे के घर में जाकर भोजन नहीं करना चाहिये। न ही किसी देवता के निमित्त उपवास रखना चाहिये।

❒ श्राद्ध में सड़ा हुआ अन्न, बासी अन्न, दुर्गन्ध आने वाला अन्न, बैंगन, राजमा, मसूर, अरहर, गाजर, कद्दू, शलजम, हींग, प्याज, सिंघाड़ा, जामुन, काला नमक, काला जीरा, पिप्पली, सुपारी, कुलथी, कैथ, महुआ, अलसी, पीली सरसों, चना, मांस इत्यादि वस्तुयें वर्जित होती हैं। इनका प्रयोग श्राद्ध में नहीं करना चाहिये।

❒ श्राद्ध में तर्पण इस प्रकार करना चाहिये कि दायें हाथ का अंगूठा झुका हुआ हो और अंगूठे के मूल प्रदेश से ही जल पात्र में गिरे। इसका कारण यह होता है कि तर्जनी अंगुली और अंगूष्ठ मूल के मध्य में पितृतीर्थ माना गया है।

❒ तर्पण अपसव्य होकर अर्थात् यज्ञोपवीत तथा उपवस्त्र को दायें कंधे पर डालकर बायें हाथ के नीचे कर लेना चाहिये। श्राद्ध में तर्पण पूर्वमुखी होकर किया जाता है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि मृत्यु के पश्चात् मलिन षोडशी, मध्यम षोडशी और उत्तम षोडशी से पितरों की मुक्ति हो गई है।

❒ जब तक किसी मृतक परिजन की उत्तम षोडशी अर्थात् पुण्यतिथि वाला श्राद्धकर्म पूर्ण नहीं हो गया हो, तब तक पितृपक्ष में उसका श्राद्ध नहीं करना चाहिये। श्राद्ध कार्य में सम्पन्न व्यक्ति को किसी भी प्रकार की कंजूसी नहीं करनी चाहिये और अपने पास उपलब्ध साधनों से श्रद्धापूर्वक श्राद्ध करना चाहिये।

❒ आश्विन कृष्णपक्ष अथवा पितृपक्ष में मृतक की जो तिथि आये, उस तिथि पर पार्वण श्राद्ध करने का विधान है। पार्वण श्राद्ध में पिता, दादा, परदादा, माता, दादी इत्यादि का श्राद्ध अवश्य करना चाहिये। इसके साथ ही नाना, परनाना, नानी, परनानी इत्यादि का भी श्राद्ध भी किया जाना चाहिये।

❒ पार्वण श्राद्ध में ब्राह्मण भोजन अवश्य करवाना चाहिये। ब्राह्मण एक से लेकर नौ तक हो सकते हैं। चाहे स्त्री का श्राद्ध हो अथवा पुरुष का, सभी में यज्ञोपवीतधारी ब्राह्मण ही होना चाहिये। अनेक लोगों को यह भ्रांति होती है कि स्त्री के श्राद्ध में ब्राह्मण स्त्रियां होनी चाहिये, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। किसी भी मृतक व्यक्ति के श्राद्ध में केवल ब्राह्मण को ही भोजन कराना चाहिये।

❒ दो वर्ष के पहले यदि कोई बालक की मृत्यु हो जाये, तो उसका श्राद्ध नहीं किया जाता है। दो वर्ष से लेकर छह वर्ष तक के बालक की मृत्यु हो जाने पर केवल मलिन षोडशी तक की क्रिया करनी चाहिये। इसके बाद एकादशाह तथा द्वादशाह नहीं होता। छह वर्ष से बड़े बालक की मृत्यु हो जाने के पश्चात् श्राद्ध की सम्पूर्ण क्रिया अर्थात् मलिन षोडशी, एकादशाह तथा सपिण्डन आदि क्रियायें करवानी चाहिये। दो वर्ष से लेकर अविवाहित कन्या की यदि मृत्यु हो जाये, तो मलिन षोडशी तक की क्रिया करनी चाहिये।

❒ गया में श्राद्ध करने का अत्यधिक महत्त्व माना गया है। श्रीमद्देवीभागवत में उल्लेख है कि जीवनपर्यन्त माता-पिता की आज्ञा पालन करने, श्राद्ध में खूब भोजन कराने और गया तीर्थ में पिण्डदान अथवा श्राद्ध करने वाले पुत्र को उसके वंश चलाने वाले पुत्र की प्राप्ति अवश्य होती है। पितृदोष के निवारण के लिये गया श्राद्ध अत्यधिक श्रेष्ठ माना जाता है।

❒ श्राद्ध करते समय श्राद्धकर्त्ता का मन पवित्र और शांत होना चाहिये। वह सभी पापों से रहित होकर अपने पूर्वजों के कल्याण की कामना को करते हुए श्राद्धकर्म को सम्पन्न करें। जल्दबाजी में श्राद्धकर्म करना गलत होता है, इससे पितृगण कुपित हो सकते हैं।

❒ यदि ऐसे पूर्वज जिनकी तिथि का ज्ञान नहीं है, उनका श्राद्ध आश्विन कृष्ण अमावस्या के दिन सर्वपितृश्राद्ध के तर्पण लेते हुए श्राद्धकर्म करना चाहिये।

❒ ऐसे पूर्वज, जिनकी मृत्यु विष अथवा शस्त्रों के द्वारा हुई हो, उनका श्राद्ध आश्विन कृष्ण चतुर्दशी के दिन करना चाहिये।

श्राद्धकर्म में ध्यान रखने वाले दिशा-निर्देशों के बारे में ऊपर बताया गया है। यह सभी सूत्र आपके ज्ञान की वृद्धि करते हैं और श्राद्ध कर्म की सही प्रकार से विभिन्न सावधानियां रखते हुए सम्पन्न करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि जितने प्रकार की सावधानियों का उल्लेख किया गया है, उन सभी का पालन आवश्यक रूप से किया जाये लेकिन प्रयास करके अधिक से अधिक बातों का ध्यान अवश्य रखें। श्राद्ध के पश्चात् अपने पितरों से मानसिक रूप से श्राद्धकर्म में किसी भी प्रकार की त्रुटि रह जाने के लिये क्षमायाचना मानसिक रूप से अवश्य करें। इस बात का ध्यान रखें कि श्राद्ध वर्ष में केवल एक बार करना होता है., इसलिये इसमें किसी प्रकार की लापरवाही का भाव न लाया जाये। श्राद्ध करने से एक-दो दिन पहले ही सभी प्रकार की व्यवस्थायें करके रख लें ताकि शांतचित्त और श्रद्धा सहित श्राद्ध सम्पन्न किया जा सके।

पितृयज्ञ और श्राद्धकर्म से सन्तुष्ट होते हैं- पितर

हिन्दू धर्म में किसी व्यक्ति के जन्म के साथ ही उस पर कुछ ऋण चढ़ जाते हैं, जिनमें पितृ ऋण प्रमुख है। इसी पितृ ऋण से मुक्त होने के लिये वैदिककाल से अपने पूर्वजों के निमित्त यज्ञ करने की परम्परा रही है। यह परम्परा वर्तमान में कई अन्य विधियों द्वारा प्रचलित है, जिनमें श्राद्ध कर्म सर्वाधिक रूप से महत्त्वपूर्ण है। श्राद्ध कर्म को ही पितृकर्म की संज्ञा दी गई है।

वेदों में भिन्न-भिन्न पितरों से सम्बन्धित सूक्त दिये गये हैं, जिनमें शुक्ल यजुर्वेद (19/49-61) का **पितृसूक्त** सर्वाधिक रूप से महत्त्वपूर्ण है। पितरों के निमित्त यज्ञ का विधान ऋग्वैदिक काल से ही प्रारम्भ हो गया था। ऋग्वेद (10/15) में पितरों की स्तुति की गई है और उन्हें शुभाशुभ फल देने वाला भी स्वीकार किया गया है। ऋग्वेद में पितृयज्ञ का विधान सभी के लिये अत्यधिक उपयोगी और शीघ्र फलप्रदायक माना है। ब्राह्मण और उपनिषदों में भी पितृऋण से मुक्ति के लिये पितृयज्ञ को महत्त्वपूर्ण साधन माना है। वैदिक काल के पश्चात् पितरों से सम्बन्धित कर्म में परिवर्तन हुए और पौराणिक काल तक इसमें कई नये तथ्य समाविष्ट हुए। लगभग सभी पुराणों में पितृयज्ञ और पितरों की पूजा-उपासना को पितृकृपा पाने का श्रेष्ठ मार्ग माना है।

श्राद्ध कर्म के रूप में पितृकर्म की चर्चा पुराणों सहित संस्कृत साहित्य के अन्य ग्रंथों में भी हुई है। पितरों के निमित्त पितृपक्ष की व्यवस्था सहित विभिन्न प्रकार के श्राद्धो का वर्णन उक्त ग्रंथों में हुआ है। श्राद्ध से तात्पर्य श्रद्धा से किया गया कार्य होता है अर्थात् पितरों की संतुष्टि के लिये श्रद्धा अत्यधिक आवश्यक है। श्राद्धों को एकोद्दिष्ट श्राद्ध, पार्वण श्राद्ध, नांदि श्राद्ध, त्रिपिण्डी श्राद्ध, नारायण बली, गया श्राद्ध इत्यादि के रूप में वर्गीकृत किया गया है। श्राद्धकर्म के लिये पितृपक्ष के रूप में अलग से 15 दिनों का एक पक्ष निर्धारित किया है। इस दौरान पितर अपने परिजनों से यह आशा रखते हैं कि वे उनके निमित्त श्राद्धकर्म के द्वारा अन्न का दान करेंगे और वे उन्हें कव्य के रूप में प्राप्त करेंगे।

श्राद्धकर्म को भी यज्ञ के समान ही श्रेष्ठ माना गया है। श्राद्धों का वर्णन मनुस्मृति इत्यादि धर्मशास्त्रों, श्राद्धकल्पलता, श्राद्धतत्त्व, पितृदयिता एवं अनेक पुराणों में हुआ है। ब्रह्माण्डपुराण में श्राद्ध का यह लक्षण बताया गया है कि देश, काल और पात्र में विधिपूर्वक श्रद्धा से पितरों के उद्देश्य के लिये जो कुछ ब्राह्मणों को दिया जाये, वही श्राद्ध होता है। श्राद्धों में दिया जाने वाला दान पितरों को किस प्रकार प्राप्त होता है, इस विषय को लेकर मन में शंका उत्पन्न हो सकती है। पितृलोक में निवास करने वाले पितर एकोद्दिष्ट श्राद्ध में उनकी पुण्यतिथि होने के कारण अपने वंशजों से यह आशा करते हैं

कि वे उनके निमित्त श्राद्धकर्म के द्वारा कव्य प्रदान करेंगे और पितृपक्ष अर्थात् आश्विन पक्ष में पार्वण श्राद्ध के दौरान सभी पितर पृथ्वी पर आकर अपने वंशजों से यह कामना करते हैं कि वे उन्हें श्राद्ध के रूप में कव्य देंगे। कव्य से तात्पर्य पितरों के निमित्त दिये जाने वाले विभिन्न प्रकार दान और अन्नदान से होता है। जिस प्रकार देवताओं को जो भी अर्पित किया जाता है, वह उन्हें हव्य के रूप में प्राप्त होता है, उसी प्रकार पितरों को यह कव्य के रूप में प्राप्त होता है।

पुराणों में उल्लिखित है कि जो व्यक्ति श्राद्धों में अपने पूर्वजों के निमित्त कव्य प्रदान नहीं करते हैं, तो ऐसे परिजनों को उनके पूर्वज बाध्य होकर तरह-तरह के श्राप देते हैं और उनका रक्त चूसने लगते हैं, इसलिये पितरों की सन्तुष्टि के लिये श्राद्ध कर्म आवश्यक होता है। मार्कण्डेय पुराण में श्राद्ध के महत्त्व को उल्लिखित करते हुए बताया है कि श्राद्ध से पितृगण प्रसन्न होते हैं और श्राद्धकर्त्ता को दीर्घायु, संतति, धन, विद्या, राज्यसुख, स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करते हैं। तैत्तिरीय उपनिषद् में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि देवताओं और पितरों के कार्य में मनुष्य को किसी भी प्रकार की लापरवाही और आलस्य नहीं करना चाहिये।

जिस व्यक्ति के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि श्राद्धकर्म में जो दान दिया जाता है, उससे पितर कैसे सन्तुष्ट होते हैं, तो उसके उत्तर में शास्त्रों में उल्लेख है कि श्राद्ध के दौरान जो भी पितरों के निमित्त अर्पित किया जाता है, उसे संकल्प में उसके नाम, गोत्र और अन्य व्यक्तिगत जानकारियों को बताया जाता है। उसके आधार पर विश्वेदेव, अग्निष्वात्त इत्यादि पितृगण आकर उस हव्य तथा कव्य को पितृगणों तक पहुँचा देते हैं। मार्कण्डेय पुराण में यह बताया गया है कि पितृगण उस कव्य को मनुष्य योनि में अन्न के रूप में स्वीकार कर लेते हैं। यदि वे पशुयोनि में हो, तो वे तृण के रूप में स्वीकार कर लेते हैं और अन्य योनियों में जो भी उनका आहार होता है, उस रूप में स्वीकार करते हैं।

श्राद्ध की दो प्रक्रियायें हैं- प्रथम, पिण्डदान और दूसरा, ब्राह्मण भोजन। अथर्ववेद में यह बताया गया है कि ब्राह्मणों को भोजन कराने से वह पितरों को प्राप्त हो जाता है। श्राद्ध के दौरान जब ब्राह्मण को निमन्त्रित करके घर बुलाया जाता है और जब ब्राह्मण भोजन करते हैं, तो पितर भी सूक्ष्मग्राह्य होकर उनके शरीर में आ जाते हैं और उस अन्न से तृप्त हो जाते हैं तथा अपने वंशजों को आशीर्वाद प्रदान करते हैं। शतपथ ब्राह्मण में उल्लेख है कि पितर सूक्ष्मधारी होकर मनुष्यों से छिपे हुए रहते हैं। इन्हें विभिन्न लोक-लोकान्तरों में आने-जाने में किसी भी प्रकार की रुकावट नहीं रहती है।

श्राद्ध करने का अधिकार किसे है, यह प्रश्न भी विचारणीय होता है। सामान्यत: श्राद्ध करने का अधिकार पुत्र को होता है, लेकिन पुत्र के अतिरिक्त पौत्र, प्रपौत्र, दोहिता, पत्नी, भाई, भतीजा, माता-पिता, बहिन, भांजा, अपने ही गोत्र के व्यक्ति इत्यादि के साथ

ही सातवीं पीढ़ी तक का परिवार भी श्राद्ध करने का अधिकार रखता है अर्थात् इनमें से जो भी किसी मृतक व्यक्ति के गोत्र और नाम का उच्चारण करते हुए श्राद्ध को करता है, उसे वह श्राद्ध कव्य के रूप में प्राप्त हो जाता है और वे इससे संतुष्ट हो जाते हैं।

शास्त्रों में श्राद्ध के अनेक भेद बताये हैं, किन्तु इन सभी में तीन प्रकार के श्राद्ध प्रमुख माने गये हैं- नित्य, नैमित्तिक और काम्य। प्रतिदिन किये जाने वाले श्राद्ध को नित्य श्राद्ध कहते हैं। इसमें श्राद्ध करने वाला व्यक्ति नित्य अपने पूर्वजों को जलांजलि देकर तर्पण करता है। इसमें विश्वेदेव जैसे पितृगण नहीं होते हैं और श्राद्ध केवल जल का तर्पण देकर ही किया जाता है। नैमित्तिक श्राद्ध को एकोद्दिष्ट श्राद्ध भी कहा जाता है। इसमें भी विश्वेदेव जैसे पितृगण शामिल नहीं होते हैं। एकोद्दिष्ट श्राद्ध से तात्पर्य किसी मृतक की पुण्यतिथि पर किया जाने वाला श्राद्ध होता है। तीसरा काम्य श्राद्ध कहलाता है। इस श्राद्ध से तात्पर्य किसी विशेष कामना को लेकर किये जाने वाले श्राद्ध से होता है।

पुत्रजन्म और विवाह इत्यादि सभी मांगलिक कार्यों में जो श्राद्धकर्म किया जाता है, वह नांदि श्राद्ध कहलाता है। जब हमारे घर में कोई भी महत्त्वपूर्ण कार्य होता है, तो हम अपने देवी-देवता, कुलदेवता, ग्राम देवता, कुलदेवी के साथ ही अपने पितरों के निमित्त भी पूजन-अर्चन करने के साथ नैवेद्य अर्पित करते हैं और दानादि भी करते हैं।

पितृपक्ष, अमावस्या और विभिन्न पर्व तिथियों पर जो श्राद्ध किया जाता है, उसे पार्वण श्राद्ध कहा जाता है। इस श्राद्ध में विश्वेदेव पितरों के गण के रूप में आकर जो भी श्राद्धकर्ता के द्वारा अर्पित किया जाता है, उसे कव्य के रूप में ले जाकर पितरों को संतुष्ट करते हैं। यही श्राद्ध प्रत्येक अमावस्या के दिन करना चाहिये। अमावस्या के अतिरिक्त पितृपक्ष में यह श्राद्ध श्रद्धापूर्वक किया जाता है।

जिस श्राद्ध में प्रेत पिण्ड का पितृपिण्डों में सम्मिलन किया जाये, उसे सपिण्डन श्राद्ध कहते हैं और जो श्राद्ध समूह में बैठकर किया जाये, उसे गोष्ठी श्राद्ध कहते हैं। ये सभी प्रकार के श्राद्ध श्रौत और स्मार्त के रूप में विभक्त होते हैं। पिण्डपितृयाग को **श्रौत श्राद्ध** कहते हैं और एकोद्दिष्ट पार्वण तथा तीर्थ श्राद्ध से लेकर मरण तक के श्राद्ध को **स्मार्त श्राद्ध** कहते हैं।

श्राद्ध करने के लिये हमारे धर्मशास्त्रों में अनेक दिवस निर्धारित किये हैं। इनमें चैत्र, वैशाख इत्यादि माह की अमावस्या तिथियां, सूर्य संक्रांति तथा आश्विन कृष्णपक्ष अर्थात् पितृपक्ष को प्रमुख माना गया है। इसके अतिरिक्त मृतक परिजन की वार्षिक तिथियां होती हैं, उन पर भी श्राद्ध किया जाता है, जिसे एकोद्दिष्ट श्राद्ध कहते हैं। यह सांकल्पिक श्राद्ध होता है, जो संकल्प लेकर किया जाता है। इसमें हाथ में त्रिकुश, तिल और जल लेकर संकल्प लिया जाता है। संकल्प लेने के बाद पांच स्थानों पर पृथक्-पृथक् भोज्य सामग्री रखी जाती है, जिसे पंचबलि कहते हैं। यह पंचबलियां क्रमशः

गाय, श्वान, कौआ, देवता और चींटियों के निमित्त निकाली जाती हैं। देवताओं की बलि अग्नि को प्रदान की जाती है, क्योंकि अग्नि को ही देवताओं का मुख माना गया है। इसके अतिरिक्त जिसके निमित्त जो सामग्री निकाली जाती है, उसे ही वह अर्पित करते हैं। पंचबलि निकालने के पश्चात् ब्राह्मण भोजन करवाया जाता है। ब्राह्मण भोजन करवाने के पश्चात् अपनी श्रद्धा के अनुसार अन्नदान और विभिन्न प्रकार के दानों का संकल्प लिया जाता है तथा दान-दक्षिणा दी जाती है।

पद्मपुराण में तो यहाँ तक बताया गया है कि यदि कोई व्यक्ति उपर्युक्त श्राद्ध वाली तिथियों में धनाभाव अथवा अन्य स्थितियों के कारण श्राद्ध करने में असमर्थ हो, तो उसे शाक से श्राद्ध कर्म करना चाहिये। यदि शाक खरीदने के लिये भी धन नहीं हो, तो घास से भी श्राद्ध किया जा सकता है। वह घास काटकर गाय को खिलाये और अपने पितरों से यह प्रार्थना करे कि मेरे पास इतना धन नहीं है कि मैं अन्नदान करके आपको सन्तुष्ट कर सकूँ, परन्तु आज श्राद्ध की तिथि है, इसलिये मैं अपनी श्रद्धा से गाय को घास खिलाकर आपकी सन्तुष्टि के निमित्त श्राद्धकर्म सम्पन्न कर रहा हूँ। यदि गाय को घास खिलाना भी सम्भव न हो, तो ऐसी स्थिति में श्राद्धकर्त्ता को एकान्त स्थान में दोनों भुजाओं को उठाकर विष्णुपुराण के श्लोकानुसार अपने पितरों से निम्नांकित प्रार्थना करनी चाहिये-

न मेऽस्ति वित्तं न धनं च नान्यच्छ्राद्धोपयोग्यं स्वपितृन्नतोऽस्मि।
तृष्यन्तु भक्त्या पितरो मयैतौ कृतौ भुजौ वर्त्मनि मारुतस्य॥

अर्थात् हे मेरे पितृगण! मेरे पास श्राद्ध के उपयुक्त न तो धन है और न धान्य। मेरे पास केवल आप लोगों के निमित्त श्रद्धा और भक्ति है। मैं इसी के द्वारा आपको तृप्त करने का प्रयास कर रहा हूँ। आप तृप्त हो जाइये। इस हेतु मैंने अपनी दोनों भुजायें ऊँची उठा रखी हैं।

इस प्रकार के श्राद्धकर्म से पितर सर्वाधिक प्रसन्न होते हैं क्योंकि इसमें व्यक्ति की अर्थात् श्राद्ध करने वाले की भावनायें पूर्ण रूप से श्रद्धा से ओत-प्रोत रहती हैं, वे इतने भावविभोर हो जाते हैं कि उनकी आँखों से अश्रुधारा बह निकलती है। पितरों के लिये किया गया यह श्राद्ध अवश्य ही पूर्ण फलकारक होता है।

अन्त्येष्टि संस्कार में त्रुटि भी होती है-पितृदोष का कारण

हिन्दू धर्म में मनुष्य की अन्तिम क्रिया को षोडश संस्कारों के अन्तर्गत अन्त्येष्टि संस्कार के रूप में सम्मिलित किया है। साथ ही इससे सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के नियमों को बताया गया है। जब इन नियमों के अनुसार किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर सुचारू रूप से अन्तिम क्रियाकर्म नहीं हो, तो उसकी मुक्ति में बाधायें आ जाती हैं और वह प्रेतयोनि में जाकर विभिन्न प्रकार के दोष उत्पन्न करता है। अन्त्येष्टि संस्कार से सम्बन्धित विभिन्न महत्त्वपूर्ण तथ्यों को यहाँ स्पष्ट किया जा रहा है।

जब किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाये, तो उसकी अन्तिम यात्रा को महायात्रा कहा जाता है। उसके परिवार के प्रत्येक सदस्य का यह कर्त्तव्य होता है कि अपने प्रियजन की इस महायात्रा को सुखमय बनाने के लिये श्रेष्ठ प्रयास करें। जब तक व्यक्ति मरणासन्न हो अथवा मृत्यु के पश्चात् उसका शव घर में रहे, तब तक राम-कृष्ण, भगवान शिव और भगवान विष्णु के नाम का उच्चारण करते रहना चाहिये।

मरणासन्न व्यक्ति को पलंग इत्यादि पर नहीं सुलाना चाहिये। अन्तिम समय पर ऐसी भूमि, जो पोली नहीं हो, उसको गोबर और मिट्टी से स्वच्छ करके उस पर लिटाना चाहिये। इसी प्रकार शव को भी किसी पलंग पर नहीं रखना चाहिये।

मृत व्यक्ति के शव को महायात्रा से पहले गोमूत्र, गोबर, गंगाजल तथा कुश के जल से स्नान करवाकर गीले वस्त्र से उसका शरीर पौंछना चाहिये। यदि वह यज्ञोपवीतधारी हो, तो एक जोड़ा नूतन यज्ञोपवीत धारण करवा देनी चाहिये। साथ ही उसके शरीर पर तुलसी की जड़ की मिट्टी और लकड़ी का चंदन घिसकर लगाना चाहिये। मान्यता है कि ऐसा करने से उस व्यक्ति के द्वारा जाने-अनजाने में किये गये समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और वह विष्णुलोक को प्राप्त होता है।

मृत व्यक्ति के शव को गोबर से लीपी हुई और तिल बिखरी हुई भूमि पर कुशों को बिछाकर उत्तर या पूर्व की सिर करवाकर लिटाना चाहिये। उसके सिर पर तुलसीदल रखना चाहिये।

मृत व्यक्ति को जिस कक्ष में रखा गया है, वहाँ घी का दीपक प्रज्वलित कर देना चाहिये, जो अखण्ड रूप से उसकी एकादशाह क्रिया तक प्रज्वलित रहे तो उत्तम है।

मृत व्यक्ति के मुख में शालग्राम का चरणामृत, तुलसीदल तथा गंगाजल डालना चाहिये। इससे वह बैकुण्ठलोक को प्राप्त होता है।

जिस घर में मृत्यु हुई हो और शव को काफी समय तक घर में रखा जाना हो, तो ऐसी स्थिति में उपनिषद्, गीता अथवा भागवत पुराण का पाठ करना चाहिये।

अर्थी बनाने के लिये बांस, कुश इत्यादि का प्रयोग करना चाहिये तथा अर्थी पर बिछाने के लिये सफेद नये कपड़े का प्रयोग करना चाहिये। यह कपड़ा सूती होना चाहिये। सौभाग्यवती स्त्री के शव को रखने के लिये गोटे रहित रंगीन ओढ़नी का प्रयोग करना चाहिये। साथ ही उसे सौभाग्य के प्रतीक वाली वस्तुओं से सजाना चाहिये।

शव को अर्थी पर बांधने के लिये मूंज की रस्सी और कच्चे सूत का प्रयोग करना चाहिये तथा शव को ओढ़ाने के लिये राम-नामी चद्दर अथवा सफेद चद्दर का प्रयोग करना चाहिये। शवयात्रा के दौरान शव के ऊपर से उछालने के लिये चाँदी के सिक्के, सामान्य सिक्के, रूई, सफेद पुष्प इत्यादि का प्रयोग करना चाहिये।

यदि किसी व्यक्ति की मृत्यु पंचक नक्षत्र अथवा त्रिपुष्करयोग में हो जाये, तो उस व्यक्ति का शवदाह पृथक् रूप से किया जाता है। पंचक से तात्पर्य चन्द्रमा के कुम्भ और मीन राशि में गोचर से है अर्थात् जब चन्द्रमा कुम्भ अथवा मीन राशि में हो, तो वह समय पंचक कहलाता है। इस दौरान किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाये अथवा अन्त्येष्टि कर्म इस दौरान हो, तो पंचक शान्ति अवश्य करवानी चाहिये। इस हेतु शवदाह से पूर्व कुश की पांच प्रतिमायें बनाई जाती हैं, जिन पर धागा लपेटकर जौ के आटे से लेप किया जाता है। इन पांच पुतलों का नाम क्रमश: प्रेतवाह, प्रेतसखा, प्रेतप, प्रेतभूमिप तथा प्रेतहर्ता होता है। जिस व्यक्ति की मृत्यु इस दौरान हुई हो, उसी के साथ इन पुतलों का भी दहन किया जाता है। यदि किसी व्यक्ति की मृत्यु पंचक में नहीं हुई है, परन्तु उसकी अन्त्येष्टि पंचक के समय की जा रही है, तो भी पुतलों का दहन अवश्य करवाना चाहिये, लेकिन पंचक शान्ति नहीं होती है। जिस व्यक्ति की मृत्यु पंचक में हुई है, परन्तु अन्त्येष्टि पंचक के पश्चात् हो, तो उसमें पुतलों का दहन नहीं होता, लेकिन पंचक शांति अवश्य करवानी चाहिये। जिस व्यक्ति की मृत्यु पंचक में हुई हो और अन्त्येष्टि भी पंचक में ही हो, तो उसके साथ पुतलों का दहन और पंचक शान्ति दोनों ही होती है। पंचक शान्ति बारहवें अथवा तेरहवें दिन करवाई जाती है। इसके अतिरिक्त जिस पंचक नक्षत्र में व्यक्ति की मृत्यु होती है, उस नक्षत्र के समय भी यह शान्ति कर्म करवाया जाता है। पंचक शान्ति से सम्बन्धित वर्णन ब्रह्मपुराण, निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु इत्यादि ग्रंथों में हुआ है।

अन्त्येष्टि कर्म में शुद्ध घी, कर्पूर, राल, चंदन की लकड़ी अथवा उसका चूरा, पीपल, बेल, तुलसी इत्यादि की लकड़ी का प्रयोग करना चाहिये। साथ ही जीव की शान्ति के लिये गोदुग्ध का प्रयोग करना चाहिये।

महायात्रा से पूर्व अर्थी की दाहिनी तरफ मुँह करके बैठकर अपसव्य होकर तिल और घी को जौ के आटे में मिलाकर छह पिण्ड बनायें। यह छह पिण्ड घर में शवयात्रा प्रारम्भ से लेकर श्मशान तक के लिये बनाये जाते हैं। पहला पिण्ड शव निमित्तक होता है, दूसरा पान्थनिमित्तक होता है, तीसरा खेचरनिमित्तक होता है, चौथा भूतनिमित्तक होता

है, पांचवां साधकनिमित्तक होता है और छठा पिण्ड अस्थिसंचयननिमित्तक होता है।

श्मशान में शवदाह के दौरान जब कपालक्रिया की जाये, तो उस समय अपने उस मृतक पूर्वज को याद करते हुए तेज आवाज में रुदन अवश्य करना चाहिये।

श्मशान से लौटते समय बच्चों को आगे करके सभी शवयात्री घर की तरफ आगे बढ़ें, ऐसे में पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिये। दरवाजे पर आकर थोड़ी देर रुकें। वहाँ नीम की पत्तियां चबायें, आचमन करें, तत्पश्चात् घर में प्रवेश करें।

पहले दिन भोजन स्वयं के घर में नहीं बनवाना चाहिये। बाजार से खरीदकर अथवा किसी रिश्तेदार के यहाँ से भोजन मंगवाकर करना चाहिये। इस दौरान ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करना एवं भूमि पर शयन करना चाहिये।

दूसरे दिन से घर में जो भी भोजन बने, उसका सबसे पहले गोग्रास निकालकर तत्पश्चात् प्रेत के निमित्त घर से बाहर भोजन किसी को देकर तत्पश्चात् सभी को भोजन ग्रहण करना चाहिये।

प्रेत अर्थात् मृतक परिजन के उद्देश्य से दस दिनों तक प्रतिदिन पिण्ड दान करना चाहिये। दस दिनों तक मृतक परिजन की संज्ञा प्रेत के रूप में ही रहती है। इन दस दिनों तक प्रेत के उद्देश्य से प्रत्येक दिन स्नान करना चाहिये और जलांजलि देनी चाहिये। मन्दिर में नहीं जाना चाहिये और देवी-देवताओं की पूजा नहीं करनी चाहिये और न किसी को प्रणाम करना और न ही किसी को आशीर्वाद देना चाहिये।

जिस दिन घर में मृत्यु हुई हो, उस दिन से प्रारम्भ करके मृतात्मा के हित के लिये द्वार पर अथवा किसी निश्चित कक्ष में दस दिनों तक प्रदोषकाल में मिट्टी के पात्र में तिल के तेल का दीपक प्रज्वलित करना चाहिये। यदि सम्भव हो, तो किसी सुरक्षित स्थान पर अखण्ड दीप भी प्रज्वलित करके रखा जा सकता है।

मृत्यु के पश्चात् के दस दिनों तक पीपल के वृक्ष में जलार्पण किया जा सकता है अथवा पीपल के वृक्ष पर एक मिट्टी का घड़ा छिद्र करके भी लटकाया जा सकता है, जिससे उसका जल पीपल के वृक्ष पर गिरता रहे।

जिस दिन घर में मृत्यु हुई हो अथवा अगले दिन से तीन-तीन लकड़ियों को सूत में बांधकर उन्हें पीपल के वृक्ष के नीचे रख देना चाहिये तथा उनके ऊपर एक-एक मिट्टी का कसौरा रख दें। एक कसौरे में जल तथा दूसरे में दूध रखना चाहिये।

मृत्यु के पश्चात् अगले दस दिनों तक नित्य पीपल वृक्ष के नीचे दीपदान करना चाहिये। इन दिनों में गरुडपुराण कथा का श्रवण करना चाहिये।

दशगात्र पिण्डदान के पश्चात् मलिन षोडशी का कृत्य पूर्ण हो जाता है। इसके पश्चात् मुण्डन कराने का विधान है। अन्तिम संस्कार करने वाले व्यक्ति ने पहले दिन मुण्डन करवाया था, वह दसवें दिन भी मुण्डन करवाये। साथ ही यज्ञोपवीत भी

परिवर्तित करे।

मृत्यु के पश्चात् ग्यारहवें दिन नारायणबलि क्रिया करवानी चाहिये, जिससे मृतात्मा की सद्गति हो। इस दिन से घर की शुद्धि मान ली जाती है। तत्पश्चात् अगले दिन द्वादशाह की क्रिया घर में सम्पन्न होती है। इस क्रिया के पश्चात् मृतक व्यक्ति के लिये श्रद्धानुसार दान करना चाहिये। दान में नित्य प्रयोग आने वाली वस्तुओं को देना चाहिये।

उक्त कर्मों के अतिरिक्त भी अनेक ऐसे तथ्य हैं जिनका अन्त्येष्टि संस्कार और तत्पश्चात् बारह दिन तक होने वाली क्रियाओं में ध्यान रखा जाना आवश्यक होता है। कई नियम तो विशेष लोकोपचार में प्रचलित होते हैं, जो उक्त नियमों से पृथक् भी हो सकते हैं, परन्तु यह निश्चित है कि किसी भी व्यक्ति का अन्तिम संस्कार करते समय सभी नियमों का पालन अवश्य करना चाहिये। आलस्य अथवा प्रमादवश यदि अन्तिम संस्कार में कोई कमी रह जाये, तो वह भविष्य में हानिकारक हो सकती है। यदि मृतक व्यक्ति की गति नहीं हो, तो उसकी आत्मा प्रेतयोनि में जाकर पीड़ित कर सकती है।

परिवार में किसी सदस्य की मृत्यु के पश्चात् सभी सदस्य अत्यन्त शोक एवं पीड़ा से भर जाते हैं। इस बारे में सभी जानते हैं कि शरीर ही मरता है, आत्मा अमर रहती है, इसके उपरान्त भी परिवार में दुःख का सन्नाटा छाया रहता है। जीवन से मृत्यु तक व्यक्ति का शरीर ही परिवार के सदस्यों के बीच मेल-मिलाप का माध्यम बन जाता है। शरीर के कारण से ही किसी से प्यार होता है, तो किसी से नाराजगी होती है। इसलिये शरीर का महत्त्व आम व्यक्तियों के लिये आत्मा की अपेक्षा अधिक दिखाई देता है। व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् परिवारजन अन्त्येष्टि कर्म को पूरे विधि-विधान से सम्पन्न करने का प्रयास करते हैं ताकि मृतक के जीवन की आगे की यात्रा सुखद रहें। यद्यपि अन्त्येष्टि की समस्त क्रियायें पारम्परिक रूप से सम्पन्न की जाती है, इसके उपरान्त भी परिवार का प्रत्येक सदस्य यह प्रयास करता है कि इसमें किसी प्रकार की त्रुटि न आने पाये, इसलिये व्यक्ति की मृत्यु के एक वर्ष बाद आने वाले श्राद्ध पर परिवारजनों को इस बारे में क्षमाप्रार्थना अवश्य कर लेनी चाहिये ताकि यदि किसी प्रकार की त्रुटि उनसे हो गई हो, तो इससे मृतक की आत्मा प्रभावित न होने पाये।

विधि-विधान से किया गया श्राद्ध ही सन्तुष्ट करता है पितरों को

प्राय: इस बात को सभी स्वीकार करते हैं कि मृतक का अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण विधि-विधान से ही किया जाना चाहिये। इस तथ्य को प्राचीनकाल से ही स्वीकार किया गया था। विद्वान महर्षियों का इस बारे में यह कथन था कि अन्त्येष्टि कर्म के पश्चात् ही मृतक की जीवात्मा के लिये मोक्ष का मार्ग यहीं से प्रशस्त होता है। ऐसा विश्वास किया जाता था कि यदि इस कर्म में किसी प्रकार की भी त्रुटि रह जाये तो जीवात्मा की गति अर्थात् मोक्ष नहीं होती है। इससे वह प्रेतयोनि में जाकर विभिन्न प्रकार के कष्ट भोगने को अभिशप्त होती है। हमारे धर्मग्रन्थों में इस बारे में अनेक स्थानों पर विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से बताया गया है। यहाँ आपकी ज्ञान वृद्धि के लिये दो उदाहरण बताये जा रहे हैं-

महाभारत काल की बात है एक बार भीष्म पितामह ने पाण्डवों में ज्येष्ठ युधिष्ठिर को पितरों के निमित्त किये जाने वाले श्राद्ध की विशिष्टता तथा पिण्डदान की विधि समझाते हुए बोले कि 'हे युधिष्ठिर, मेरे पिता की जब मृत्यु हुई, तब मैंने हरिद्वार जाकर उनका श्राद्धकर्म पूर्ण किया। मेरे द्वारा किये गये श्राद्धकर्म में मेरी माता गंगा ने मेरी भरपूर सहायता की। इसके बाद हरिद्वार में ही मैंने अनेक सिद्ध ऋषि-मुनियों को बुलाकर विधि-विधान से एकाग्रचित्त होकर तर्पण, पिण्डदान आदि समस्त कार्य आरम्भ किये। पूर्ण विधि-विधान से मैं एकाग्र होकर पिण्डदान कर रहा था, तो उसी समय एक विचित्र घटना घटी। पिण्डदान अर्पित करने के लिये पिण्डवेदी पर जो कुछ सामग्री रखी हुई थी, उन्हें चीरकर एक बहुत ही सुन्दर एवं आभूषणों से युक्त हाथ बाहर निकला। मैंने उस हाथ को पहचान लिया, वह हाथ मेरे पिताजी का ही था। उस हाथ की स्थिति ऐसी दिखाई पड़ रही थी कि जैसे मेरे द्वारा किये जा रहे पिण्डदान को ग्रहण करना चाहता हो। मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा था। उसी समय मैंने शास्त्रीय नियमों के बारे में सोचा, तो उसमें विधान था कि पिण्ड हाथ में नहीं दिया जाता है और न ही पितर स्वयं प्रकट होकर व्यक्ति के हाथ से पिण्ड प्राप्त करते हैं। शास्त्र का विधान तो यही है कि कुशों पर ही पिण्डदान करें। उपरोक्त बात को विचार कर मैंने पिता के पिण्डों से बाहर निकले हुए हाथों का आदर नहीं करके शास्त्रों का पालन करते हुए कुशों पर ही समस्त पिण्डों को अर्पित किया। इतना करते ही मेरे पिता का हाथ गायब हो गया। इसके उपरान्त पितरों ने मुझे स्वप्न में दर्शन दिया और प्रसन्न होते हुए बोले कि हमने ऐसा सब तुम्हारे ज्ञान की

परीक्षा लेने के लिये ही किया था। तुम्हारे इस शास्त्रीय ज्ञान से हम बहुत प्रसन्न हुए हैं। तुमने ब्रह्माजी, धर्म, वेद, शास्त्र, आत्मा, ऋषिगण, गुरु, प्रजापति और पितृगण आदि का मान-सम्मान बढ़ाया और तुमने धर्म के प्रति मोह नहीं रखा।'

नारदपुराण में भी इस कथा के बारे में कहा गया है कि एक बार जब भीष्म पितामह अपने पिता का गया में श्राद्ध करने गये और जब वे गया में पिण्ड देने लगे, तो उनके पिता शान्तनु के हाथ नदी से बाहर आये, लेकिन भीष्म पितामह ने पृथ्वी पर ही पिण्डदान किया। इससे प्रसन्न होकर उनके पितर बोले कि 'हे पुत्र, तुमने शास्त्रीय विधान का पालन किया है, अत: हम तुम्हें वरदान देते हैं कि तुम त्रिकालदर्शी होओगे तथा जब भी तुम्हारी इच्छा होगी, तभी मृत्यु तुम्हारे पास आयेगी।'

भीष्म पितामह महान् ज्ञानी थे। उन्होंने अपने पिता के श्राद्ध में मोह को त्याग शास्त्रोक्त प्रकार से श्राद्ध कर अपने पितरों को प्रसन्न किया था। इस घटना से यह ज्ञात होता है कि श्राद्धकर्म में शास्त्रों का नियम पालन आवश्यक होता है। भीष्म पितामह ने यह ज्ञान युधिष्ठिर को इसलिये दिया था ताकि वह शास्त्रों की महिमा और पितृकर्म में शास्त्रों के नियमों के पालन का महत्त्व जान सके।

भीष्म पितामह द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलते हुए ही पाण्डवों ने अपने मृतक पूर्वजों और भाई-बन्धुओं की मुक्ति के लिये श्राद्धादि कर्म सम्पन्न कराये थे। महाभारत में अनेक स्थानों पर पितृकर्म की महत्ता को स्पष्ट किया गया है, जिसे भीष्म पितामह का यह दृष्टांत स्पष्ट करता है।

इस आख्यान से यह स्पष्ट हो जाता है कि पितरों की संतुष्टि के लिये विधि-विधान से किया गया श्राद्धकर्म आवश्यक होता है। उसमें की गई किसी प्रकार की लापरवाही अथवा मोहवश विपरीत कार्य से पितरों की संतुष्टि नहीं होती है। श्राद्धकर्म और तर्पण से सम्बन्धित विभिन्न शास्त्रोक्त जानकारियों को इस पुस्तक में उल्लिखित किया है। उनका ध्यान पितृकर्म में रखा जाना आवश्यक होता है।

त्रिपिण्डी श्राद्ध और पितृदोष निवारण

अपने पितरों के निमित्त श्रद्धा से किये जाने वाले कर्मों को श्राद्ध कहते हैं। श्राद्ध के अनेक भेद हैं, जिनमें त्रिपिण्डी श्राद्ध को पितरों की संतुष्टि के लिये श्रेष्ठ माना जाता है। इस श्राद्ध से सात्त्विक, राजसिक और तामसिक रूपी सभी मृतकों की आत्माओं को संतुष्टि मिलकर उनकी गति का मार्ग प्रशस्त होता है। इसलिये त्रिपिण्डी श्राद्ध को विशेष माना जाता है।

अनेक बार ऐसा देखा जाता है कि किसी मृतक व्यक्ति के परिजन आलस्य अथवा किसी अन्य कारणवश उसकी जीवात्मा की गति-मुक्ति के लिये आवश्यक कर्म और श्राद्ध को भलीभाँति सम्पन्न नहीं कर पाते हैं। यहाँ तक कि श्राद्ध पक्ष में भी उसका श्राद्ध नहीं करते। ऐसी स्थिति में यदि उस मृतक की आत्मा प्रेतलोक में चली जाये तो वह अपने परिजनों के लिये अनेक बाधायें उत्पन्न करने लगती है। उसकी प्रेत की जैसी प्रकृति रहती है, वह उसी रूप में बाधायें उत्पन्न करने लगती है। यदि अपनी गति-मुक्ति की इच्छुक वह आत्मा अपने परिजनों से कव्य प्राप्त नहीं कर पाये तो उसे असंतुष्टि रहती है। उसकी प्रकृति सात्त्विक होने पर वह अपने परिजनों का अहित तो नहीं करती, लेकिन उस परिवार के सदस्यों की प्रगति तथा प्राप्त होने वाले भौतिक सुखों को बाधित कर देती है। परिणाम स्वरूप उस परिवार के सदस्यों के जीवन में अनायास रूप से समस्यायें आने लगती हैं।

अनेक बार ऐसे व्यक्ति, जिनका अपने धन अथवा किसी विशेष परिजन के प्रति मोह रहता है, यह मोह ही उन्हें मुक्ति से बाधित कर देता है। उनका यह मोह तब अधिक हो जाता है, जब वह अपनी जिम्मेदारियों से पूर्ण रूप से मुक्त न हुआ हो। जैसे पुत्र अथवा पुत्री के विवाह नहीं होने अथवा किसी एक सन्तान के सफल नहीं होने जैसे दु:ख होते हैं, जो उस मृतक व्यक्ति की आत्मा को गति से रोकते हैं और प्रेतलोक में विचरण करने पर बाधित कर देते हैं। ऐसी आत्मायें अपनी मनोकामना पूर्ण होने पर मुक्त हो जाती हैं, परन्तु जब उनकी मनोकामनायें पूर्ण न हों तो वह लम्बे समय तक प्रेतलोक में निवास करती हैं तथा अपने परिजनों के लिये निरन्तर विभिन्न प्रकार की बाधायें उत्पन्न करती हैं। यदि परिजनों के द्वारा श्राद्ध आदि कर्म भी समय पर किये जायें, तब भी वह ग्रहण नहीं करती। ऐसी आत्माओं को राजसी श्रेणी में रखा जा सकता है। तीसरी श्रेणी अर्थात् तामसिक मनोवृत्ति वाली आत्मायें अत्यधिक नुकसान पहुँचाने वाली होती हैं। इन्हें अपने कर्मों के कारण प्रेतलोक में भटकना पड़ता है। यदि इनकी मुक्ति हेतु उपाय नहीं किया जाये तो ये लम्बे समय तक प्रेतलोक में रह जाती हैं। ये अपने परिजनों

को विभिन्न प्रकार से परेशान कर प्रताड़ित करती हैं। परिजन इनसे चाहकर भी पीछा नहीं छुड़ा पाते हैं। सामान्य पितृकर्म और श्राद्ध से इनकी संतुष्टि नहीं होती है।

उक्त तीनों प्रकार की आत्माओं की मुक्ति के लिये त्रिपिण्डी श्राद्ध कर्म उत्तम माना जाता है। इन मृतकों की आत्माओं में सत्त्व गुण वाली आत्मा विष्णु मय, रजोगुण वाली ब्रह्ममय और तमोगुण वाली आत्मा रुद्रमय संज्ञा वाली होती है। इसलिये त्रिपिण्डी श्राद्ध कर्म में विष्णु सूक्त, ब्रह्म सूक्त और रुद्र सूक्त का पाठ किया जाता है।

उक्त तीनों प्रकृति वाले प्रेतों के लिये तीन प्रकार के पिण्ड बनाये जाते हैं। इसलिये इस श्राद्ध को **त्रिपिण्डी श्राद्ध** कहा जाता है। इस श्राद्ध से तीनों प्रकार के प्रेतों की मुक्ति हो जाती है और उनके कारण उत्पन्न होने वाला पितृदोष भी समाप्त हो जाता है। सात्त्विक प्रेतों के लिये जौ का पिण्ड, राजसिक प्रेतों के लिये चावल का पिण्ड, तामसिक प्रेतों के लिये तिल का पिण्ड बनाया जाता है। अक्षय्योदकदान के अन्तर्गत विशेषार्घ्य दिया जाता है। अर्घ्य में सात्त्विक प्रेतों के लिये बिजौरा नीबू, राजसिक प्रेतों के लिये जामुन और तामसिक प्रेतों के लिये खर्जूर के फल का प्रयोग किया जाता है।

त्रिपिण्डी श्राद्ध उन व्यक्तियों का अवश्य करवाना चाहिये जिनकी अकाल मृत्यु हुई हो अथवा किसी ने आत्महत्या की हो। इस श्राद्ध से न केवल एक पीढ़ी वरन् अनेक पीढ़ियों के उन पितरों का उद्धार हो जाता है, जो अतृप्त होकर प्रेत योनि में भटकते रहते हैं और उनके कारण अनेक प्रकार की समस्या हो रही हो। इसलिये इस श्राद्ध को गया श्राद्ध के समान श्रेष्ठ माना गया है।

त्रिपिण्डी श्राद्ध किसी पितृतीर्थ पर किया जाये तो श्रेष्ठ फलकारक होता है। गया, वाराणसी के पिशाचमोचन तीर्थ, त्र्यम्बकेश्वर के कपर्दिकेश्वर में त्रिपिण्डी श्राद्ध करना श्रेष्ठ माना जाता है। यदि इन स्थानों पर जाकर यह श्राद्ध करना सम्भव नहीं हो, तो किसी नदी के किनारे, शिवालय के समीप, पीपल वृक्ष के समीप भी किया जा सकता है। इस श्राद्ध को यदि श्रावण, आश्विन कृष्ण पक्ष, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष और माघ माह की पंचमी, अष्टमी, एकादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी और अमावस्या तिथि को सम्पन्न कराया जाये तो श्रेष्ठ है। यदि किसी व्यक्ति को पितृदोष की समस्या का सामना करना पड़ रहा है और इतने दिन इन्तजार करना सम्भव नहीं हो तो ऐसी स्थिति में किसी माह की उक्त तिथियों में यह श्राद्ध सम्पन्न करवायें।

यदि आपको किसी माध्यम से यह ज्ञात हो कि किस परिजन की आत्मा मुक्ति नहीं मिलने के कारण पितृदोष उत्पन्न कर रही है, तो ऐसी स्थिति में उसके नाम से यह श्राद्ध क्रिया सम्पन्न करायें। यदि किसी का नाम ज्ञात नहीं हो, तो ऐसी स्थिति में **अनारिष्ट गोत्र** शब्द का प्रयोग करना चाहिये। इस श्राद्ध से पहले तीर्थ स्नान, पितरों का तर्पण इत्यादि करने के पश्चात् शालग्राम अथवा भगवान विष्णु का पूजन किया जाता है। इसके

बाद श्राद्ध का संकल्प लेकर विष्णु, ब्रह्मा और रुद्र के पूजन के लिये तीन अलग-अलग कलशों की स्थापना की जाती है, उनका पूजन होता है और इनके सूक्त का पाठ होता है। इन तीनों कलशों के समक्ष आसन बिछाकर तीनों श्रेणियों के पितरों का आवाहन किया जाता है। इनके लिये पिण्डों का निर्माण होता है। इस श्राद्ध के अन्त में वैदिक और पौराणिक मंत्रों के द्वारा शंखोदक से शालग्राम अथवा विष्णुमूर्ति का तर्पण होता है। इसके बाद उसी शंखोदक से एक तंत्र से तीनों पिण्डों पर तथा प्रेतासनों में स्थित दर्भमय सात्त्विक, राजस और तामस प्रेतों का तर्पण किया जाता है। इसके बाद गोदान का संकल्प और कलशों के जल से पिण्डों का अभिषेक होता है। तत्पश्चात् विभिन्न प्रकार के दान और ब्राह्मण भोजन का संकल्प लेने के बाद प्रेतों का विसर्जन किया जाता है। अन्त में पीपल वृक्ष की जड़ में तिल मिश्रित जल का अर्घ्य देकर श्राद्ध पूर्ण किया जाता है।

यह श्राद्ध प्रत्येक उस परिवार को सम्पन्न करवाना चहिये जिन्हें पितृदोष के कारण अनेक वर्षों से समस्या का सामना करना पड़ रहा है। जिन परिवारों में एक के बाद एक अनेक लोगों की अकाल मृत्यु हो चुकी हो और जिस घर में पितृदोष के कारण सन्तान, विवाह, आर्थिक, गृहसुख सम्बन्धी समस्यायें आ रही हों। वे सभी इस तथ्य को अवश्य ध्यान में रखें कि यह श्राद्ध इससे सम्बन्धित ज्ञान रखने वाले पण्डित से ही करवाना चाहिये क्योंकि यह एक विशेष श्राद्धकर्म है।

पितृकर्म एवं पितृदोष निवारण के श्रेष्ठ तीर्थ

भारत में विभिन्न देवी-देवताओं के प्रसिद्ध तीर्थस्थलों के समान ही पितरों के निमित्त भी विशिष्ट तीर्थस्थल माने गये हैं। वहाँ जाकर पितृकर्म करने से न केवल पितर प्रसन्न होते हैं, वरन् पितृदोष से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की समस्यायें नहीं होती हैं। इन पितृतीर्थों में गयाजी, पुष्कर, बद्रीक्षेत्र का ब्रह्मकपाल स्थल, हरिद्वार, प्रयाग, पिहोवा, त्रियुगीनारायण, त्र्यम्बकेश्वर इत्यादि स्थल श्रेष्ठ माने गये हैं। इनके अलावा भी अनेक पितृतीर्थ हैं, जो किसी निश्चित क्षेत्र में प्रसिद्ध होते हैं।

पितृकर्म करने के निमित्त स्थान और तीर्थों का वर्णन पुराणों सहित अनेक ग्रंथों में हुआ है। **श्राद्धप्रकाश** और **वीरमित्रोदय** में **गया, पुष्कर, प्रयाग** तथा **हरिद्वार** इत्यादि तीर्थों में पितृकर्म की विशेष महिमा बताई गई है। प्रस्तुत लेख में इन सभी पितर तीर्थों का विस्तृत विवरण करने के साथ ही इनकी भौगोलिक स्थिति को भी बताया जा रहा है, जिससे आप यहाँ जाकर अपने पितृकर्मों को सम्पन्न कर सकें ताकि जीवन में पितृदोष से सम्बन्धित समस्याओं से पीड़ित नहीं हों-

हरिद्वार

उत्तराखण्ड राज्य में स्थित हरिद्वार को 'हरद्वार' के नाम से भी जाना जाता है। इस स्थान का अत्यधिक धार्मिक महत्त्व है। गंगा नदी हरिद्वार से पहाड़ी क्षेत्र से उतर कर मैदानी क्षेत्रों में प्रवाहित होने लगती है। हरिद्वार को पितृतीर्थों में श्रेष्ठ माना गया है। प्राचीनकाल से ही हरिद्वार में जाकर अपने परिजनों की अस्थियों को प्रवाहित करना और उनके निमित्त तर्पण आदि पितृकार्य करने के दृष्टिकोण से श्रेष्ठ माना गया है। उत्तरी-पश्चिमी भारत में हरिद्वार सबसे प्रमुख पितृतीर्थ माना गया है। यहाँ पर प्रत्येक बारह वर्ष में एक बार महाकुम्भ का आयोजन होता है। पुराणों में इस स्थान के धार्मिक महत्त्व को विस्तृत रूप से बताया गया है। प्राचीनकाल में इस स्थान पर अनेक धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न हुए थे, इसलिये इस स्थान को मोक्षदायक माना जाता है। राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, हिमाचलप्रदेश, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश इत्यादि प्रान्तों से लोग यहाँ अपने पितरों के निमित्त पितृकर्म के लिये आते हैं। हरिद्वार सड़क मार्ग और रेल मार्ग से विभिन्न शहरों से जुड़ा हुआ है। नजदीकी एयरपोर्ट हरिद्वार से लगभग 35 कि.मी. की दूरी पर देहरादून में है।

प्रयाग, इलाहाबाद

उत्तरप्रदेश में स्थित इलाहाबाद के समीप गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर स्थित प्रयाग तीर्थ पितरों के निमित्त पितृकर्म सम्पन्न कराने के दृष्टिकोण से श्रेष्ठ माना गया

है। सनातन धर्म में प्रयाग तीर्थ की अत्यधिक महिमा है। यहाँ प्रत्येक बारह वर्ष में महाकुंभ का आयोजन होता है। यहाँ आकर प्रत्येक सनातनी न केवल अपने इष्ट की आराधना करते हैं, वरन् पितृकर्म सम्पन्न करवाकर अपने पितरों से आशीर्वाद प्राप्ति की प्रार्थना भी करते हैं। तीन नदियों का संगम होने के कारण इस स्थान को त्रिवेणी क्षेत्र के रूप में भी जाना जाता है। यह स्थान भारत की धर्मनगरी वाराणसी से लगभग 120 कि.मी. की दूरी पर है। यहाँ पहुँचने के लिये भारत के प्रमुख शहरों से सीधा साधन मिल जाता है। इलाहाबाद सड़क मार्ग, रेल मार्ग और वायुमार्ग के द्वारा विभिन्न शहरों से जुड़ा हुआ है।

पुष्कर

राजस्थान में स्थित प्रसिद्ध तीर्थ पुष्कर को तीर्थराज भी कहा जाता है। यह स्थान पितरों के कर्म के लिये श्रेष्ठ माना गया है। यहां पितृकार्य सम्पन्न करने के लिये भारत के विभिन्न प्रांतों से लोग आते हैं। पुष्कर में स्थित ब्रह्मा जी का मन्दिर विश्वप्रसिद्ध है। विश्व में एकमात्र ब्रह्मा मन्दिर पुष्कर में ही है। यहाँ पर स्थित झील अत्यधिक पवित्र मानी जाती है। इस झील के समीप ही घाट पर सभी पितृकर्म सम्पन्न कराये जाते हैं। प्राचीनकाल में यहीं पर ब्रह्माजी ने भी अनुष्ठान सम्पन्न किया था। पुराणों में पुष्कर की अपार महिमा मण्डित की गई है। भगवान श्रीराम ने भी अपने पिता दशरथ का पिण्डदान पुष्कर में ही अर्पित किया था। यह स्थान राजस्थान के बिलकुल मध्य में स्थित है। राजस्थान की राजधानी जयपुर से पुष्कर लगभग 146 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। पुष्कर के समीप स्थित अजमेर शहर यहाँ से मात्र 11 कि.मी. की दूरी पर है। नजदीक एयरपोर्ट जयपुर है एवं रेलवे स्टेशन अजमेर में है।

पिहोवा

पिहोवा तीर्थ को पुराणों में पृथुदक् तीर्थ के नाम से उल्लिखित किया गया है। यह प्राचीनकाल में अत्यधिक प्रसिद्ध पितृतीर्थ माना जाता था। यहाँ से सरस्वती नदी का प्रवाह माना गया है। यही वह स्थान है, जहाँ सरस्वती नदी पूर्व दिशा की ओर बहती हुई आगे बढ़ती थी। पुराणों में उल्लेख है कि वेन के पुत्र पृथु के नाम से ही इस तीर्थ का नाम पृथुदक् पड़ा है। राजा वेन एक बार कुष्ठ रोग से पीड़ित हो गये थे। उनका उपचार अनेक स्थानों से आये हुए वैद्यों के द्वारा करवाने के पश्चात् भी कोई लाभ नहीं मिला। ऐसी स्थिति में किसी के परामर्श पर राजा वेन ने पिहोवा में स्थित सरस्वती नदी में स्नान किया, जिसके प्रभाव से वे इस रोग से मुक्त हो गये। इसी स्थान पर राजा वेन की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र पृथु ने उनका कर्मकाण्ड, श्राद्ध, तर्पण इत्यादि पितृकर्म सम्पन्न करवाया। साथ ही अपने सभी पितरों को तर्पण देकर उन्हें मुक्ति प्रदान की। पिहोवा तीर्थ की महिमा महाभारत, वायुपुराण, गरुडपुराण इत्यादि में हुई है। भगवान श्रीकृष्ण ने इस

तीर्थ की महिमा को अपार बताया है। उन्होंने युधिष्ठिर को पिहोवा तीर्थ पर अपने पापों का पश्चाताप करने के लिये कहा था। युधिष्ठिर ने इसी स्थान पर महाभारत युद्ध में मारे गये अपने सगे-सम्बन्धियों का पिण्डदान किया था। महाराजा रणजीतसिंह ने भी इस तीर्थ पर अपनी माता का कर्मकाण्ड करवाया था। पिहोवा तीर्थ के समीप राजा पृथु ने एक नगर बसाया था। प्राचीनकाल में यह तीर्थ तपोवन के रूप में जाना गया। इस स्थान पर ब्रह्मऋषि वसिष्ठ, राजर्षि विश्वामित्र सहित अनेक ऋषि-मुनियों ने तपस्या की थी। इस तीर्थ पर भगवान शिव, कार्तिकेय, माँ सरस्वती इत्यादि के प्राचीन मंदिर स्थित हैं। मार्कण्डेयजी के अनुसार भगवान राम ने इसी स्थान पर अपने पिता दशरथ का श्राद्ध किया था। पिहोवा में एक प्रेत पीपल नाम का वृक्ष है, जिसका पूजन और अभिषेक करने से पितृदोष से मुक्ति मिलती है। यहाँ वसिष्ठेश्वर महादेव का मंदिर है, साथ ही वसिष्ठ ऋषि की पूजास्थली भी विद्यमान है। इस तीर्थ पर शुक्लपक्ष की पंचमी तिथि के दिन स्नान करना उत्तम माना जाता है। पिहोवा तीर्थ पर प्रेतकार्य, देवकार्य और पितृकार्य सम्पन्न करवाना श्रेष्ठ माना जाता है। पितृदोष को दूर करने के लिये भी यहाँ आकर पितृकर्म करवाने से निश्चित रूप से लाभ मिलता है। पिहोवा तीर्थ हरियाणा राज्य में कुरुक्षेत्र जिले में स्थित है। कुरुक्षेत्र से पिहोवा की दूरी लगभग 26 कि.मी. है। नजदीकी रेलवे स्टेशन कुरुक्षेत्र में है।

बद्रीक्षेत्र का ब्रह्मकपाल स्थल

सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा जब पंचानन थे, तब भगवान शिव के आदेश पर भैरवजी ने उनके एक मस्तक को पृथक् किया था, तो वह सिर बद्रीक्षेत्र के ब्रह्मकपाल क्षेत्र पर आकर गिरा था, इसलिये इस क्षेत्र में पिण्डदान करने का विशेष महत्त्व है। यह स्थान प्रसिद्ध तीर्थ बद्रीनाथ के पास स्थित है। किसी भी पितर का गयाजी एवं अन्य पितृतीर्थों पर जब पितृकर्म सम्पन्न करा लिया जाये, तो सबसे अन्त में इस तीर्थ पर आकर पिण्डदान करना चाहिये। इस बद्रीक्षेत्र के ब्रह्मकपाल क्षेत्र में पिण्डदान करने के बाद कहीं भी पिण्डदान करना निषेध माना गया है। मान्यता है कि यहाँ पर पिण्डदान करते समय किसी प्रकार का मोह नहीं रहना चाहिये, अन्यथा पितरों का अध:पतन हो जाता है। यह स्थान अलकनंदा नदी के तट पर स्थित है। इस स्थान पर ही भगवान शिव को ब्रह्महत्या के श्राप से मुक्ति मिली थी। इस पितृतीर्थ का उल्लेख अनेक प्राचीन ग्रंथों में हुआ है। महाभारत काल में धर्मराज युधिष्ठिर ने भ्रातृहत्या दोष की मुक्ति के लिये यहीं पर प्रायश्चित किया था। ब्रह्मकपाल नामक स्थान पर केवल ग्रीष्म ऋतु में ही पिण्डदान की क्रिया सम्पन्न होती है। शरद ऋतु में यहाँ लोग नहीं आते हैं। यह स्थान बद्रीनाथ तीर्थ के समीप है। बद्रीनाथ के लिये ऋषिकेश और देहरादून से सड़क मार्ग द्वारा पहुँचा जा सकता है। नजदीकी रेल्वे स्टेशन ऋषिकेश और देहरादून में ही हैं तथा नजदीकी

एयरपोर्ट देहरादून में है।

त्रियुगीनारायण

बद्रीनाथ-केदारनाथ तीर्थ के मार्ग पर गौरीकुण्ड से पहले त्रियुगीनारायण नाम का स्थान पितृतीर्थ के रूप में प्रसिद्ध है। इस तीर्थ पर पितरों की मुक्ति के लिये पितृकर्म करवाने की परम्परा प्राचीनकाल से ही है। यही वह स्थान है, जहाँ सतयुग में भगवान शिव और पार्वती जी का विवाह सम्पन्न हुआ था। उनके विवाह में भगवान विष्णु पुरोहित बनकर आये थे। यह स्थान हिमावत के नाम से भी जाना जाता था। त्रियुगीनारायण नामक स्थान पर एक विशेष ज्योति प्रज्वलित रहती है। ऐसी मान्यता है कि यह ज्योति पिछले तीन युगों से निरन्तर प्रज्वलित है। यहाँ एक प्राचीन मंदिर बना हुआ है। इस मंदिर के प्रांगण में पितरों के निमित्त श्राद्ध, पिण्डदान, तर्पण इत्यादि पितृकर्म सम्पन्न करवाया जाता है। त्रियुगीनारायण जाने के लिये गौरीकुण्ड से 2 कि.मी. पहले और सीतापुर, सोनप्रयाग से बायीं ओर एक सड़क जाती है, इसी सड़क पर लगभग 12 कि.मी. की चढ़ाई पर यह स्थान आता है। इस स्थान में भगवान विष्णु का एक प्रसिद्ध मंदिर है। इस मंदिर में भगवान विष्णु, माँ सरस्वती और लक्ष्मीजी एक ही सिंहासन पर विराजमान हैं। इस मंदिर में सरस्वती गंगा की एक धारा भी प्रवाहित है। इस सरस्वती धारा से मंदिर स्थित चार कुण्ड जल से सदैव परिपूर्ण रहते हैं। इन कुण्डों को ब्रह्मकुण्ड, रुद्रकुण्ड, विष्णु कुण्ड और सरस्वती कुण्ड के नाम से जाना जाता है। विष्णुकुण्ड में पूजा से पहले मार्जन करने का विधान है। ब्रह्मकुण्ड में आचमन करके सरस्वती कुण्ड में तिल तर्पण करके पिण्डदान करने की प्राचीन परम्परा वर्तमान में भी विद्यमान है।

त्र्यम्बकेश्वर

महाराष्ट्र में गौतमी नदी पर स्थित प्रसिद्ध तीर्थस्थल त्र्यम्बकेश्वर पितृतीर्थ के रूप में भी जाना जाता है। नासिक से लगभग 20 कि.मी. की दूरी पर स्थित त्र्यम्बकेश्वर में ज्योतिर्लिंग भी विद्यमान है, इस कारण यहाँ दूर-दूर से लोग आते हैं। यह भूमि गौतम ऋषि की तपस्या के कारण अत्यधिक पवित्र मानी जाती है। प्राचीनकाल में एक बार जब चारों तरफ भयंकर अकाल पड़ा था, तब उस समय त्र्यम्बकेश्वर पर महर्षि गौतम ने अपनी तपस्या से एक कुण्ड का प्राकट्य किया था। इस कुण्ड के कारण इस क्षेत्र में खुशहाली आ गयी थी और चारों तरफ प्रसन्नता का माहौल हो गया था। सभी जीव-जन्तुओं को अन्न और जल प्राप्त होने लगा था। इससे गौतम ऋषि की कीर्ति चारों तरफ फैल गयी थी। इस स्थिति में कुछ ऋषि-मुनियों ने गौतम ऋषि से ईर्ष्यावश गोहत्या का पाप करवाया। वास्तव में यह भगवान गणेश की लीला थी, क्योंकि भगवान गणेश ही गाय बनकर गौतम ऋषि के पास गये थे। गोहत्या के श्राप से मुक्ति के लिये गौतम ऋषि को इस स्थान पर गंगा का प्राकट्य करवाना था। इस हेतु उन्होंने कठोर तपस्या की,

जिससे महादेव प्रसन्न हुए और गंगा का भी यहाँ अवतरण हुआ, तभी से यह स्थान अत्यधिक प्रसिद्ध हो गया। भगवान शिव यहाँ ज्योतिर्लिंग के रूप में विद्यमान हैं और गंगा नदी गौतमी के रूप में जानी जाती है। मध्यभारत के प्रसिद्ध तीर्थों में इस स्थान का नाम महत्त्वपूर्ण है। यहाँ पर देवकार्य और पितृकार्य सम्पन्न करवाये जाते हैं। यहाँ पर अपने पितरों के निमित्त श्राद्ध, पिण्डदान, तर्पण इत्यादि पितृकर्म करवाना अत्यधिक श्रेष्ठ माना जाता है। इससे पितृदोष से भी मुक्ति मिलती है।

गयाजी

सभी पितृतीर्थों में गयाजी का स्थान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है। बिहार राज्य में स्थित गयातीर्थ को प्राचीनकाल से ही सबसे महत्त्वपूर्ण पितृतीर्थ मानते हैं। प्राचीनकाल में गय नामक एक असुर हुआ था, जो भगवान विष्णु का भक्त था। गय ने कोलाहल नाम के पर्वत पर हजारों वर्षों तक कठोर तपस्या करके भगवान विष्णु को प्रसन्न किया था। इस तपोबल के प्रभाव से वह देवताओं के लिये भी अजेय हो गया था। गय की शक्ति को देखकर सभी देवता अत्यधिक चिंतित हुए और भगवान विष्णु के पास गये। भगवान विष्णु ने सभी देवताओं को गय के पास जाकर उसके तप का कारण पूछने को कहा और स्वयं भी उनके साथ गये। गयासुर के समक्ष जाने पर भगवान विष्णु ने उससे कठिन तपस्या का कारण पूछा और वरदान मांगने को कहा। गय ने कहा कि भगवान विष्णु आप मुझे वर दें कि मैं सभी देवताओं, ऋषियों, मुनियों इत्यादि से अधिक पवित्र हो जाऊँ। भगवान विष्णु ने गयासुर को तथास्तु कहकर वरदान प्रदान कर दिया। इस वरदान के प्रभाव से गयासुर का शरीर अत्यधिक पवित्र हो गया। अब जो भी व्यक्ति गयासुर को देखता अथवा उसका स्पर्श करता, वह स्वर्ग को प्राप्त हो जाता। यह देखकर ब्रह्माजी अत्यधिक चिंतित हुए। वे भगवान विष्णु के समक्ष गये और अपना विधान तथा मर्यादा भंग होने सम्बन्धी तथ्य को बताया। भगवान विष्णु ने ब्रह्माजी से कहा कि आप गयासुर के पास जाकर यज्ञ करने के लिये यज्ञभूमि के रूप में उसके शरीर को ही मांग लें। ब्रह्माजी ने जाकर गयासुर से उसकी देह को यज्ञ के लिये समर्पित करने को कहा। ब्रह्माजी की प्रार्थना पर गयासुर ने हाँ कर दी और ब्रह्माजी के कहे अनुसार उत्तर दिशा की ओर सिर तथा दक्षिण दिशा की ओर पैर करके भूमि पर लेट गया। ब्रह्माजी ने गयासुर के शरीर पर अनुष्ठान प्रारम्भ किया। अनुष्ठान के दौरान जब गयासुर का शरीर हिलने के कारण समस्या हुई, तो ब्रह्माजी ने धर्म से कहकर पवित्र धर्मशिला उसके शरीर पर रखवा दी, फिर भी गयासुर का शरीर हिलता रहा। इस समस्या के निवारण के लिये भगवान विष्णु स्वयं वहाँ आये और अपनी गदा के द्वारा उन्होंने गयासुर को स्थिर कर दिया। उस समय गयासुर ने भगवान विष्णु से यह प्रार्थना की थी कि जब तक पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा रहे, तब तक आप एवं अन्य सभी देवी-देवता का निवास मेरे

शरीररूपी तीर्थ पर रहे। सभी देव व्यक्त अथवा अव्यक्त रूप में सदैव यहाँ निवास करें। यहाँ पर किये जाने वाले श्राद्ध, तर्पण, पिण्डदान इत्यादि पितृकर्मों से पितरों का उद्धार हो। गयासुर का वचन सुनकर भगवान विष्णु ने तथास्तु कह दिया, इसलिये गयासुर की पूरी देह, जो लगभग 10 मील तक फैली हुई थी, परम पवित्र गयातीर्थ के रूप में बदल गयी, तब से ही यह गया स्थल देवतीर्थ और पितृतीर्थ के रूप में अत्यधिक प्रसिद्ध हुआ।

सम्पूर्ण गयाक्षेत्र में पितरों के कल्याण की कामना से अनेक तीर्थ और देवी-देवता यहाँ स्थापित हैं। पितृगण भी यहाँ सदैव निवास करते हैं। भगवान विष्णु आदिगदाधर के रूप में सदैव विद्यमान रहते हैं। यहाँ के प्रमुख स्थान फल्गुतीर्थ, विष्णुपद, गदाधर, गयाशिर, मुण्डपृष्ठ, आदिगया, धौतपाद, सूर्यकुण्ड, जिह्वालाल, सीताकुण्ड, रामगया, उत्तरमानस, रामशिला, काकबलि, प्रेतशिला, ब्रह्मकुण्ड वैतरणी, भीमगया, भस्मकूट, गोप्रचार, ब्रह्मसरोवर, अक्षयवट, गदालोल, मंगलोगौरी, आकाशगंगा, गायत्रीदेवी, संकटादेवी, प्रपितामहेश्वर, ब्रह्मयोनि, सरस्वती और सावित्रीकुण्ड, मतंगवापी, धर्मारण्य, बोधगया इत्यादि हैं।

गया तीर्थ में आकर पितृकर्म करवाने वाले व्यक्तियों को सर्वप्रथम फल्गु नदी में स्नान करना चाहिये। स्नान के पश्चात् तर्पण करना चाहिये। फिर भगवान विष्णु का गदाधर रूप में पूजन और विष्णुपद का दर्शन करना चाहिये। पहला श्राद्ध यहाँ फल्गु नदी में ही सम्पन्न करवाया जाता है। मान्यता है कि सम्पूर्ण लोकों के तीर्थ फल्गु नदी में स्नान करने के लिये आते हैं। अन्य प्रमुख स्थानों में प्रेतशिला एवं धर्मशिला प्रमुख हैं। इसके माहात्म्य से सम्बन्धित एक कथा भी मिलती है। प्राचीनकाल में धर्म की पुत्री धर्मव्रता नामक एक कन्या अत्यधिक दिव्यगुणों से सम्पन्न थी। जब उसकी आयु विवाह के योग्य हुई तो, उसके पिता को अपनी पुत्री के गुणों के समान कोई वर प्राप्त नहीं हो पा रहा था, तब धर्म ने अपनी पुत्री से कहा कि तुम्हें अपने अनुकूल स्वामी की प्राप्ति के लिये तप करना चाहिये। पिता की आज्ञा पर धर्मव्रता ने अत्यधिक कठोर तप किया। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर महर्षि मरिचि वहाँ आये और धर्मव्रता को पत्नी के रूप में स्वीकार किया। धर्मव्रता अपने पति के साथ चली आयी और उनकी सेवा-सुश्रुषा करने लगी। एक दिन जब धर्मव्रता अपने पति महर्षि मरिचि के सेवा में तत्पर थी, तो उसी समय ब्रह्माजी पधारे। श्वसुर के आने पर धर्मव्रता ने उठकर उनका स्वागत किया। इस बात से महर्षि मरिचि ने पति सेवा त्याग का अपराधी मानते हुए धर्मव्रता को शिला होने का श्राप दे दिया। शिलारूपी धर्मव्रता ने भगवान विष्णु की तपस्या की। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने धर्मव्रता की इच्छा के अनुसार उसे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में अत्यधिक पवित्र शिला के रूप में प्रादुर्भूत होने का आशीर्वाद दिया और उसको सभी

ऋषि-मुनि तथा देवी-देवताओं से भी अधिक पवित्र बना दिया। इसलिये वह शिला अत्यधिक पवित्र मानी गई। उस शिला को भगवान विष्णु ने गयासुर के सिर पर स्थिर कर दिया और कहा कि हम सभी चरण रूप में तुम्हारे शरीर पर स्थिर रहेंगे। इसलिये गयाजी में प्रेतशिला स्थान को अत्यधिक पवित्र माना गया है। उक्त स्थलों के अतिरिक्त अक्षयवट है, जिसके नीचे पितरों के निमित्त किया गया श्राद्ध तथा ब्राह्मणभोजन अत्यधिक सुफलकारी माना जाता है। अक्षयवट के नीचे ही अपने पितरों के निमित्त विभिन्न प्रकार के दान करना भी श्रेष्ठ मानते हैं।

गयाश्राद्ध का महत्त्व पुराणों सहित अनेक ग्रंथों में उल्लिखित है। जिस प्रकार व्यक्ति सभी तीर्थों में जाकर ईश्वर की कृपा प्राप्त करता है, वैसे ही गयातीर्थ में जाकर पितृकर्म करने पर उसे न केवल भौतिक लाभ प्राप्त होते हैं, वरन् मृत्यु के पश्चात् स्वयं के कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त हो जाता है। यदि कोई व्यक्ति पितृदोष से पीड़ित है, तो उसे गया जाकर अपने पूर्वजों के निमित्त पितृकर्म अवश्य करवाना चाहिये। ऐसा करने पर पितर अत्यधिक प्रसन्न होते हैं और विभिन्न प्रकार के आशीर्वाद प्रदान करते हैं। संतान सुख प्रदान करते हैं, वंश वृद्धि के लिये पुत्र प्रदान करते हैं और जो मृतक परिजन किसी कारण से प्रेतयोनि में चले गये हैं, उनकी भी गया श्राद्ध में पितृकर्म करने से मुक्ति हो जाती है। गया जाकर अपने नजदीकी रिश्तेदारों के साथ ही दूर के रिश्तेदारों का भी तर्पण किया जा सकता है। वायुपुराण के अनुसार उन मनुष्यों का जीवन धन्य माना जाता है, जो गयाजी में जाकर पितृकर्म सम्पन्न करवाते हैं। उनके कुल की सात पीढ़ियों का उद्धार हो जाता है।

पुराणों में उल्लिखित है कि गया श्राद्ध पूरे वर्ष में कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है। गया श्राद्ध के लिये किसी निश्चित समय को निर्दिष्ट नहीं किया गया है। सम्पूर्ण ऋषि-मुनि और पितृगण गयाजी में सदैव निवास करते हैं। जब मकर राशि में चन्द्रमा और सूर्य हो, तो ऐसे समय में तीनों लोकों में गया श्राद्ध को अत्यधिक श्रेष्ठ मानते हैं। इसके अतिरिक्त मीन, मेष, कन्या, धनु और वृषभ राशि में सूर्य स्थित होने पर भी गयाश्राद्ध को श्रेष्ठ माना गया है। पितृपक्ष के दौरान सम्पूर्ण अवधि में यहाँ रुक कर पितृकार्य करना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है। इस दौरान जो व्यक्ति यहाँ रुक कर पितृकार्य सम्पन्न करवाता है, उसके जन्म-जन्मातरों के पितर तृप्त होकर आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

गयातीर्थ बिहार में गया जिले में स्थित है। यह स्थान पटना से लगभग दक्षिण में 100 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। गया स्थान न केवल सनातनियों के लिये वरन् बौद्धों के लिये भी पवित्र माना जाता है। सनातनियों के लिये पितृकृपा प्राप्त करने के लिये और बौद्धों के लिये भगवान बुद्ध को बौद्धिसत्त्व प्राप्त होने के कारण यह स्थान महत्त्वपूर्ण है। बोधगया गया से लगभग 11 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर बस और रेल के

द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है। गया में रेलवे स्टेशन भी है। यहाँ पहुँचने के लिये पटना, नालन्दा, राँची, वाराणसी इत्यादि स्थानों से सीधी रेल सेवा है। गया में हवाई अड्डा भी स्थित है, जो भारत के महत्त्वपूर्ण नगरों से जुड़ा हुआ है।

गया श्राद्ध करने से पूर्व कुछ नियमों को अपनाना आवश्यक है। गया श्राद्ध यात्रा करने से पहले घर में पार्वण विधि से प्रचुर घृत मिश्रित हविष्यान्न से घृतश्राद्ध करना चाहिये। तत्पश्चात् यात्रा प्रारम्भ करें। एक बार यह क्रिया कर लें, तो इसके बाद कोई जन्म सूतक हो या मृत सूतक अपनी यात्रा को जारी रखें। घृतश्राद्ध के बाद ब्राह्मणों का भोजन और गुरुजनों से गया यात्रा के लिये आज्ञा लेनी चाहिये। यात्रा में जल से धुले हुए चावल साथ रखें। इन चावलों को लेकर पितरों का आवाहन करें। आवाहन किये हुए चावलों के साथ गया की यात्रा करें। गया पहुँचने पर इन्हें गयाकूप में डाल देवें।

यात्रा के दौरान किसी दूसरे का अन्न नहीं खायें तथा किसी प्रकार दान नहीं लें। गया जाते समय रास्ते में किसी भी तीर्थ अथवा मंदिर में नहीं जाना चाहिये। यह श्राद्ध अकेले नहीं करके अन्य सम्बन्धियों के साथ करना चाहिये। गया पहुँचने पर सबसे पहले फल्गु नदी में स्नान करें। स्नान के पश्चात् तर्पण, श्राद्ध तथा देवताओं का पूजन करें। गया में तीन, पांच, सात अथवा सत्रह दिन तक श्राद्ध करने की व्यवस्था का वर्णन पुराणों में उल्लिखित है। यदि तीन दिन भी समर्थ नहीं है, तो समय के अभाव में एक दिन का श्राद्ध करना हो, तो फल्गु नदी में स्नान करने के पश्चात् पार्वण विधि से श्राद्ध कर लेना चाहिये। तद्नन्तर विष्णुपद की सभी वेदियों पर तीर्थ प्राप्ति निमित्तक पिण्ड दानात्मक श्राद्ध करके शय्या दान और ब्राह्मण भोजन करवाकर तीर्थ पुरोहित से पितृकर्म की पूर्णता का आशीर्वाद लेना चाहिये। सबसे अन्त में गायत्री घाट पर दही और चावलों का पिण्ड देकर गया श्राद्ध को पूर्ण करना चाहिये।

पगड़ी की रस्म के बाद क्या...?

किसी की मृत्यु के बाद हिन्दू समाज में पगड़ी की रस्म के साथ ही सभी प्रकार की क्रियायें एवं कर्म सम्पन्न हो जाते हैं। हिन्दू सम्प्रदाय की यह विशेषता है कि विभिन्न अवसरों पर जो भी कार्यक्रम किये जाते हैं, उनके पीछे अनेक गूढ़ रहस्य छिपे होते हैं। किसी भी प्रकार की रस्म अथवा कार्य आदि करते समय उनके गूढ़ रहस्यों को समझना भी आवश्यक है। आमतौर पर सभी पगड़ी की रस्म का निर्वहण तो करते हैं किन्तु कितने लोगों को इसके महत्त्व का ज्ञान होगा, इसके बारे में कहना आसान नहीं है जबकि इस रस्म का सम्बन्ध न्यूनाधिक रूप से पितृदोष से अवश्य रहता है। मैं इस बारे में कुछ और लिखूँ, इससे पहले इससे सम्बन्धित एक घटना के बारे में बहुत ही संक्षिप्त में उल्लेख करूँगा, फिर इस बारे में बताऊँगा कि पगड़ी की रस्म का वास्तविक अर्थ क्या है?

मैं अपने एक परिचित के पिता के देहांत के बाद पगड़ी की रस्म पर उनके घर गया। उनके चार बेटे थे, इनमें बड़े बेटे के साथ मेरे मित्रता के सम्बन्ध थे। शाम लगभग चार बजे यह रस्म आरम्भ हुई। सभी आमंत्रित सम्बन्धी-परिचित आदि बैठ गये थे। बड़े लड़के को किसी रिश्तेदार के द्वारा सफेद रंग की पगड़ी पहनाई गई और कुछ देर बाद सब उठ गये। रिश्तेदार, सम्बन्धी आदि एक-एक करके सभी चले गये। मैं वहीं रुका रहा। थोड़ी देर बाद ही मृतक के चारों पुत्र वहीं पर एकत्र हो गये और पिता की सम्पत्ति तथा व्यवसाय आदि के बंटवारे के बारे में विचार-विमर्श करने लगे। जो समझौता वे करना चाहते थे, वह बड़े वाले भाई को स्वीकार नहीं था, क्योंकि इसमें उसे कम लाभ मिल रहा था। जब बात नहीं बनी तो बड़ा बेटा उठकर खड़ा हो गया। सिर पर बंधी पगड़ी को खोल कर वहीं पास में उछाल दिया और तीनों भाइयों को चुनौती देते हुए बोला कि या तो मेरा हिस्सा तरीके से दे देना वरना मामला कोर्ट में जाकर सुलझेगा। इसके बाद मैं वहाँ नहीं रुका और वापिस चला आया। पगड़ी की रस्म के तत्काल बाद बंटवारे के लिये इस स्तर तक उतर आना अत्यन्त दुःखद था लेकिन आमतौर पर सभी स्थानों में, सभी परिवारों में इससे मिलता हुआ स्वरूप ही देखने में आता है। जहाँ पर मरने वाला वसियत करके जाता है, वे पगड़ी की रस्म के बाद वसीयत खोल कर पढ़ते हैं कि किसके हिस्से में क्या आया? यहाँ भी अगर किसी को कम की प्राप्ति होती है तो वह असंतोष से भर जाता है।

अब बात पगड़ी की वास्तविकता के बारे में करते हैं और इस बारे में भी बात करते हैं कि कैसे कुछ लोगों के साथ इसके बाद विभिन्न प्रकार की कष्टकारक समस्यायें होने लगती हैं। यह समस्या किसी भी रूप में हो सकती है, चाहे उसे आर्थिक हानि हो,

संतान सम्बन्धी सुख प्राप्ति नहीं हो, अपयश का भागीदार बने अथवा अन्य किसी प्रकार का लांछन लगे। इनमें से अनेक लोग ऐसे भी हो सकते हैं जिनकी जन्मपत्रिका में पितृदोष दिखाई न दे रहा हो लेकिन कष्ट वे पितृदोष के समान भोग रहे होते हैं। इन बातों को हम आगे देखेंगे, पहले पगड़ी वाली बात को पूरा करें। दरअसल पगड़ी की रस्म का तात्पर्य यह होता है कि मृतक के बाद जो दायित्व शेष रहते हैं अथवा जिन कार्यों को भविष्य में किया जाना आवश्यक है, उसका निर्वाह वह व्यक्ति करेगा, जिसके सिर पगड़ी बांधी गई है। इसे सिर पर ताज की तरह बांधा जाता है और वास्तव में पगड़ी सिर का ताज ही होती है। इसे आप राजाओं के समय होने वाले राज्याभिषेक के सन्दर्भ में देखें तो सम्भव है कि बात जल्दी समझ में आये। पहले राजा की मृत्यु के बाद अथवा कभी-कभी राजा की जीवित अवस्था में बड़े राजकुमार का राज्याभिषेक किया जाता था। उसके सिर पर ताज पहनाया जाता था। उसे पूरे राज्य और प्रजा का राजा स्वीकार कर लिया जाता था। इसके बाद राज्य की रक्षा और प्रजा की सुरक्षा का दायित्व उसी पर आ जाता था जिसे ताज पहनाकर राज्याभिषेक किया गया हो। अगर वह ठीक प्रकार से अपने दायित्वों का पालन नहीं करता तो न राज्य सुरक्षित रह सकता है और न प्रजा सुखी रह सकती है, चारों तरफ अराजकता का वातावरण बन जाता है।

आज राजा और राज्य नहीं रहे हैं लेकिन एक परिवार को राज्य की अतिसूक्ष्म इकाई माना जा सकता है। परिवार का मुखिया जीवन भर परिवार को सुखी तथा सम्पन्न बनाये रखने का प्रयास करता है, संतानों का उचित समय पर विवाह करता है। चूंकि वह एक सामाजिक प्राणी है, इसलिये समाज के प्रति भी उसके अनेक दायित्व होते हैं, उन्हें भी पूरा करना होता है। अगर वह अकाल मृत्यु को प्राप्त होता है तो अनेक कार्य ऐसे रह जाते हैं, जिन्हें वह अपने जीवनकाल में पूरा करने का प्रयास अवश्य करता। अगर व्यक्ति प्राकृतिक रूप से सामान्य मृत्यु को प्राप्त हो, तब भी अनेक कार्यों को करने की चाह उसमें शेष रहती ही है। दूसरे शब्दों में ऐसा कहा जा सकता है कि मनुष्य चाहे किसी भी उम्र में मरे, चाहे सौ साल से अधिक जीये, तब भी अनेक ऐसे कार्य उसने सोच रखे होते हैं जो वह पूरा करना चाहता है। पगड़ी की रस्म ऐसे सभी दायित्वों को पूरा करने के लिये परिवार के उस सदस्य को बाध्य करती है जिसे पगड़ी पहनाई जाती है। यह पगड़ी भावी जिम्मेदारियों का बोझ होता है जिसे उसने हर हालत में ढोना होता है।

कई बार ऐसा देखने में आता है कि जब परिवार के मुखिया की किसी भी रूप में मृत्यु हो जाती है लेकिन उसके बाद बेटे परिवार का ध्यान रखने के स्थान पर अपने पत्नी एवं बच्चों में ही व्यस्त हो जाते हैं। कई बार बेटे अपने परिवार से अलग हो जाते हैं, पीछे माँ, बहिन अथवा छोटा भाई किस हालत में और कैसे रहेंगे, इस बारे में बिलकुल नहीं सोचते हैं। कई बार ऐसी हालत में मृतक की पत्नी तथा बेटी आदि दूसरों के घरों में झाडू-पौंछा आदि करके दिन व्यतीत करती हैं और दूसरी तरफ बेटा अपनी पत्नी तथा

बेटे के साथ खुशियां मना रहा होता है। कुछ परिवारों में ऐसी स्थिति में मृतक की पत्नी अथवा बेटी आत्महत्या तक करने वाला कदम उठा लेती हैं। इन परिस्थितियों में मृतक की आत्मा को कितना कष्ट होता होगा, इसके बारे में बताने की आवश्यकता नहीं है। जो लोग अपनी जिम्मेदारियों को पूरा नहीं करते हैं, बाद में उनके जीवन में एक-एक करके अनेक समस्यायें उत्पन्न होने लगती हैं। यह सभी प्रकार की समस्यायें पितृदोष के लक्षणों की तरफ संकेत करती हैं लेकिन उनकी जन्मपत्रिका में पितृदोष दिखाई नहीं देता है।

उपरोक्त प्रकार की घटना के अनुरूप एक ऐसी ही घटना के साक्षी कुछ लोग रहे हैं। इस घटना ने सुनने और देखने वालों के दिल हिला कर रोंगटे खड़े कर दिये थे। इस घटना का हालांकि मैं साक्षी नहीं रहा हूँ लेकिन इसके बारे में मुझे भी मालूम चला था। पाठक इससे कुछ सीखें और सही मार्ग पर चलने का प्रयास करें, इस सोच के कारण इस घटना का विस्तार से उल्लेख करना आवश्यक है। रामेश्वर वर्मा का परिवार बहुत सुखी था। घरेलू उपयोग में आने वाले सामान की उनकी दुकान थी जो बहुत अच्छी चलती थी, इससे लाभ भी अच्छा होता था। परिवार में पत्नी के अलावा उसके एक बेटा था सोमेश और सोनाली नाम की लड़की थी। रामेश्वर की इच्छा थी कि वह पहले सोनाली का विवाह करेगा, बाद में सोमेश का, लेकिन हुआ इससे एकदम उलटा। उनके रिश्ते के एक निकट के सम्बन्धी सोमेश के लिये रिश्ता लेकर आ गये। लड़की तथा उसके परिवार वालों के काफी गुण बताये, अच्छाइयां बताई और आगाह किया कि सोमेश के लिये इससे अच्छा रिश्ता नहीं मिल सकता था। इच्छा न होने के बाद भी उसी लड़की का रिश्ता सोमेश के साथ कर दिया। विवाह करके बहू घर ले आये। बहू का नाम निशा था। वह दिखने में ठीक थी किन्तु जो गुण एक बहू में होने चाहिये थे, उनका उसमें काफी अभाव दिखाई दे रहा था। इसका पता सबको जल्दी ही लगने वाला था।

निशा ने कुछ समय बाद ही अपना वास्तविक रूप दिखाना प्रारम्भ कर दिया। सबसे पहले उसने सोमेश को अपने वश में किया, फिर धीरे-धीरे अपने आपको सभी प्रकार के कार्यों से अलग कर दिया। वह एक गिलास तक यहाँ से उठा कर वहाँ नहीं रखती थी। सोनाली के साथ भी उसका व्यवहार ठीक नहीं था। इस बारे में सोमेश की माँ ने उसे टोका तो वह उसके सामने हो गई। बिना बात के भी काफी कुछ कह दिया। इस घटना से पूरा घर स्तब्ध रह गया। इस बारे में सोमेश को बताया गया, तो उसने भी सारी गलती माँ और सोनाली की बताकर निशा का साथ दिया। इसके बाद घर में एक विचित्र प्रकार का तनाव बना रहने लगा। निशा घर में किसी से बात नहीं करती और कोई काम भी नहीं करती। सोमेश पिता के साथ ही काम करता था, इसलिये अब वह दुकान से पैसा गायब करके निशा को खुश रखने लगा। पहले रामेश्वर को इसका पता नहीं था, जब पता चला तो दुकान का काफी पैसा निकल चुका था। पिता ने इस बारे में

सोमेश से बात की तो वह पिता से ही उलझ गया। तब झगड़ा काफी बढ़ गया और क्रोध तथा तनाव की स्थिति में उनको दिल का दौरा पड़ा और वहीं मर गये। घर में जब इस बात का पता चला तो रोना-पीटना चालू हो गया। सोमेश ने पिता से झगड़े की बात छिपा ली थी। इस बारे में बाद में पड़ोस की दुकान वाले ने सोमेश की माँ को बताया था। रामेश्वर की क्रियाकर्म के अन्तिम दिन पगड़ी की रस्म हुई। सोमेश को पगड़ी बांधी गई। बड़े-बुजुर्गों ने कहा कि अब घर की सारी जिम्मेदारियां उसी के सिर पर हैं, जल्दी ही अच्छा रिश्ता देखकर बहन का ब्याह कर दो। सोमेश ने सब काम ठीक से करने तथा सभी दायित्वों को पूरा करने का आश्वासन दिया जो कि पूरी तरह से झूठा था।

कुछ समय बाद सोमेश ने माँ से कहा कि अब यहाँ पर काम धंधा ठीक से चल नहीं रहा है, इस दुकान को बेच कर बाजार में अच्छे मौके पर ले लेते हैं। माँ के पास विरोध करने का कारण ही नहीं था। सोमेश ने दुकान बेच कर दूसरी जगह अपने नाम से दुकान ले ली। वह घर पर खर्चे के लिये पैसे कम देने लगा था। उसका कहना था कि काम नहीं चल रहा। उसने एक दिन माँ से कहा कि दुकान इतना पैसा नहीं कमा रही कि पूरे घर का खर्च ठीक से निकल सके। इसलिये अच्छा होगा अब सोनाली कहीं काम करके चार पैसे कमाये। अगर आपको काम मिलता है तो बेशक आप भी कर लें। माँ और सोनाली ने सुना तो कानों पर विश्वास नहीं हुआ लेकिन सोमेश ने बता दिया था कि अब वह घर खर्च के पैसा नहीं देगा। तब मजबूरी में सोनाली और उसकी माँ मिलकर दो-चार घरों का झाडू-पोंछा करने लगीं। इन्हें काम करते देख आस-पास लोग आह भर उठते। सभी सोमेश तथा उसकी पत्नी को कोसते, लेकिन इससे क्या होने वाला था? इसी प्रकार से छह महीने व्यतीत हो गये। तभी एक दिन सोमेश ने माँ से कहा कि वह दुकान के लिये कुछ कर्जा लेना चाहता है, इसलिये घर के कागजात बैंक के पास रख कर गारंटी देनी होगी। माँ ने मना किया तो उसने झांसा दिया कि पैसा मिलने पर इसमें से कुछ पैसा निकाल कर वह सोनाली का विवाह करने के बारे में भी विचार करेगा। माँ ने सोनाली के विवाह के लालच में आकर सोमेश ने जो कहा, वह कर दिया। घर के कागज भी बैंक वालों को दे दिये। बाद में सोमेश ने बताया ही नहीं कि उसने कितना कर्ज मिला और वह सोनाली के विवाह के लिये क्या करने वाला है। इसके बाद वह घर के बारे में पूरी तरह से भूल गया।

इस घटना को चार महीने हो गये। तब एक दिन बैंक वाले घर आ गये। उस समय सोनाली और माँ काम पर जाने वाले थे। बैंक वालों ने माँ से कहा कि उन्होंने बैंक में इस मकान के कागजात गिरवी रखकर बीस लाख का कर्ज लिया है और इसके बाद एक भी किश्त नहीं दी है। बैंक द्वारा लिया गया बीस लाख ब्याज सहित दो महीने में जमा करवा दें, अन्यथा बैंक मकान को अपने कब्जे में ले लेगी। इतना कहकर वे चले गये। माँ के पैरों के नीचे से जमीन ही निकल गई थी। वह कुछ पल ऐसे ही खड़ी रही,

फिर नीचे गिर पड़ी। माँ को गिरते देख सोनाली चीख पड़ी। भाग पर पानी लाकर माँ की मुँह पर छींटे मारे, तब उसे होश आया। उसने इस बारे में सोमेश से बात की। उसने साफ कह दिया कि इस बारे में वह कुछ नहीं जानता। एक सप्ताह बाद वह निशा के साथ दूसरी जगह रहने को चला गया। पीछे से निराश, जिन्दगी में थकी हुई और सोमेश से ठगी हुई सोनाली और उसकी माँ ने अपने जीवन को ही समाप्त कर लिया। उन्होंने फंदा लगा कर आत्महत्या कर ली। इस बारे में जिसने भी सुना, उसका दिल हा-हाकार कर उठा। माँ-बेटी के इस दु:खद अंत से सभी की आँखों से आँसू बह निकले। सभी ने इसका दोष सोमेश को दिया लेकिन वह पूरी तरह से चुप रहा। क्रियाकर्म की किसी भी रस्म में निशा सम्मिलित नहीं हुई।

सोमेश ने माँ को मूर्ख बनाकर बैंक से जो पैसा लिया था, उसका उसने एक मकान खरीद लिया था लेकिन इसके बारे में किसी को कुछ नहीं बताया था। इस बार भी पगड़ी की रस्म सोमेश ने ही पूरी की। वह किसी से कुछ नहीं बोल रहा था। तभी एक वृद्ध महिला सोमेश के पास आई और उसे श्राप देते हुए बोली कि इतना अनर्थ करके तू यह मत सोच लेना कि चैन से खाना खाकर सो जायेगा। देख लेना, तुझे तेरे कर्मों का पूरा-पूरा हिसाब देना होगा। अपनी माँ-बहिन के साथ जैसा धोखा तूने किया है, रामेश्वर की आत्मा तुझे कभी माफ नहीं करेगी, तू बर्बाद हो जायेगा, वहाँ एकत्र अन्य महिलाओं ने उसे शांत कराया। फिर सब काम करके मकान को ताला लगाकर सोमेश अपने घर चला गया। अब इसके बाद सोमेश की बर्बादी की कहानी प्रारम्भ होने वाली थी और इसकी दस्तक भी हो चुकी थी। सोमेश जैसे ही अपने घर पहुँचा तभी छत से सीढ़ियां उतर रही निशा का पांव फिसला और वह लुढ़कती हुई नीचे गिर गई। उसकी दायीं टांग की हड्डी तीन जगह से टूट गई थी। उसे तत्काल अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टर्स ने तुरन्त ऑपरेशन प्रारम्भ कर दिया। ऑपरेशन के बाद प्लास्तर कर दिया गया। डॉक्टर ने बताया कि 45 दिन बाद प्लास्तर खोलेंगे। निशा होने वाले दर्द से दो दिन तक भयानक रूप से चीखती रही, कराहती रही। लगभग आठ दिन निशा अस्पताल में ही भर्ती रही। फिर सोमेश उसे घर ले आया। इस घटना में उसका काफी पैसा लग गया था और दुकान का काम भी काफी खराब हुआ था। घर का काम करने के लिये एक नौकरानी को रख लिया था। इसकी सख्त आवश्यकता थी, इसलिये वह उसके बारे में पर्याप्त जानकारी भी नहीं ले सका कि वह कहाँ रहती थी। इस बारे में जानकारी न लेना बाद में घातक सिद्ध हुआ। एक महीने तक उस नौकरानी ने यह पता लगा लिया कि कहाँ क्या रखा है, फिर एक दिन वह निशा के गहने तथा काफी सारा नकद पैसा लेकर भाग गई। उसके बारे में सोमेश कुछ भी नहीं जानता था, इसलिये पुलिस को कुछ जानकारी नहीं दे सका। उसका बहुत बड़ा नुकसान हो गया था। एक सप्ताह बाद निशा का प्लास्तर खुलना था और पास में पैसा नहीं था, निरन्तर कई दिनों तक दुकान पर

ध्यान न दे पाने के कारण वहाँ भी काफी हानि हो रही थी। वह समझ नहीं पा रहा था कि एकाएक ऐसा क्यों होने लगा है और वह ऐसी स्थिति में क्या करे?

उसने जैसे-तैसे करके निशा का प्लास्तर खुलवाया। जाँच से पता चला कि टूटी हुई हड्डियाँ ठीक से जुड़ी नहीं हैं, इसलिये एक बार और 45 दिन का प्लास्तर करना होगा। फिर से प्लास्तर की बात सुनकर निशा रो पड़ी। प्लास्तर के बाद एक-एक चीज और एक-एक काम के लिये दूसरों पर आश्रित होना पड़ता था। मजबूरी थी, इसलिये प्लास्तर करवाना पड़ा। इस बार निशा की माँ को देखभाल के लिये लाया गया लेकिन वह चार दिन बाद ही चली गई, यह कह कर कि उसके घर पर भी काफी काम हैं। मजबूरी में इस बार सोमेश को ही घर का काम करना पड़ा। उसके पास अब इतना पैसा भी नहीं था कि किसी काम करने वाली की व्यवस्था कर सके। अब उसकी हालत तेजी से खराब होने लगी थी। काम पर बिलकुल ध्यान नहीं दे पा रहा था, इसलिये वहाँ होने वाली हानि लगातार बढ़ रही थी। बीमारी के कारण खर्चा काफी बढ़ गया था। उसे लग रहा था कि अब वास्तव में उसके बुरे दिन प्रारम्भ हो गये हैं। उसके एक परिचित ने उसे किसी ज्योतिषी से मिलने की सलाह दी। उसे बताया गया कि उसे पितृदोष के कारण इस प्रकार की समस्याओं को भोगना पड़ रहा है। दूसरे दिन वह अपनी जन्मपत्रिका लेकर एक ज्योतिषी के पास गया और पूछा कि क्या उसकी पत्रिका में पितृदोष बन रहा था? अगर बन रहा था तो वह कैसे दूर होगा? ज्योतिषी ने जन्मपत्रिका को ध्यान से देखा, फिर कहा कि वैसे तो किसी प्रकार का पितृदोष दिखाई नहीं दे रहा, फिर भी अगर उसे ऐसी समस्यायें आ रही हैं तो इनसे बचने के लिये अपनी बहनों के साथ अच्छा व्यवहार करो। माँ को सब प्रकार के सुख देने की कोशिश करो। पिता का श्राद्ध पूरी श्रद्धा से करो, सब ठीक हो जायेगा। उसने पूछा कि क्या इनके अलावा भी कोई अन्य उपाय हैं, तो ज्योतिषी ने साफ कहा कि पितृदोष से मुक्ति के लिये तुम्हें श्रेष्ठ ही नहीं, सर्वश्रेष्ठ उपाय बताये हैं। अगर इन उपायों को करने में समस्या आती है, तो फिर मिलने वाले परिणामों को भोगने के लिये तैयार रहना होगा। सोमेश भारी मन से वापिस लौटा। ज्योतिषी ने जिनके साथ अच्छा व्यवहार करने को तथा जिनको सुख देने को कहा था, वे उसी के कारण अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए थे। ऐसे में वह क्या करे, उसे समझ नहीं आ रहा था। वह भीतर ही भीतर डरा हुआ था कि अब वास्तव में पिता की आत्मा उसे बर्बाद करने का प्रयास करने लगी है। वह वापिस घर आ गया। वह बिना किसी को बताये भी समझ रहा था कि उसके बुरे दिन आ गये हैं, वास्तव में वह सही सोच रहा था।

प्लास्तर चढ़ने के बाद एक महीने बाद निशा को काफी बेचैनी और दर्द होने लगा था। उसे लग रहा था कि पैर को प्लास्तर के अन्दर ही अन्दर कोई बुरी तरह काट रहा है। दर्द भी काफी बढ़ गया था। परेशान होकर सोमेश निशा को लेकर अस्पताल गया। वहाँ जांच के लिये प्लास्तर खोला गया। पांव की स्थिति देखकर डॉक्टर्स कांप गये।

प्लास्तर के नीचे वाला हिस्सा गलने लगा था। हड्डियां इस कारण से जुड़ नहीं रही थी। गलने के कारण घाव में जहर फैलने लगा था। डॉक्टर्स ने आपस में विचार-विमर्श किया और निष्कर्ष निकाला कि निशा का पांव ही काटना पड़ेगा। इस बारे में सोमेश को भी बताया गया कि घुटने से ऊपर से पांव काटना होगा, अन्यथा पूरे शरीर में जहर फैलने की आशंका है। सोमेश की जान ही निकल गई लेकिन स्थिति की गम्भीरता को देखकर सहमति देनी ही पड़ी क्योंकि ऑपरेशन तुरन्त करना था। निशा ने इस बारे में सुना तो वह उसी समय बेहोश हो गई। डॉक्टर्स ने उसी बेहोशी की अवस्था में उसे बेहोशी की दवा का इन्जेक्शन दिया और ऑपरेशन करके पांव काट दिया। निशा का रोते-रोते बुरा हाल हो रहा था। चार दिन बाद उसे वापिस घर ले आया गया।

घर में मौत का सन्नाटा छा गया था। दोनों ही हंसना-बोलना भूल गये थे। दुकान का घाटा बढ़ता चला जा रहा था। परिणामस्वरूप उस पर काफी कर्ज हो गया था। एक दिन यह निर्णय लिया गया कि इस मकान को बेचकर किराये के मकान में रहा जाये। मकान बेच दिया। जो पैसा आया, उसका एक बड़ा हिस्सा कर्ज चुकाने में चला गया। अब वे एक किराये के मकान में आ गये थे। परिस्थितियां जिस तेजी से बदलती और बिगड़ती जा रही थी, उनसे सोमेश अवसाद में आ गया था। मकान बेचने के बाद दुकान में माल तो काफी आ गया था किन्तु ग्राहकी नहीं थी। एक नौकर था, दो छोड़कर चले गये थे। खाली बैठे-बैठे सोमेश के सामने यह विचार उभर कर खड़े हो जाते कि उसने जो गलत व्यवहार अपने माता-पिता तथा बहिन के साथ किया था, उन्हें मरने पर मजबूर कर दिया था, यह सब उसी का परिणाम था, वह महसूस करने लगा था कि अब वह स्वयं भी बचेगा नहीं। उसके भीतर से भी आवाज उठने लगी थी कि वह जल्दी ही मरने वाला है और जल्दी ही ऐसा हो भी गया।

एक दिन शाम के समय बाजार में काफी भीड़ थी लेकिन उसकी दुकान में कोई ग्राहक नहीं था। नौकर किसी काम से गया था, तभी अचानक उसके दायीं तरफ लगे बिजली के बोर्ड में एक धमाका हुआ और काफी सारे अंगारे निकल कर दुकान में फैल गये जिनसे तुरन्त ही आग भड़क उठी। वह इससे घबरा गया और तुरन्त उठ कर जोर-जोर से 'आग-आग' चिल्लाने लगा। वह भागकर दुकान से बाहर निकल जाना चाहता था, इसलिये जब वह बाहर की तरफ चलने लगा तभी किसी अदृश्य शक्ति ने उसे पीछे धक्का मार दिया। उसे धक्का लगने का आभास हुआ था किन्तु धक्का मारने वाला दिखाई नहीं दिया। आग का धुआं तथा सोमेश की चिल्लाहट सुनकर आस-पास के लोग वहाँ जमा हो गये थे। फायर स्टेशन को अग्निकाण्ड की सूचना दे दी थी। दुकान के बाहर खड़े लोग चिल्ला रहे थे। वे देख रहे थे कि सोमेश वहाँ खड़ा छटपटा रहा है लेकिन बाहर नहीं निकल रहा था। वे चिल्लाये 'बाहर आ जाओ-बाहर आ जाओ।' सोमेश दर्द भरी आवाज में बोला, 'ये मुझे छोड़ नहीं रहा है, मुझे पकड़ रखा है, ये मुझे मार डालेगा,

मुझे बचा लो।' लोगों ने उसकी आवाज सुनी लेकिन उन्हें अन्दर कोई दिखाई नहीं दे रहा था। तभी लपटों ने सोमेश को अपने में लपेट लिया। वह दर्द और भय से चीख रहा था, उसका शरीर जलने लगा था और कुछ पल बाद सब शांत हो गया। वह मर गया था। तभी आग बुझाने वाली गाड़ी आयी। आग पर पानी डाला गया किन्तु तब तक सब कुछ जलकर राख हो गया था। सोमेश का शव अधजली अवस्था में मिला। शव की हालत इतनी वीभत्स थी कि उसे देखा भी नहीं जा रहा था। वहाँ खड़े लोग आश्चर्य में थे कि ऐसी कौन सी शक्ति थी जो दिखाई नहीं दे रही थी लेकिन उसने सोमेश को जकड़ रखा था। जो लोग सोमेश को जानते थे, उसके व्यवहार को जानते थे, उनका मानना था कि सोमेश के पिता की छाया ने ही यह सब किया है। इस घटना से निशा पर बुरा असर हुआ। उसके माता-पिता ने उसे सहारा देने से इन्कार कर दिया। बाद में वह पास के मंदिर के बाहर बैठी भीख मांगते दिखाई देने लगी थी। मकान मालिक ने उससे मकान खाली करवा लिया था। कुछ समय बाद उसका भी पता नहीं चला कि एकाएक कहां चली गई।

इस घटना के बारे में मैंने विस्तार से उल्लेख इसलिये किया है ताकि इसका संदेश सभी लोग ठीक से समझ सकें। जो लोग समझते हैं कि पितर कुछ नहीं होते, पितरदोष कुछ नहीं होता, उनकी मानसिकता भी इससे अवश्य बदलेगी और बदलनी भी चाहिये। अगर कोई व्यक्ति सोचता है कि अपनी जन्मपत्रिका के आधार पर ज्योतिषी द्वारा बताये गये उपायों का प्रयोग करके पितृदोष से मुक्त हो जायेगा, फिर चाहे वह अपने माता-पिता अथवा बहिन आदि के साथ कैसा भी अमानवीय व्यवहार करता रहे, तो यह सम्भव नहीं है। अक्सर देखने में आता है कि विवाह के बाद बेटा अपनी पत्नी, बच्चों में ही इतना व्यस्त हो जाता है कि अपने माता-पिता अथवा भाई-बहिनों, विशेष रूप से बहिनों के बारे में कुछ सोचता नहीं है, उनके साथ अपेक्षित व्यवहार नहीं करता है, उनके दु:ख से उसे पीड़ा नहीं होती है, वे अवश्य ही पितृदोष के भागी होंगे, पितृदोष की पीड़ा को भोगेंगे फिर चाहे उनकी जन्मपत्रिका में पितृदोष का उल्लेख हो चाहे न हो, चाहे ऐसे लोग पीड़ा मुक्ति के कितने भी उपाय करते रहें, उनसे उन्हें किसी भी प्रकार का लाभ मिलने वाला नहीं है।

विशेष- पगड़ी की रस्म का प्रचलन आज नहीं आज से काफी समय पूर्व ही होने लगा था। किसी व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् पगड़ी का सबसे बड़ा आयोजन हुआ करता था। मृत्युभोज भी परोक्ष रूप से इसके साथ जुड़ता चला गया और फिर बाद में इसे परम्परा के रूप में स्वीकार कर लिया गया। पगड़ी की रस्म तब से प्रारम्भ हुई जब अधिकांश लोग गाँवों में बसते थे। तब आम व्यक्ति की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं हुआ करती थी। जीवन की सभी प्रकार की आवश्यकतायें कृषि पर निर्भर थी और कृषि अर्थात् खेती वर्षा पर आश्रित रहती थी। वर्षा अधिक हो अथवा कम हो, आम

व्यक्ति की स्थिति पर कोई अन्तर नहीं आता था। वर्षा कम होने पर जीवन चलाने के लिये सूदखोर महाजनों से सूद पर पैसा लिया जाता, जब वर्षा अच्छी होती, खेती अच्छी होती तो सब कुछ महाजन अपने सूद के रूप में समेट कर चला जाता था। आम व्यक्ति की झोली खाली ही बनी रहती थी। महाजन का उधार सिर पर पहले की तरह बना रहता। इस प्रकार की स्थितियों में व्यक्ति जीवन में कभी भी महाजन की उधार तथा सूद से मुक्त नहीं हो पाता था।

जब किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती तब समस्त क्रियाकर्म की रस्में करने के बाद पगड़ी की रस्म का आयोजन किया जाता था। इसमें आस-पास के गाँवों के अनेक व्यक्ति सम्मिलित होते थे। परिवार तथा गाँवों के लोगों के बीच एक विशिष्ट व्यक्ति द्वारा यह घोषणा की जाती थी कि अब मृतक के परिवार को अमुक व्यक्ति को पगड़ी पहनाई जा रही है। आज से यही परिवार का मुखिया माना जायेगा, परिवार की सभी जिम्मेदारियों को यही पूरा करेगा। महाजन से अथवा अन्य किसी व्यक्ति से लिये गये कर्ज को सूद सहित यही व्यक्ति चुकता करेगा। भविष्य में कभी भी कोई जिम्मेदारी वाला कार्य होगा तो उसमें भी इसी व्यक्ति को आगे आना होगा। इसके बाद उस व्यक्ति को पगड़ी पहनाई जाती थी। इसी के साथ वह परिवार का मुखिया तथा सभी प्रकार के कर्ज एवं सूद चुकाने का जिम्मेदार बन जाता था। यह घोषणा गाँवों के अनेक लोगों के सामने की जाती थी, इसलिये वे इसके साक्षी बन जाते थे। चूंकि इस आयोजन में शामिल होने के लिये दूरदूर के गाँवों से लोग आते थे, इसलिये पगड़ी की रस्म के साथ उनके भोजन की व्यवस्था करनी आवश्यक हो जाती थी। बाद में इसी भोजन ने मृत्युभोज का रूप ले लिया। मृतक की अन्त्येष्टि तथा क्रियाकर्म में सम्बन्धित व्यक्ति का काफी धन खर्च हो जाता था, इसलिये भोजन की व्यवस्था के लिये उसे महाजन से कर्ज लेना पड़ता था। इस प्रकार से उस परिवार के नये मुखिया को प्रारम्भ से ही कर्ज तथा सूद से जकड़ दिया जाता था। इस विषय पर शोध करने वालों का विचार है कि सूदखोर महाजनों द्वारा पगड़ी की रस्म को बढ़ावा दिया गया ताकि मृतक के साथ उसका दिया गया कर्ज डूब नहीं जाये।

इसके बाद काफी समय निकल गया, सभी क्षेत्रों में बहुत परिवर्तन आये लेकिन पगड़ी की रस्म यथावत चलती आ रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी इसका बहुत महत्त्व है किन्तु शहरी क्षेत्रों में इसे केवल प्रतीकात्मक रूप से ही सम्पन्न किया जाता है, लेकिन यह प्रतीक इस बात का तो है ही कि पगड़ी पहनने वाले को ही परिवार की सभी जिम्मेदारियों का वहन करना होगा। यह देखना दिलचस्प होता है कि कौन कितनी जिम्मेदारियों का निर्वाह कर पाता है और यह जानना भी दिलचस्प है कि इसी के साथ पितृदोषों का भी परोक्ष रूप से गहरा सम्बन्ध है।

पितर भविष्य भी बताते हैं

पितरों का महत्त्व भारतीय संस्कृति में प्राचीनकाल से ही है। पितरों का पूजन और अर्चन करने के साथ ही अनेक स्थानों पर पितरों के निमित्त मंदिर और स्थान भी बनवाये जाते हैं। पितरों से तात्पर्य केवल किसी परिजन से न होकर उन मध्यम श्रेणी वाले पितरों से भी है, जो अपने नगर अथवा समाज के कल्याण के लिये जाने जाते हैं। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में क्षेत्रीय देवताओं के रूप में इन दिव्यात्माओं की पूजा होती है, उन्हें भी पितरों के रूप में ही पूजा जाता है। ये दिव्यात्मायें अलग-अलग क्षेत्रों में पृथक्-पृथक् नामों से जानी जाती हैं। किसी निश्चित तिथि पर इनके स्थान पर मेलों का आयोजन होता है और दूर-दूर से लोग आकर इनसे आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। जिस प्रकार मुस्लिम धर्म में सूफी संतों की मजारों पर उर्स का आयोजन होता है, उसी प्रकार उन दिव्यात्माओं के स्मरण में मेले लगते हैं। सामान्यत: उनके स्थानों पर पूजन-अर्चन का कार्य वर्ष पर्यन्त चलता है। इस हेतु वहाँ पुजारी भी नियुक्त किये जाते हैं। ये दिव्यात्मायें पितर ही होते हैं, जो पितृलोक में जाने के कारण देवताओं से भी अधिक वन्दनीय हो जाती हैं। इनमें से विभिन्न दिव्यात्मायें किसी निश्चित दिन अपने स्थान पर प्रकट होती हैं। यह किसी के शरीर में प्रवेश कर अपने अस्तित्व को होने का आभास कराती हैं। जैसे- राजस्थान में तेजाजी महाराज अत्यधिक प्रसिद्ध दिव्यात्मा हैं, जिनके स्थान विभिन्न प्रदेशों, शहरों, कस्बों एवं गांवों में बने हुए हैं, जिनको स्थानीय भाषा में **तेजाजी का थाण** कहते हैं। तेजाजी महाराज ने समाज कल्याण एवं गायों की रक्षा के लिये अपना जीवन न्योछावर कर दिया था। उनकी याद में भाद्रपद माह में आने वाली शुक्लपक्ष की दशमी के दिन तेजाजी के थाण अथवा स्थान पर मेले का आयोजन होता है, जिसमें किसी व्यक्ति के शरीर में आकर तेजाजी अपने होने का प्रमाण देते हैं। तेजाजी की आत्मा उस व्यक्ति में प्रकट होने के पश्चात् उसके समस्त क्रियाकलाप परिवर्तित हो जाते हैं। वाणी लड़खड़ा जाती है, क्योंकि मान्यता है कि तेजाजी को सर्प ने अपनी जीभ पर सर्पदंश दिया था, क्योंकि वे उस सर्प से वचनबद्ध थे। जब व्यक्ति में तेजाजी की आत्मा आती है, तो उस दौरान उस स्थान पर आये हुए भक्तगण उनसे यह आशा करते हैं कि वे उनके भविष्य के बारे में बतायें और दु:ख एवं पीड़ायें दूर करें। ऐसी स्थिति में जिस व्यक्ति के शरीर में तेजाजी की आत्मा आती है, वह अपने भक्तगणों को भविष्यवाणी करते हुए विभिन्न प्रकार के उपाय बताता है, जिससे उनके दु:ख एवं पीड़ायें समाप्त होती हैं। उन भक्तगणों में यह विश्वास होता है कि तेजाजी उनके कष्टों को दूर कर सकते हैं।

तेजाजी के समान ही राजस्थान में अनेक लौकिक देवता हैं। भारत के विभिन्न

स्थानों पर भी इस प्रकार के लौकिक देवताओं का स्थान है, जहाँ पर किसी निश्चित दिन हजारों की संख्या में भक्तगण आकर उनकी पूजा-उपासना करते हैं। व्यक्तियों की यह लालसा रहती है कि उन दिव्य पितरों ने जिस प्रकार समाज की रक्षा के लिये स्वयं को न्योछावर कर दिया, उसी प्रकार वे उनके दुःख एवं पीड़ाओं को दूर करें।

अपने आस-पास के क्षेत्र में आपने यह अवश्य सुना होगा कि किसी निश्चित व्यक्ति के शरीर में कोई देवी-देवता आते हैं और आकर लोगों का भविष्य बताते हैं। वास्तव में ऐसे व्यक्तियों के शरीर में कोई देवी-देवता नहीं, वरन् कोई दिव्यात्मा ही आकर भविष्य बताती है और उस व्यक्ति के शरीर के माध्यम से अपनी इच्छापूर्ति करती है। जिस व्यक्ति के शरीर पर इस प्रकार की शक्तियां आती हैं, वह विभिन्न प्रकार के कष्टों से पीड़ित भी हो सकता है। इसका मुख्य कारण यह है कि उन आत्माओं की शक्ति को सहन करने का सामर्थ्य सामान्य व्यक्ति में नहीं होता है। ये उसी व्यक्ति के शरीर का चयन करती हैं, जो अपनी स्वेच्छा से अपने शरीर में बुलाते हैं और विभिन्न माध्यमों से पूजा-अनुष्ठान के द्वारा अपने नियमों का पालन करते हैं। इनसे अपना भविष्य जानने के लिये लोग दूर-दूर से आते हैं और इनकी सेवा के लिये नैवेद्य और अन्य सामग्रियां इन्हें अर्पित करते हैं, हालांकि अनेक लोग यह दावा इसलिये करते हैं कि ताकि उनका भरण-पोषण इस माध्यम से आसानी से हो सके। कुछ लोग इस प्रक्रिया को पूर्ण रूप से अंधविश्वास से जोड़कर देखते हैं। उनका मानना यह है कि विभिन्न देवी-देवताओं को किसी मानव शरीर में आकर अपनी इच्छापूर्ति करने की क्या आवश्यकता है? उन्हें यह तथ्य अवश्य जानना चाहिये कि कुछ आत्मायें ऐसी होती हैं, जो पितृलोक में निवास करती हैं और वह मनुष्य जाति के मध्य आकर अपने होने का अनुभव भी कराती हैं। इन्हें ही लोग देवी-देवताओं से जोड़ लेते हैं, जबकि ये वास्तव में मध्यम श्रेणी के वे पितर होते हैं, जो अपने उच्च कर्मों के कारण पितृलोक को प्राप्त करते हैं।

उक्त के अतिरिक्त किसी परिवार में भी ऐसे पितर होते हैं, जो अपने किसी परिजन के शरीर में आकर अपनी इच्छा पूर्ति करते हैं और लोगों का भविष्य भी बताते हैं। मैं भी एक ऐसे व्यक्ति से मिल चुका हूँ, जिसने यह दावा किया था कि उसके शरीर में उसके पितर आते हैं और वह इस दौरान लोगों को जो भी बताता है, वह बिलकुल सत्य होता है। इसके प्रमाण के लिये उन्होंने कुछ लोगों से भी मुझे मिलवाया, जिन्हें उनके द्वारा जो भी भविष्यवाणी की गई थी, वह अक्षरशः सत्य हुई। उन सज्जन ने मुझे बताया कि वे सरकारी नौकरी में थे और प्रारम्भ में पितरों को नहीं मानते थे। जो भी व्यक्ति इनके बारे में किसी प्रकार का वार्तालाप करता, तो उनको यह लगता कि वे महज अंधविश्वासी होकर इस प्रकार के बातचीत करते हैं। कुछ समय पश्चात् उन्हें अनुभव होने लगा कि अचानक उनके शरीर में कुछ परिवर्तन होने लगे हैं। उस स्थिति में उनका

स्वयं के मस्तिष्क पर नियंत्रण नहीं रह पाता। वे अपने आपको शून्य में महसूस करते किन्तु कुछ क्षण के पश्चात् सब कुछ पूर्ववत् हो जाता। इस घटना को उन्होंने प्रारम्भ में बीमारी से जोड़ा, लेकिन चिकित्सकीय जाँच में सब कुछ अनुकूल आने पर उन्हें यह अनुभव होने लगा कि यह कोई पराशक्ति है, जो उनके शरीर को नियंत्रित करने का प्रयास कर रही है। धीरे-धीरे अपने शरीर पर किसी अन्य आत्मा का प्रभाव होने पर उन्होंने लोगों से जो वार्तालाप किया, उससे यह ज्ञात हो गया कि यह पितरों का ही प्रभाव है। पितर उनके शरीर में आकर अपनी इच्छाओं की पूर्ति करते हैं और अपने परिवार का कल्याण करने के लिये परामर्श देते हैं। धीरे-धीरे यह बात उनके आस-पड़ोस में भी फैलनी लगी और लोग उनसे अपना भविष्य पूछने आने लगे। इस दौरान वे लोगों को जो भी भविष्य बताते, वह बिलकुल सत्य होता। यह क्रम लगभग 30 वर्षों तक चलता रहा। तत्पश्चात् पितरों ने यह इच्छा प्रकट की कि उनका गया जाकर श्राद्ध कर दिया जाये, जिससे उनकी सदा के लिये मुक्ति हो जायेगी और वे कभी भी अपने होने का अस्तित्व प्रकट नहीं करेंगे।

उन सज्जन के द्वारा जब गया जाकर अपने पितरों का श्राद्ध कर दिया गया, तो उसके पश्चात् उनके शरीर में कोई भी पितर नहीं आया और सभी की मुक्ति हो गयी। उन्होंने मुझे यह भी बताया कि अनेक व्यक्तियों के शरीर में पितरों की आत्मा आने पर वे झूमने लगते हैं अथवा अन्य क्रियाकलाप करते हैं, इसका मुख्य कारण पितरों की आत्मा की प्रकृति होती है। अनेक पितरों की आत्मायें किसी विशेष योनि में जाकर अतृप्त रहती हैं और अपने स्वभाववश व्यक्ति को ऐसा करने के लिये मजबूर करती हैं। अनेक आत्मायें मृत्यु के पश्चात् पितृयोनि में रहकर अपने इष्ट की उपासना करती हैं, साथ ही अपने परिवार का कल्याण करने का प्रयास भी करती हैं। ऐसी आत्मायें अपने इष्ट के मंदिर प्रागंण में जाकर निवास करना पसंद करती हैं और श्राद्धकाल में अपने परिजनों से यह अपेक्षा रखती हैं कि वे उन्हें श्राद्धकर्म के द्वारा सन्तुष्ट करें। जब वह अपने परिवार को संकट में देखती हैं, तो उन्हें अपने होने की अनुभूति करवाती हैं और मार्गदर्शन भी देती हैं।

उक्त तीनों उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि पितरों की आत्मायें विभिन्न माध्यम से मानव शरीर में आकर लोगों का भविष्य बताती हैं, जो बिलकुल सत्य होता है। यह एक आश्चर्य का विषय है, क्योंकि पितृलोक में जाने के पश्चात् इन आत्माओं को ऐसी कौनसी शक्ति प्राप्त हो जाती है, जिससे ये व्यक्ति के आने वाले भविष्य को देख सकती हैं? यह विषय अनुसंधान का है। इस पर यदि गहनता से कार्य किया जाये, तो मृत्यु के पश्चात् के जीवन के बारे में बहुत कुछ जाना जा सकता है।

विभिन्न बाधाओं से बचाते हैं- पितर

पितृदोष के रूप में हम हमेशा समझते हैं कि पितर हमें विभिन्न प्रकार से कष्ट पहुँचाते हैं, लेकिन यह भी ज्ञातव्य तथ्य है कि घर के पितर हमें विभिन्न प्रकार की बाधाओं से भी बचाते हैं। यह बाधायें अनेक प्रकार की हो सकती हैं, जिनमें प्रेतबाधा, स्वास्थ्य सम्बन्धी बाधा, आर्थिक बाधा, अभिचारकर्म बाधा इत्यादि सम्मिलित हैं। विभिन्न लोग यह दावा करते हैं कि उनके पितरों ने आकर उन्हें निश्चित बाधा के प्रति आगाह किया और उनसे उन्हें बहुत अधिक लाभ हुआ।

प्राचीनकाल से ही तंत्र क्रिया के द्वारा एक-दूसरे को नुकसान पहुँचाने के लिये अभिचार कर्म किये जाते रहे हैं। घर के पितर यदि सन्तुष्ट हों, तो वे अपने परिजनों को इस प्रकार के अभिचार कर्म से भी बचाने का पूर्ण प्रयास करते हैं। जब पितरों के द्वारा अपने परिजन को किसी आने वाली समस्या के लिये आगाह किया जाता है, तो वह स्वप्न में आकर, किसी परिजन के शरीर में आकर अथवा अन्य माध्यम से उस समस्या को बताने का प्रयास करते हैं। यदि परिजन उनकी बात को समझ जायें, तो वे इस संकट एवं समस्या से बच भी जाते हैं। अपने परिजनों के द्वारा ऐसे कार्य, जो भविष्य में उन्हें नुकसान पहुँचा सकते हैं, उनके लिये भी पितरों के द्वारा पहले से चेतावनी दे दी जाती है। यदि इस चेतावनी का पालन घर वाले नहीं करें, तो उन्हें निश्चित रूप से नुकसान हो सकता है। अनेक पितर ऐसे होते हैं, जो अपने वंशजों के द्वारा किये जाने वाले गलत कार्यों का पूर्ण विरोध करते हैं, जैसे- शराब पीना, अनैतिक कार्य करना अथवा कुसंगति में पड़कर गलत रास्ते पर चलने पर पितरों के द्वारा उस परिजन को किसी न किसी प्रकार से चेतावनी देने का प्रयास किया जाता है।

पितर केवल सामान्य समस्याओं से ही नहीं बचाते हैं, वरन् प्रेतबाधा जैसी गम्भीर समस्याओं का निवारण भी उनके द्वारा किया जाता है। जिस घर में पितर सन्तुष्ट होकर निवास करते हैं, वहाँ कदापि किसी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न नहीं होती। यदि हो भी जाये, तो वे उसे अपनी शक्ति के द्वारा नष्ट कर दिया करते हैं, लेकिन पितरों की शक्ति आपके द्वारा किया गया उनके निमित्त पितृकर्म ही होता है। आपके पितृकर्म से ही आपके पितर बलिष्ठ होते हैं और बलिष्ठ पितरों की कृपा से घर में प्रेतबाधा जैसी समस्या उत्पन्न नहीं हो सकती। यदि घर में कोई पराशक्ति जबरदस्ती आने का प्रयास करती है, तो वे उसे दूर कर देते हैं। उस शक्ति का कोई भी नकारात्मक असर अपने परिजनों पर नहीं आने देते हैं। ऐसे अनेक उदाहरण देखे गये हैं, जिनमें पितरों ने अपने परिजनों को आने वाली समस्याओं के बारे में आगाह किया हो अथवा किसी भयंकर संकट से

बचाया हो।

एक ऐसा ही उदाहरण मुझे सुनने को मिला था। रघुराज अपने पितरों को मानते थे और नियमित रूप से अपने पितरों के निमित्त सभी कार्यों को सम्पन्न किया करते थे। उनकी नौकरी में किसी प्रकार का संकट होने का अंदेशा जब उनके पितरों को हुआ, तो उन्होंने रघुराज को स्वप्न में आकर इस बात को बताया और आगाह करते हुए सावधानी से कार्य करने को कहा। रघुराज अपने पितरों के द्वारा बताये गये संदेश को पूरी तरह से समझ नहीं पाये थे, परन्तु उन्हें यह तो स्पष्ट हो गया था कि वे कुछ ऐसा कहना चाहते थे, जो उनकी नौकरी से सम्बन्धित था। इसलिये वे पहले से ही सावधान हो गये। कुछ दिनों के पश्चात् ही उनके सहकर्मी रिश्वत के मामले में पकड़े गये। उस सहकर्मी ने रघुराज से वह पैसे लेने को कहा था, लेकिन उन्होंने सतर्कता बरतते हुए ऐसा करने से इन्कार कर दिया। जब उनको यह ज्ञात हुआ कि वह रिश्वत का धन था, तो उन्होंने अपने पितरों को धन्यवाद दिया और भविष्य में भी सहायता करते रहने की प्रार्थना की।

एक अन्य उदाहरण अभिचारकर्म से सम्बन्धित है। श्रीराम ने नई कार खरीदी। किसी व्यक्ति ने ईर्ष्यावश उनकी कार पर ऐसा अभिचार कर्म करवा दिया जिससे उनकी कार दुर्घटना हो सकती थी और इस दुर्घटना में जन-धन की हानि हो सकती थी। पड़ोसी ने आकर उनकी कार पर कुछ अभिमंत्रित लौंग रख दिये थे। ऐसा किसनें किया था, इसकी जानकारी तो नहीं थी, लेकिन उन्हें शक अवश्य था। उन्होंने अपने पितरों से यह प्रार्थना की कि उन्हें इस संकट से बचायें और उस व्यक्ति का चेहरा भी अवश्य दिखायें जिसने यह अभिचार कर्म किया है। तीन-चार दिन में ही उनके पड़ोस में रहने वाले रिश्तेदार का वाहन दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस घटना में उन्हें गम्भीर चोटें आयी और वाहन बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। इस दुर्घटना के दो ही दिन पश्चात् श्रीराम उनसे मिलने के लिये अस्पताल गये, तो उस दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति ने उनसे यह कहते हुए क्षमा मांगी कि उन्होंने ही उनकी कार पर अभिचार कर्म किया था, किन्तु इसका फल उल्टा मिल गया। उन सज्जन ने इस घटना को जानकर अपने पितरों को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया, अन्यथा उनकी स्थिति उस व्यक्ति जैसी हो सकती थी।

पितर केवल बुरी दुर्घटनाओं से ही नहीं बचाते हैं, वरन् विभिन्न प्रकार का लाभ देने का प्रयास भी करते हैं। अनेक उदाहरणों में यह देखा गया है कि पितरों ने अपने परिजनों की भौतिक उन्नति के मार्ग खोले हैं। पुराणों में भी यह उल्लेख मिलता है कि पितृलोक में निवास करने वाले पितर अपने वंशजों का कल्याण करते हैं और उनकी भौतिक इच्छायें पूर्ण करते हैं। कोई देवी-देवता प्रसन्न होकर आपकी भौतिक इच्छा पूर्ण करें अथवा नहीं, किन्तु पितर यदि प्रसन्न हो जायें, तो उनसे जो भी मांगना चाहे, वे उसकी पूर्ति अवश्य करते हैं। बिना मांगे वे अपने परिजनों की प्रत्येक वह इच्छापूर्ति करने का प्रयास करते हैं, जो उनके सामर्थ्य में हो।

विश्व स्तर पर पितर आत्माओं का प्रभाव

हमारे यहाँ सभी जातियों एवं सम्प्रदायों में अपने-अपने पितरों अथवा कुलदेवता आदि के प्रति बहुत विश्वास एवं श्रद्धा देखी जाती है। अनेक सम्प्रदायों के पितरों अथवा देवताओं के विशेष स्थान भी बने होते हैं। इन सम्प्रदायों के लोगों का विश्वास होता है कि इन स्थानों पर जाकर अगर अपने बच्चों का मत्था टिकाया (सिर झुकाया) जाये तो उन पर पितरों एवं कुलदेवताओं की भरपूर कृपा बनी रहती है। अनेक सम्प्रदायों के लोग इन स्थानों पर वर्ष में एक बार एकत्र होकर अपने पितरों, देवताओं की पूजा आदि भी करते हैं। इस अवसर को **मेला** के नाम से जाना-समझा जाता है अर्थात् लोग उन स्थानों पर किसी दिन विशेष में एकत्र होकर मेले जैसा वातावरण बना देते हैं और वहाँ पर वास्तव में मेले जैसा आनन्द भी आता है। पहले इन बातों पर विश्वास बहुत अधिक किया जाता था लेकिन बाद के वर्षों में विश्वास में कमी आने लगी है। आज का युवा वर्ग इन पर विश्वास करना नहीं चाहता। वह समझता है कि पितर आदि सब बेकार की बातें हैं, इन पर केवल अन्धविश्वास के आधार पर ही विश्वास किया जाता है अन्यथा इन सबका कोई अस्तित्व नहीं है। ऐसे लोग अधिकांशत: पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित होते हैं। वे समझते हैं कि पश्चिमी लोग इन बातों पर बिलकुल विश्वास नहीं करते हैं। यह सही नहीं है। पश्चिमी देशों में भी बहुत समय पहले से ही इन बातों पर विश्वास किया जाता रहा है। वहाँ पर इन पर अनेक शोध हुए हैं, लोगों ने खोजें की हैं और इस विषय से सम्बन्धित अपने अनुभवों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित भी किया है। इस अध्याय में मैं इसी विषय पर बात करने का प्रयास कर रहा हूँ। यहाँ इस बात को पहले स्पष्ट कर देना उचित रहेगा कि जैसे हमारे यहाँ पर अच्छी आत्मायें, जिन्हें हम पितर के नाम से जानते हैं, तथा दूसरी शैतानी स्वभाव की आत्मायें होती हैं जिसे आमतौर पर प्रेतात्मायें कहा जाता है, वैसे ही पश्चिमी देशों में भी इसी प्रकार की अच्छी एवं बुरी आत्माओं का विवरण प्राप्त होता है। चूंकि यह पुस्तक पितरों से सम्बन्धित है जिन्हें हम दिव्य आत्मायें अथवा अच्छी आत्मायें भी मानते हैं, इसलिये यहाँ पर हम जो भी चर्चा करेंगे, वह सब अच्छी आत्माओं के संदर्भ में ही करेंगे।

पश्चिमी देशों में प्राचीनकाल से मान्यता रही है कि अच्छी आत्मायें हमेशा ही दूसरों का भला एवं परोपकार करती हैं। यह आत्मायें दिव्यता को प्राप्त होती हैं, इनके पास दिव्य शक्ति होती है जिसके प्रभाव से वे कभी-कभी शरीर धारण करके भी लोगों का भला करती हैं। बाद में जब इन घटनाओं का पता चलता है तो उन पर एकाएक विश्वास नहीं किया जा सकता लेकिन यह घटनायें वास्तविक रूप से घटित होती हैं। लंदन के

पादरी डॉ. जॉन मेसननील ने अपने एक संस्मरण में इसी प्रकार की एक घटना का उल्लेख किया है। उन्होंने बताया कि एक महिला अपने दो बच्चों को छोड़कर मर गई। बच्चों की उम्र 8-10 वर्ष रही होगी। बच्चों को उसके पिता ने ठीक प्रकार से सम्भाल लिया था। कुछ दिनों के बाद मृत महिला का पति अपने दोनों बच्चों को घुमाने के लिये ले गया। थोड़ी देर बाद वह अपने मित्र के घर चला गया। दोनों मिलकर बहुत खुश हुए और बातें करने लगे। बातों में वे इतना खो गये कि उन्हें बच्चों के बारे में ध्यान ही नहीं रहा। बच्चे कुछ समय तक अपने पिता के पास खड़े रहे, फिर वहाँ से हट कर अलग जाकर खेलने लगे। खेलते-खेलते वे एक ऐसे कमरे में आ गये, जिसमें नीचे की ओर सीढ़ियां जा रही थी। नीचे बिलकुल अंधकार था, कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। दोनों बच्चे बिना डर के कमरे में आकर सीढ़ियां उतरने लगे। वे अभी तीन-चार सीढ़ियां ही उतरे होंगे कि उन्हें नीचे से ऊपर की तरफ आती हुई अपनी माँ दिखाई दी। माँ ने बच्चों को प्यार से समझाया कि बच्चों, यहाँ नहीं, दूसरी जगह जाकर खेलो। यह जगह ठीक नहीं है। कहने के बाद माँ वापिस नीचे चली गई और बच्चे ऊपर आकर दूसरी तरफ खेलने लगे। तभी मित्र को ध्यान आया कि बच्चे कहाँ हैं? वह बोला कि देखो, कहीं वे तहखाने की तरफ तो नहीं चले गये। वे तहखाने की तरफ भागे। वहीं पास में बच्चे खेलते मिल गये। मित्र ने उन्हें देख शांति की सांस ली। फिर बच्चों से बोला कि यहाँ नहीं, बाहर जाकर खेलो, यह जगह ठीक नहीं है। उनमें से एक बच्चा बोला, हमें मालूम है। हम वहाँ सीढ़ियों से नीचे जा रहे थे, तभी माँ ने आकर बताया कि यह जगह ठीक नहीं है, फिर वह वापिस नीचे चली गई। बच्चों के पिता ने यह सुना तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ। आखिर उसकी मृत पत्नी की आत्मा सशरीर वहाँ क्यों आई थी? मित्र ने बताया कि कमरे से सीढ़ियां तहखाने को जाती हैं, उसमें एक कुआ है। अगर बच्चे नीचे जाते तो सम्भव है कि वे कुए में गिर कर जान गंवा बैठते। यह आश्चर्य की बात थी कि बच्चों की माँ को कैसे पता चला कि बच्चे यहाँ आ रहे हैं, गिरने से उनका अहित हो सकता है और फिर स्वयं नीचे कहाँ चली गई? सम्भवत: इन प्रश्नों का उत्तर न मिल पाये किन्तु महिला की दिव्य आत्मा ने बच्चों के प्राण अवश्य बचा दिये थे। मरने के बाद भी बच्चों के प्रति उसकी आसक्ति दिखाई देती है।

दिव्य पितर आत्माओं से सम्बन्धित एक घटना लॉर्ड डफरिन के साथ घटित हुई, वे अंग्रेजों के राज के समय भारत में वायसराय रह चुके हैं। सन् 1891 में वे पेरिस में राजदूत नियुक्त हुए। उनके एक मित्र ने आयरलैण्ड में एक पार्टी दी। उन्हें विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया था। देर रात तक पार्टी चली। पार्टी समाप्त होने पर एक अत्यन्त भव्य कमरे में उनके सोने की व्यवस्था कर दी गई। उन्होंने रोशनी बंद की, खिड़कियों पर भारी परदे पड़े हुए थे। वे लेट गये और आँखें बंद कर ली। अभी उन्हें लेटे हुए

अधिक समय नहीं हुआ था कि बंद आँखों में भी उन्हें रोशनी का अनुभव हुआ। आँखें खोली तो देखा कि वास्तव में कमरा रोशनी से भरा हुआ था। रोशनी कहाँ से आ रही है, इसका पता नहीं चल रहा था। दरवाजा बंद थां, खिड़कियों पर परदे पड़े हुए थे, बल्ब बंद थे, फिर रोशनी कहाँ से आ रही थी, इसका पता लगाने के लिये वे उठे। खिड़की के परदे हटा कर देखा। खिड़की से कुछ मीटर की दूरी पर लॉन था। वहाँ एक भारी शरीर का व्यक्ति खड़ा दिखाई दिया, जिसने अपने कन्धों पर कुछ लाद रखा था। लॉर्ड डफरिन ने सोचा कि शायद वह मुर्दा चोर होगा क्योंकि उस समय वैज्ञानिक परीक्षणों एवं प्रयोगों के लिये सभी अस्पतालों में मुर्दों की बहुत मांग रहती थी, इसके लिये मुँह मांगे पैसे दिये जाते थे। इसलिये कुछ लोग मुर्दाघरों से मौका पाते ही मुर्दे चुरा लेते थे। लॉर्ड डफरिन ने अपना गाउन शरीर पर डाला, अपनी पिस्टल को हाथ में लेकर वे लॉन में आ गये। उस व्यक्ति को ललकारते हुए बोले, कौन हो... यहाँ क्या कर रहे हो? वह व्यक्ति आवाज सुन कर खामोशी के साथ लॉर्ड डफरिन की ओर घूम गया। वे कुछ आगे बढ़े, उस व्यक्ति का चेहरा देखा तो सिहर उठे। वह एक भयानक चेहरे वाला व्यक्ति था। उसके कन्धों पर शव को रखने वाला भारी भरकम ताबूत था। उन्होंने उसकी तरफ पिस्टल तान दी, तभी एकाएक वह व्यक्ति गायब हो गया। उसके कन्धों पर रखा हुआ ताबूत भी वहाँ नहीं था। लॉर्ड डफरिन ने देखा कि उसके पांवों के निशान तक वहाँ नहीं बने थे। कुछ देर तक वे वहीं खड़े रहे। इस बारे में किसी को कुछ नहीं बताया। फिर वापिस कमरे में आये और सो गये। दूसरे दिन वापिस चले गये।

कुछ वर्ष व्यतीत हो गये, तब भी लॉर्ड डफरिन पेरिस में ही राजदूत थे। एक दिन सभी राजनैतिक व्यक्तियों को भोज दिया गया। इसकी व्यवस्था होटल ग्रांट की सबसे ऊपर वाली मंजिल पर की गई थी। मेहमानों को ऊपर ले जाने के लिये लिफ्ट की व्यवस्था थी। नीचे हॉल में सब मेहमान एकत्रित होने लगे थे। फिर सबको भोज के लिये चलने को कहा गया। लिफ्ट तैयार थी। लॉर्ड डफरिन सबसे वरिष्ठ थे, इसलिये उन्हें सम्मान देने के लिये सबसे पहले लिफ्ट में सवार होने का अवसर दिया गया। लॉर्ड डफरिन जैसे ही लिफ्ट की ओर बढ़े, उन्हें लिफ्ट के पास वही भयानक चेहरे वाली आकृति दिखाई दी जिसे वे बहुत पहले देख चुके थे। सब कुछ तत्काल स्मरण हो गया। उस आकृति ने भी उन्हें देखा और धीरे से इन्कार में सिर हिला दिया। लॉर्ड डफरिन ने ऊपर चलने से इन्कार कर दिया और होटल के मैनेजर से मिलने चल दिये। उनके मना करने पर वहाँ उपस्थित अन्य आमन्त्रित लिफ्ट में सवार हो गये। लिफ्ट ऊपर की ओर चल दी। लॉर्ड डफरिन ने मैनेजर से पूछा कि लिफ्ट चलाने वाला इतना भयानक चेहरे वाला व्यक्ति कौन है? मैनेजर ने इन्कार किया कि ऐसा कोई व्यक्ति लिफ्टमैन नहीं था। तभी वहाँ एक भयानक धमाके की आवाज सुनाई दी, पूरा होटल मानो हिल गया हो। पता चला कि लिफ्ट को ऊपर खींचने वाली केबल (स्टील के पतले तारों से बनी मोटी

रस्सी) टूट गई थी और ऊपर जाती लिफ्ट जबरदस्त धमाके के साथ नीचे गिर गई थी। उसमें सवार सभी मेहमान मारे गये थे। इस बारे में लॉर्ड डफरिन ने बाद में अपने अनुभव बताये कि वह भयानक चेहरे वाली आकृति एक दिव्य आत्मा ही रही होगी अथवा उसके परिवार के किसी सदस्य की आत्मा हो सकती थी जो केवल उसे बचाने के लिये ही वहाँ आई थी। जब वे लिफ्ट में सवार होने के लिये वहाँ आये, तब वह भयानक आकृति केवल उन्हीं को ही दिखाई दी थी, अन्य किसी ने उसे नहीं देखा था। लॉर्ड डफरिन ने कई बार कहा कि उसका चेहरा अवश्य ही भयानक, डरावना था लेकिन शायद उसके दिल में उनके लिये विशेष भाव था, तभी तो उन्हें मौत के मुँह में जाने से रोक दिया था।

इस प्रकार की दिव्य आत्मायें भविष्य में किसी अनिष्ट की सूचनायें तो अवश्य देती हैं किन्तु बचाने का कार्य नहीं करती हैं। बचने का कार्य स्वयं को ही करना होता है। लॉर्ड डफ़रिन अगर उस भयानक आकृति के इन्कार किये जाने के संकेत की अनदेखी करके लिफ्ट में सवार हो जाते तो उन्हें मरने से कौन रोक सकता था? इसी प्रकार की एक घटना फ्रांस के सम्राट हेनरी चतुर्थ के साथ घटित हुई लेकिन उन्होंने दिव्य प्रेतात्मा के संकेत की अनदेखी की और अन्ततः मारे गये।

एक दिन संध्या समय सम्राट हेनरी चतुर्थ अपने उद्यान में चहलकदमी कर रहे थे। संध्या का हल्का अंधकार घिरने लगा था। मौसम अच्छा लग रहा था, इसलिये वे वहीं चक्कर काटते रहे। कुछ समय बाद उन्हें ऐसा आभास हुआ कि जैसे कोई छाया उनके आस-पास ही चक्कर काट रही है लेकिन पूरी तरह से दिखाई नहीं दे रही थी। हेनरी कुछ झिझके, फिर पूछा, कौन हो...? आवाज के बाद छाया की हल्की सी आकृति दिखाई दी। वह कह रही थी कि मैं तुम्हारा भला चाहने वाली एक प्रेतात्मा हूँ। यहाँ मैं यह बताने आई हूँ कि तुम्हारी हत्या का षड्यंत्र रचा जा रहा है। शीघ्र ही तुम्हारी हत्या कर दी जायेगी, इसलिये सावधान हो जाओ। सम्राट ने कहा कि जब तुम्हें इस बात का पता है कि मेरी हत्या का षड्यंत्र रचा जा रहा है तो क्या तुम उन्हें समाप्त नहीं कर सकते? आत्मा ने कहा कि हमारी अपनी सीमायें होती हैं, इसलिये हम किसी को मारने जैसा कोई काम नहीं कर सकते। शरीर के मर जाने पर भी इच्छा शरीर की उत्तेजना बनी रहती है, इसी कारण से हमारा लगाव अपने परिजनों के साथ होता है। हम उन्हें भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं के बारे में तो बता सकते हैं, इसके आगे कुछ नहीं कर सकते। इतना कह कर वह छाया अदृश्य हो गई। सम्राट कुछ देर तक वहीं खड़ा इस बारे में विचार करता रहा कि उस जैसे शक्तिशाली व्यक्ति की हत्या करने का साहस कौन और कैसे कर सकता है? फिर वह अपने कक्ष में आकर आराम करने लगा।

दूसरे दिन दरबार लगा। सम्राट अपने सिंहासन पर बैठ गया, फिर कल की घटना के बारे में बताया कि उन्हें एक दिव्यात्मा ने सचेत किया है कि कोई मेरी हत्या का

षड्यंत्र कर रहा है। सम्राट की बात सुन कर वहाँ उपस्थित सभी लोग जोर से हंस पड़े और बोले कि सम्राट, किसमें इतना साहस है जो आपकी हत्या कर सके? अवश्य ही आपने जागते हुए कोई सपना देखा होगा। बात समाप्त हो गई लेकिन कुछ समय बाद ही दिव्यात्मा द्वारा दी गई चेतावनी सत्य हो गई, उनकी सचमुच हत्या कर दी गई।

अशरीरी आत्माओं का अस्तित्व तथा मनुष्यों के साथ उनका सहयोग एक अविश्वसनीय वास्तविकता है। ऐसी दिव्य आत्मायें किसी को डराने का काम नहीं करती हैं अपितु भविष्य में आने वाली विपत्तियों के बारे में केवल सूचनायें प्रेषित करती हैं। यह अलग बात है कि इन दिव्यात्माओं के बताये मार्ग पर कोई चलता है अथवा नहीं? इसके लिये व्यक्ति को प्रेरित करने का काम इन आत्माओं द्वारा नहीं किया जाता है।

महान सन्त सुकरात के बारे में कहा जाता है कि वे प्रारम्भ में धर्म-कर्म तथा अदृश्य शक्तियों आदि के बारे में विश्वास नहीं करते थे। एक बार उन्हें एक दिव्य प्रेत मिला। उस प्रेत ने सुकरात को धर्म तथा भगवान की तरफ ध्यान लगाने की प्रेरणा दी। इससे उसका ध्यान इस तरफ लगने लगा। धीरे-धीरे सुकरात में ऐसी शक्ति एवं क्षमता विकसित होने लगी जिसके द्वारा वह दूसरों की समस्याओं को दूर करने के परामर्श देने लगा, समस्यायें दूर करने के मार्ग बताने लगा। इससे शीघ्र ही उसकी प्रसिद्धि चारों तरफ फैलने लगी। सुकरात के साथी तथा शिष्य इस बात को स्वीकार करते थे कि उनकी सहायता एक दिव्य प्रेत करता है लेकिन सुकरात के अलावा अन्य कोई उसे देख नहीं सकता। बाद में सुकरात ने भी स्वीकार किया कि वह प्रेत उसके भीतर ही रहता है। उसने यह भी बताया कि आप उसे प्रेतात्मा कह सकते हैं, लेकिन उसके लिये वह एक देवता के समान है। वह उसे 'डेमन' के नाम से सम्बोधित करता था। डेमन उनको समय-समय पर उचित मार्गदर्शन देता था। इससे सम्बन्ध रखती अनेक घटनाओं के बारे में प्लेटो, जेनाफेन तथा तथा प्लूटा आदि विद्वानों ने प्रामाणिक प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

एक बार की घटना है। सुकरात अपने कुछ साथियों तथा शिष्यों के साथ कहीं जा रहे थे। जिस रास्ते वे जा रहे थे, वह अच्छा, समतल तथा साफ-सुथरा था। चलते हुए एकाएक वे रुक गये और सबको बताया कि इस रास्ते पर आगे खतरा है, इसलिये हमें रास्ता बदल कर दूसरी तरफ से जाना होगा। हालांकि वह रास्ता कुछ ठीक नहीं है लेकिन पूरी तरह से सुरक्षित है। उसके कुछ साथियों ने उसकी बात मान ली और रास्ता बदल लिया। कुछ ने बात नहीं मानी और उसी रास्ते पर आगे बढ़ गये। वे कुछ दूर ही चले होंगे कि पता नहीं कहाँ से जंगली सूअरों का दल एकाएक सामने आ गया। सभी सूअर बहुत भयानक लग रहे थे। किसी के पास भी बचाव का अवसर तथा समय नहीं था। सूअरों ने उन पर हमला कर दिया। हालांकि इसमें किसी की मृत्यु तो नहीं हुई थी

लेकिन अनेक व्यक्ति गम्भीर रूप से घायल अवश्य हो गये थे जिन्हें स्वस्थ होने में काफी समय लगने वाला था। वे मन ही मन इस बात के लिये पश्चाताप कर रहे थे कि उन्होंने सुकरात की बात को क्यों नहीं माना!

प्लेटो ने अपनी पुस्तक 'थीवीज' में एक रोचक प्रसंग का उल्लेख किया है। एक बार तिमार्कस नामक युवक सुकरात से मिलने आया। जब उससे मिलकर वह जाने लगा तो सुकरात ने उसे रोक कर कहा कि अभी मत जाओ, यह समय तुम्हारे लिये ठीक नहीं है, तुम्हारे ऊपर खतरा मंडरा रहा है। वह युवक रुक गया। कुछ देर बार वह जाने लगा तो सुकरात ने फिर उसे रोक लिया। इस प्रकार उसे तीन बार रोका गया। चौथी बार जाने पर भी जब उसे रोका गया तो उसने कहा कि नहीं, अब वह रुक नहीं सकता, जो खतरा आयेगा, वह देखा जायेगा। तिमार्कस वहाँ से चल दिया। जब वह अपने घर गया तो वहाँ उसका किसी से झगड़ा हो गया और इसमें उसके हाथों एक व्यक्ति की मौत हो गई। सिपाही उसे पकड़ कर ले गये। उसका दोष सिद्ध होने में कोई अधिक समय नहीं लगा और उसे सूली पर चढ़ाने का दण्ड दे दिया गया। तिमार्कस पर आने वाले खतरे के बारे में भी डेमन ने ही उसे सूचित किया था। बाद की घटना इससे भी रोचक तथा दिल को स्पर्श करने वाली थी। सुकरात के विचारों से नाराज होकर उसे कैदखाने में डाल दिया था। स्पष्ट था कि उसे मृत्युदण्ड से कम की सजा नहीं होने वाली थी। हुआ भी ऐसा ही। उसे विषपान करने की सजा सुनाई गई। ऐसे उल्लेख मिलते हैं कि उस समय सुकरात के पास ऐसे प्रमाण थे कि उसे सजा से मुक्ति मिल जाती। एथेन्स की जिस जेल में उसे रखा गया था, वहाँ से उसे भगाने के लिये पूरी व्यवस्था कर ली गई थी लेकिन सुकरात ने मना कर दिया। कहा कि उसका देवता डेमन उसे बताता है कि मृत्युदण्ड मिलेगा लेकिन इससे वह हमेशा के लिये अमर हो जायेगा, इसलिये घबराना मत, और बाद में हुआ भी ऐसा ही, उसे मृत्युदण्ड ही मिला।

लन्दन की एक महिला रोजमेरी ब्राउन का जीवन भी अशरीरी उच्च श्रेणी की आत्माओं के प्रभाव में रहा। रोजमेरी को अशरीरी आत्माओं के द्वारा संगीत की शिक्षा देने का विवरण मिलता है। रोजमेरी का जीवन अत्यन्त गरीबी में व्यतीत हुआ था। वह एक स्कूल में रसोई का काम करने वाली महिलाओं का सहयोग करती थी। उसका विवाह छोटी अवस्था में ही हो गया था किन्तु उसके पति का देहान्त भी जल्दी ही हो गया था। वह सब तरफ से दुःखी तथा परेशान हो गई थी। तभी एक दिव्यात्मा का उससे सम्पर्क हुआ। यह सम्पर्क क्यों और किस प्रकार हुआ यह अज्ञात है लेकिन रोजमेरी की आधी-अधूरी जानकारी के अनुसार जब वह सात वर्ष की थी, तब उसने आकाश में एक सफेद बालों वाली एक उच्च श्रेणी की जीवात्मा को देखा। वह उसके सामने आई और कहा कि मैं एक संगीतज्ञ हूँ और तुम्हें एक संगीतकार बनाऊँगा लेकिन अभी इसका सही समय नहीं आया है। इसके बाद वह वापिस आकाश में विलीन हो गई। जब उसके

पति का देहांत हो गया, तब वह काफी दु:खी और निराश हो गई थी। उसी समय वह छाया वापिस आई और रोजमेरी से कहा कि अब तुम्हें संगीतकार बनाने का सही समय आ गया है। बाद में रोजमेरी ने एक कबाड़ी के यहाँ से पुराना पियानो खरीद लिया। उसी पर वह अशरीरी जीवात्मा उसे संगीत की शिक्षा देने लगी। बाद में उसके अन्य साथी भी इस काम में उसका साथ देने लगे। इनमें वाख, शौर्य, देवुसी, लिश्ट, शूवर्त जैसे महान संगीतकारों की आत्मायें थी। जब उसे संगीत सीखते कुछ समय हो गया तो उसने एक संगीत शिक्षक को यह देखने के लिये रखा कि जो कुछ वह बजाती है, वह सही है अथवा नहीं? संगीत शिक्षक को वहाँ कोई अशरीर आत्मा दिखाई नहीं देती थी, वह केवल रोजमेरी को ही दिखाई देती। उसके अनुसार वह बिलकुल ठीक बजा रही थी। इसके बाद वहाँ आस-पास इस बात की चर्चा होने लगी कि रोजमेरी को कोई अशरीरी आत्मा संगीत की शिक्षा देती है। इन बातों में कितनी सच्चाई है, इसे देखने के लिये कुछ लोगों ने रोजमेरी की परीक्षा भी ली जिसमें वह पूरी तरह से सफल रही।

रोजमेरी अपने संस्मरणों में लिखती हैं कि सात वर्ष की आयु में जिन संगीतज्ञ की जीवात्मा से उनका मिलना हुआ था, वह फ्रांजलिस्ट था। बीस वर्ष के बाद वही जीवात्मा फिर से उससे मिली। तब उसके साथ उसके अन्य साथी भी थे। वह डरने लगी तो उसने आश्वस्त किया कि डरो मत, हम तुम्हारे माध्यम से अपनी ही इच्छाओं को पूरा करना चाहते हैं। इसके बाद उन्होंने उसे पियानो बजाने का संकेत किया। जब उसकी अंगुलियां पियानो पर थिरकने लगीं तो मधुर धुनें अपने आप गूंजने लगी। उस अशरीरी जीवात्मा ने जो उसे पियानो बजाना सिखा रही थी, अपना परिचय 'लिज्ड' नाम से दिया। उसने रोजमेरी से कहा कि जो भी धुन वह सीखे, उसे लिपिबद्ध भी करती जाये ताकि यह भूले नहीं। उसने ऐसा ही किया। उनका संगीत सीखने का कार्यक्रम पन्द्रह वर्ष तक चला। इस बीच उसकी काफी प्रसिद्धि भी हो गई थी। 17 अक्टूबर, 1968 को बी.बी.सी. ने रोजमेरी के संगीत पर आधारित एक वृत्तचित्र का प्रसारण किया। इस कार्यक्रम को अनेक संगीत विशारदों ने सुना और इससे बहुत अभिभूत हुए। उन्होंने मिलकर निष्कर्ष निकाला कि सभी धुनें रोजमेरी की ही हैं लेकिन यह एक अविश्वसनीय घटना है। संगीतज्ञों की आत्माओं ने मिलकर रोजमेरी को उस शिखर तक पहुँचा दिया था, जहाँ पहुँचना किसी के लिये आसान नहीं होता है।

कुछ अदृश्य शक्तियां, जिन्हें हम पितर अथवा दिव्य आत्मायें भी कह सकते हैं, ऐसे अविश्वसनीय काम कर जाती हैं कि व्यक्ति का जीवन ही बदल जाता है। ऐसी दिव्य आत्माओं के लिये किसी व्यक्ति का ज़मीन से उठाकर आसमान में पहुँचाना भी बहुत आसान होता है।

इस सम्बन्ध में अमेरिका के एक अत्यन्त दरिद्र व्यक्ति के बारे में बताना उचित होगा जो अदृश्य श्रेष्ठ जीवात्माओं के कारण करोड़पति हो गया था। उसका नाम आर्थर

एडवर्ड स्टिलबैल था। उसने अपना जीवन चालीस डालर प्रतिमाह पर कुलीगिरी से प्रारम्भ किया। वह नितान्त अकेला था। एक बार कुछ अशरीरी आत्माओं से उसका परिचय हो गया। उन आत्माओं का एक समूह था, जिसमें कुल छह जीवात्मायें थी। इनमें तीन इन्जीनियर, एक लेखक, एक कवि और एक अर्थशास्त्री थी। इस समूह ने आर्थर की नौकरी छुड़वा दी। कहा कि इस नौकरी में अपना जीवन क्यों बर्बाद करते हो, हम तुम्हें बड़ा आदमी बनाते हैं। आर्थर ने कहा कि उसके पास कुछ भी साधन नहीं हैं, वह कैसे बड़ा आदमी बनेगा? जीवात्माओं के समूह ने उसे बताया कि तुम्हें बड़ा आदमी कैसे बनाना है, इसकी चिंता मत करो, वह सब हम देखेंगे। अगर तुम्हें वास्तव में बड़ा आदमी बनना है, तो इसके लिये अपने रेलमार्ग बनाने, अपनी नहर खोदने, अपने बन्दरगाह बनाने का विचार करो। आर्थर ने आश्चर्य से कहा कि यह सब कैसे सम्भव है? जीवात्माओं ने कहा कि इसके बारे में हम तुम्हारी मदद करेंगे, किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं आने देंगे। इसके बाद जैसा जीवात्मायें कहती, वैसा ही वह करता चला गया। चामत्कारिक रूप से उसकी सभी योजनायें पूरी होती चली गई। 26 सितम्बर, 1928 को जब उसकी मृत्यु हुई तो वह अरबों की सम्पत्ति छोड़ कर मरा था। उसकी अपनी पाँच लम्बी रेलवे लाइनें थीं। बड़े जहाजों के आने-जाने की क्षमता वाले विशालकाय नहरपोर्ट आर्थर का वह मालिक था। आर्थर बन्दरगाह भी उसका अपना था। उसने अनेक प्रसिद्ध ग्रंथ भी लिखे थे, जबकि उसमें लेखन क्षमता नहीं थी। इस बारे में उसने बताया कि वह कुछ लिखना नहीं जानता था। वह कागज पर पैन रखकर बैठ जाता था, इसके बाद पैन अपने आप लिखता चला जाता था। एक बार उसने जीवात्माओं के समूह के बारे में बताया कि उसने जो भी कुछ किया है, वह उन्हीं की मदद से किया है। वे आने वाले संकट की उसे पूर्व सूचना देती, धन सम्बन्धी समस्या कभी रही ही नहीं, योजनायें भी वे ही बनाते और उन्हें पूरा भी वही करते। इसमें पूरा योगदान तथा श्रेय जीवात्माओं के समूह को दिया जाना चाहिये।

इस प्रकार की असंख्य घटनायें हैं जो अविश्वसनीय रोचकताओं भरी हुई हैं। कुछ घटनायें तो इनमें से इस प्रकार की हैं जिन पर तुरन्त विश्वास करना कठिन होता है। इन सबमें मिश्र के पिरामिड अनेक रहस्यों को अपने भीतर समेटे हुए हैं। इस बात पर चाहे विश्वास न किया जाये, लेकिन इस प्रकार की घटनायें विश्व भर में घटित होती हैं। यह विषय रहस्यों के आवरण में लिपटा हुआ है जिसकी प्रत्येक परत के साथ नये-नये रहस्य उजागर होते हैं। पितरों की अवधारणा का उपहास करने वालों को इस बारे में अवश्य विचार करना चाहिये।

पितृदोष निवारण के उपाय

पितृदोष एक गम्भीर समस्या है, जो आपके पितरों के रुष्ट होने पर होती है। पितृदोष के अनेक प्रकार हैं। यह दोष किसी भी मृतक पूर्वज के कारण हो सकता है। इसके कारण जीवन का कोई भी क्षेत्र प्रभावित हो सकता है। पितृदोष शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक और आर्थिक समस्याओं का कारण बन जाता है। सामान्यत: पितृदोष की समस्या तब होती है, जब कोई व्यक्ति अपने पितरों के निमित्त जो कर्म निर्धारित किये गये हैं, उन्हें पूर्ण तत्परता के साथ नहीं निभाये अथवा उसमें कोई कमी रख दे। कई स्थितियां ऐसी भी आती हैं, जब पितरों के निमित्त सभी कर्म सही प्रकार से करने के पश्चात् भी पितृदोष उत्पन्न हो जाता है। इसका कारण प्रारब्ध, पूर्वजों के कर्म अथवा पितरों का पितृयोनि में पीड़ित होना हो सकता है। ऐसी स्थिति में पितृदोष निवारण हेतु विशिष्ट उपाय करने से लाभ होता है। यहाँ पितृदोष निवारण के लिये विभिन्न प्रकार के ऐसे श्रेष्ठ उपाय दिये जा रहे हैं, जिन्हें करने से आपको पितरों से प्राप्त होने वाली समस्यायें एवं कष्ट समाप्त होकर पितरों का आशीर्वाद प्राप्त होगा।

पितृदोष निवारण हेतु उपयुक्त समय

सभी प्रकार के पितृकर्म करने के लिये अमावस्या को श्रेष्ठ मुहूर्त माना गया है। चैत्रादि मासों में आश्विन कृष्णपक्ष को पितृपक्ष की संज्ञा दी जाती है। इस दौरान जो व्यक्ति अपने पितरों के निमित्त कोई भी कार्य करता है, तो वह अत्यधिक श्रेष्ठ फलदायक माना जाता है। वैसे किसी भी माह की अमावस्या पितृकर्म के लिये उपयुक्त रहती है। अमावस्या वही ग्रहण करनी चाहिये, जो दोपहर के समय रहती हो। देवकार्य अमावस्या पितृकर्म में उपयुक्त नहीं मानी जाती। इस हेतु पितृकार्य अमावस्या श्रेष्ठ मानी जाती है। प्राचीन ग्रंथों में पितृकर्म के लिये कई प्रकार के मुहूर्त दिये गये हैं, जिनमें पर्व तिथियां, सूर्य संक्रांति, अमावस्या और पितृपक्ष प्रमुख हैं। पर्व तिथियों पर पितृकर्म का प्रचलन वर्तमान में काफी हद तक कम हो चुका है। सूर्य संक्रान्ति पितृकर्म के लिये उपयुक्त मुहूर्त है, लेकिन पितृदोष निवारण में इसका इतना अधिक महत्त्व नहीं है, इसलिये आप अपने पितरों के निमित्त जो भी कर्म कर रहे हैं, इस हेतु श्रेष्ठ मुहूर्त के रूप में पितृकार्य अमावस्या और पितृपक्ष को ग्रहण करना चाहिये। इसके अतिरिक्त जो भी प्रमुख पर्व हैं, उनमें अपने पितरों के निमित्त श्राद्ध आदि कर्म अवश्य करने चाहिये। शास्त्रों में श्राद्ध के 96 अवसरों को उल्लिखित किया है। वर्तमान में इन सभी अवसरों पर श्राद्ध कार्य सम्पन्न नहीं किया जाता है, परन्तु व्यक्ति को अमावस्या, पितृपक्ष और महत्त्वपूर्ण त्योहारों एवं मांगलिक अवसरों पर पितृकार्य अवश्य करना चाहिये। इनको ही पितृकर्म के लिये

विशिष्ट मुहूर्त मानना चाहिये।

अमावस्या के दिन कुतुप काल अर्थात् अभिजित काल पितृदोष निवारण हेतु श्रेष्ठ समय होता है। यदि कुतुप काल के समय राहुकाल आ जाये, तो राहुकाल वाली समयावधि को छोड़कर ही समय ग्रहण करना चाहिये। अमावस्या के दिन जो भी श्राद्धकर्म और पितृदोष निवारण के लिये अन्य कर्म किये जायें, वे इस दौरान करने से व्यक्ति को उत्तम लाभ प्राप्त होता है। अमावस्या के दिन श्राद्धकर्म, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन भी इसी दौरान करने से लाभ होता है। जो व्यक्ति इस मुहूर्त में उक्त सभी कार्य करता है, उसके जीवन में पितर कदापि रुष्ट नहीं होते हैं तथा विशेष आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

पितृकृपा प्राप्ति हेतु उपाय

जो व्यक्ति पितृकृपा प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उनके पास पितृकर्म करने के लिये उपयुक्त संसाधन अथवा समय नहीं है, तो ऐसे व्यक्तियों के लिये यह उपाय अत्यधिक श्रेष्ठ सिद्ध होगा। अनेक बार अपने पितरों के निमित्त कोई भी कर्म नहीं करने और उन्हें स्मरण नहीं करने पर वे रुष्ट हो जाते हैं और जीवन में अनेक समस्यायें आ खड़ी होती हैं, हालांकि ये समस्यायें विकट नहीं होती, लेकिन इनसे जीवन प्रभावित होने लगता है। ऐसी स्थिति में यह उपाय करना आपके लिये श्रेष्ठ फलदायक सिद्ध हो सकता है।

अमावस्या के दिन दोपहर के समय पानी वाला नारियल लाकर उसे फोड़कर नारियल की गिरी निकाल लें। निकालने के पश्चात् उसके टुकड़े करके चांदी की थाली अथवा कटोरी में रखकर पितरों के निमित्त पूजनकक्ष अथवा पितरों के स्थान पर रखकर अपने पितरों को ग्रहण करने का आग्रह करें। यदि घर में चांदी की थाली अथवा कटोरी नहीं हो, तो तांबा, मिट्टी इत्यादि के पात्रों में रखकर नारियल की गिरी चढ़ायें। लोहे के पात्र में अपने पितरों को कदापि किसी प्रकार का नैवेद्य नहीं चढ़ायें। पितृकर्म में लोहे के पात्र का प्रयोग वर्जित होता है। यह कार्य निरन्तर प्रत्येक पितृकार्य अमावस्या पर करना है। यदि यह कार्य करने वाला व्यक्ति अमावस्या के दिन अपने घर पर नहीं हो अथवा अन्य कार्यों में व्यस्त हो, तो घर का अन्य सदस्य इस कार्य को कर सकता है। सायंकाल के समय चढ़े हुए नारियल की गिरी घर के सभी सदस्यों को मिलकर ग्रहण कर लेनी चाहिये। यह नारियल घर के अतिरिक्त किसी भी सदस्य को नहीं दें और न ही इसे घर के बाहर जाने दें। पितरों का प्रसाद घर के सदस्यों को ही ग्रहण करना चाहिये।

कुछ क्षेत्रों में बारह महीनों तक पानी वाला नारियल उपलब्ध नहीं हो पाता है, ऐसी स्थिति में अमावस्या के दिन नैवेद्य के रूप में पानी के नारियल के स्थान पर खीर चढ़ानी चाहिये। उस खीर को सायंकाल घर के सदस्यों को ही ग्रहण करना चाहिये। घर में कई

बार ऐसी स्थिति होती है कि खीर बनाना सम्भव नहीं हो पाता है, तो ऐसी स्थिति में मावे से बनी सफेद मिठाई नैवेद्य के रूप में पितरों को चढ़ायी जा सकती है।

इस प्रयोग में एक बात का अवश्य ध्यान रखें कि जो भी नैवेद्य चढ़ायें, उसके साथ एक गिलास भरकर पानी अवश्य साथ रखें। सायंकाल वह पानी घर का कोई भी सदस्य ग्रहण कर सकता है। केवल नैवेद्य चढ़ाना ही पर्याप्त नहीं होता है। यह प्रयोग करने के पश्चात् आपको पितरों की कृपा प्राप्त होने लग जायेगी। निरन्तर तीन अमावस्या तक प्रयोग करने के पश्चात् कोई न कोई शुभ समाचार अवश्य मिलेगा। इस प्रयोग को निरन्तर रखने से पितरों की कृपा हमेशा बनी रहती है, अन्यथा 11 अथवा 21 अमावस्या तक यह प्रयोग निरन्तर करें।

पितरों से विशेष मनोकामना पूर्ति हेतु उपाय

पितरों की सन्तुष्टि के लिये यह उपाय अत्यधिक उत्तम फल देने वाला है। यह उपाय व्यक्ति को तब करना चाहिये, जब वह अपने पितरों से अपनी विशेष मनोकामना पूर्ण करवाना चाहते हों। इस उपाय से पहले पितर आपसे सन्तुष्ट रहने चाहिये अर्थात् पितृदोष होने पर सीधे इस प्रयोग को प्रारम्भ नहीं करें। इस उपाय में आपको बारह मास की अमावस्या में प्रत्येक अमावस्या को दोपहर के समय अपने पितरों के निमित्त सफेद गुलाब के फूल की एक माला तथा गुलाब का इत्र अर्पित करना चाहिये। यह प्रयोग तब तक जारी रखना चाहिये, जब तक आपकी वह विशेष मनोकामना पूर्ण नहीं हो जाये। पूर्ण हो जाने पर भी उपाय कुछ अमावस्या तक जारी रखना चाहिये और पितरों को धन्यवाद देते हुए अपने अन्य पारिवारिक सदस्यों सहित सभी पितरों के स्मरण में किसी मन्दिर आदि पवित्र स्थान पर अथवा आपके ग्रामदेवता अथवा कुलदेवता के स्थान पर भोजन प्रसादी करनी चाहिये। इस प्रसादी में अपने सभी रिश्तेदारों को बुलायें। जब भोजन सामग्री बन जाये, तो पहले पितरों और कुलदेवी-देवताओं को चढ़ाकर तत्पश्चात् सभी को आदर से भोजन करवाना चाहिये। इस उपाय को करने से आपकी वह मनोकामना पूर्ण होने के साथ ही भविष्य में भी आप पर पितृकृपा बनी रहेगी।

सफेद गुलाब की माला पितरों के स्थान पर चढ़ाने के पश्चात् कचरे में नहीं फेंकनी चाहिये, बल्कि उस माला को बहते हुए पानी में प्रवाहित कर दें अथवा पीपल के वृक्ष पर डाल दें। यह प्रयोग किसी विशेष मनोकामना की पूर्ति के अतिरिक्त प्रत्येक अमावस्या और पितरों की तिथियों पर भी किया जा सकता है। पितरों से सम्बन्धित सभी प्रकार के पूजन-कर्म में गुलाब के फूल की माला को अत्यधिक श्रेष्ठ माना जाता है। साथ ही गुलाब का इत्र भी पितरों को बहुत पसंद होता है। यह प्रयोग विशेष मनोकामना के साथ ही प्रत्येक वर्ष माघ और वैशाख की अमावस्या पर अवश्य करना चाहिये। इन दोनों महीनों की अमावस्या पितरों को अत्यधिक प्रिय होती है, इसलिये इस दिन उनको प्रसन्न

करने के निमित्त यह उपाय करना अत्यधिक अनुकूल रहता है। श्राद्धकर्म में भी सफेद गुलाब के फूल की माला पितरों को अर्पित की जा सकती है। सफेद गुलाब मिलना सम्भव न हो, तो कोई भी सफेद सुगन्धित पुष्प की माला का प्रयोग किया जा सकता है।

पितरों के आवाहन एवं पूजन से समृद्धि हेतु उपाय

अनेक ऐसे परिवार होते हैं, जो अपने पितरों के निमित्त किसी भी प्रकार का पूजन-अर्चन नहीं करते हैं। जब उनके जीवन में पितृबाधा आने लगती है और यह उन्हें ज्ञात होता है, तो वह अचानक ही अपने पितरों के निमित्त उपाय करना प्रारम्भ कर देते हैं, परन्तु ऐसी स्थिति में उन्हें लाभ नहीं हो पाता है। इसका मुख्य कारण यह होता है कि पितर उनसे असन्तुष्ट होकर उनका कव्य ग्रहण नहीं करते हैं। पितृकर्म के निमित्त पितरों को जो भी अर्पित किया जाता है, वह कव्य कहलाता है। ऐसी स्थिति में पितरों की सन्तुष्टि के लिये उनका आवाहन करना आवश्यक होता है।

पितरों का आवाहन करने के लिये सर्वश्रेष्ठ दिन अमावस्या है। यह उपाय आपको अमावस्या के दिन प्रात:काल सूर्योदय से पहले प्रारम्भ करना है। इस हेतु सूर्योदय से पहले अपने पूरे घर को जल से स्वच्छ कर लें। प्रारम्भ घर की छत से करें। अन्त में बाहरी दीवार के द्वार तक स्वच्छ कर लेने के पश्चात् स्वयं भी स्नान कर लें। स्नान करने के पश्चात् एक तांबे के पात्र में गंगाजल लें अथवा जल में गंगाजल की बूंद डालें। इसके साथ ही उसमें पीली सरसों भी डाल लें। अब अपने पितरों का मन ही मन स्मरण करते हुए घर की छत पर से उस जल के छींटे देते हुए नीचे आयें। घर का कोई भी कक्ष या स्थान नहीं छूटना चाहिये। सभी जगह पर पितरों का स्मरण करते हुए उस जल के छींटें देते रहें। अन्त में मुख्य द्वार पर आकर छींटें देकर उस स्थान को भी शुद्ध कर लें। अब वहाँ पर खड़े होकर अपने पितरों से यह प्रार्थना करें कि हमने आपके आने के लिये पूरे घर को स्वच्छ कर लिया है। अब हम आपका स्मरण एवं आवाहन कर रहे हैं। आप घर में आयें और यहाँ पर विराजमान हों। ऐसी प्रार्थना करने के पश्चात् घर के अन्दर आ जायें।

अब अमावस्या पर किये जाने वाले श्राद्ध के लिये भोजन सामग्री बनाना प्रारम्भ कर दें। भोजन अर्पित करने के लिये किसी ब्राह्मण को भी बुलायें। दोपहर के समय कुतुप काल में सर्वप्रथम तर्पण करने के पश्चात् पंचबलि निकालें। पंचबलि से तात्पर्य गाय, कुत्ता, कौआ, चींटी और देवताओं के निमित्त निकाली जाने वाली भोज्य सामग्री से होता है। देवताओं की भोज्य सामग्री कण्डे अथवा कोयले को प्रज्वलित कर अग्नि को समर्पित करें और शेष सामग्री जीवों के अनुसार उन्हें प्रदान कर दें।

तत्पश्चात् ब्राह्मण को भोजन करवायें। भोजन करवाने के पश्चात् उन्हें पितर मानकर प्रणाम करें और उनसे आशीर्वाद लें। साथ ही यथाशक्ति अनुसार दान और दक्षिणा प्रदान

करें और साथ ही लौंग-इलायची युक्त पान भी अर्पित करें। यह उपाय केवल एक अमावस्या को ही नहीं करना है, अपितु लगातार सात अमावस्या तक यह उपाय करने से विशेष लाभ होता है। इस उपाय को उन व्यक्तियों को अवश्य करना चाहिये, जो काफी समय से अपने पितरों के निमित्त किसी प्रकार का कोई पितृकार्य नहीं कर रहे थे और उन्हें पितृदोष के कारण अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। इस उपाय को करने के पश्चात् धीरे-धीरे व्यक्ति पितृदोष से मुक्ति प्राप्त करने लग जाता है।

अनेक बार ऐसा देखा जाता है कि पितर किसी कारणवश आपके द्वारा किये जाने वाला श्राद्धकर्म ग्रहण नहीं करते हैं अथवा उनकी स्थापना अन्य रिश्तेदारों के द्वारा कर लिये जाने के कारण वे आपको पीड़ा पहुँचाते रहते हैं। ऐसी स्थिति में आप यह सोचने के लिये मजबूर हो जाते हैं कि मेरे द्वारा पितरों की सन्तुष्टि के निमित्त इतने अधिक उपाय कर लेने के पश्चात् भी पितरों की कृपा क्यों नहीं प्राप्त हो पा रही है? ऐसी स्थिति में यह उपाय आपके लिये अत्यधिक लाभदायक सिद्ध होगा। यदि आपके पितरों को आपके रिश्तेदारों ने प्रसन्न करके अथवा अन्य प्रकार से बांध लिया है, तो इन उपायों से वे वहाँ से मुक्त होकर आपके पास आ जायेंगे और आपका विशेष कल्याण करेंगे। अगर 7 बार लगातार अमावस्या पर यह उपाय करने से लाभ नहीं हो, तो इसे निरन्तर रूप से करते रहना चाहिये। कुछ ही समय में आपको श्रेष्ठ लाभ मिलने लग जायेगा। पितृदोष निवारण होने के पश्चात् आपकी सभी मनोकामनायें पूर्ण हो जायेंगी। एक बात का अवश्य ध्यान रखें कि यह उपाय करने के पश्चात् पितरों के निमित्त नित्य नैवेद्य अवश्य अर्पित करें। घर में कोई भी मांगलिक कार्य हो, तो उनका पूजन-अर्चन पहले करें और प्रत्येक अमावस्या तथा पितृपक्ष उनके निमित्त श्राद्धकर्म करना नहीं भूलें। इस उपाय से निश्चित ही आपको ऐसे लाभ प्राप्त होंगे जिसकी आपने कल्पना भी नहीं की होगी।

पितरों की प्रसन्नता हेतु धूप प्रयोग

जिस घर में पितरों का निवास होता है, वहाँ पर सभी प्रकार की सुख-सुविधायें विद्यमान रहती हैं। यदि घर में रहने वाले पितरों को असन्तुष्ट कर दिया जाये, तो वे विभिन्न प्रकार की समस्यायें उत्पन्न कर देते हैं। यही समस्यायें पितृदोष कहलाती हैं। पितरों की असन्तुष्टि के अनेक कारण होते हैं। आपके घर में आने-जाने वाले लोग, आपके द्वारा प्रयोग में ली जाने वाली वस्तुयें, आपके क्रियाकलाप आदि में की गई गलतियां पितरों की नाराजगी का कारण बन जाती हैं। ऐसे में पितरों को सन्तुष्ट कैसे रखा जाये, यह जानना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। इस हेतु यहाँ एक विशिष्ट उपाय दिया जा रहा है, जिसका प्रयोग करके आप न केवल अपने पितरों को प्रसन्न रख सकते हैं, वरन् रुष्ट पितरों को भी प्रसन्न किया जा सकता है। यह उपाय आप अमावस्या और विशिष्ट पर्वों पर करें, तो उत्तम होगा। यदि नित्य किया जाये, तो और भी श्रेष्ठ होगा।

प्रात:काल स्नान के पश्चात् पूजनकर्म एवं पितृकर्म करने के पश्चात् कोयले अथवा कण्डे को प्रज्वलित कर लें। जब वे प्रज्वलित हो जायें, तब गुग्गुल, लोबान, कर्पूर, पीली सरसों इत्यादि से बनायी गई धूप उस कण्डे पर रखकर उसका धुआं पूरे घर में करें। पूजनकक्ष से लेकर घर के बाहर तक कोई भी ऐसी जगह नहीं बचनी चाहिये, जहाँ इस धूप का धुआं नहीं हो। यदि यह प्रयोग अमावस्या के दिन किया जा रहा है, तो दोपहर के समय करें। यदि किसी विशिष्ट त्योहार पर किया जा रहा है, तो सायंकाल करें। इस प्रयोग से न केवल आपके पितर प्रसन्न होते हैं, वरन् घर में यदि किसी भी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा विद्यमान रहती है, तो वह भी दूर हो जाती है।

यह प्रयोग नित्य रूप से नहीं किया जा सकता है, तो विशेष अवसरों पर करने से भी अवश्य लाभ होता है। वर्तमान में बाजार में भी गुग्गुल और लोबान की धूप मिलती है, उसका भी दैनिक प्रयोग किया जा सकता है, परन्तु विशेष पर्व पर दी जाने वाली धूप आप स्वयं तैयार करें क्योंकि लोबान और गुग्गुल के नाम पर आने वाली अधिकतर धूप में इन चीजों की मात्रा नाममात्र की होती है। इस कारण वे अधिक असरकारक नहीं होती है। इस प्रयोग को करने के पश्चात् आप अपने घर सहित स्वयं भी नई ऊर्जा को महसूस करेंगे। आपके घर में यदि किसी भी प्रकार की समस्या है, तो वह इस प्रयोग के पश्चात् दूर होने लग जाती है। इस धूप के प्रयोग से पितर बहुत प्रसन्न होते हैं और आशीर्वाद प्रदान करते हैं। यदि किसी व्यक्ति को पितृदोष से सम्बन्धित समस्या है, तो इस प्रयोग से उसको लाभ प्राप्त होता है और पितृदोष के कारण चल रही सभी प्रकार की समस्यायें धीरे-धीरे समाप्त होने लग जाती हैं।

ग्रहों के उपाय से पितृदोष का निवारण

यदि आपकी जन्मपत्रिका में पितृदोष सम्बन्धी समस्या है, तो उसके निवारण के लिये जिन ग्रहों के कारण पितृदोष बन रहा हो, उनका जप करना अत्यधिक श्रेष्ठ होता है। पितृकर्म के साथ ही उन ग्रहों की शान्ति करने से पितृदोष से सम्बन्धित सभी प्रकार के अशुभ फल समाप्त हो जाते हैं। सामान्यत: पितृदोष सूर्य, चन्द्रमा, गुरु, शनि और राहु-केतु के कारण उत्पन्न होता है। पितृदोष निवारण के लिये ग्रहों का जप किसी अन्य विशेष मुहूर्त पर करने के अपेक्षा अमावस्या के दिन किया जाये, तो अधिक उत्तम रहता है। इस हेतु सोमवती अमावस्या अथवा शनैश्चरी अमावस्या श्रेष्ठ मानी जाती हैं। जो अमावस्या सोमवार के दिन आती हैं, उसे सोमवती अमावस्या कहा जाता है और जो शनिवार के दिन आती है, उसे शनैश्चरी अमावस्या कहते हैं।

सर्वप्रथम ज्योतिषी से अपनी जन्मपत्रिका दिखवा कर यह जान लें कि आपको किन ग्रहों के कारण पितृदोष का सामना करना पड़ रहा है। जो भी ग्रह मिलकर यह अशुभ योग बना रहे हों, उनके निवारणार्थ मंत्रजप उक्त मुहूर्त में करवायें। इसके लिये

अमावस्या के दिन पहले पितृकार्य सम्पन्न कर लें। पितृकार्य से तात्पर्य श्राद्ध और तर्पण से है। तत्पश्चात् भगवान गणेश, नवग्रह इत्यादि का पूजन करने के बाद उन ग्रहों का जप करना अथवा करवाना है, जिसके कारण आपको पितृदोष का सामना करना पड़ रहा है। इस पूजा में नवग्रह पूजा के दौरान उनका विशिष्ट मण्डल अवश्य बनवाना चाहिये। मण्डल के साथ ही उन ग्रहों के यंत्र भी बनवायें, जिनके जप आप इस दौरान करने वाले हैं। इस मण्डल और यंत्र का पूजन करने के पश्चात् रुद्राक्ष की माला से मंत्रों का जप करें अथवा करवायें। यह प्रयोग एक अमावस्या की अपेक्षा अधिक अमावस्या के दिन भी किया जा सकता है, हालांकि पहले दिन के प्रयोग से ही आपको इसका लाभ नज़र आने लग जायेगा। नवग्रहों के पूजन से पूर्व जब संकल्प बोलें, तो पितृदोष के निवारण को ही प्रमुखता दें। वैसे नवग्रहों के जप किसी भी शुभ मुहूर्त में किये जा सकते हैं, परन्तु यदि पितृदोष के निमित्त जप किया जा रहा है, तो इस हेतु श्रेष्ठ मुहूर्त अमावस्या ही हो सकता है। पूजन के पश्चात् यंत्र और मण्डल के निमित्त जो भी सामग्री प्रयोग में ली गई थी, उसको कपड़े सहित बहती नदी में प्रवाहित कर दें। यदि नदी में प्रवाहित करना सम्भव नहीं हो, तो इस सामग्री में से दाल और चावलों को चिड़िया अथवा गाय को खिला दें तथा कपड़े आदि का दान कर दें।

इस प्रयोग से आपकी पितृबाधा धीरे-धीरे कम होने लग जायेगी। अगली बार जब आप यह प्रयोग करें, तो उक्त प्रकार से ही सभी नियमों का पालन करें। यदि ग्रहों का जप आप स्वयं कर सकते हैं, तो बहुत अच्छा होगा, अन्यथा पण्डित से भी यह उपाय करवाया जा सकता है। इस उपाय के पश्चात् आपके जीवन में ऐसे चामत्कारिक परिवर्तन देखने को मिलेंगे, जिसकी आपने कल्पना भी नहीं की होगी। इसके साथ यह भी ध्यान रखें कि जिस ग्रह के कारण पितृदोष उत्पन्न हो रहा है, उसकी कारक वस्तुओं का प्रयोग कदापि न करें। उक्त प्रयोग के साथ ही प्रातःकाल नांदिश्राद्ध करना श्रेष्ठ है। प्रत्येक अमावस्या पर सम्भव नहीं हो, तो शनैश्चरी अमावस्या पर यह प्रयोग अवश्य करें।

पितरों की स्थापना द्वारा पितृदोष से मुक्ति

किसी व्यक्ति के पूर्वज मृत्यु के उपरान्त भी अपने परिजनों से विशेष मोह रखते हैं, ऐसी स्थिति में जब उनके वंशज अपने पितरों के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करें, तो पितर रुष्ट होकर श्राप देते हैं, जिसके कारण व्यक्ति पितृदोष से पीड़ित हो जाता है। ऐसी स्थिति में पितृदोष से मुक्ति के लिये उस पितर को संतुष्ट करना आवश्यक हो जाता है। वह पितर चाहता है कि अपने परिजनों के साथ ही रहकर उनका कल्याण करूँ और परिवार के सदस्य उसका स्मरण करते रहें। ऐसे पितर पितृदोष के सामान्य उपायों से कदापि संतुष्ट नहीं हो सकते हैं। उनके लिये पितरों की घर में स्थापना करके उनका

पूजन, अर्चन और स्मरण करना आवश्यक होता है।

ऐसे पितरों को संतुष्ट कर अपने घर में किस प्रकार रखा जाये, जिससे वे सदा आशीर्वाद प्रदान करें, यह जानना आवश्यक है। इस हेतु सर्वप्रथम अपने घर में पितरों के लिये कोई निश्चित स्थान बनवायें। यदि उन्हें आप अपने पूजन कक्ष में ही स्थापित करना चाहते हैं, तो इस कक्ष में दक्षिण दिशा की ओर किसी आलमारी अथवा चौकी बिछाकर उनका स्थान बनायें। इसके अतिरिक्त पितरों के निमित्त कोई कक्ष का निर्माण भी करवाया जा सकता है। यह ध्यान रहे कि पितरों के कक्ष अथवा स्थान पर कोई देवी-देवता का चित्र अथवा विग्रह नहीं होना चाहिये। पितरों के साथ आपके इष्ट देव अथवा देवी, ग्राम देवता, कुल देवी अथवा कुल देवता का चित्र अथवा विग्रह अवश्य होना चाहिये।

अब चांदी अथवा सोने के पत्र अर्थात् लॉकेट में एक पुतला बनाकर अपने पितर का आवाहन करें और उस चांदी अथवा सोने के पत्र पर स्थित पुतले में उनकी स्थापना करें। यह सभी कार्य अमावस्या तिथि पर दोपहर के समय करना है। इस कार्य में पितृकर्म और इन प्रकियाओं को जानने वाले विद्वान व्यक्ति का होना आवश्यक है। इस चांदी अथवा सोने के पत्र को पातड़ी कहा जाता है। अन्य भाषाओं में इसका पृथक् नाम भी होता है। इस पातड़ी की स्थापना के पश्चात् आपके पितरों का वास इस पत्र में हो जाता है। अब इस पातड़ी का नित्य पूजन-अर्चन करना आवश्यक हो जाता है। अनेक व्यक्ति इस पातड़ी को अपने गले में लॉकेट के रूप में धारण करते हैं, परन्तु इस क्षेत्र के अनुभवी व्यक्तियों का कहना है कि पातड़ी को गले में धारण करने से व्यक्ति को अपनी जीवनचर्या पर बहुत अधिक ध्यान रखने की आवश्यकता होती है। किसी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा से पितरों की पातड़ी प्रभावित हो जाये, तो इससे आपको दोष लग सकता है, इसलिये इसको धारण करने के स्थान पर पितरों के पूजन स्थान पर रखना चाहिये और नित्य इसका पूजन-अर्चन करना चाहिये।

यह पातड़ी सामान्यत: सोना, चाँदी अथवा अष्टधातु में निर्मित की जाती है। वैसे पितरों से सम्बन्धित सभी कार्यों में चाँदी की धातु को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, इसलिये पितरों की पातड़ी भी हमेशा चाँदी में ही निर्मित की जानी चाहिये। अमावस्या के दिन पितरों की पातड़ी का विशेष पूजन-अर्चन करना चाहिये और पितरों का आवाहन कर विभिन्न प्रकार के नैवेद्य अर्पित करने चाहिये। जो व्यक्ति पितरों की स्थापना करने के पश्चात् उनके पूजन में किसी प्रकार का आलस्य करता है, तो उसे अपने जीवन में अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, इसलिये एक बार घर में पितरों की स्थापना हो जाये, तो उनके पूजन में किसी भी प्रकार का आलस्य नहीं करना चाहिये। पितरों की पुण्यतिथियां, अमावस्या और श्राद्धपक्ष में पितरों का पूंजन-अर्चन अवश्य

करते रहना चाहिये।

पितरों के पूजन में कुछ बातें अवश्य ध्यान में रखनी चाहिये, जैसे पितरों की पातड़ी पर रोली का टीका नहीं लगायें। रोली के स्थान पर सफेद चंदन का टीका लगाया जा सकता है। पितरों के पूजन में मांस और शराब का सेवन वर्जित होता है। जिस स्थान पर पितरों की स्थापना की जाये, वहाँ भूलकर भी इनका प्रयोग नहीं हो, अन्यथा इससे पितर रुष्ट हो जाते हैं। घर में जब भी कोई महत्त्वपूर्ण कार्य हो, मांगलिक कार्य हो, विवाह हो, तो पितरों की पातड़ी का पूजन भी करना चाहिये। घर में जब भी कोई मिठाई आये, तो उसका भोग सबसे पहले पितरों को अर्पित करना चाहिये। इससे पितर प्रसन्न होते हैं और अपने वंशजों को आशीर्वाद देते हैं। आप भी पितरों की पातड़ी घर में स्थापित कर सकते हैं, किन्तु यह उपाय इस क्षेत्र के किसी अनुभवी व्यक्ति के परामर्श पर ही करना चाहिये क्योंकि यह तथ्य आपको अनुभवी व्यक्ति ही बता सकता है कि आपका कोई पितर आपके घर में आकर रहना चाहता है।

इस प्रयोग के पश्चात् आपके जीवन में किसी भी प्रकार की समस्या नहीं आयेगी। यदि किसी प्रकार का संकट आने की सम्भावना हो, तो पितर आपको पहले ही किसी न किसी रूप में आगाह कर देंगे। वे आपके प्रत्येक सुख और दु:ख में पूरा साथ देंगे और आपका जीवन प्रसन्नता से भर देंगे।

पितरों के भजन और स्तोत्र पाठ एवं श्रवण के द्वारा पितृदोष से मुक्ति का उपाय

जिस प्रकार विभिन्न देवी-देवताओं के स्तोत्र एवं भजनों की रचना हुई है, वैसे ही पितरों के स्तोत्र और भजन भी मिलते हैं। वैदिककाल से ही पितरों की उपासना की परम्परा रही थी। वेदों में भी पितरों से सम्बन्धित सूक्तों का वर्णन मिलता है। इसी प्रकार पुराणों में पितरों से सम्बन्धित विभिन्न मंत्र और स्तोत्र उल्लिखित हैं। लौकिक साहित्य में भी पितरों पर अनेक भजन लिखे गये हैं। अपनी संस्कृति और भाषा के अनुसार ऐसे भजनों की रचना हुई है। भारत के प्रत्येक क्षेत्र में पितरों से सम्बन्धित पृथक्-पृथक् लौकिक भजन मिलते हैं। पितरों के ऐसे भजनों का श्रवण करने से वे अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। पितरों के निमित्त जब रात्रि जागरण किया जाता है, तब भी ऐसे ही भजनों के द्वारा उनका आवाहन और स्तुति होती है। इससे वे प्रसन्न होकर आते हैं और आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

यदि आप पितरों की कृपा प्राप्ति चाहते हैं, तो नित्य अथवा अमावस्या के दिन प्रात:काल इन भजनों एवं स्तोत्र का श्रवण अवश्य करें। श्रवण के साथ ही यदि उनका पाठ भी कर सकें, तो श्रेष्ठ होगा। अमावस्या के दिन प्रात:काल स्नान करने के पश्चात् अपने पूजन स्थल में बैठकर पितरों का स्मरण करते हुए इन भजन एवं **पितृस्तोत्र** का

पाठ करें। इन भजनों को अपने म्यूजिक सिस्टम अथवा अन्य माध्यम से सी.डी. या कैसेट लगाकर सुने जा सकते हैं। पितरों के भजनों की सी.डी. और कैसेट बाजार से खरीदे जा सकते हैं। यदि यह आपको उपलब्ध नहीं हो, तो यहाँ दिया जा रहा पितृस्तोत्र का पाठ अमावस्या के दिन अवश्य करें। इससे आपको अनुकूलता मिलेगी।

मार्कण्डेय पुराण, गरुड पुराण इत्यादि में उल्लिखित पितृस्तोत्र का महत्त्व इस पुराण में स्थित दुर्गासप्तशती के समान महत्त्वपूर्ण माना गया है। ब्रह्माजी के निर्देश पर पितरों की रुचि ने श्रद्धापूर्वक स्तुति की थी, जिसके परिणामस्वरूप उसे पत्नी एवं रौच्य मनु के रूप में पुत्र की प्राप्ति हुई थी। देवताओं की भांति पितरों की स्तुति करने से वे स्तुतिकर्ता की मनोकामनाओं की शीघ्र पूर्ति करते हैं। इस **पितृस्तोत्र** का जो व्यक्ति नित्य पाठ करता है, उसके जीवन में कदापि पितृदोष से सम्बन्धित समस्या नहीं रहती। यह स्तोत्र हिन्दी एवं संस्कृत दोनों भाषाओं में दिया जाता है। जो व्यक्ति संस्कृत स्तोत्र का पाठ नहीं कर सकते हैं, वे हिन्दी स्तोत्र के द्वारा पितरों के निमित्त पाठ कर सकते हैं। इस स्तोत्र को पितृगायत्री से सम्पुटित करके इसके पाठ करने चाहिये। पितृस्तोत्र इस प्रकार है–

पितृस्तोत्र

अर्चितानाममूर्त्तानां पितृणां दीप्ततेजसाम्।
नमस्यामि सदा तेषां ध्यानिनां दिव्यचक्षुषाम्॥
इन्द्रादीनां च नेतारो दक्षमारीचयोस्तथा।
सप्तर्षीणां तथान्येषां तान् नमस्यामि कामदान्॥
मन्वादीनां मुनीन्द्राणां सूर्याचन्द्रमसोस्तथा।
तान् नमस्याम्यहं सर्वान् पितृनप्सूदधावपि॥
नक्षत्राणां ग्रहाणां च वाय्वग्न्योर्नभसस्तथा।
द्यावापृथिव्योश्च तथा नमस्यामि कृताञ्जलिः॥
देवर्षीणां जनितृंश्च सर्वलोकनमस्कृतान्।
अक्षय्यस्य सदा दातृन् नमस्येऽहं कृताञ्जलिः॥
प्रजापतेः कश्यपाय सोमाय वरुणाय च।
योगेश्वरेभ्यश्च सदा नमस्यामि कृताञ्जलिः॥
नमो गणेभ्यः सप्तभ्यस्तथा लोकेषु सप्तसु।
स्वयम्भुवे नमस्यामि ब्रह्मणे योगचक्षुषे॥
सोमाधारान् पितृगणान्योगमूर्त्तिधरांस्तथा।
नमस्यामि तथा सोमं पितरं जगतामहम्॥
अग्निरूपांस्तथैवान्याम् नमस्यामि पितृनहम्।

अग्निषोममयं विश्वं यत एतदशेषतः ॥
ये तु तेजसि ये चैते सोमसूर्याग्निमूर्तयः ।
जगत्स्वरूपिणश्चैव तथा ब्रह्मस्वरूपिणः ॥
तेभ्योऽखिलेभ्यो योगिभ्यः पितृभ्यो यतमानसः ।
नमो नमो नमस्ते मे प्रसीदन्तु स्वधाभुजः ॥

पितृस्तोत्र का हिन्दी भावार्थ

जो सबके द्वारा पूजित, अमूर्त, अत्यन्त तेजस्वी, ध्यान के योग्य तथा दिव्य दृष्टि सम्पन्न हैं, उन पितरों को मैं सदा नमस्कार करता हूँ। जो इन्द्र आदि देवताओं, दक्ष, मारीच, सप्तर्षियों तथा दूसरों के भी नेता हैं, कामना की पूर्ति करने वाले उन पितरों को मैं प्रणाम करता हूँ। जो मनु आदि राजर्षियों, मुनिश्वरों तथा सूर्य और चन्द्रमा के भी नायक हैं, उन समस्त पितरों को मैं जल और समुद्र में भी नमस्कार करता हूँ। नक्षत्रों, ग्रहों, वायु, अग्नि, आकाश और द्युलोक तथा पृथ्वीलोक के जो भी नेता हैं, उन पितरों को मैं हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ। जो देवर्षियों के जन्मदाता, समस्त लोकों द्वारा वन्दित तथा सदा अक्षय फल के दाता हैं, उन पितरों को मैं हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ। प्रजापति, कश्यप, सोम, वरुण तथा योगेश्वरों के रूप में स्थित पितरों को सदा हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ। सातों लोकों में स्थित सात पितृगणों को नमस्कार है। मैं योगदृष्टिसम्पन्न स्वयम् ब्रह्माजी को प्रणाम करता हूँ। चन्द्रमा के आधार पर प्रतिष्ठित और योगमूर्तिधारी पितृगण को मैं प्रणाम करता हूँ। साथ ही सम्पूर्ण जगत् के पिता सोम को नमस्कार करता हूँ तथा अग्निस्वरूप अन्य पितरों को भी प्रणाम करता हूँ, क्योंकि यह सम्पूर्ण जगत् अग्नि और सोममय है। जो पितर तेज में स्थित हैं, जो ये चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं तथा जो जगत्स्वरूप एवं ब्रह्मस्वरूप हैं, उन सम्पूर्ण योगी पितरों को मैं एकाग्रचित्त होकर प्रणाम करता हूँ। उन्हें बारम्बार नमस्कार है। वे स्वधाभोजी पितर मुझ पर प्रसन्न हों।

पितृगायत्री मंत्र की उपासना से पितृदोष निवारण

जिस प्रकार सभी मंत्रों में गायत्री मंत्र का महत्त्व सर्वाधिक रूप से माना गया है, उसी प्रकार पितरों से सम्बन्धित सभी मंत्रों में **पितृगायत्री मंत्र** सबसे महत्त्वपूर्ण है। गायत्री मंत्र की नित्य उपासना और जप को श्रेष्ठ माना जाता है। यह मंत्र व्यक्ति को मोक्ष प्राप्ति में सहायक माना जाता है। इसी प्रकार पितृगायत्री मंत्र पितरों की मुक्ति के लिये श्रेष्ठ कहा गया है। इस मंत्र के द्वारा जो व्यक्ति अपने पितरों की पूजा-उपासना करता है, उसके जीवन में चल रहा पितृदोष समाप्त हो जाता है और पितरों की कृपा हमेशा बनी रहती है। यदि आप पितृदोष से पीड़ित नहीं हैं, तब भी पितरों की कृपा प्राप्ति के लिये **पितृगायत्री मंत्र** का नित्य अथवा अमावस्या, श्राद्धपक्ष इत्यादि में मंत्रजप कर सकते हैं। पितृगायत्री मंत्र का जप पितरों के स्थान के सामने बैठकर रुद्राक्ष की माला से करना

चाहिये। नित्य एक माला जप करने वाले व्यक्ति के जीवन में कदापि पितरों से सम्बन्धित समस्या नहीं आती है। यदि समय का अभाव हो, तो अमावस्या के दिन एक माला जप अवश्य करें। श्राद्धपक्ष के दौरान नित्य इस मंत्र का जप करने से पितर अत्यधिक प्रसन्न होते हैं और आशीर्वाद प्रदान करते हैं। पितृगायत्री मंत्र का उल्लेख ब्रह्मपुराण, वायुपुराण इत्यादि में हुआ है। यहाँ ब्रह्म तथा वायुपुराण में उल्लिखित पितृगायत्री का उल्लेख किया जा रहा है। आप किसी भी मंत्र का चयन कर सकते हैं। **पितृगायत्री मंत्र** निम्नांकित है–

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥ (ब्रह्मपुराण 220/143)

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वधायै स्वाहायै नित्यमेव भवन्त्युत ॥ (वायुपुराण 74/16)

वेदोक्त पितृसूक्त से पितृदोष का परिहार

ऋग्वेद, यजुर्वेद इत्यादि में उल्लिखित पितृसूक्त के द्वारा पितरों की उपासना की गई है। सामान्यतः जो भी पितृकर्म होते हैं, उनमें पितृसूक्त का पाठ अवश्य किया जाता है। वेदोक्त पितृसूक्त का पाठ करना उसी व्यक्ति के लिये सम्भव है, जिसे इस पाठ का ज्ञान हो। यह पाठ आप वेदपाठी ब्राह्मण से करवा सकते हैं। यदि आप पितृदोष से पीड़ित हैं और इसके निवारण के लिये कोई रास्ता नहीं सूझ रहा है, तो ऐसी स्थिति में पितृशान्ति करवानी चाहिये। पितृशान्ति में वेदोक्त पितृसूक्त का पाठ अवश्य होना चाहिये। इस पाठ से पितरों की उपासना करने पर पितर बहुत प्रसन्न होते हैं और आशीर्वाद प्रदान करते हैं। यदि घर में किसी प्रकार का पितृदोष हो, तो भी इन सूक्त के पाठ से समाप्त हो जाता है।

पितृदोष निवारण के लिये पितृसूक्त

अपेतो यन्तु पणयोऽसुम्ना देवपीयवः। अस्य लोकः सुतावतः।
द्युभिरहोभिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्ववसानमस्मै ॥
सविता ते शरीरेभ्यः पृथिव्याँल्लोकमिच्छतु।
तस्मै युज्यन्तामुस्रियाः ॥
वायुः पुनातु सविता पुनात्वग्नेर्भ्राजसा सूर्यस्य वर्चसा।
वि मुच्यन्तामुस्रियाः ॥
अश्वतथे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥
सविता ते शरीराणि मातुरुपस्थ आ वपतु।
तस्मै पृथिवि शं भव ॥
प्रजापतौ त्वा देवतायामुपोदके लोके नि दधाम्यसौ।

अप नः शोशुचदघम्॥
परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते अन्य इतरो देवयानात्।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजाꣳरीरिषो मोत वीरान्॥
शं वात शꣳ हि ते घृणिः शं ते भवन्त्विष्टकाः।
शं ते भवन्त्वग्नयः पार्थिवासो मा त्वाऽभि शूशुचन्॥
कल्पन्तां ते दिशस्तुभ्यमापः शिवतमास्तुभ्यं भवन्तु सिन्धवः।
अन्तरिक्षꣳ शिवं तुभ्यं कल्पन्तां ते दिशः सर्वाः॥
अश्मन्वती रीयते सꣳरभध्वमुत्तिष्ठत प्र तरता सखायः।
अत्रा जहीमोऽशिवा ये असञ्छिवान्वयमुत्तरेमाभि वाजान्॥
अपाघमप किल्बिषमप कृत्यामपो रपः।
अपामार्ग त्वमस्मदप दुःष्वप्नꣳ सुव॥
सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु।
योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः॥
अनड्वाहमन्वारभामहे सौरभेयꣳ स्वस्तये।
स न इन्द्र इव देवेभ्यो वह्निः सन्तारणो भव॥
उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥
इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम्।
शतं जीवन्तु शरदः पुरूचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन॥
अग्न आयूꣳषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः।
आरे बाधस्व दुच्छुनाम्॥
आयुष्मानग्ने हविषा वृधानो घृतप्रतीको घृतयोनिरेधि।
घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेव पुत्रमभि रक्षतादिमान्त्स्वाहा॥
परीमे गामनेषत पर्यग्निमहृषत।
देवेष्वक्रत श्रवः क इमाँ२ आ दधर्षति॥
क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं यमराज्यं गच्छतु रिप्रवाहः।
इहैवायामितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन्॥
वह वपां जातवेदः पितृभ्यो यत्रैनान्वेत्थ निहितान् पराके।
मेदसः कुल्या उप तान्त्स्रवन्तु सत्या एषामाशिषः सं नमन्ताꣳ स्वाहा॥
स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी।
यच्छा नः शर्म सप्रथाः। अप नः शोशुचदघम्॥
अस्मात्त्वमधि जातोऽसि त्वदयं जायतां पुनः।
असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा॥ (शुक्ल यजुर्वेद, 35 अध्याय)

पितृकृपा प्राप्ति के लिये पितृसूक्त

उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु॥
अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां वयꣳसुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सोमनसे स्याम॥
ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासोऽनूहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः।
तेभिर्यमः सꣳरराणो हवीꣳष्युशन्नुशद्भिः प्रतिकाममत्तु॥
त्वꣳ सोम प्र चिकितो मनीषा त्वꣳ रजिष्ठमनु नेषि पन्थाम्।
तव प्रणीती पितरो न इन्दो दवेषु रत्नमभजन्त धीराः॥
त्वया हि नः पितरः सोम पूर्वे कर्माणि चक्रुः पवमान धीराः।
वन्वन्नवातः परिधी१ꣳ रपोर्णु वीरेभिरश्वैर्मघवा भवा नः॥
त्वꣳ सोम पितृभिः संविदानोऽनु द्यावापृथिवी आ ततन्थ।
तस्मै त इन्दो हविषा विधेम वयꣳस्याम पतयो रयीणाम्॥
बर्हिषदः पितर ऊत्यर्वागिमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम्।
त आ गतावसा शन्तमेनाथा नः शं योररपो दधात॥
आऽहं पितृन्त्सुविदत्रा2ꣳ अवित्सि नपातं च विक्रमणं च विष्णोः।
बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः॥
उपहूताः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु।
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥
आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥
अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत सदः सदः सदत सुप्रणीतयः।
अत्ता हवीꣳषि प्रयतानि बर्हिष्यथा रयिꣳसर्ववीरं दधातन॥
ये अग्निष्वात्ता ये अनग्निष्वात्ता मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते।
तेभ्यः स्वराडसुनीतिमेतां यथावशं तन्वं कल्पयाति॥
अग्निष्वात्तानृतुमतो हवामहे नाराशꣳसे सोमपीथं य आशुः।
ते नो विप्रासः सुहवा भवन्तु वयꣳस्याम पतयो रयीणाम्॥

(शुक्ल यजुर्वेद 219/49-61)

नित्य पितर तर्पण से पितृकृपा प्राप्ति का उपाय

प्राचीनकाल से ही हिन्दू धर्म में नित्य तर्पण में पितरों को तर्पण की व्यवस्था रखी गई थी। पितर तर्पण के साथ ही देव तर्पण, ऋषि तर्पण भी किया जाता था। पितर तर्पण का तात्पर्य यह होता था कि आप अपने पितरों को नित्य याद कर रहे हैं। जो व्यक्ति अपने पितरों के निमित्त नित्य तर्पण की क्रिया करता है, उसे जीवन में कदापि पितृदोष

जैसी समस्या का सामना नहीं करना पड़ता है। उस पर पितरों की कृपा हमेशा बनी रहती है। यहाँ नित्य तर्पण की क्रिया बताई जा रही है, जिसके द्वारा अपने पितरों को नित्य तर्पण अर्पित करके पितृकृपा प्राप्त कर सकते हैं।

प्रात:काल स्नान के पश्चात् अपने पूजनस्थल अथवा पितरों के स्थान पर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके अपसव्य होकर अर्थात् यज्ञोपवीत को दाहिने कंधे और बायें हाथ के नीचे करके दाहिने कंधे पर उपवस्त्र रखकर दाहिने हाथ में जल लेकर पितृतीर्थ से 3-3 जलांजलि दें। यदि आप यज्ञोपवीतधारी नहीं हैं, तो दाहिने कंधे पर कोई भी उपवस्त्र धारण करके यह क्रिया करें। यहाँ पितृतीर्थ से जलांजलि देने का तात्पर्य यह होता है कि अंगूठे को नीचे करें, जिससे अंगूठे और तर्जनी अंगुली के मध्य से जल पात्र में गिरे। तर्जनी अंगुली के मूल में पितृतीर्थ माना जाता है, इसलिये इसी स्थान से जल का तर्पण करना चाहिये। तर्पण करते समय निम्नांकित मंत्रों का उच्चारण करना चाहिये-

ॐ कव्यवाडनलादय: पितरस्तृप्यन्ताम् (जलांजलि दें)।
ॐ चतुर्दशयमास्तृप्यन्ताम् (जलांजलि दें)।
ॐ भू: पितरस्तृप्यन्ताम् (जलांजलि दें)।
ॐ भुव: पितरस्तृप्यन्ताम् (जलांजलि दें)।
ॐ स्व: पितरस्तृप्यन्ताम् (जलांजलि दें)।
ॐ भूर्भुव: स्व: पितरस्तृप्यन्ताम् (जलांजलि दें)।

अन्त में निम्नांकित मंत्र का जप करते हुए जलांजलि दें-

अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धा: कुले मम।
भूमौ दत्तेन तोयेन तृप्ता यान्तु परां गतिम्॥

पितरों के स्थान की शुद्धता का उपाय

घर में अपने पितरों का निवास होना शुभ माना जाता है। पितर जब घर में निवास करें, तो कुछ नियमों का ध्यान रखा जाना आवश्यक होता है। अनेक बार शुद्धता नहीं रखे जाने पर पितर रुष्ट हो जाते हैं। इसी प्रकार यदि आप अपने पितरों की स्थापना घर में करने जा रहे हैं, तो इस बात का ध्यान रखा जाना आवश्यक है कि उनके स्थान पर पवित्रता बनी रहे।

सामान्यत: घरों में परिण्डे पर पितरों का स्थान माना जाता है। परिण्डे से तात्पर्य उस स्थान का होता है, जहाँ पीने वाला जल रखा जाता है। परिण्डे में मटकी, बाल्टी, चरी इत्यादि वे बर्तन रखे जाते हैं, जिनमें पीने का जल रखा जाता है। प्राचीनकाल में घर में परिण्डे के लिये पृथक् से स्थान बनवाया जाता था, वहीं पर एक छोटी सी ताक या आला बनवाया जाता था, जिसे पितरों का स्थान समझा जाता था। उसकी पवित्रता का विशेष ध्यान रखा जाता था। वर्तमान में इस प्रकार के स्थान का प्रचलन नहीं होता है,

लेकिन प्रत्येक घर में पीने वाले जल का स्थान अवश्य निश्चित रहता है। यदि आपने अपने घर में परिण्डा नहीं बनवा रखा है, तो भी पीने वाले जल के स्थान की पवित्रता का विशेष ध्यान रखें। इस स्थान का झूठे हाथ से, जूते अथवा चप्पल पहने हुए, गंदे हाथों से, बाहर से आने के पश्चात् सीधे हाथ नहीं लगाने चाहिये। पहले हाथ स्वच्छ करें, तत्पश्चात् जल लें। परिण्डे से जिस पात्र के द्वारा जल निकाला जाता हो, उसकी स्वच्छता का भी विशेष ध्यान रखें। उस पात्र से सीधे जल का सेवन नहीं करें। जो स्त्री मासिक चक्र से हो, वह भी पाँच दिनों तक उस स्थान का स्पर्श नहीं करे। इसी प्रकार शराब का सेवन किया हुआ कोई भी व्यक्ति उस स्थान पर नहीं जाये। प्राचीन मान्यता है कि जिसके घर में परिण्डे की स्वच्छता नहीं रखी जाती है, उसके पितर उससे नाराज रहते हैं, जहाँ पर परिण्डे की पवित्रता रखी जाती है, वहाँ पितर प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हैं।

यह उपाय भले ही सामान्य हो, लेकिन इसके परिणाम चामत्कारिक होते हैं। आपके घर में यदि पितरों का अन्य स्थान निश्चित किया गया है, तो उसकी पवित्रता उक्त प्रकार से रखी जानी आवश्यक है।

पीपल वृक्ष की पूजा से पितृदोष का निवारण

पीपल वृक्ष में सभी देवी-देवताओं का निवास माना जाता है। देवी-देवताओं के साथ ही पीपल में पितरों का निवास भी मानते हैं। जो व्यक्ति पितृदोष से पीड़ित हो, उसको पितरों की सन्तुष्टि के लिय अन्य उपायों के साथ ही पीपल का पूजन-अर्चन, दीपदान, अभिषेक इत्यादि अवश्य करना चाहिये। हिन्दू धर्म में पीपल के वृक्ष का अत्यधिक महत्त्व माना जाता है। प्रत्येक मन्दिर में पीपल का वृक्ष अवश्य होता है। जैसे मन्दिर में स्थापित विग्रह व्यक्ति का कल्याण करने वाले होते हैं, उसी प्रकार पीपल का वृक्ष भी व्यक्ति का कल्याण करने वाला होता है।

जो व्यक्ति पितृदोष से पीड़ित हो, उसको सोमवती अथवा शनैश्चरी अमावस्या के दिन से यह उपाय प्रारम्भ करना है। प्रात:काल अथवा सायंकाल गोधूलि बेला में तांबे के पात्र में जल लेकर तथा घी का दीपक लेकर पीपल वृक्ष के पास जायें। वहाँ जाने के पश्चात् सर्वप्रथम पीपल वृक्ष में विराजमान पितरों का स्मरण करें। स्मरण करने के पश्चात् तांबे के पात्र में जो जल लाये हैं, उसे पीपल वृक्ष पर अर्पित कर दें अर्थात् पीपल का जलाभिषेक करें। तत्पश्चात् घी का दीपक प्रज्वलित करें और **पितृगायत्री मंत्र** का उच्चारण करते हुए अपने पितरों का स्मरण करें और उनकी प्रसन्नता के लिये प्रार्थना करते हुए पीपल वृक्ष की तीन परिक्रमायें करें। यह उपाय करने के पश्चात् बिना रास्ते में कहीं रुकें घर आ जायें। यह उपाय जब आप करने के लिये घर से निकलें, तब भी रास्ते में किसी से कोई बात नहीं करें और न ही किसी जगह पर रुकें। यदि आपको कोई व्यक्ति रास्ते में टोक दे, तो उसका जवाब नहीं दें। यदि जवाब देना पड़े, तो ऐसी स्थिति

में घर पर पुनः जाकर उपाय के लिये दुबारा निकलें। सम्भव हो, तो प्रातःकाल जलार्पण एवं परिक्रमा करें तथा दीपक प्रज्वलन का कार्य सायंकाल करें।

यह उपाय प्रत्येक अमावस्या के दिन करना है। यदि सम्भव हो, सके तो नित्य भी किया जा सकता है। यदि दीपक प्रज्वलन प्रतिदिन सम्भव नहीं हो, तो पीपल का जलाभिषेक नित्य किया जा सकता है। इस उपाय से पितर प्रसन्न होकर आपकी सभी इच्छायें पूर्ण करेंगे और आपके घर में विद्यमान पितृदोष भी धीरे-धीरे समाप्त हो जायेगा। इस उपाय को करते समय यह ध्यान रखें कि आप जिस पात्र से पीपल का जलाभिषेक कर रहे हैं, वह लोहे का नहीं होना चाहिये। उसी प्रकार दीपक भी लोहे का नहीं हो। इस हेतु मिट्टी के दीपक का प्रयोग किया जाना श्रेष्ठ है। सम्भव हो तो जल में कुछ मात्रा गंगाजल की भी मिला लें।

पीपल को पितृदोष के निवारण के साथ ही अन्य समस्याओं के निवारण के लिये भी श्रेष्ठ माना जाता है। जो व्यक्ति पीपल वृक्ष पर नित्य दीपदान करता है, उसे जीवन में कदापि धन-सम्बन्धी समस्या का सामना नहीं करना पड़ता है। यदि जीवन में बहुत अधिक कर्ज हो गया है, तो प्रत्येक मंगलवार के दिन दीपदान करना चाहिये। शनिग्रह के अशुभ दोषों को शान्त करने के लिये शनिवार के दिन दीपदान करना चाहिये और कच्चे सूत को पीपल के वृक्ष पर बांधना चाहिये।

पितृदोष निवारण के लिये श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ

श्रीमद्भगवद्गीता एक ऐसा अमर ग्रंथ है, जो मानवजाति के कल्याण के लिये श्रेष्ठ माना जाता है। मृत्यु से पूर्व जीवनकाल में और मृत्यु के पश्चात् वाले जीवन को ज्ञान मुक्ति देने वाला माना जाता है। जिस घर में श्रीमद्भगवद्गीता का नित्य पाठ होता है, वहाँ कभी किसी प्रकार के रोग और शोक उत्पन्न नहीं होते, क्योंकि गीता के ज्ञान को ग्राह्य कर लेने वाले मनुष्य के लिये सुख और दुःख के कोई मायने नहीं रह जाते।

पितृदोष से पीड़ित व्यक्ति के लिये भी श्रीमद्भगवद्गीता के पठन का अत्यधिक महत्त्व माना जाता है। यही कारण है कि मरणासन्न व्यक्ति को गीता पाठ सुनाने से उसकी मुक्ति के मार्ग खुल जाते हैं। व्यक्ति मोह बंधन से मुक्त हो जाता है। घर में रहने वाले पितरों की मुक्ति हो जाती है।

यदि आप पितृदोष से पीड़ित हैं, तो आपके लिये श्रीमद्भगवद्गीता सभी प्रकार की समस्याओं का उत्तम मार्ग है। गीता का पाठ किसी भी शुभ मुहूर्त से प्रारम्भ करते हुए अपने पितरों को सुनाने से उस घर में विद्यमान पितृदोष दूर हो जाता है। गीता पाठ के साथ ही आपको अन्य पितृकर्म करने आवश्यक हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि आप श्राद्ध, तर्पण, पितरों की स्थापना इत्यादि पितर कार्यों से अपने पितरों को संतुष्ट करने के पश्चात् यह उपाय करें। इस उपाय से सबसे अधिक लाभ यह होता है कि जिस घर के

पितर वहाँ किसी मोह वश काफी लम्बे समय तक रह जाते हैं, तो उनकी मुक्ति भी इस उपाय से हो जायेगी। उनकी मुक्ति आपके लिये अत्यधिक प्रसन्नता वाली है, क्योंकि जब किसी पितर की मुक्ति उसके परिजनों के प्रयासों से होती है, तो वह उन्हें बहुत आशीर्वाद प्रदान करता है, जिसके कारण उन सभी परिजनों की मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त होता है और उस घर में कदापि पितृदोष जैसी समस्या उत्पन्न नहीं होती।

यदि आपके पास इतना समय नहीं है कि आप श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ कर सकें तो ऐसी स्थिति में पण्डितों के माध्यम से भी आप किसी विशेष मुहूर्त में यह उपाय करवा सकते हैं। पितरों के निमित्त होने वाले सभी कार्य अमावस्या के दिन शुभ माने जाते हैं, इसलिये गीता के पाठ आप अमावस्या के दिन दोपहर के समय करवा सकते हैं। जिस घर में गीता श्रवण की जाती है, वहाँ के पितर उसे सुनकर संतुष्ट रहते हैं और वहाँ किसी प्रकार की नकारात्मक शक्ति उत्पन्न नहीं होती है। यदि गीता का सम्पूर्ण पाठ एक साथ करना सम्भव नहीं हो, तो एक अध्याय का नित्य पाठ भी किया जा सकता है।

पितृदोष मुक्ति का अचूक उपाय

यह उपाय पितृदोष निवारण के लिये श्रेष्ठ फलदायक है। इस उपाय को एक बार करने से ही चामत्कारिक फल प्राप्त होते हैं। यह उपाय आपको किसी भी माह की अमावस्या पर करना है। यदि वैशाख अथवा माघ माह की अमावस्या पर किया जाये, तो अधिक फलदायी होता है। इस हेतु अमावस्या के दिन आपको पितरों के निमित्त श्राद्धकर्म करना है, जिसमें 9 ब्राह्मणों के साथ ही अपने निकटस्थ सभी रिश्तेदारों को भी बुलायें। श्राद्ध में आप जो भी भोजन अपने पितरों के निमित्त बनवायें, उसमें खीर अवश्य होनी चाहिये। जिस दिन यह उपाय किया जाना हो, उस दिन प्रातःकाल सूर्योदय से पहले उठ जायें। स्नान से पूर्व पूरे घर की सफाई और धुलाई करें। तत्पश्चात् स्नान से निवृत्त होकर सफेद वस्त्र धारण करें। घर की स्त्रियां पीले अथवा हरे वस्त्र धारण करें।

श्राद्ध के लिये भोजन सामग्री घर में ही बनवाई जाये, तो उत्तम रहता है। श्राद्ध में वर्जित किसी भी वस्तु का प्रयोग भोजन सामग्री में नहीं करें। कुतुपकाल से पहले अथवा अभिजित मुहूर्त से पहले ही भोजन बनवाकर तैयार कर लें। अब सबसे पहले पंचबलि निकालें। पंचबलि में गाय, कुत्ता, चींटी, कौआ और देवताओं के निमित्त सभी खाद्य पदार्थों का भोग लगाया जाता है। देवताओं के निमित्त अग्नि में भोग लगायें और शेष के लिये ग्रास निकालकर उन्हें अर्पित करें।

पंचबलि निकालने के पश्चात् ब्राह्मणों को भोजन करवायें। भोजन करवाते समय ब्राह्मणों से किसी प्रकार का वार्तालाप नहीं करें। उनमें अपने उन पितरों का ध्यान करें, जिनके कारण आपको पितृदोष की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। भोजन के

पश्चात् उन ब्राह्मणों की तीन परिक्रमायें करें और उनमें अपने पितरों का रूप देखते हुए प्रणाम करें। प्रणाम के पश्चात् लौंग-इलायची से युक्त ताम्बूल खिलायें और पहनने के वस्त्र-उपवस्त्र, जूते अथवा चप्पल एवं अन्य सामग्री, जो आप यथाशक्ति प्रदान कर सकते हैं, उसका दान करें। इन सामग्रियों में चाँदी का दान अवश्य रूप से सम्मिलित हो। चाँदी की कोई भी वस्तु चाहे वह कितनी भी मात्रा में हो, अवश्य दान करनी चाहिये। चाँदी का दान यदि पितरों के निमित्त किया जाता है, तो श्रेष्ठ माना जाता है।

ब्राह्मणों के भोजन के पश्चात् अपने पुत्री के पुत्र अथवा बहिन के पुत्र एवं पुत्रियों को भोजन करवाना चाहिये। उन्हें भी अपनी यथाशक्ति अनुसार उपहार प्रदान करने चाहिये। उनको भोजन करवाने के पश्चात् घर में आये सभी रिश्तेदारों को भोजन करवायें और अन्त में परिवार के सभी सदस्यों के साथ स्वयं भोजन करें।

उपरोक्त उपाय आपको वर्ष में एक बार अवश्य करना है। इस उपाय को पहली बार करने के पश्चात् ही आपको श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त होने लग जायेंगे। आपको जिस पितृदोष के कारण बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है, वे बाधायें धीरे-धीरे समाप्त होने लग जायेंगी और आप पितृदोष के कारण जिन समस्याओं से परेशान हो रहे हैं, वे भी समाप्त हो जायेंगी।

पितरों के रात्रि जागरण से पितृकृपा प्राप्ति का उपाय

जिस प्रकार घर में किसी देवी-देवताओं के निमित्त विशेष पूजा-उपासना की जाती है, वैसे ही पितरों के निमित्त जागरण करना चाहिये। पितरों के निमित्त किया जाने वाला रात्रि जागरण अमावस्या से एक रात्रि पूर्व किया जाता है। रात्रि जागरण से तात्पर्य यह है कि पितरों का पूजन कर उनका आवाहन किया जाता है और उनकी संतुष्टि के लिये विभिन्न प्रकार के नैवेद्य अर्पित किये जाते हैं, साथ ही उनकी प्रशंसा में विभिन्न प्रकार के भजन एवं गीत गाये जाते हैं।

इस प्रकार के रात्रि जागरण शहरों की अपेक्षा गांवों में अधिक देखे जाते हैं, हालांकि प्राचीनकाल में पितरों की कृपा प्राप्ति के लिये रात्रि जागरण का विशेष महत्त्व माना जाता था, लेकिन समय परिवर्तन के साथ ही यह व्यवस्था भी कम होती चली गई। वैसे घर में जब भी कोई बड़ा मांगलिक कार्य सम्पन्न होता है अर्थात् विवाह आदि कार्य होते हैं, तो वहाँ भी मांगलिक कार्य से एक रात्रि पूर्व पितरों का रात्रि जागरण कर पितरों के निमित्त नैवेद्य अर्पित किया जाता है और उनके निमित्त भजन एवं गीत गाये जाते हैं। इसका तात्पर्य यह होता है कि उस मांगलिक अवसर पर हम अपने पितरों को भूले नहीं हैं और इस अनुष्ठान के माध्यम से उन्हें याद करने का प्रयास कर रहे हैं।

जो व्यक्ति पितृदोष से पीड़ित हैं, वह भी अपने घर पर अमावस्या से एक रात्रि पूर्व इस प्रकार के रात्रि जागरण का आयोजन कर सकते हैं। भारत के अनेक शहरों में इस

प्रकार का रात्रि जागरण करने वाले लोकगायक भी होते हैं, जो आपके घर में आकर रात्रि जागरण कार्यक्रम को सम्पन्न कर सकते हैं। इस जागरण के अगले दिन पितरों के निमित्त विधि-विधान से श्राद्ध कार्य अवश्य सम्पन्न करवाना चाहिये। जो व्यक्ति ऐसा करता है, उसके जीवन में चल रहा किसी भी प्रकार का पितृदोष समाप्त हो जाता है और उसके पितर प्रसन्न होकर उसे आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

यह उपाय उन व्यक्तियों को अवश्य करवाना चाहिये जिन्हें पितृदोष के कारण किसी गम्भीर समस्या से गुजरना पड़ रहा है। इस उपाय को करवाने के पश्चात् कुछ ही समय में चामत्कारिक फल प्राप्त होंगे। इस उपाय के पश्चात् नियमित रूप से पितरों का पूजन भी करना चाहिये। एक बार पितरों की कृपा प्राप्त हो जाये, तो वह नियमित रूप से बनी रहती है और जीवन में किसी भी प्रकार की बाधा नहीं आती है। यदि आ भी जाये, तो पितर उस समस्या को दूर कर देते हैं। वर्ष में एक बार इस प्रकार का रात्रि जागरण अवश्य करवाना चाहिये।

भगवान विष्णु के पूजन से पितृदोष निवारण

पितृदोष निवारण के निमित्त जितने भी उपाय बताये गये हैं, उनमें भगवान विष्णु का पूजन भी सम्मिलित हैं। अनेक प्राचीन ग्रंथों में उल्लेख है कि जिस परिवार के सदस्यों से पितर असन्तुष्ट हों, वहाँ पर **हरिवंशपुराण** अथवा **श्रीमद्भागवत पुराण** का पाठ करना चाहिये और भगवान विष्णु का पूजन-अर्चन करना चाहिये। भगवान विष्णु के पूजन-अर्चन के निमित्त घरों में शालग्राम रखने का रिवाज होता है। जिस घर में शालग्राम की स्थापना होती है, वहाँ पर किसी भी प्रकार का अनिष्ट नहीं होता है तथा उस घर के पितर भी सन्तुष्ट रहते हैं।

यदि आप पितृदोष की समस्या से ग्रस्त हैं, तो ऐसे में आपके लिये पितृदोष निवारण के अन्य उपायों के साथ ही भगवान विष्णु का पूजन-अर्चन करना भी श्रेष्ठ होगा। इस हेतु अपने घर में भगवान विष्णु के विग्रह अथवा शालग्राम की स्थापना करके उनका नित्य पूजन-अर्चन करें। उन्हें नित्य नैवेद्य अर्पित करें। जिस घर में शालग्राम की स्थापना होने के पश्चात् नित्य पूजन-अर्चन नहीं किया जाता है, यह एक प्रकार का दोष रहता है। इसलिये शालग्राम की स्थापना के पश्चात् उसका नियमित पूजन-अर्चन होना आवश्यक है। पितृदोष के निवारण के लिये भगवान विष्णु के पूजन के साथ ही श्राप विमोचन करके **विष्णुसहस्त्रनाम स्तोत्र** तथा **गजेन्द्रमोक्षस्तोत्र** का पाठ भी अवश्य करना चाहिये। इससे भगवान विष्णु की कृपा आपके घर पर सदा बनी रहेगी और आपके घर के पितरों की मुक्ति में भगवान विष्णु आशीर्वाद प्रदान करेंगे। पितर भी भगवान विष्णु की पूजा-उपासना से बहुत ही प्रसन्न रहते हैं और आशीर्वाद प्रदान करते हैं। भगवान विष्णु के विग्रह अथवा शालग्राम की स्थापना विशेष मुहूर्त में करवानी

चाहिये। इस हेतु पूर्णिमा, नवरात्र इत्यादि शुभ मुहूर्त ग्राह्य होते हैं।

एकादशी के व्रत से पितृदोष का निवारण

घर में जब किसी परिजन की मृत्यु होती है, तो उसके द्वादशाह कर्म के दौरान पण्डित के द्वारा घर के सदस्यों को उस परिजन की मुक्ति के लिये कुछ नियम दिये जाते हैं, उन नियमों में एकादशी व्रत का संकल्प सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। अनेक बार घर के परिजन मृतक की आत्मा की सन्तुष्टि के लिये एकादशी के व्रत का संकल्प तो ले लेते हैं, परन्तु उसे पूर्ण नहीं कर पाते हैं। ऐसी स्थिति में यदि उस मृतक परिजन की मुक्ति नहीं हो, तो वह पितर योनि में जाकर पितृदोष उत्पन्न कर सकता है। इसलिये इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि जो संकल्प आपने लिया है, उसे पूरा अवश्य किया जाना चाहिये।

वैसे एकादशी का व्रत व्यक्ति को विभिन्न प्रकार के कष्टों के साथ ही पितृदोष से भी मुक्ति दिलाता है। यदि आप पितृदोष से पीड़ित हैं, तो इस समस्या के निवारण के लिये आपको एकादशी का व्रत अवश्य करना चाहिये। एकादशी के व्रत से न केवल व्यक्ति के पाप नष्ट होते हैं, वरन् उसके अन्दर अनेक सद्गुण भी उत्पन्न होते हैं। पुराणों में इस व्रत की महिमा को विस्तृत रूप से उल्लिखित किया है। एक माह में दो बार एकादशी तिथि आती है। इन दोनों तिथियों में व्रत करना श्रेष्ठ माना जाता है। जो व्यक्ति नियमित रूप से एकादशी का व्रत करते हैं, उनके पितर हमेशा सन्तुष्ट रहते हैं। कुपित हुए पितरों को सन्तुष्ट करने के दृष्टिकोण से भी यह व्रत श्रेष्ठ माना जाता है। यदि आप अपने पितरों की कृपा प्राप्त करना चाहते हैं, तो किसी भी माह की एकादशी से इस व्रत को प्रारम्भ किया जा सकता है। इस व्रत पर अन्न ग्रहण नहीं करें तथा भगवान विष्णु का पूजन-अर्चन करें। व्रत से पूर्व प्रातःकाल इस व्रत का संकल्प अवश्य लेना चाहिये। संकल्प में पितरों की सन्तुष्टि और पितृदोष निवारण की प्रार्थना अवश्य करनी चाहिये। यह व्रत नियमित रूप से करते रहने पर कुछ ही समय पश्चात् पितृदोष की समस्या कम होते हुए समाप्त हो जाती है।

भगवान शिव के पूजन से पितृदोष निवारण

त्रिदेवों में महादेव, जीवों के सभी कष्टों को हरने वाले देव हैं। भगवान शिव की पूजा-उपासना विभिन्न कार्यों के लिये की जाती है। इनकी निष्काम उपासना जहाँ व्यक्ति को मोक्ष प्रदान करती है, वहीं सकाम उपासना से वे कार्य सिद्ध हो जाते हैं, जिनके निमित्त आपने वह उपासना की है। महादेव की उपासना पितृदोष निवारण के लिये उत्तम फल देने वाली मानी जाती है। भगवान शिव को प्रलय का देवता माना जाता है। वे जीवों को मुक्ति देने वाले हैं, इसलिये जीव अपनी मुक्ति की प्रार्थना भगवान शिव से ही करता है। पितृदोष निवारण में भगवान शिव का पूजन महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इस

हेतु शिवलिंग का अभिषेक करना श्रेष्ठ है। यह अभिषेक रुद्र पाठ के साथ करवाना चाहिये। रुद्राष्टाध्यायी एक वैदिक पाठ है, जो व्यक्ति के अनेक मनोरथों को पूर्ण करने वाला है। इस पाठ के माध्यम से भगवान शिव से व्यक्ति सभी प्रकार का कल्याण करने की प्रार्थना करता है। यदि अनुष्ठान आप अपने पितरों के निमित्त करवाने जा रहे हैं, तो इसे अमावस्या के दिन करवाना श्रेष्ठ फलप्रद होगा। इस हेतु देवकार्य अमावस्या ग्राह्य होती है। अमावस्या के दिन भगवान शिव के मन्दिर में जाकर यह कार्य करवायें। इस उपाय से आपको कुछ ही समय पश्चात् अत्यधिक चामत्कारिक लाभ होगा। आपके जीवन में चल रही पितृदोष से सम्बन्धित समस्या समाप्त होने लग जायेगी। सामान्यत: भगवान शिव का पूजन अपनी अनेक मनोकामनाओं के लिये करवाया जाता है। श्रावण मास की सम्पूर्ण अवधि में भगवान शिव का पूजन-अर्चन सभी लोग करते हैं। श्रावण अमावस्या के दिन यदि पितृदोष निवारण के निमित्त रुद्राभिषेक करवाया जाये, तो अत्यधिक श्रेष्ठ होगा। इसका परिणाम आपको शीघ्र ही देखने को मिलेगा।

गया श्राद्ध के द्वारा पितृदोष से मुक्ति

श्राद्ध के अनेक प्रकार बताये गये हैं। अपने पितरों के निमित्त श्रद्धा के द्वारा जो कार्य किया जाता है, उसे ही श्राद्ध कहते हैं। श्राद्धकर्म के अनेक नियमों का इस पुस्तक में विस्तार से उल्लेख किया गया है तथा श्राद्ध के विभिन्न प्रकार भी बताये हैं। पितृदोष निवारण में गया श्राद्ध का अत्यधिक महत्त्व माना जाता है। यह श्राद्ध अन्य श्राद्धों की अपेक्षा श्रेष्ठ होने के अनेक कारण हैं, जिनमें गया का पवित्र होना सबसे मुख्य है। पितृतीर्थ गया जाकर किया जाने वाला श्राद्ध ही **गया श्राद्ध** कहलाता है। जो व्यक्ति गयाजी में जाकर अपने पितरों के निमित्त श्राद्ध करता है, उसके पितर उससे बहुत संतुष्ट होते हैं। अनेक प्रकार का आशीर्वाद देते हैं तथा वंश बढ़ाने के लिये पुत्र प्रदान करते हैं। गया में जाकर 17, 7, 5 अथवा 3 दिनों तक श्राद्ध करने की व्यवस्था है। वहाँ एक दिन रुककर भी श्राद्ध किया जा सकता है। गया श्राद्ध के लिये समय का कोई प्रतिबंध नहीं है। चाहे अधिमास हो अथवा गुरु-शुक्र अस्त। आप वहाँ कभी भी जाकर श्राद्ध कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। समस्त ऋषि और पितृगण वहाँ सदा निवास करते हैं। पितृपक्ष के दौरान भी सम्पूर्ण अवधि में यहाँ रुककर अपने पितरों के निमित्त श्राद्धकर्म करवाया जा सकता है।

गया श्राद्ध के कुछ विशेष नियम होते हैं, जैसे- संकल्प लेने के पश्चात् जब आप गया श्राद्ध के लिये यात्रा प्रारम्भ कर दें, तो उसके बाद घर में किसी भी प्रकार का सूतक लगे, वह मान्य नहीं होता। घर से निकलने के पश्चात् बिना किसी अन्य मंदिर अथवा तीर्थस्थान जाने की अपेक्षा गया जाकर अपने पितरों का श्राद्ध सम्पन्न करना चाहिये। यह श्राद्ध घर का कोई भी सदस्य कर सकता है। इतना ही नहीं, सगोत्री व्यक्ति जाकर भी इस

श्राद्ध को सम्पन्न कर सकते हैं। आप जब गया में जाकर अपने पितरों के निमित्त श्राद्धकर्म सम्पन्न करवाते हैं, उससे पितर बहुत प्रसन्न होते हैं और किसी भी प्रकार का पितृदोष होने पर वह समाप्त हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवनकाल में एक बार गया जाकर अपने पूर्वजों के निमित्त श्राद्धकर्म अवश्य करवाना चाहिये। यदि आप पितृदोष से पीड़ित हैं और विभिन्न उपाय करने के पश्चात् भी कोई विशेष लाभ नहीं हो रहा है, तो ऐसी स्थिति में गया जाकर श्राद्ध करना आपके लिये श्रेष्ठ फलदायक सिद्ध होगा।

श्रीमद्‌भागवत पुराण के पाठ से पितृदोष निवारण

श्रीमद्भागवत पुराण कलियुग में जीवों के लिये अमृत के समान है। अष्टादश पुराणों में यह पुराण वह महाग्रंथ है, जिसके रसास्वादन से जीव का न केवल यह लोक सुधरता है, वरन् इहलोक भी सुधर जाता है। पारलौकिक कल्याण के लिये भी श्रीमद्भागवत पुराण का श्रवण जीवों के कल्याण के लिये आवश्यक बताया गया है। इस महापुराण के द्वादश स्कंध और 18,000 श्लोकों में सम्पूर्ण वैदिक तथा पौराणिक साहित्य का सार है, जिन्हें विभिन्न कथाओं के माध्यम से बताने का प्रयास किया गया है। इस महापुराण का सर्वप्रथम वाचन कलियुग के प्रारम्भ होने के 30 वर्ष के पश्चात् शुकदेवजी ने राजा परीक्षित के समक्ष भाद्रपद शुक्ल नवमी को किया था। इसके 200 वर्ष पश्चात् गोकर्णजी ने अपने भाई धुंधुकारी की मोक्ष के लिये इस महापुराण का वाचन किया था। इसके 30 वर्ष पश्चात् सनकादि मुनियों ने भक्ति, मुक्ति, ज्ञान और वैराग्य को बलिष्ठ करने के लिये हरिद्वार में नारदजी की यजमानी में इस कथा का पाठ किया था।

श्रीमद्भागवत पुराण का पाठ प्रारम्भ से ही कलियुग में मोक्षप्रदायक माना जाता है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण धुंधुकारी की कथा से मिलता है। पितृदोष सम्बन्धित किसी भी चर्चा में गोकर्ण एवं धुंधुकारी की कथा का वाचन अथवा श्रवण श्रेष्ठ फल देने वाला कहा गया है, इसलिये आपके लाभ को दृष्टि में रखते हुए इस कथा का उल्लेख किया जा रहा है-

बहुत समय पहले की बात है। तुंगभद्रा नदी के तट के पास एक सुन्दर नगर था। वहां एक ब्राह्मण आत्मदेव रहता था। वह पूर्ण रूप से सदाचारी, ईश्वर को मानने वाला और सदा सत्य के पथ पर चलने वाला विद्वान व्यक्ति था। वह जितना योग्य एवं विद्वान था, उसकी पत्नी धुन्धुली उतनी ही कर्कशा और झगड़ालू स्वभाव की स्त्री थी। आत्मदेव पूर्ण प्रयत्न करके अपनी पत्नी के साथ जीवन व्यतीत कर रहा था। उसे समस्त प्रकार के सुख एवं भोग प्राप्त हो रहे थे। जीवन में किसी प्रकार का अभाव नहीं था, इसके उपरांत भी उन्हें एक सबसे बड़ा अभाव था, वह यह था कि उनके कोई संतान नहीं थी। धुन्धुली को इस बारे में विशेष चिंता नहीं थी किन्तु आत्मदेव को बहुत अधिक चिन्ता रहती थी। वह यह सोच कर उदास रहता कि पुत्र संतति के अभाव में उनका वंश आगे

कैसे बढ़ेगा ? उसकी मृत्यु होने पर कौन अन्त्येष्टि करेगा ? पुत्र प्राप्ति के लिये उसने भरसक प्रयत्न किये। विभिन्न देवस्थानों पर गया, ईश्वर की सेवा-पूजा की, ईश्वर से पुत्र संतति का आशीर्वाद मांगा किन्तु उसकी यह अभिलाषा पूरी न हो सकी। इस कारण वह प्रतिदिन उदासी के अन्धकार में डूबता चला जा रहा था।

एक दिन जब उसका मन अत्यधिक व्यग्र हो गया तो वह घर से निकल कर वन में चला गया। वन में आकर वह वहां बहने वाले सरोवर के किनारे बैठ गया। वहीं उसे एक संन्यासी महात्मा के दर्शन हुये। उनके चेहरे पर व्याप्त तेज बता रहा था कि वह बहुत विद्वान और तपबल रखने वाले महात्मा हैं। आत्मदेव के मन में विश्वास जाग्रत हो उठा कि अवश्य ही यह महात्मा उनके दिल की कामना को पूरा करेंगे तथा उसे पुत्र प्राप्ति का मार्ग बतायेंगे। वह महात्मा के पास गया। हाथ जोड़ कर प्रणाम किया। फिर बोला कि हे महात्मा, आप त्रिकालज्ञ हैं, इसलिये मेरे दु:ख को दूर करने की कृपा करें। फिर उसने अपने दु:ख के बारे में बता दिया। महात्मा ने शांति के साथ आत्मदेव की बात को सुना। फिर बोले कि मैं तुम्हारा ललाट देख कर पढ़ सकता हूं कि तुम्हारे भाग्य में क्या है ? इसलिये अपना चेहरा ऊपर कर लो।

आत्मदेव ने वैसा ही किया। सिर ऊंचा कर लिया। महात्मा ने उसके ललाट पर अपनी दृष्टि डाली और कहा कि तुम्हारे भाग्य में सात जन्मों तक किसी भी संतान का योग नहीं है। इसलिये तुम्हारी संतान की अभिलाषा पूरी न हो पायेगी। अच्छा यही होगा कि तुम संतान प्राप्ति की कामना का त्याग करके अपना शेष जीवन ईश्वर की सेवा में लगा दो। वही तुम्हारा कल्याण करेंगे।

महात्माजी की बात आत्मदेव को रुचिकर नहीं लगी। उसने पुन: हाथ जोड़े और कहा कि आप वास्तव में त्रिकालज्ञ हैं, इसलिये आप भाग्य के निर्णय को भी बदल सकते हैं। आप चाहें तो मुझे संतान का सुख प्राप्त हो सकता है। अगर आप मेरी इच्छा को पूरा नहीं करेंगे तो मैं अभी आपके सामने इस सरोवर में कूद कर अपने प्राणों को त्याग दूंगा। ऐसे में आप ब्रह्महत्या के पाप से बच नहीं सकेंगे।

आत्मदेव के हठ को देख कर महात्मा जी कुछ देर के लिये विचारमग्न हो गये। फिर उन्होंने कहा कि भाग्य में जो भी लिखा होता है वह स्वयं विधाता द्वारा लिखा होता है। किसी में इतनी शक्ति नहीं होती कि विधाता के लिखे को मिटा सके अथवा बदल सके। अगर तुम विधाता के लिखे भाग्य को बदल कर पुत्र की प्राप्ति करना चाहते हो तो ध्यान रखना, उससे तुम्हें किसी प्रकार के सुख की प्राप्ति नहीं होगी। इसके उपरांत भी तुम हठ कर रहे हो तो मैं अपने तपबल से तुम्हारी इच्छा पूर्ति कर देता हूं। मैं तुम्हें एक फल देता हूं, इसे घर ले जाकर पत्नी को खिला देना। इससे तुम्हें पुत्र की प्राप्ति होगी। अपनी पत्नी को यह बात समझा देना कि पुत्र के जन्म तक वह सदाचार से रहे, सत्य

बोले, दान करे और एक समय केवल भात खाकर जीवन जीये तथा भगवान का स्मरण करे। अगर तुम्हारी पत्नी ने ऐसा कर लिया तो तुम्हें योग्य संतान की प्राप्ति होगी। ऐसा कह कर महात्मा जी ने एक फल आत्मदेव को दे दिया और उसे जाने को कहा।

आत्मदेव महात्मा जी द्वारा दिये गये फल को प्राप्त करके प्रसन्न हो गया। उसे लगने लगा था कि शीघ्र ही उसे पुत्र की प्राप्ति होगी। घर आकर उसने सारा वृत्तांत अपनी पत्नी को सुना दिया। फल उसे देते हुये कहा कि स्नान-ध्यान करके इस फल को खा लेना और पुत्र जन्म तक महात्मा जी ने जैसा कहा है, वैसा ही आचरण करें। अवश्य ही हमारे यहां भी संतान का जन्म होगा। इसके बाद वह घर से निकल गया।

धुन्धुली को संतान के बारे में किसी प्रकार की चिंता नहीं थी। उसने विचार किया कि यदि उसने फल खा लिया तो उसे सदाचार से रहना होगा, सत्य बोलना होगा, दान देना होगा और एक समय केवल भात खाकर ही जीना पड़ेगा, जो उसके लिये सम्भव नहीं था। इसके साथ ही उसने यह भी विचार किया कि गर्भधारण से लेकर पुत्र जन्म तक अनेक कष्ट उसे झेलने पड़ेंगे, फिर पुत्र जन्म के बाद उसके पालन-पोषण को लेकर परेशान होना पड़ेगा। उसे लगा कि यह सब उससे नहीं हो पायेगा। इतने कष्टों के बाद पुत्र प्राप्त होने से यही अच्छा है कि वह बांझ ही रहे। ऐसा विचार करके उसने वह फल अपनी गाय को खिला दिया और पति से झूठ बोल दिया कि उसने फल खा लिया है। इन्हीं दिनों में उसकी छोटी बहिन गर्भवती हो गयी। उसने बहिन के साथ यह निश्चित कर लिया कि जब उसके संतान हो तो वह संतान उसे दे देगी और वह पति को बता देगी कि उसे संतान हुई है। बहिन इसके लिये राजी हो गई। समय आने पर उसे पुत्र की प्राप्ति हुई। यह पुत्र उसने धुन्धुली को दे दिया। धुन्धुली ने पति को बताया कि उसे पुत्र की प्राप्ति हुई है। यह फल खाने के चमत्कार का प्रभाव था। पुत्र प्राप्त कर आत्मदेव बहुत प्रसन्न हुआ। उसने पुत्र का नाम धुन्धुकारी रखा।

इसी समय के आस-पास ही गाय को भी एक बालक उत्पन्न हुआ। वह बालक पूरी तरह से मनुष्य था, केवल उसके कान गाय के समान बड़े-बड़े थे। इस कारण उसका नाम गोकर्ण रखा गया। आत्मदेव ने उसे भी अपना पुत्र स्वीकार कर लिया। समय के साथ गोकर्ण बड़ा होने लगा। वह जैसे-जैसे बड़ा हो रहा था वैसे-वैसे उसमें विद्वान महात्माओं के समान गुण परिलक्षित होने लगे थे। वह कम आयु में ही विद्वान और ज्ञानी बन गया। दूसरी तरफ धुन्धुकारी इसके बिलकुल विपरीत निकला। वह दुश्चरित्र, आचरणहीन, चोर, बेईमान तथा वेश्यागामी सिद्ध हुआ। वह किसी प्रकार का काम करने के स्थान पर घर से पैसे चुरा कर उनको वेश्याओं पर लुटा देता। पिता इस पर क्रोध करते, तो वह उन पर भी बिगड़ जाता। आत्मदेव ऐसे पुत्र को प्राप्त कर भाग्य को कोसने लगते, रोने लगते। इस पर गोकर्ण उनको सांत्वना देता, उपदेश देता, धैर्य

बंधाता। ऐसा होने पर भी आत्मदेव का दु:ख कम नहीं हो पा रहा था। एक दिन इन दु:खों से त्रस्त हो, वह वन में चला गया। वहां अपने आपको श्रीहरि विष्णु को सौंप कर उसने प्राण त्याग दिये।

पिता की मृत्यु के पश्चात् धुन्धुकारी और अधिक उच्छृंखल हो गया। शीघ्र ही उसने पिता का सारा धन वेश्याओं पर लुटा दिया। माँ उसे ऐसा करने से रोकती तो वह उसे भी परेशान करता। पति वियोग से दु:खी धुन्धुली पुत्र के इस व्यवहार को सहन नहीं कर सकी और एक दिन कुए में कूद कर प्राण त्याग दिये। अब जो स्थितियां बन गयी थी, उन्हें देखकर गोकर्ण को घर में रहना उचित नहीं लगा। वह तत्काल तीर्थयात्रा पर चला गया। पिता के वन में जाने, माँ के प्राण त्यागने अथवा धुन्धुकारी द्वारा सारा धन लुटा देने का उसे कोई दु:ख नहीं था। वह अच्छे-बुरे, सुख-दु:ख के भावों से बहुत ऊपर उठ चुका था।

अब घर में धुन्धुकारी अकेला रह गया था। उसे रोकने-टोकने वाला कोई नहीं था। उसने मर्यादा की समस्त सीमायें लांघ दी और वेश्याओं को घर में रख कर उनके साथ रहने लगा। जब तक उसके पास वेश्याओं पर लुटाने के लिये धन था, तब तक वेश्यायें उसके साथ खुशी से रहती रही किन्तु जब सारा धन समाप्त हो गया तो उन्होंने धुन्धुकारी को एक रात में मार कर गड्ढे में गाड़ दिया। अन्त्येष्टि संस्कार सम्पन्न नहीं होने के कारण धुन्धुकारी प्रेत योनि में चला गया और यहां-वहां भटकने लगा। इस बारे में जब गोकर्ण को पता चला तो उसने गया जाकर उसका श्राद्ध किया। वह जहां-जहां और जिस तीर्थस्थल को जाता वहां उसने पूरी श्रद्धा से उसे पिण्डदान दिया।

कुछ समय पश्चात् गोकर्ण अपनी यात्रा पूरी करके वापिस लौट आये। रात्रि को जब वे सोने लगे तो वहां प्रेत बना धुन्धुकारी उत्पात मचाने लगा। गोकर्ण ने विचार किया कि अवश्य ही घर में कोई प्रेत है। उन्होंने धैर्य के साथ कहा कि भई, तुम कौन हो ? सामने आकर बात करो कि क्या चाहते हो ? धुन्धुकारी पाप प्रभाव से बोल नहीं पा रहा था। वह कुछ बोलना चाहता था किन्तु गले से आवाज नहीं निकल रही थी। तब गोकर्ण ने अपनी अंजली में थोड़ा जल लिया, किसी मंत्र को पढ़ा और वह जल धुन्धुकारी पर छोड़ दिया। इसके प्रभाव से वह जोर-जोर से रोने लगा और अपने भीषण दु:खों के बारे में बताया। साथ ही वह इन दु:खों और प्रेतयोनि से मुक्ति का उपाय भी पूछने लगा।

गोकर्ण को धुन्धुकारी की स्थिति देखकर बहुत दु:ख हुआ। उन्होंने इसका श्राद्ध गया जाकर किया था जहां पर श्राद्ध करने से जीवात्मा को अवश्य ही शांति और मुक्ति प्राप्त होती है, किन्तु धुन्धुकारी को मुक्ति प्राप्त नहीं हुई थी। वे विचार करने लगे कि इसकी मुक्ति के लिये कोई न कोई असाधारण उपाय करना होगा। उन्होंने धुन्धुकारी के प्रेत से कहा कि अभी यहां से जाओ। तुम्हारे लिये विशेष उपाय करना पड़ेगा, किन्तु तुम

किसी प्रकार की चिंता अथवा भय मत करो। गोकर्ण की बात मान कर प्रेत वहां से चला गया। दूसरे दिन गोकर्ण ने विद्वान, ज्ञानी और आचार्यों से विचार-विमर्श किया। सभी ने यह राय दी कि इसके बारे में सूर्यदेव ही कोई उचित राह बता सकते हैं। गोकर्ण ने उसी समय अपने तपबल से सूर्यदेव के रथ को रोककर उनकी स्तुति की और अपनी समस्या का समाधान बताने की प्रार्थना की। भगवान सूर्यदेव ने कहा कि धुन्धुकारी को प्रेतयोनि से मुक्ति केवल श्रीमद्‌भागवत के श्रवण से मिल सकती है। यदि वह सात दिन तक निरन्तर श्रीमद्‌भागवत कथा का पाठ सुने तो उसे मुक्ति मिल जायेगी। गोकर्ण ने सूर्यदेव का आभार व्यक्त किया और तभी निर्णय लिया कि वे श्रीमद्‌भागवत महापुराण का पाठ करेंगे।

जब लोगों को इस बात का पता चला कि गोकर्ण भागवत कथा का पाठ करने वाले हैं तो वे बहुत प्रसन्न हुये। दूसरे दिन जब कथा का प्रारम्भ होने वाला था तो बहुत से लोग वहां एकत्र हो गये। गोकर्ण ने आसन पर बैठ कर कथा कहनी प्रारम्भ कर दी। तभी धुन्धुकारी का प्रेत भी वहां कथा मण्डप में आ गया और अपने बैठने का स्थान तलाशने लगा। उसने देखा कि वहां सात गांठ वाला एक बांस खड़ा है तो वह वायुरूप धारण कर बांस की सबसे नीचे वाली गांठ में जाकर बैठ गया और कथा सुनने लगा। संध्या समय जब पहले दिन की कथा का समापन हुआ तो वहां उपस्थित लोगों ने देखा कि बांस के नीचे वाली गांठ कड़कड़ाहट की ध्वनि के साथ टूट गई। इसके बाद निरन्तर छः दिनों में प्रतिदिन बांस की एक गांठ टूटने लगी। सातों गांठें कथा की समाप्ति पर टूट चुकी थी। अब धुन्धुकारी प्रेतयोनि को त्याग कर दिव्य रूप को प्राप्त कर चुका था। लोगों ने देखा कि उसके मस्तक पर रत्नजड़ित स्वर्ण मुकुट था, कानों में स्वर्ण के कुण्डल थे, उसका वर्ण श्याम था और वह पीताम्बर पहने हुये था। वह गोकर्ण के समक्ष आकर खड़ा हो गया। हाथ जोड़कर बोला कि भाई गोकर्ण, मेरे ऊपर तुम्हारा बड़ा उपकार है। तुम्हारी कृपा के कारण ही मुझे प्रेतयोनि से मुक्ति मिली है। अब मैं इस दिव्य शरीर को प्राप्त कर भगवान श्रीहरि के परमधाम को जा रहा हूं। भगवान विष्णु ने अपने अनुचरों को अलौकिक विमान देकर मुझे लाने को भेजा है। मैं तुम्हारे अनेक उपकारों को अपने साथ लिये जा रहा हूं।

इसके बाद गोकर्ण ने पुनः श्रावण मास में श्रीमद्‌भागवत पुराण की कथा का कार्यक्रम किया। इस बार पहले से भी अधिक लोग कथा श्रवण के लिये वहां आये। कथा की समाप्ति पर भगवान श्रीहरि विष्णु अपने अनेक अनुचरों के साथ अनेक वाहनों को साथ लेकर वहां आये। उन्होंने गोकर्ण को हृदय से लगाया, अपना पाञ्चजन्य शंख बजाया और अपना विराट चतुर्भुज रूप प्रदान किया। वहां उस समय जितने लोगों ने श्रीमद्‌भागवत पुराण का श्रवण किया था, उन सभी को गोकर्ण के साथ विमानों में बैठा

कर गोलोक को चले गये।

सम्पूर्ण विश्व में श्रीमद्भागवत पुराण एकमात्र ऐसा ग्रंथ है जिसका श्रवण करने मात्र से लोगों का उद्धार हो जाता है, वे अपने पापों के प्रभाव से मुक्त हो जाते हैं और भगवान विष्णु के परमधाम को प्राप्त होते हैं। भागवत का नियमित पाठ करने से व्यक्ति भवसागर से मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

श्रीमद्भागवत पुराण का पाठ पितृदोष निवारण के लिये सर्वश्रेष्ठ उपाय है, इसमें किसी को शंका नहीं होनी चाहिये। कलियुग में मनुष्यों की जीवनशैली इस प्रकार की हो गई है कि वे मृत्युपर्यन्त अपनी वासनाओं से बंधे रहते हैं। इस कारण वे मृत्यु के पश्चात् अपने लोक को न जाकर प्रेत बन जाते हैं। बाद में वही अपने परिवार को पितृदोष के रूप में पीड़ा देते हैं। यही कारण है कि वर्तमान में पितृदोष की पीड़ा व्यापक रूप ले चुकी है। इस समस्या के निवारण के लिये श्रीमद्भागवत पुराण का पाठ और श्रवण ही जीवों की मुक्ति के लिये श्रेष्ठ मार्ग है। इस महापुराण में अष्टादश महापुराणों का सार है तथा भगवान श्रीकृष्ण की समस्त जीवन लीलाओं का विस्तार से वर्णन है। मोक्ष प्राप्ति के तीन मार्ग- भक्ति, ज्ञान और योग में श्रीकृष्ण को ही श्रेष्ठ माना गया है, इसलिये यह महापुराण भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित है। श्रीमद्भागवत महापुराण में सकाम कर्म, सिद्ध ज्ञान, साधन ज्ञान, साध्य भक्ति, वैधी भक्ति, प्रेमाभक्ति, साधन भक्ति, निष्काम कर्म, मर्यादा मार्ग, द्वैत-अद्वैत और द्वैताद्वैत इत्यादि सभी का परम रहस्य बड़ी मधुरता के साथ स्पष्ट किया गया है। यह महापुराण सभी मतभेदों से ऊपर है और उनका समन्वय करने वाला है। इसके पारायण से लौकिक-पारलौकिक सभी प्रकार की सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

श्रीमद्भागवत महापुराण के माहात्म्य में यह कहा गया है कि इस कथा के वाचन और श्रवण से समस्त विघ्नों का नाश हो जाता है और आरोग्य की प्राप्ति होती है। इसके पाठ एवं श्रवण से विकट से विकट पितृदोष समाप्त हो जाता है और पितरों को मुक्ति प्राप्त हो जाती है। जो परिवार किसी कारणवश पितृश्राप से ग्रस्त हो गया है, उसको भी इस श्राप से छुटकारा मिल जाता है। इस महापुराण का कथावाचन 7 दिन में करने का विधान बताया गया है। इन 7 दिनों में अपने घर पर, तीर्थस्थल पर, मन्दिरों में, सार्वजनिक स्थल पर इस कथा का आयोजन किया जा सकता है। आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक और मार्गशीर्ष मास इसके वाचन और श्रवण के दृष्टिकोण से श्रेष्ठ माने जाते हैं। इन मासों में शुभ दिन और शुभ तिथि पर अर्थात् सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार को कृष्ण अथवा शुक्लपक्ष की द्वितीया, तृतीया, पंचमी, षष्ठी, दशमी एवं एकादशी और द्वादश तिथियों में जब हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद अथवा रेवती नक्षत्र होने पर यह कथा प्रारम्भ

की जा सकती है। कथा का प्रारम्भ पूर्वाह्न के समय शुभ लग्न में जिस व्यक्ति को यह कथा करवानी हो, उसका चन्द्रबल देखकर मुहूर्त निकाला जाता है।

यदि आप किसी विकट पितृदोष से पीड़ित हैं, जिसका निवारण अनेक उपायों के पश्चात् भी नहीं हो पा रहा है, तो ऐसी स्थिति में आप श्रीमद्भागवत महापुराण का कथा आयोजन करवा सकते हैं। इस आयोजन में अपने उन सभी पितरों का आवाहन भी अवश्य करें, जिनके कारण आपको पितृदोष का सामना करना पड़ रहा है। इस अनुष्ठान के पश्चात् निश्चित रूप से आप पितृदोष से मुक्त हो जायेंगे और आपके जीवन में चल रही अन्य प्रकार की समस्यायें भी दूर हो जायेंगी।

श्रीमद्भगवद्गीता के विशेष पाठ से पितृदोष निवारण

श्रीमद्भगवतगीता एक अमर ग्रंथ है जो मनुष्य के जीवन को सुधारने के साथ ही उसके मृत्यु के पश्चात् वाले जीवन का भी उद्धार करता है। यही कारण है कि मरणासन्न व्यक्ति को गीता का पाठ सुनाया जाता है। यदि किसी परिवार में पितृदोष के कारण अत्यधिक समस्यायें चल रही हों तो श्रीमद्भगवतगीता का सप्तम अध्याय का पाठ अपने पितरों को सुनाने से पितृदोष का शीघ्र निवारण हो जाता है। वैसे तो पूरी गीता का पाठ अपने पितरों को सुनाया जाये तो श्रेष्ठ होता है, परन्तु यह सम्भव नहीं हो तो ऐसी स्थिति में सप्तम अध्याय को पितृगायत्री से सम्पुटित करके अपने पितरों को सुनाना चाहिये। सम्पुटन से तात्पर्य प्रत्येक गीता श्लोक से पहले और बाद में पितृगायत्री का उच्चारण करना है। इस अध्याय के महत्त्व की चर्चा तो स्वयं भगवान शिव ने भी पार्वती जी से की है। इस महत्त्व को पद्मपुराण की इस कथा के द्वारा स्पष्ट किया गया है-

पाटलीपुत्र नगर में एक ब्राह्मण ने व्यापार के द्वारा अपार धन कमाया था। उस प्रसिद्ध व्यापारी ब्राह्मण ने इतना धन कमाने के पश्चात् भी कभी अपने पितरों के निमित्त कर्म नहीं किये थे और न ही किसी प्रकार का दान दिया था। वह केवल प्रसिद्ध व्यापारी, राजा और उनके मंत्रियों को भोज दिया करता था। उस ब्राह्मण के अब तक तीन विवाह हो चुके थे। उसके मन में चौथे विवाह की इच्छा होने पर उसने अपने परिजनों के साथ मिलकर यात्रा की। इस यात्रा के दौरान रात्रि के समय सोते समय सर्पदंश के कारण उस ब्राह्मण की मृत्यु हो गयी। मृत्यु के बाद गति नहीं होने से वह प्रेत योनि में चला गया और कुछ समय पश्चात् उसका जन्म सर्पयोनि में हुआ। उसका चित्त अपने धन में फंसा हुआ था। एक दिन उसने अपने तीनों पुत्रों को उनके स्वप्न में दर्शन देकर अपना मनोभाव बताया और गड़े धन की जानकारी दी। प्रात:काल सभी भाइयों ने स्वप्न की आपस में चर्चा कि। उनमें से एक भाई ने अपने पिता के बताये अनुसार स्थान पर खुदाई प्रारम्भ कर दी। खोदते-खोदते उसने सर्प की बांबी को भी खोद डाला। इतने में ही वहाँ से एक सर्प निकला और बोला अरे मूर्ख यह बिल क्यों खोद रहा है। सर्प के

ऐसे बोलने पर उस युवक ने अपना परिचय देते हुये कहा कि मैं आपका पुत्र हूँ और पिछली रात्रि में आपने स्वप्न में दर्शन देकर यहाँ धन होने की बात कही थी। अपने पुत्र की बात सुनकर उस सर्प ने कहा कि यदि तू मेरा पुत्र है तो मुझे सर्वप्रथम इस बन्धन से मुक्त कर। मैं अपने धन के लोभ के कारण ही सर्प योनि में उत्पन्न हुआ हूँ। सर्प के ऐसा कहने पर पुत्र ने पूछा कि मुझे इस हेतु क्या करना चाहिये। सर्प ने कहा कि तुझे अपने भाइयों के साथ मिलकर मेरा श्राद्धादि कर्म सम्पन्न करवाने हैं और साथ ही श्रीमद्भगवद्गीता का सातवाँ अध्याय सुनाना है। इस अध्याय के पाठ से ही मेरी मुक्ति हो सकती है। इसके साथ ही ब्राह्मण भोजन और दान कर्म भी अवश्य करना।

उस ब्राह्मण के पुत्रों ने अपने पिता की मुक्ति के लिये सभी उक्त कर्मों को सम्पन्न करवाया जिससे उसकी मुक्ति सम्भव हो सकी। मुक्त होने से पहले उसने अपने सभी पुत्रों को गड़े धन का पता बताकर उसका कुछ हिस्सा पुण्य के कार्यों में व्यय करने के लिये कहा। इस प्रकार गीता के सातवें अध्याय की महिमा से ही उस ब्राह्मण की मुक्ति हो सकी। अत: प्रत्येक उस व्यक्ति को अपने पितरों के निमित्त गीता के सातवें अध्याय का पाठ पितृगायत्री मंत्र से सम्पुटित करके करना चाहिये। यह पाठ उनकी पुण्य तिथि के दिन अवश्य करना चाहिये।

पितृशान्ति स्तोत्र के प्रयोग से पितृदोष निवारण

पितरों को संतुष्टि पहुँचाने और उनकी गति में सहायक अनेक मंत्र और स्तोत्रों की रचना भारतीय संस्कृत वाङ्मय में हुई है। पितृशान्ति स्तोत्र भी पितरों को संतुष्टि पहुँचाकर पितृदोष निवारण में अत्यधिक सहायक है। इस स्तोत्र का पाठ जो व्यक्ति नित्य करता है और इस स्तोत्र से अपने पितरों के निमित्त यज्ञ करता है, उसके पितर उससे सदा संतुष्ट रहते हैं और आशीर्वाद प्रदान करते हैं। यज्ञ करते समय मुख दक्षिण दिशा में होना चाहिये और स्वाहा के स्थान पर स्वधा शब्द का उच्चारण करना चाहिये। जो व्यक्ति विकट से विकट पितृदोष से पीड़ित हो, उसे इस स्तोत्र के प्रयोग से शीघ्र लाभ होगा। अनेक बार ऐसा होता है कि किसी के पितर बलहीन होकर प्रेतलोक अथवा पितृलोक में निवास कर रहे होते हैं। कमजोर होने के कारण उनको अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है, ऐसी स्थिति में इस स्तोत्र के पाठ से पितरों को बल मिलता है और उनकी गति का मार्ग प्रशस्त होता है। इससे पितृदोष समाप्त हो जाता है।

यह प्रयोग किसी शुभ मुहूर्त अथवा अमावस्या के दिन से प्रारम्भ किया जा सकता है। शनैश्चरी, सोमवती एवं आश्विन माह की अमावस्या इस हेतु विशेष मुहूर्त हैं। यदि कोई व्यक्ति यह प्रयोग नित्य नहीं कर सके तो कम से कम अपने पितरों की पुण्य तिथि और आश्विन कृष्ण पक्ष में अवश्य करे। इससे निश्चित ही पितृदोष निवारण में लाभ मिलेगा। **पितृशान्तिस्तोत्र** अग्रांकित है–

नमो वः पितर उर्जे, नमः वः पितरो रसाय ॥
नमो वः पितरो भामाय, नमो वः पितरो मन्धवे ॥
नमो वः पितरां पदघोरं, तस्मै नमो वः पितरो, यत क्ररं तस्मै ॥
नमो वः पितरो, यच्छिव तस्मै नमो वः पितरो यतृस्योन तस्मै ।
नमो वः पितरः, स्वधा वः पितरः ॥ १ ॥
नमोऽस्तु ते निर्ऋर्तु, तिग्मतेजोऽयस्यमयान विचृता बन्धपाशान् ।
यमो मह्यं पुनरित् त्वां ददाति । तस्मै यमाय नमोऽस्तु मृत्यवे ॥ २ ॥
नमोऽस्त्वसिताय, नमस्तिरश्चिराजये ।
स्वजाय वभ्रवे नमो, नमो देवजनेभ्यः ॥ ३ ॥
नमः शीताय, तक्मने नमो, रूराय शोचिषे कृणोमि ।
यो अन्येद्युरुभयद्युरभ्येति, तृतीय कायं नमोऽस्तु तक्मने ॥ ४ ॥
नमस्ते अधिवाकाय, परावाकाय ते नमः ।
सु-मत्यै मृत्यो ते नमो, दुर्मत्यै त इदं नमः ॥ ५ ॥
नमस्ते यातुधानेभ्यो, नमस्ते भेषजेभ्यः ।
नमस्ते मृत्यो मूलेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इदं मम ॥ ६ ॥
नमो देववद्येभ्यो, नमो राज-वद्येभ्यः ।
अथो ये विश्वानां वद्यास्तेभ्यो मृत्यो नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥
नमस्तेऽस्तु नारदा नुष्ठ विदुषे वशा ।
कसमासां भीमतमा याम दत्वा पराभवेत् ॥ ८ ॥
नमस्तेऽस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे ।
नमस्तेऽस्तु वश्मने येना दूड़ाशे अस्यसि ॥ ९ ॥
नमस्तेऽस्त्वायते नमोऽस्तु पराय ते ।
नमस्ते प्राण तिष्ठत, आसीनायोत ते नमः ॥ १० ॥
नमस्तेऽस्त्वायते, नमोऽस्तु पराय ते ।
नमस्ते रुद्र तिष्ठत, आसीनायोत ते नमः ॥ ११ ॥
नमस्ते जायमानायै, जाताय उत ते नमः ।
वाल्रेभ्यः शफेभ्यो रूपायाध्न्ये ते नमः ॥ १२ ॥
नमस्ते प्राणक्रन्दाय नमस्ते स्तनयित्नवे ।
नमस्ते प्राणविद्युते नमस्ते प्राणवर्षते ॥ १३ ॥
नमस्ते प्राण-प्राणते, नमोऽस्त्वपान ते ।
परा चीनाय ते नमः, प्रतीचीनाय ते नमः, सर्वस्मैन इदं नमः ॥ १४ ॥
नमस्ते राजन्! वरुणास्तु मन्यवे विश्व ह्यग्र निचिकेषि दुग्धम् ।

सहस्त्रमन्यान् प्रसुवामि, साकं शतं जीवाति शरदस्तवायं ॥ १५ ॥
नमस्ते रुद्रास्य ते, नमः प्रतिहितायै।
नमो विसृज्यमानायै, नमो निपतितायै ॥ १६ ॥
नमस्ते लाङ्गलेभ्यो नमः ईषायुगेभ्यः।
वीरुत् क्षेत्रिय-नाशन्यप क्षैत्रियमुच्छतु ॥ १७ ॥
नमो गंधर्वस्य नमस्ते नमो भामाय चक्षुषे च कृण्मः।
विश्वावसो ब्रह्मणा ते नमोऽभि जाया अप्सरसः परेहि ॥ १८ ॥
नमो यमाय, नमोऽस्तु मृत्यवे, नमः पितृभ्य उतये नयन्ति।
उत्पारणस्य यो वेद, तमग्नि पुरो दद्येऽस्याः अरिष्टतातये ॥ १९ ॥
नमो रुद्राय, नमोऽस्तु तक्मने, नमो राज्ञ वरुणायं त्विणीमते।
नमो दिवे, नमः पृथिव्ये, नमः ओषधीभ्यः ॥ २० ॥
नमो रुराय च्यवनाय रोदनाय, घृष्णवे।
नमः शीताय पूर्वकामकृत्वने ॥ २१ ॥
नमो वः पितर उर्जे, नमः वः पितरो रसाय ॥ २२ ॥
नमो वः पितरो भामाय, नमो वः पितरो मन्धवे ॥ २३ ॥
नमो वः पितरां पदघोरं, तस्मै नमो वः पितरो, यत क्ररं तस्मै ॥ २४ ॥

पितृदोष निवारण का चामात्कारिक शाबर मंत्र

पितरों की कृपा प्रास करने के लिये यह सर्वश्रेष्ठ शाबर मंत्र प्रयोग है। इस प्रयोग को आश्विन कृष्ण पक्ष अर्थात् पितृपक्ष से प्रारम्भ करना चाहिये। इसके अतिरिक्त शनैश्चरी अथवा सोम अमावस्या से भी प्रारम्भ किया जा सकता है। पितृपक्ष पूरे 15 दिन और अन्य मुहूर्त में 11 दिन इस उपाय को करना चाहिये। इस प्रयोग को करने से पहले एक नाग-नागिन का चाँदी से बना जोड़ा, लकड़ी की चौकी, चौकी पर बिछाने के लिये सफेद रेशमी वस्त्र, दीपक, गुग्गुल की धूप, दूध, दही, गंगाजल, शुद्धजल, चंदन, श्वेत पुष्प और प्रयोग के समय धारण करने के लिये सफेद वस्त्र इकट्ठे कर लें। यह प्रयोग प्रातःकाल सूर्योदय होने के पश्चात् करना है। सर्वप्रथम घर के एकान्त स्थान में दक्षिणाभिमुख होकर अपने सामने चौकी की स्थापना करें, उस पर रेशमी वस्त्र बिछा दें। चौकी पर नाग-नागिन का जोड़ा, पितरों का आवाहन करने के लिये उनके प्रतीक रूप में चावल का पुंज स्थापित करें। अब स्वयं का शुद्धिकरण करके दीपक प्रज्वलित कर गुग्गुल की धूप लगायें। नाग-नागिन के जोड़े का पूजन करते हुये उन्हें दूध, दही एवं गंगाजल से स्नान करायें। चन्दन का टीका लगायें। तत्पश्चात् पितरों का आवाहन करें और धूप, दीप इत्यादि से उनका पूजन कर नैवेद्य रूप में खीर अर्पित करें। नैवेद्य से पूर्व तर्पण करें। इस प्रयोग में सफेद आसन और पहनने के लिये भी सफेद रंग के वस्त्रों का प्रयोग करना

है। पूजन के पश्चात् निम्नांकित मंत्र की सामर्थ्य अनुसार 1, 3, 5 अथवा 11 माला का जप रुद्राक्ष की माला से करना है। इस प्रयोग से आपकी मनचाही इच्छा पूर्ण होगी और पितरों की कृपा भी प्राप्त होगी। जो नैवेद्य पितरों को अर्पित करें, वह स्वयं अथवा घर के सदस्य ही ग्रहण करें। प्रयोग के पश्चात् नाग-नागिन के जोड़े को किसी नदी में प्रवाहित कर दें। यह प्रयोग किसी विशिष्ट कामना के लिये भी किया जा सकता है। मंत्र इस प्रकार है-

सतगुरु गोरख भाखे बानी, देव पितर हम देवत पानी। सत गवाही सूरज करे पूनम चन्दा मावस सरे। पितर हो शुकर मनावें गंगा मैया सुरग पठावें। कौन कौनसे पितर सुरग गये परसन्न भए, बाल बिरमचारी निपुतरी नाग पितर गिरस्त ब्याह ढयाए। रंडुआ मडुआ छोटे बड़े खोटे खरे, ऊँचे नीचे आगले पीछले पितर पर सन्न भए। बिरामन छतरी परसन्न भए। वनिक चण्डाल परसन्न भए। सबन को सुरग पठावे, लोना जोगन विमान चढ़ावे। जाओ जाओ पितर देव सुरग सुख भोगो, हमे न सताओ जो सताओ तो हनुमान का घोटा खाओ। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, मंत्र साचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

पितरों के साक्षात् दर्शन का चामात्कारिक प्रयोग

यह एक विलक्षण और चामत्कारिक प्रयोग है। प्रयोग कठिन अवश्य है, लेकिन इसके परिणाम अत्यधिक विलक्षण हैं। यह प्रयोग करने से पहले निम्नांकित मंत्र को सिद्ध करना आवश्यक है। सिद्ध करने के लिये इस मंत्र के नित्य 11 माला जप 41 दिनों तक हनुमानजी के मंदिर में जाकर करने हैं। इस दौरान अनुष्ठान सम्बंधी सभी नियमों का पालन करना आवश्यक है। 41 दिनों में यह मंत्र सिद्ध हो जायेगा। अब इसका प्रयोग पितृकार्य अमावस्या के दिन करना है। इस दिन हनुमान जी के मंदिर में ऐसे समय पर जायें जब वहाँ आपके अलावा कोई भी व्यक्ति न हो। साथ में 21 सफेद गुलाब के पुष्प लेकर जायें। हनुमान जी के सामने बैठकर इन पुष्पों को सिद्ध किये गये मंत्र से अभिमंत्रित कर लें। तत्पश्चात् यह संकल्प बोलें कि मेरे कुल के जो भी पितर हों वे आकर मुझे दर्शन दें, यदि उन्हें किसी प्रकार की समस्या हो, तो मुझे बतायें और आशीर्वाद प्रदान करें। संकल्प बोलकर प्रत्येक दिशा में उन गुलाब के पुष्पों को बिखेर दें और अपने पितरों का ध्यान करें। इस प्रयोग से कुछ ही समय में आपको साक्षात् अपने पितरों के दर्शन होंगे अथवा उनके आने का अनुभव होगा। यदि ऐसा नहीं हो, तो निराश न हो घर जायें, रात्रिकाल में वे स्वप्न में अवश्य दर्शन देंगे। यदि ऐसा भी नहीं हुआ तो सात दिन के अंदर कोई व्यक्ति आकर आपको पितरों सम्बन्धी समस्या का निवारण बतायेगा। इस प्रयोग से यदि सात दिनों तक किसी भी प्रकार का अनुभव न हो, तो यह समझना चाहिये कि आपके सभी पूर्वजों की मुक्ति हो चुकी है और आपको किसी प्रकार का पितृदोष नहीं है। मंत्र इस प्रकार है-

ॐ नमो कामद काली कामाख्या देवी। तेरे सुमरे, बेड़ा पार। पढ़ि पढ़ि मारूं, गिन गिन फूल। जाहि बुलाई, सोई आए। हाँक मार हनुमान वीर, पकड़ ला जल्दी। दुहाई तोय, सीता सती, अंजनी माता की। मेरा मंत्र साँचा पिण्ड काँचा। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

पितरों को संकट से निकालकर उनकी मुक्ति हेतु श्रेष्ठ उपाय

अनेक बार ऐसा देखा जाता है कि अपने कुल के पितरों को पितृलोक अथवा प्रेतलोक में अनेक प्रकार की बाधायें आती हैं। किसी दूसरे व्यक्ति के अथवा किसी शक्ति के द्वारा उनको पीड़ा पहुँचायी जाती है। ऐसी स्थिति में वे अपने परिजनों से यह आशा रखते हैं कि उन्हें पीड़ा से मुक्ति मिले। मुक्ति न मिलने के कारण पितृदोष अत्यधिक नुकसान पहुँचाने वाला होता है। इसके निवारण के लिये यह प्रयोग श्रेष्ठ है। वैसे तो यह प्रयोग उन व्यक्तियों के लिये अच्छा है, जो पितृदोष निवारण का उपाय करते हैं, परन्तु कोई भी व्यक्ति, जो पितृदोष से परेशान है, वह इसका प्रयोग स्वयं कर सकता है। सर्वप्रथम निम्नांकित मंत्र को सिद्ध करना आवश्यक होता है। इस मंत्र को सिद्ध करते समय अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। विभिन्न प्रकार की रुकावटें भी आती हैं। अमावस्या के दिन नृसिंह भगवान और हनुमान जी के समक्ष उनका पूजन-अर्चन करने के पश्चात् 21 माला जप करने से अग्रांकित मंत्र सिद्ध हो जाता है। पूजन के समय उन दोनों देवताओं को पीला नैवेद्य अर्पित करना चाहिये और धूप, दीप, चावल, पुष्प इत्यादि से पूजन करना चाहिये। प्रयोग सूर्योदय के पश्चात् प्रात:काल से प्रारम्भ कर देना चाहिये। मंत्र सिद्ध करने से पहले स्वास्थ्य रक्षा के लिये अन्य प्रयोग भी कर लेने चाहिये। इस प्रयोग में आप अपने गुरु की सहायता भी ले सकते हैं। एक बार मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात् आप किसी भी व्यक्ति के पितृदोष निवारण के लिये इस मंत्र का प्रयोग कर सकते हैं।

पितृदोष निवारण का प्रयोग पितृकार्य अमावस्या के दिन रात्रिकाल में करना चाहिये। इस प्रयोग से पितर किसी भी संकट में हों अथवा बंधन में फंसे हों, वे मुक्त होकर आशीर्वाद देंगे और आपको पितृदोष से मुक्ति मिल जायेगी। पितृदोष से ग्रस्त व्यक्ति के घर जाकर उन्हें पति-पत्नी सहित इस प्रयोग में सम्मिलित होने को कहें। सर्वप्रथम दक्षिणाभिमुख होकर सामने की ओर एक चौकी की स्थापना करें। उस पर सफेद वस्त्र बिछायें और पितरों को उस चौकी पर आने का आवाहन ध्यान पूर्वक करें। अब पितरों के निमित्त गुग्गुल की धूप और घी का दीपक लगायें। नैवेद्य के रूप में उन्हें विभिन्न प्रकार के व्यंजन अर्पित करें। इनमें उड़द का बाकला और इससे बना मिष्टान्न अवश्य होना चाहिये, साथ ही चावल भी होने चाहिये। अन्य सामग्री आप अपनी इच्छा के अनुसार सम्मिलित कर सकते हैं। पितरों को भोग लगा देने के पश्चात् पति-पत्नी को

उस चौकी को उठाने को कहें और स्वयं उनके पीछे-पीछे अग्रांकित मंत्र से अभिमंत्रित जल को छिड़कते हुय चलें। साथ ही मन ही मन इस मंत्र का जप भी करते रहें। इस दौरान यह अनुभव होगा कि चौकी का भार निरन्तर बढ़ रहा है, लेकिन यह ध्यान रखें कि चौकी हाथ से गिर नहीं जाये। यदि घर में घुमाते समय चौकी हाथ से छूट जाये तो पुन: प्रारम्भ से पूरी प्रक्रिया करें। पूरे घर में घूम लेने के पश्चात् पुन: पूजन स्थल पर आ जायें और एक नारियल की बलि दें। बलि से तात्पर्य पितरों का ध्यान करते हुये नारियल को उनके निमित्त न्योछावर करने अर्थात् उसको फोड़ने से होता है। अब पितरों का ध्यान कर लें। तत्पश्चात् पूरी सामग्री एक घड़े में भर दें और उसे ढक दें। वह घड़ा घर के मुख्य द्वार पर ले जाकर सात बार घुमायें और फिर किसी एकान्त स्थान पर ले जाकर जमीन में गाड़ दें।

अगले दिन अपने पितरों के निमित्त तर्पण, पंचबली और ब्राह्मण भोजन रखते हुये श्रद्धानुसार दान-दक्षिणा भी करें। इस प्रयोग से आपके पितरों की मुक्ति हो जायेगी और विकट से विकट पितृदोष भी समाप्त हो जायेगा। मंत्र इस प्रकार है-

पितर परम पर्वता विराजे, हम कर जोड़े खडे सकारे। होम धूप की होय अग्यारी, पितर देव दरबार तुम्हारी। पितर मनावे हरद्वार में बरकत बरषे, बार-बार मैं फलाँ मनुज के पितर मनाऊँ। सातों सातहि सिर ही झुकाऊँ, जो न माने मेरी बात, नरसिंह को झुकाऊ माथ। वीर नरसिंह दहाड़ता आवे, मूंछे पूंछ कोप हिलावे, हन हन हुम करे हुंकार, प्रेत पितर पीड़ा फटकार। कोड़ा मारे श्री हनुमान, सिद्ध होय सब पूरन काज। दुहाई दुहाई राजा रामचन्दर महाराज की।

दिव्य पितरों की कृपा प्राप्ति हेतु विशिष्ट उपाय

इस ब्रह्माण्ड में व्याप्त प्रत्येक जाति यथा देव, किन्नर, राक्षस, मनुष्य इत्यादि सभी के दिव्य पितर होते हैं। पितृलोक के मुख्य अधिष्ठाता इन्हीं को माना जाता है। इनकी कृपा से सभी की भौतिक कामनायें पूर्ण होती हैं और जीवन में अनेक सुख मिलते हैं। पितृदोष होने पर इसके निवारण हेतु यदि इनकी उपासना की जाये तो इस दोष का निवारण शीघ्र हो जाता है। दिव्य पितरों की संतुष्टि के अनेक प्रकार के उपायों में गायत्री मंत्र से सम्पुटित **पितृगायत्री मंत्र** का जप माना गया है। जो व्यक्ति यह उपाय अपने दिव्य और अन्य पितरों के निमित्त नित्य करता है, उसके जीवन में कभी किसी प्रकार का पितृदोष सम्बन्धी कष्ट उत्पन्न नहीं होता और पितर सदैव संतुष्ट रहते हैं। यह उपाय किसी भी शुभ मुहूर्त से प्रारम्भ किया जा सकता है। इस हेतु प्रारम्भ में गायत्री मंत्र की एक माला का जप, तत्पश्चात् पितृगायत्री मंत्र की तीन मालाओं का जप करने के पश्चात् पुन: गायत्री मंत्र की एक माला का जप करना चाहिये। यह उपाय सफेद आसन पर श्वेत वस्त्र धारण कर दक्षिणाभिमुख होकर करना चाहिये। जप के समय पितरों का ध्यान करें और उनसे कल्याण की कामना करें तो दिव्य पितरों का आशीर्वाद मिलता है और

अनेक समस्याओं से मुक्ति प्राप्त होती है।

यंत्र धारण-पूजन से पितृदोष निवारण

2	10	3
3	2	10
10	3	2

उपरोक्त यंत्र पितृदोष निवारक है। इस यंत्र की पूजा-उपासना करना अथवा धारण करने से पितृदोष से सम्बन्धित समस्त बाधायें धीरे-धीरे समाप्त होने लग जाती हैं। इस यंत्र को ताम्रपत्र, चाँदी, सोना अथवा भोजपत्र पर बनवाकर धारण किया जा सकता है अथवा पूजनकक्ष में स्थापित कर उसका नित्य पूजन-अर्चन किया जा सकता है। यदि यह यंत्र आप धारण करने जा रहे हैं अथवा अपने पितरों के पूजनस्थल पर स्थापित करने जा रहे हैं, तो इस हेतु श्रेष्ठ मुहूर्त अमावस्या है।

अमावस्या के दिन इस यंत्र का पूजन-अर्चन करने के पश्चात् इसका प्रयोग प्रारम्भ करना है। जिस मुहूर्त पर इस यंत्र का प्रयोग प्रारम्भ करें, उससे पहले इसे बनवा लें। यदि इस यंत्र को चाँदी के पत्र पर बनवाया जाये, तो श्रेष्ठ होगा। यदि आप भोजपत्र पर बनवाकर इसका प्रयोग करना चाहते हैं, तो अमावस्या के दिन अष्टगंध की स्याही से एवं अनार अथवा गुलाब की कलम से इस यंत्र का निर्माण करें। यंत्र निर्माण करने के पश्चात् अमावस्या के दिन दोपहर के समय इसको पितर पूजनस्थल पर रख दें। सर्वप्रथम गंगाजल अथवा स्वच्छ जल के छींटे दें। तत्पश्चात् चंदन, पुष्प, मौली, धूप, दीप और नैवेद्य से इस यंत्र की पूजा करें। पूजन के समय इसमें अपने पितरों का आवाहन करें। साथ ही **पितृगायत्री मंत्र** अथवा **पितृस्तोत्र** पाठ करते हुए अपने पितरों का स्मरण करें। इस यंत्र को यदि आप धारण करना चाहते हैं, तो गले में अथवा दायीं भुजा पर धारण किया जा सकता है। यदि इसका पूजन करने के लिये स्थापित करना है, तो इस यंत्र का नित्य पूजन-अर्चन अवश्य करें। यह ध्यान रहे कि इस यंत्र पर रोली का प्रयोग नहीं करना है, इसके स्थान पर चन्दन का प्रयोग किया जा सकता है।

पितृदोष पीड़ामुक्ति के अति विशिष्ट उपाय

इस पुस्तक में विभिन्न अध्यायों में पितृदोष के कारण उत्पन्न पीड़ा आदि से मुक्ति के लिये अत्यन्त उपयोगी उपाय बताये गये हैं। इस बात का उल्लेख पहले किया गया है कि कुछ ज्योतिषी इसे ज्योतिष का विषय मानते हैं तो कुछ नहीं मानते हैं लेकिन इस दोष के कारण से जो समस्यायें उत्पन्न होती हैं, वह जीवन को पीड़ा एवं कष्टों से अवश्य भर देती हैं। ऐसा सम्भव है कि जो ज्योतिषी इसे ज्योतिष का विषय नहीं मानते हैं, वे इस दोष से उत्पन्न पीड़ा एवं कष्टों के लिये अन्य कारणों का उल्लेख करते हों लेकिन इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि यह समस्यायें अधिकांश लोगों के जीवन में देखने को मिलती हैं और इससे वे प्रभावित भी होते हैं, इसलिये इनको दूर करने के लिये चाहे जैसे भी उपाय हों, अगर वे लाभकारक सिद्ध होते हैं तो उन्हें करने में किसी प्रकार की समस्या नहीं आनी चाहिये। यहाँ पर आपको जो उपाय बताये जा रहे हैं वे आपके जीवन से जुड़े हुए हैं, इनके लिये अन्य किसी प्रकार के विधि-विधान की आवश्यकता नहीं होती है। इन उपायों को करने से न केवल पितृदोष की पीड़ा में कमी आयेगी, अपितु पारिवारिक सम्बन्ध भी प्रगाढ़ बनेंगे। इन उपायों पर आप अच्छे से विचार करके, फिर जीवन में उतारने का प्रयास करें, आपको अवश्य और आवश्यकता से अधिक लाभ की प्राप्ति होगी-

माता-पिता की सेवा करना

जो व्यक्ति पितृदोष से पीड़ित हैं, उन्हें अपने माता-पिता की भरपूर सेवा करनी चाहिये। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में हिन्दू संस्कृति के अनुसार कुछ ऋण ऐसे होते हैं जिन्हें चुकाया नहीं जा सकता लेकिन जीवन भर चुकाने का प्रयास अवश्य करते रहना चाहिये। प्रत्येक माता-पिता अपनी संतान से, विशेष रूप से पुत्र से इस बात की अपेक्षा अवश्य करते हैं कि वह वृद्धावस्था में उनकी सेवा करेगा। जब पुत्र का विवाह सम्पन्न हो जाता है तो वह अपने पत्नी-बच्चों में व्यस्त हो जाता है। माता-पिता की तरफ ध्यान कम ही दिया जाता है। उनका बेटा अपनी संतान की इच्छा को पूरा करने के लिये एक पल को भी विचार नहीं करता, खर्च करने में विलम्ब नहीं करता लेकिन यदि माता-पिता पर कुछ खर्चा करना पड़े तो उसके पास पैसा नहीं होता है। ऐसी स्थिति में पुत्र के विरुद्ध माता-पिता कुछ बोल नहीं पाते हैं, लेकिन अपने भीतर वे बहुत पीड़ा का अनुभव करते हैं। वे इस वास्तविकता को बहुत अच्छी प्रकार से समझते हैं कि अब पुत्र के अलावा उनका कोई सहारा देने वाला नहीं है। अनेक परिवारों में माता-पिता अपने आप से ही समझौता कर लेते हैं कि जैसे बेटा रखेगा, वैसा ही रहना पड़ेगा। उनके मन में जीवन में

प्रति उमंग एवं उत्साह कम हो जाता है अथवा समाप्त ही हो जाता है। ऐसी अनेक स्थितियां आपके, हमारे आस-पास देखने को मिल जाती हैं। माता-पिता तो जैसे-तैसे करके दिन पूरे कर लेते हैं लेकिन उनके बाद में उनके बेटों आदि को काफी कष्ट भोगने पड़ते हैं। वे अपनी जन्मपत्रिका का अवलोकन विद्वान ज्योतिषी से करवाते हैं, उनके बताये उपायों का प्रयोग भी करते हैं, लेकिन कुछ खास लाभ नहीं मिलता है। कारण यह है कि ज्योतिष का आधार नवग्रह हैं और जन्मपत्रिका के अनुसार फलकथन भी विभिन्न भावों में ग्रहों की स्थिति को ही देखकर किया जाता है। इसलिये मानवीय आधार पर किये गये कर्मों की ज्योतिष के आधार पर विवेचना करना सम्भव नहीं है जबकि जीवन के विभिन्न पक्षों को यही कर्म काफी प्रभावित करते हैं। अनेक व्यक्ति जो माता-पिता की अच्छी सेवा एवं वृद्धावस्था में उनके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं, उनके जीवन में समस्यायें कम ही आती हैं। पितृदोष से पीड़ित जातकों को मैं उनकी जन्मपत्रिका के आधार पर तो फलकथन बताता ही हूँ, साथ ही उन्हें मानवीय सम्बन्धों को दृष्टि में रखते हुए कुछ विशिष्ट उपाय भी बताता हूँ। असंख्य जातकों को इन उपायों को करने से आशानुकूल लाभ की प्राप्ति हुई है। अगर आप पर पितृदोष का प्रभाव है और इस कारण अनेक कष्ट भोग रहे हैं, तो अपने माता-पिता की भरपूर सेवा करें। पितृदोष का प्रभाव तुरन्त दूर होगा। अगर पितृदोष का प्रभाव नहीं है, तब भी माता-पिता की सेवा करें, भविष्य में ऐसा कोई दोष परेशान नहीं करेगा।

यहाँ इस बात की चर्चा अवश्य करनी होगी कि माता-पिता की उपेक्षा करने से पितृदोष कैसे कष्ट देता है? किसी भी माता-पिता के लिये उसकी संतान से बढ़कर कुछ नहीं होता है। अनेक दम्पती, जिन्हें संतान सुख की प्राप्ति में विलम्ब होता है, वे संतान प्राप्ति के लिये विभिन्न देवी-देवताओं की पूजा-आराधना करते हैं, पीरों के मकबरों पर मत्था टेककर संतान की कामना करते हैं। संतान प्राप्ति के बाद उनका पूरा ध्यान और समस्त प्रयास संतान के उचित पालन-पोषण एवं उसकी शिक्षा आदि पर केन्द्रित हो जाते हैं। आगे चलकर वे उसका विवाह कर देते हैं। विवाह के बाद जब पुत्र स्वयं पिता बन जाता है, तो वह पुत्र के दायित्वों को भूलने लगता है। वह माता-पिता की उपेक्षा करता है, उनकी उचित देखभाल नहीं करता है। सभी पुत्र ऐसा करते हैं, मैं यह नहीं कह रहा किन्तु बहुत से ऐसा ही करते हैं। माता-पिता की विडम्बना होती है कि वे पुत्र द्वारा की जा रही उपेक्षा को तो सहन कर लेते हैं किन्तु उसे किसी प्रकार का श्राप नहीं दे पाते, इसके बाद भी उनके बेटे दु:ख भोगते हैं। इसका कारण यह है कि हमारे मन के भीतर एक छोटा मन और होता है। हम अपने मन पर नियंत्रण कर सकते हैं किन्तु उसके भीतर के मन पर कोई नियंत्रण नहीं होता है। वह जो अनुभव करता है, वैसी ही प्रतिक्रिया करता है। बेटे द्वारा की जाने वाली उपेक्षा के कारण माता-पिता अपने मन को सांत्वना दते हैं कि कोई बात नहीं, अपना ही बेटा है, लेकिन मन के भीतर छिपा दूसरा

मन इस तर्क को, इस विचार को स्वीकार नहीं करता। वह दुःख देने वाले बेटे को श्राप देता है, उसे बद्दुआयें देता है। आगे चलकर यही श्राप तथा बद्दुआयें बेटे के लिये समस्यायें उत्पन्न करने लगती हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि माता-पिता के दिल से निकली बद्दुआओं का सम्प्रेषण पितरों तक होता है, इससे वे कुपित होकर उस बेटे के लिये पितृदोष जैसी समस्यायें उत्पन्न कर देते हैं। परिणामस्वरूप उस व्यक्ति के समक्ष एक के बाद एक विभिन्न प्रकार की समस्यायें उत्पन्न होने लगती हैं। इस प्रकार की समस्याओं तथा इनसे उत्पन्न पीड़ा से बचने का श्रेष्ठ उपाय है अपने माता-पिता की भरपूर सेवा करना। इससे पितृदोष से उत्पन्न होने वाली समस्यायें दूर ही रहेंगी और माता-पिता की दुआओं का फल भी प्राप्त होगा। वैसे भी शास्त्रों में इस बात का उल्लेख मिलता है कि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग होता है, इसलिये सभी को अपने माता-पिता की भरपूर सेवा अवश्य करते रहना चाहिये।

वृद्ध व्यक्तियों की सेवा करना

जितना अच्छा फल माता-पिता की सेवा करने से मिलता है, उतना ही फल वृद्ध लोगों की सेवा करने से भी मिलता है। इसके लिये यह आवश्यक नहीं है कि आप केवल उन्हीं वृद्ध व्यक्तियों की सेवा करें जो आपके रिश्तेदार अथवा परिचित हों, आप किसी भी वृद्ध और असहाय लोगों की सेवा करें, आपको अवश्य तथा अपेक्षाओं से कहीं अधिक अच्छा फल प्राप्त होगा। एक बात विशेष रूप से अधिकांश लोगों के साथ देखने में आती है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने बच्चों के पालन-पोषण में अपना पूरा जीवन होम कर दिया करते हैं, अपने किसी भी प्रकार के सुख-भोग को त्याग कर बच्चों को उनकी मनचाही चीज दिलाने में पीछे नहीं रहते हैं। अनेक लोगों को तो इस बात का भी पता नहीं चलता कि उनकी ही आँखों के सामने उनका अपना जीवन सूखी रेत की तरह कहाँ और कब बह जाता है? इस संदर्भ में एक विशेष बात यह है कि ऐसा सब करते समय उनके मन में एक बार भी यह विचार नहीं आता कि उसके बच्चे आगे चल कर जब वह वृद्ध हो जायेंगे, तब उनकी सेवा करेंगे। वह समय ही ऐसा होता है कि उसे अपने वृद्ध होने का विचार तक नहीं आता। जब शरीर समय के साथ चलते-चलते थकने और टूटने लगता है, तब उसके अचेतन मन में यह बात अवश्य उत्पन्न होने लगती है कि उसके बेटे उसका ध्यान रखें लेकिन अधिकांश लोगों को ऐसे समय में ही इस कठोर सत्य के दर्शन होते हैं कि बेटे से लगाई गई आशायें पूरी होने वाली नहीं हैं। इस बारे में एक वृद्ध व्यक्ति का उल्लेख करना उचित होगा जिसने जीवन के एक अत्यन्त कठोर सत्य का सामना किया और उसे इसका बिलकुल भी बुरा नहीं लगा। वह पहले मजदूरी का काम करता था। नौकरी किसी की नहीं थी, इसलिये जब काम होता तो पैसे मिल जाते, जब नहीं होता तो पैसे नहीं मिल पाते। उसके एक ही बेटा था। जब वह दस वर्ष का हुआ तो एकाएक कमजोर होने लगा। वह अपनी पत्नी के साथ बेटे को डॉक्टर

के पास लेकर गया। डॉक्टर ने बताया कि बच्चे में कैल्सियम की काफी कमी थी, इसलिये रात को कम से कम दो सौ मि.ली. दूध उसे रोज पिलायें। इसके बाद बेटे को रोज दूध दिया जाने लगा। वह मजदूरी से जो पैसा प्राप्त करता, उसमें से सबसे पहले बेटे के लिये दूध के पैसे अलग निकाल कर रख देता। ऐसा करते समय कभी-कभी काफी समस्यायें भी आयीं। पैसे नहीं होने से कभी घर में एक समय खाना नहीं बन पाता था लेकिन बेटे को दूध अवश्य मिलता। समय व्यतीत होता चला गया। बेटे की सेहत ठीक हो गई थी। बाद में उसने एक बड़ी दुकान में नौकरी कर ली। काम वह पूरी ईमानदारी से करता था, इसलिये उसकी तनख्वाह भी अच्छी थी। उसने बेटे को अच्छी शिक्षा दिलाई। उसका विवाह कर दिया। बेटे की एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी में नौकरी लग गई थी। उसका वेतन काफी अच्छा था। नौकरी के कुछ समय बाद ही बेटे की माँ का देहान्त हो गया। अब वह व्यक्ति वृद्धावस्था में आकर पूरी तरह से अकेला एवं बेटे के ऊपर आश्रित हो गया था। बेटा उसे रात को सोते समय आधा गिलास दूध अवश्य देता। रात को दूध पीने की उसे आदत हो गई थी। अब दूध पीये बिना नींद नहीं आती थी। एक रात को उसे दूध नहीं मिला। उसने सोचा कि शायद बेटा-बहू भूल गये हैं, इसलिये उसने आवाज लगाई और दूध लाने को कहा। आवाज सुन कर बेटा बाहर आया और धीमें स्वर में बोला कि पिताजी, अब दूध की व्यवस्था कठिन हो गई है, खर्चे काफी बढ़ गये हैं, इस कारण दूध कम कर दिया, इसलिये रात को दूध नहीं मिल पायेगा। जब बेटा अपने पिता से इस प्रकार की बात कर रहा था, उसी समय उसकी पत्नी अपने बेटे के लिये दूध का गिलास लेकर रसोई से निकल रही थी। बेटे ने देखा तो अचकचा गया, थोड़ा झेंप भी गया। पिता ने इस स्थिति को बहुत ही सहजता से लिया और कहा कि कोई बात नहीं बेटा, मेरा दूध बंद हो जाये, उसकी चिंता मत करना, अपने बेटे का दूध भूल कर भी बंद मत करना। मैंने भी कभी तुझे रोज गिलास भर के दूध पिलाया था। बात समाप्त हो गई। इसके बाद उसने फिर कभी दूध नहीं पिया। पहले बिना दूध पिये नींद नहीं आती थी, अब बिना पिये भी नींद अच्छी आने लगी थी।

मैं यह नहीं कहना चाहता कि सभी लोगों को वृद्धावस्था में इस प्रकार की स्थिति का सामना करना पड़ता है लेकिन ऐसे लोगों की संख्या कम नहीं है, जिन्हें वृद्धावस्था में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में अगर कोई उनकी मदद करता है तो वे उसे ढेरों आशीष तथा दुआयें देते हैं। विद्वान आचार्यों का कहना है कि वृद्ध व्यक्ति की दी गई दुआओं में से किसी एक भी दुआ का अगर असर हो जाता है, तो उससे व्यक्ति का जीवन बदल सकता है। इसलिये कोई भी वृद्ध व्यक्ति मिले, जो परिस्थितियों से लाचार तथा हताश हो, जिसे अपने बेटों द्वारा ठीक मान-सम्मान न मिल रहा हो, उसकी सेवा एवं सहायता करना परम सौभाग्य की बात होगी। वृद्ध व्यक्तियों की सेवा करने से, उनकी सहायता करने से पितृदोष का प्रभाव काफी कम हो जाता है।

अगर किसी की जन्मपत्रिका में पितृदोष विद्यमान होता है, तब भी उसका अधिक कष्ट प्राप्त नहीं होता है। इसके साथ-साथ एक और अच्छी बात यह है कि वृद्ध लोगों की सेवा करने से सबसे क्रूर ग्रह माने जाने वाले शनिदेव की भी कृपा प्राप्त होती है। शनिदेव स्वयं सबसे वृद्ध हैं, इसलिये एक राशि में वे तीस माह तक रहते हैं। जिन लोगों को पितृदोष के साथ-साथ शनि की साढ़ेसाती अथवा ढैया का सामना करना पड़ रहा हो, उन्हें वृद्ध व्यक्तियों की सेवा अवश्य करनी चाहिये।

यहाँ इस बारे में विचार भी होना चाहिये कि आप किसी वृद्ध व्यक्ति की सेवा कैसे करें? इसके लिये आसान उपाय यह है कि अगर आपके आस-पास कोई वृद्धाश्रम है तो वहाँ अपनी क्षमतानुसार दान आदि देकर सहयोग करें। आपके परिचितों में अगर कोई वृद्ध व्यक्ति है तो उसे धार्मिक पुस्तकें उपहार में दें। इन पुस्तकों को पढ़ने से उनका समय अच्छी प्रकार से व्यतीत होगा तथा मन में निराशाजनक विचार भी उत्पन्न नहीं होंगे। इसके लिये यह आवश्यक नहीं है कि जिसे सताया जाये, परेशान किया जाये, उसी वृद्ध की सहायता करनी चाहिये, कोई भी वृद्ध हो, सामर्थ्य अनुसार उसकी अवश्य मदद करें। सम्भव हो तो उनके साथ कुछ समय भी व्यतीत करें। किसी भी वृद्ध व्यक्ति से अपमानजनक रूप से बात नहीं करें, किसी को भी चुभती हुई बात नहीं कहें। अपने वृद्ध माता-पिता तथा दादा-दादी की जितनी सेवा कर सकते हैं, अवश्य करें। इतना सब करने पर आश्चर्यजनक परिणामों की प्राप्ति होगी। अगर आपकी जन्मपत्रिका में पितृदोष है, तो उसका आप पर कोई प्रभाव नहीं आयेगा, इसके उलट आप इस समय में सर्वाधिक उन्नति करेंगे और सभी प्रकार की भौतिक सुख-सुविधाओं का भोग भी करेंगे। अगर किसी पर साढ़ेसाती चल रही है तो वह भी शनिदेव की कृपा से सब तरफ उन्नति करेगा और सफलता के शिखर पर जा पहुँचेगा।

दायित्वों का निर्वाह करना

अगर हम एक बार जन्मपत्रिका में बनने वाले पितृदोष की बात न करके आम लोगों की धारणाओं की दृष्टि से देखने का प्रयास करें तो जो व्यक्ति अपनी बहिनों का पिता समान ध्यान रखता है, उसे पितृदोष की पीड़ा छूकर भी नहीं जा पाती है। प्राचीनकाल से किसी भी माता-पिता के लिये बेटियां ही अधिक चिंता का विषय होती थी। यह चिंता पिता के घर में रहने से लेकर पति के घर जाने तक समान रूप से बनी रहती है। अनेक माता-पिता की चिंता इसके बाद तक रहती है। अनेक माता-पिता इस बात को लेकर भी चिंता में रहते हैं कि उनकी मृत्यु के बाद बेटी को उसका भाई मान-सम्मान दे पायेगा अथवा नहीं? किसी भी स्त्री के जीवन में पति और भाई का सबसे अधिक महत्त्व होता है। विवाह के बाद पति ही पत्नी के लिये परमेश्वर बन जाता है, इसलिये पति को कहीं-कहीं पर पतिपरमेश्वर के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। पति ही विवाह के बाद पत्नी को जीवन भर सुरक्षा और सम्मान देने वाला होता है, यह

उसका धर्म भी होता है। माता-पिता के बाद पीहर की तरफ से समस्त प्रकार के दायित्वों का निर्वाह करने का दायित्व भाई के ऊपर ही आता है। जब भी बहिन के ऊपर कोई समस्या आती है तो भाई उसके सामने चट्टान की तरह खड़ा हो जाता है। भाई अपनी बहिन को वह वचन देता है कि वह सदैव उसकी रक्षा के लिये तत्पर रहेगा। जो व्यक्ति भाई के रूप में बहन की हरसम्भव सहायता करता है, उसके काम में आगे रहता है, बहिन को पीहर पक्ष की कमी महसूस नहीं होने देने वाला भाई ही होता है। इसलिये प्रत्येक भाई को अपनी बहिन के मान-सम्मान का पूरा ध्यान रखना चाहिये। किसी भी तीज-त्योहार के समय भाई ही बहिन का घर पूरा करता है अर्थात् तीज-त्योहार को बहिन को किसी प्रकार की कमी नहीं होने देता। कई परिवार ऐसे हैं जहाँ किसी तीज-त्योहार को पत्नी के पीहर से कुछ नहीं आता तो पति के साथ-साथ सास-ससुर तथा ससुराल के अन्य सदस्य भी छींटाकसी से बाज नहीं आते हैं। इसलिये प्रत्येक भाई को बहिन के घर तीज-त्योहार को कुछ न कुछ भेंट आदि अवश्य लेकर जानी चाहिये अथवा किसी के द्वारा भेजनी चाहिये। समय-समय पर बहिन के ससुराल आते-जाते रहना चाहिये। इससे उसका ससुराल में मान-सम्मान बना रहता है। जिन महिलाओं के ससुराल में भाई-भाभी नहीं आते-जाते अथवा कम आते हैं, उसे अपनी ससुराल में काफी बातें तथा तानें सुनने को मिलते हैं। पति को चाहिये कि पत्नी के साथ कभी भी और किसी भी प्रकार अपमानजनक व्यवहार नहीं करे। वह पत्नी के साथ किसी भी प्रकार की शारीरिक क्रूरता अथवा हिंसा नहीं करे। कभी कठोर अथवा दिल दु:खाने वाले शब्दों का प्रयोग नहीं करे। ससुराल में पत्नी जितनी प्रसन्न तथा सुखी रहेगी, वह घर सबसे सुखी और सम्पन्न रहेगा, ऐसा महापुरुषों का कथन है। हमारे विद्वान महापुरुषों का भी यही संदेश है कि भाई एवं पति के रूप में इन दोनों को शरीर में प्राण रहने तक स्त्री की रक्षा करनी चाहिये। उनके मान-सम्मान को बिलकुल भी चोट नहीं आनी चाहिये। जो ऐसा कर पाते हैं, उन्हें पितृदोष की पीड़ा कम ही होती देखी गई है, ऐसा करके पितरों की असीम कृपा प्राप्त की जा सकती है। हमारे जो पितर हैं, वे हमारे ही पूर्वज हैं, जब वे बहिन-बेटियों को मान-सम्मान के साथ रहते देखते हैं, तो बहुत प्रसन्न होते हैं और जो प्रसन्न रखने का प्रयास करता है, उन्हें जीवन में धन-धान्य सम्बन्धी कोई समस्या नहीं आने देते हैं।

कई बार ऐसा देखा गया है कि माता-पिता के असामयिक निधन के बाद उनके बेटे अपनी बहिनों के विवाह करने में अधिक मनोयोग से नहीं जुटते हैं। वे हिसाब लगाते हैं कि बहिन की शादी करने में उन्हें इतना पैसा खर्च करना पड़ेगा, बहिन के विवाह में पैसा खर्च नहीं करना पड़े, इसलिये वे पीछे हट जाते हैं। परिवार के ही किसी अन्य सदस्य अथवा भाई के द्वारा जब बहिन का घर बसाने का दायित्व लिया जाता है, उसे वह पूरा भी कर देता है तो उस पर पितरों की अथाह कृपा बरसती है। यह अलग बात हो सकती है कि बहिन का विवाह करने से उसका आने वाला कुछ समय

समस्याओं से भरा रहे लेकिन बाद में उन्हें पितरों की कृपा से कोई समस्या नहीं आती है। जो भाई अपनी बहिन के विवाह में कोई सहायता नहीं करते, वे कुछ समय तक तो सभी सुख भोगते हैं लेकिन बाद में पितर उन्हें इतना तंग करते हैं, कष्ट देकर तड़पने पर विवश कर देते हैं कि जिन्दगी उनके लिये बोझ बन जाती है। सम्भव है कि कुछ लोग इन बातों को न मानने की जिद लेकर बैठे हों, इसलिये वे इन बातों पर विश्वास नहीं करेंगे किन्तु इस सत्य से इंकार भी नहीं किया जा सकता कि लेने का देना यहीं पर, इसी जीवन में भोगना पड़ता है।

लोभ एवं स्वार्थ का त्याग

जो व्यक्ति अपने दायित्वों का निर्वाह बिना स्वार्थ के करता है, वह भी पितृदोष के प्रभाव से बचा रहता है। इस पुस्तक में इस तथ्य का उल्लेख बार-बार हुआ है किन्तु जब यहाँ पर व्यावहारिक उपचारों के बारे में उल्लेख किया जा रहा है, तब इस महत्त्वपूर्ण तथ्य को छोड़ा नहीं जा सकता है। यह हम सभी देखते हैं कि घर में जब भी किसी बड़े की मृत्यु होती है तो उसके बाद उसके द्वारा सम्पत्ति का बंटवारा होने लगता है। सभी सदस्य छोड़ी गई सम्पत्ति से अपना हिस्सा बढ़ा-चढ़ा कर लेने का प्रयास करते हैं। कई बार इस लेन-देन में भाई-बहिनों में तनाव तक उत्पन्न होने लगता है। फिर भी जैसे-तैसे करके बंटवारा हो जाता है और सभी अपने-अपने कार्यों में लग जाते हैं लेकिन मृतक द्वारा छोड़ी गई जिम्मेदारियों को पूरा करने की तरफ कोई ध्यान नहीं देता है। दो चीजें प्रत्येक व्यक्ति के साथ न्यूनाधिक रूप से जुड़ी रहती हैं, इनमें एक है जिम्मेदारियां और दूसरी है कामनायें। व्यक्ति किसी भी आयु में मृत्यु को प्राप्त हो, वह कभी भी जिम्मेदारियों से मुक्त नहीं हो पाता, यह बात अलग है कि जिम्मेदारियों का स्वरूप बदलता रहता है। इसी प्रकार से कामनाओं को भी देखा जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति के भीतर अनेक प्रकार की कामनायें, इच्छायें, लालसायें हमेशा विद्यमान रहती हैं। जब तक उसकी एक इच्छा पूरी होती है, चार नई इच्छायें उत्पन्न हो जाती हैं। मृतक के बाद परिवार के प्रमुख सदस्य का यह बहुत बड़ा दायित्व हो जाता है कि वह अपने पिता की जिम्मेदारियों को वहन करके उनको पूरा करने का प्रयास करे। यह जिम्मेदारियां भी कई प्रकार की हो सकती हैं। किसी व्यक्ति को अपने बेटे-बेटी का विवाह करना होता है, किसी को किसी का कर्ज चुकाना होता है। आमतौर पर इस प्रकार की जिम्मेदारियों को ठीक से पूरा करने में अनेक व्यक्ति मुँह छिपाने लगते हैं। कई बार पिता की मृत्यु होने तक बेटों का विवाह हो चुका होता है, उनके अपने परिवार-बच्चे तथा खर्च आदि होते हैं, इस कारण वे बहिन अथवा भाई का विवाह करने में रुचि ही नहीं लेते हैं। ऐसे अनेक परिवार देखे जा सकते हैं, जहाँ मृतक के बेटे-बेटी का विवाह या तो हुआ नहीं और अगर हुआ भी तो वह अन्य के सहयोग से ही सम्पन्न हो पाया। इसमें भी ऐसा देखा गया है कि कन्या का विवाह तो किसी प्रकार सम्पन्न हो जाता है, भाइयों का नहीं हो पाता है।

ऐसे परिवार के जिम्मेदार बेटों को पितृदोष की भयंकर पीड़ा भोगनी पड़ती है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि एक पिता पर यह ऋण होता है कि वह अपने बच्चों का पालन-पोषण करे और बड़े होने पर समय पर उनका विवाह सम्पन्न करे ताकि वे अपना घर-परिवार बसा सकें। जो व्यक्ति अपने किसी बेटे अथवा बेटी का विवाह किये बिना ही मृत्यु को प्राप्त होता है तो उसकी गति-मुक्ति भी नहीं होती है। इसलिये पिता की मृत्यु के बाद उनकी आत्मा को शान्ति मिले, इसके लिये आवश्यक है कि अगर घर में भाई अथवा बहिन विवाह के योग्य है तो उनका विवाह सम्पन्न करके पिता की इच्छा पूरी करने के साथ-साथ उनकी आत्मा की शांति तथा मुक्ति में भी अपना योगदान दें। इस बारे में पहले भी लिखा है, फिर लिख रहा हूँ कि ऐसा करने से व्यक्ति को प्रारम्भ में कुछ समस्याओं को भोगना पड़ सकता है किन्तु बाद में वही पितृ कृपा से सभी सुखों का भोग भी करता है। जो अन्य भाई इन दायित्वों को पूरा करने में किसी प्रकार का सहयोग नहीं करते हैं, उन्हें पितृ कृपा प्राप्त नहीं होती है और वे जीवन भर किसी न किसी समस्या से पीड़ित ही बने रहते हैं।

इस सन्दर्भ में एक विचित्र स्थिति भी देखने को मिलती है, हालांकि ऐसी स्थितियां कम ही देखने में आती हैं, लेकिन अपवाद स्वरूप ही सही, ऐसी स्थितियां देखने में आती ही हैं। विचित्र बात यह है कि इसका फल पिता एवं पुत्र दोनों को ही भोगना पड़ता है। इस स्थिति में पिता स्वयं ही अपने बेटे का विवाह नहीं कर पाता अथवा किन्हीं कारणों से बेटा ही विवाह नहीं करता है। ऐसी स्थिति में अगर पिता के एकमात्र बेटा ही होता है तो उसकी वंशबेल वहीं पर समाप्त हो जाती है। इस विषय से सम्बन्धित एक घटना का उल्लेख करना उचित रहेगा। मनोहर लाल के एक ही बेटा था, धीरज। दो बेटियां थी। बेटा बड़ा था। मनोहर लाल सरकारी नौकरी में थे। सेवानिवृत्त होने तक उन्होंने पहले दोनों बेटियों का विवाह कर दिया। बेटियां ससुराल चली गई। बेटा एक निजी कम्पनी में नौकरी करता था। वेतन अच्छा था, इसलिये उसके लिये रिश्ते आने लगे थे। रिश्ते तो पहले भी आने लगे थे, लेकिन उन्होंने यह बात स्पष्ट कर दी थी कि वे पहले अपनी बेटियों का विवाह करेंगे। जब बेटियों का विवाह हो गया तो फिर से धीरज के विवाह की चर्चा होने लगी। रिश्ते आने लगे थे। मनोहर लाल दो बेटियों की शादी में काफी खर्च कर चुके थे, इसलिये चाहते थे कि धीरज की शादी वहाँ की जाये जहाँ दहेज के रूप में भरपूर नकद धन तथा अन्य सामान की प्राप्ति हो। वे दहेज लेने की बात को छिपाते भी नहीं थे। साफ कहते थे कि जब मैंने अपनी बेटियों की शादी में काफी कुछ दिया है तो फिर बेटे की शादी में क्यों न लूं? उन्हें इस बात का भ्रम हो गया था कि धीरज उनका एकमात्र बेटा है, इसलिये कन्याओं के पिता धीरज के साथ अपनी कन्या के विवाह के लिये लाइन लगा देंगे और मनमांगा दहेज वे आसानी से देने को तैयार हो जायेंगे। वे समझते थे कि जो कुछ उनके पास है, वह सभी एक प्रकार से धीरज का ही

है। जिस कन्या का उनके बेटे के लिये रिश्ता आयेगा, उसके माता-पिता भी इस वास्तविकता से परिचित ही होंगे। दहेज में वे नकद दस लाख की मांग करने लगे थे। ऐसा करते हुए वे हिचकते भी नहीं थे। अब सबके पास तो इतना पैसा होता नहीं है, इसलिये जिनकी कन्या सुशिक्षित एवं संस्कारवान-सुन्दर थी, वे इतना दहेज और नकद देने में सक्षम नहीं थे, जो इतना पैसे देने में सक्षम थे, उनकी कन्या धीरज को पसंद नहीं आती थी। कोई कन्या मोटी थी तो कोई धीरज के दृष्टिकोण से सुन्दर नहीं थी। पैसे को देख कर मनोहर लाल रिश्ता पक्का करने की सोचते तो कन्या को देखकर धीरज इन्कार कर देता। जिस कन्या को धीरज पसंद करता, उसके पिता अधिक दहेज दे पाने में सक्षम नहीं होते थे, इस कारण से इस रिश्ते को मनोहरलाल अस्वीकार कर देते। समय इसी प्रकार से निकलता चला गया। धीरज की उम्र चालीस के पार चली गई। बाल पकने लगे थे। सफेद-काले बालों की खिचड़ी बन गई थी। समय के साथ-साथ रिश्ते आना कम होते-होते बंद हो गये। अब मनोहर लाल की तंद्रा टूटी। लगा कि बेटे के विवाह में उनकी गलती से काफी विलम्ब हो गया है, इसलिये अब किसी भी प्रकार से उसका विवाह हो जाये। पहले रिश्ते चल कर आते थे, अब रिश्ते के लिये उनको चल कर जाना पड़ रहा था। उन्होंने अपने परिचितों को भी रिश्ता देखने को कह दिया था। यहाँ तक कहा कि वह बिना दहेज के ही विवाह करेंगे। फिर भी कोई रिश्ता नहीं आया। एक दिन उनके अत्यन्त निकट के परिचित ने उन्हें समझाया कि धीरज की आयु और अवस्था को देखते हुए अब कोई कुमारी कन्या इससे विवाह करने को तैयार नहीं होगी। अगर धीरज का घर बसाना है तो किसी विधवा अथवा परित्यक्ता स्त्री के साथ विवाह करा दें। अगर अब भी इस तरफ देर की गई तो फिर विवाह हो पाना असम्भव ही हो जायेगा। मनोहर लाल की समझ में बात आ गई थी लेकिन अब किसी विधवा अथवा एक-दो बच्चों की माँ से विवाह करने को धीरज तैयार नहीं था। अपनी बढ़ती आयु को देखकर धीरज ने निश्चय कर लिया कि वह विवाह नहीं करेगा। पिता को भी उसने अपने निश्चय के बारे में बता दिया था। ऐसी स्थिति में आगे चलकर न धीरज की गति-मुक्ति होने वाली थी और न उसके माता-पिता की। चूंकि इसके साथ ही एक वंश समाप्त हो जाना था, अत: इनके पितर भी हमेशा अतृप्त ही बने रहने वाले थे।

विद्वान आचार्यों का हमेशा से ही यह विचार रहा है कि अपना वर्तमान सुधार लेने से भविष्य अपने आप सुधर जाता है। वर्तमान सुधारने से तात्पर्य सभी प्रकार के दायित्वों को पूरा करने से है। अनेक व्यक्ति सम्भवत: इस प्रकार के विचारों से सहमत नहीं हैं लेकिन परोक्ष रूप से पड़ने वाले प्रभावों से बचा रह पाना असम्भव ही है। पितृदोष के कारण से उत्पन्न होने वाली पीड़ा तथा समस्या से बचने के लिये अपने सभी दायित्व तथा मृतक की अपेक्षाओं को पूरा करना आवश्यक है। वैसे तो मृतक की शेष जिम्मेदारियों को पूरा करने का दायित्व बेटों का ही होता है लेकिन कभी-कभी बेटे इस

दायित्व का निर्वाह नहीं करते हैं, तब उनकी बेटी भी चाहे तो शेष दायित्वों का निर्वाह यथा सामर्थ्य कर सकती है। इससे पितरों की असीम कृपा उस बेटी पर हमेशा बनी रहती है और दायित्वों से भागने वाले बेटे कभी जीवन का सुख भोगते दिखाई नहीं देते हैं। इस संदर्भ में आपको एक सत्य घटना के बारे में बताना उचित रहेगा। एक व्यक्ति ने घर के काम के लिये किसी से कुछ पैसा लिया था। लिये गये पैसों की 24 किश्तें ब्याज सहित बनाकर प्रत्येक महीने की दस तारीख को देनी होती थी। बीस महीने तक उसने ठीक से किश्तें चुकाई, फिर एकाएक हृदय गति रुकने के कारण से उसकी मृत्यु हो गई। जब क्रियाकर्म की रस्में पूरी हो गई तो जिसने कर्ज दिया था, वह घर आया। मृतक के दो बेटे और एक बेटी थी। बेटी एक स्कूल में शिक्षिका थी। उस व्यक्ति ने बेटों से कहा कि उनके पिता द्वारा लिये गये कर्ज की चार किश्तों की इतनी राशि अभी बाकी थी, इसे वे चुकता कर दें। बेटों ने इन्कार कर दिया कि जब उन्होंने पैसा लिया नहीं तो वे क्यों चुकायें? कर्ज लेने वाला चला गया। बाद में मृतक की बेटी को पता चला कि वह व्यक्ति उसके पिता के बारे में उसका पैसा न चुकाये जाने को लेकर काफी अपमानजनक बातें कर रहा था। एक दिन वह उसके घर पहुँच गई। उससे निवेदन किया कि पिता के बारे में गलत बोलना बंद करें, उनका जितना पैसा बनता है, वह उसे महीने भर में वापिस लौटा देगी। उसने बाद में पूरे पैसे लौटा भी दिये। आगे चल कर उस बेटी को अच्छा घर और पति मिला, गृहस्थी काफी सुखपूर्वक चलने लगी। उसके भाई हमेशा ही पैसों की तंगी से परेशान रहते। बड़े भाई का विवाह तो पिता ने कर दिया था लेकिन छोटे भाई का कहीं से भी रिश्ता नहीं आ रहा था। बेटी का मानना है कि उसके पिता कभी-कभी उसके सामने साक्षात् रूप से उपस्थित होते हैं, इसका उसे अनुभव होता है। उसका यह भी मानना है कि उसकी समृद्धि के पीछे उसके पिता की आत्मा का बहुत बड़ा आशीर्वाद है। इसे आप पितर कृपा भी मान सकते हैं।

जिस भी व्यक्ति को पितरदोष सम्बन्धी किसी भी प्रकार की समस्या हो, तो वह ज्योतिषी द्वारा बताये गये उपायों का प्रयोग करने के साथ-साथ ऊपर बताये गये चारों उपायों का भी प्रयोग करे तो निश्चित रूप से लाभ की प्राप्ति होती है। यह ऐसे उपाय हैं जो किये जाने पर अवश्य ही अपना फल देते हैं। एक बात मैं और बताना चाहता हूँ कि यहाँ जो चार उपाय बताये हैं, इन्हें आप पितृदोष की पीड़ा से ग्रस्त हैं, तो अवश्य करें, समस्यायें समाप्त होंगी। अगर समस्या नहीं है, तब भी इन उपायों की तरफ गम्भीरता से ध्यान देकर इन्हें व्यवहार में लायें। आप पर किसी भी प्रकार की पितृ पीड़ा होगी तो उसका शमन होगा और पीड़ा नहीं है तो आपको बिना मांगे ही सभी प्रकार की सुख-समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपमें अच्छी भावनाओं का विकास होगा। आत्मबल में वृद्धि होकर साहस बढ़ेगा और किसी भी प्रकार की समस्या अधिक दिनों तक आपके सामने टिकी नहीं रहेगी।

पितृदोष- बाधायें एवं उपचार

व्यक्ति हर काल में और हर समय सुखों को पाने के लिये सभी प्रकार के प्रयास करता है किन्तु उसे सुख मिलें अथवा न मिलें, दु:खों से साक्षात्कार अवश्य हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ऐसी अनेक आधारभूत आवश्यकतायें होती हैं जिनके बिना जीवन चल नहीं सकता और न किसी प्रकार के सुखों का भोग हो सकता है। समय पर विवाह होना, समय पर संतान सुख मिलना, अच्छे वेतन वाली नौकरी मिलना, व्यवसाय बहुत अच्छा चलना, सभी प्रकार की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति होना, परिवार में सुख-शांति रहना, स्वास्थ्य अच्छा रहना आदि व्यक्ति की आधारभूत आवश्यकतायें हैं। यह सब मिलकर ही किसी व्यक्ति के लिये सुखों के दरवाजे खोलती हैं। आप कल्पना करें कि एक व्यक्ति के पास सभी कुछ है, नौकरी, व्यवसाय, धन, अच्छा स्वास्थ्य, किन्तु उसका अगर विवाह नहीं होता है, तो इन सबका सुख ठीक से भोगा नहीं जा सकता है। अगर विवाह हो जाता है और संतान की प्राप्ति नहीं होती है, तब भी किसी प्रकार के सुख का आनन्द नहीं लिया जा सकता। यदि समय पर विवाह हो गया, समय पर संतान की प्राप्ति हो गई लेकिन अच्छी नौकरी अथवा अच्छा व्यवसाय नहीं है तो बिना धन के कैसे सुख भोगा जा सकता है? यदि विवाह हो जाता है, संतान सुख मिल जाता है, अच्छी नौकरी अथवा उत्तम व्यवसाय मिल जाता है लेकिन परिवार में कलह होती रहती है, दाम्पत्य सम्बन्धों में तनाव रहता है तो प्राप्त हुए सुखों को कैसे भोगा जा सकता है? यदि उपरोक्त में बताये गये सभी सुखों की प्राप्ति हो जाये किन्तु व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहे, हर समय किसी न किसी रोग से ग्रस्त रहे तो किसी भी सुख का भोग कैसे किया जा सकता है? इस प्रकार से व्यक्ति के जीवन में चारों तरफ कभी-कभी दु:ख ही दु:ख दिखाई देने लगते हैं।

जीवन में बढ़ते दु:खों का कारण कहीं न कहीं अवश्य होता है। बिना कारण किसी के जीवन में कभी दु:खों की छाया नहीं पड़ सकती, इसलिये हमारे सामने जब कभी किसी प्रकार का दु:ख आता है तो अविलम्ब उसके कारणों को खोजने का प्रयास करें। अक्सर ऐसा होता है कि व्यक्ति कारण खोजने की अपेक्षा प्राप्त होने वाले दु:खों को दूसरे ऐसे कारणों से जोड़ देता है जो वास्तविकता में कारण होते ही नहीं हैं। जब किसी समस्या का कारण गलत खोजा जायेगा, तो उसे दूर करने का प्रयास भी गलत दिशा में ही किया जायेगा और जब सब कुछ गलत ही होगा तो दु:खों को दूर कैसे किया जा सकता है? जो लोग अपने दु:खों का सही कारण नहीं खोज पाते हैं, दु:ख उनके जीवन में स्थायी रूप से जम जाता है। किसी व्यक्ति का विवाह नहीं हो पाता है अथवा विवाह

में विलम्ब होता चला जाता है तो ऐसा क्यों हो रहा है, यह जानने की अपेक्षा अनेक लोग इसे भाग्य का लिखा मान लेते हैं। किसी व्यक्ति का विवाह नहीं होने पर व्यक्ति स्वयं यह मान लेता है कि उसके भाग्य में विवाह सुख नहीं लिखा है। किसी का विवाह होना अथवा नहीं होना, इसमें भाग्य की कोई भूमिका नहीं होती है। किसी का व्यवसाय नहीं चलता तो मान लिया जाता है कि किसी ने उसके काम को बांध दिया है। किसी के घर में कलह होने पर इसे किसी दुश्मन का काम बता दिया जाता है। ऐसी एक नहीं, अनेक प्रकार की स्थितियां दिखाई दे जायेंगी किन्तु सही समाधान नहीं होने के कारण यह समस्यायें ऐसे ही बनी रहती हैं और समय के साथ-साथ इनमें वृद्धि होती जाती है। जो व्यक्ति लम्बे समय से विभिन्न प्रकार की पीड़ा भोग रहे होते हैं, उनकी समझ में नहीं अता कि वे क्या करें?

इस बात को हमेशा ध्यान में रखना चाहिये कि ऐसी कोई समस्या नहीं जिसका समाधान न हो, ऐसा कोई दु:ख नहीं जिसका निवारण न किया जा सके। सामान्य रूप से व्यक्ति जब किसी समस्या से लम्बे समय से पीड़ित रहता है तो वह इसके समाधान के लिये किसी ज्योतिषी के पास जाता है। ज्योतिषी के पास जाकर व्यक्ति की समस्या का समाधान हो जाये, इसके लिये दो बातों का होना आवश्यक है। एक, ज्योतिषी योग्य एवं आपकी समस्या का सही कारण जानकर उचित उपाय बताये। दो, जो उपाय बताये जायें उन्हें पूरी श्रद्धा, आस्था एवं विश्वास के साथ प्रयोग किया जाये। अनेक व्यक्ति किसी समस्या के समाधान के लिये ज्योतिषी के पास जाते हैं, अपनी समस्या बताते हैं और बाद में ज्योतिषी द्वारा बताये गये उपायों का प्रयोग ही नहीं करते। उनके भीतर से एक आवाज उठती है कि भला इन उपायों के करने से भी क्या लाभ मिल सकता है? ऐसे में परिणाम भी निश्चित हो जाता है। लाभ नहीं मिलता चाहे बाद में कितने ही उपाय क्यों न करते रहें।

आज जिन समस्यों के कारण अधिकांश व्यक्ति कष्ट भोग रहे हैं, उनके बारे में पहले बताया गया है, सन्दर्भ के रूप में पुन: बताया जा रहा है कि विवाह विलम्ब, संतान सुख में बाधा, उत्तम व्यवसाय न होना अथवा व्यवसाय से उत्तम लाभ की प्राप्ति नहीं होना, अच्छे वेतन वाली उत्तम नौकरी न मिलना, पारिवारिक समस्यायें, अच्छा स्वास्थ्य न होना अर्थात् बार-बार किसी न किसी रोग से पीड़ित रहना आदि समस्याओं से अधिकांश व्यक्ति दु:ख भोग रहे हैं। कई बार तो ज्योतिषीय परामर्श लेने और बताये गये उपायों का प्रयोग करने पर भी वांछित लाभ की प्राप्ति नहीं हो पाती है। इस कारण समय के साथ-साथ दु:ख एवं पीड़ा में वृद्धि होती जाती है। ऐसे में एक प्रश्न बार-बार उठता है कि इन समस्याओं का कारण क्या है और इन्हें कैसे दूर किया जाये?

इस प्रकार की समस्याओं पर लम्बे समय तक अनुसंधान करने पर मैं इस

निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि इसके लिये पितृदोष की बहुत बड़ी भूमिका रहती है। पितृदोष क्या है, इसके कारण आदि के बारे में अन्य अध्यायों में विस्तार से जानकारी दी गई है। यहाँ अगर संक्षिप्त रूप में पितृदोष की सम्पूर्ण व्याख्या की जाये तो इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि आपको प्राप्त होने वाले किसी भी प्रकार के सुख पितृदोष के कारण बाधित हो जाते हैं और जहाँ से सुखों की प्राप्ति होनी चाहिये थी, वहीं से दु:ख मिलने लगते हैं। इन सबके पीछे एक ऐसी अदृश्य शक्ति काम कर रही होती है जिसे आम बोलचाल की भाषा में **पितर** कहा जाता है। यह एक ऐसी अदृश्य शक्ति है जो आपको चाहे जैसे दु:ख दे सकती है किन्तु आप उसका किसी भी रूप में शक्ति द्वारा प्रतिकार नहीं कर सकते हैं। पितृदोष से मुक्ति प्राप्त करने के विशेष उपाय एवं मार्ग हैं, उनका प्रयोग करके पितरों को प्रसन्न करके ही उनकी कृपा प्राप्त की जा सकती है। पितरों की कृपा आपके लिये सुख-समृद्धि एवं सौभाग्य के द्वार खोल सकती है।

पितृदोष की समस्या को केवल ज्योतिष से जोड़कर ही नहीं देखा जा सकता क्योंकि इसके कुछ कारण मानवीय व्यवहार के साथ भी जुड़े होते हैं। इस कारण जो व्यक्ति ज्योतिषीय समाधान के लिये किसी भी ज्योतिषी के पास जाते हैं, तो उन्हें उनकी जन्मपत्रिका के आधार पर ही उपचार बता दिये जाते, मानवीय पक्ष को पूरी तरह से अनदेखा कर दिया जाता है। इसलिये अनेक जातक जो पितृदोष से सम्बन्धी अपनी किसी समस्या के समाधान के लिये ज्योतिषीय उपायों पर ही आश्रित रहते हैं, उन्हें पूरा लाभ होते नहीं देखा जाता है। कुछ विद्वान इसे ज्योतिष से सम्बन्धित विषय मानते ही नहीं है। दोनों विचारधायें पितृदोष के सम्बन्ध में हमेशा समानान्तर चलती दिखाई देती हैं। आज चूंकि व्यक्ति के जीवन के अधिकांश क्षेत्रों में सामान्य से लेकर गम्भीर समस्यायें उत्पन्न होने लगी हैं और इनको पितृदोष के साथ जोड़कर देखा जाने लगा है, इसलिये इन समस्याओं को जानना, इनके कारणों को खोजना और फिर इनके समाधान हेतु ऐसे उपाय बताना जिनका प्रयोग करके लाभ लिया जा सके, अत्यन्त आवश्यक है।

आगे के अध्यायों में ऐसे विशेष पितृदोष से उत्पन्न होने वाली समस्यायें के बारे में बताया जा रहा है जिनसे अधिकांश व्यक्ति पीड़ित रहते हैं। किस क्षेत्र की समस्या क्या प्रभाव देती है और उससे मुक्ति के लिये क्या उपाय एवं प्रयास किये जाने चाहिये, इन सबके बारे में जानना भी आवश्यक है। आगामी अध्यायों में आपको इनके बारे में जानकारी प्राप्त हो जायेगी। प्रत्येक प्रमुख समस्या को एक पूरे अध्याय में स्पष्ट किया गया है। इसके साथ ही एक अन्य अध्याय में इस समस्या के उचित समाधान के लिये विशिष्ट उपायों का भी उल्लेख किया गया है। उपायों के बारे में आप सभी को एक बात स्पष्ट कर देनी आवश्यक है कि इन उपायों का पूर्ण आस्था, विश्वास एवं श्रद्धा के साथ प्रयोग करने पर जीवन में आने वाली समस्याओं में धीरे-धीरे सुधार आने लगता है।

इसके साथ ही आपकी सोच में सकारात्मकता सुदृढ़ होने लगती है। कोई भी जातक पितृदोष की किसी समस्या के समाधान के लिये उपाय करते समय यह सोच नहीं रखे कि तुरन्त ही कोई चमत्कार हो जायेगा। उपायों का प्रयोग करने पर किसी को तुरन्त तथा किसी को कुछ समय के पश्चात् लाभ की प्राप्ति होती है, इतना सत्य है कि लाभ मिलना अवश्य है अर्थात् पितृदोष की समस्या के कारण से उत्पन्न पीड़ा तथा कष्टों में कमी आने लगती है। इसलिये इस प्रकार की किसी भी समस्या के समाधान के उपायों का प्रयोग करते समय पर्याप्त धैर्य एवं संयम की आवश्यकता भी रहती है।

इस बारे में पहले संकेत दिया गया है कि पितृदोष की समस्या के पीछे मानवीय कारण भी होते हैं। किसी भी व्यक्ति को अन्य दायित्वों को पूरा करने के साथ-साथ अन्य पारिवारिक दायित्वों को भी पूरा करना होता है। वृद्धावस्था में, असहाय अवस्था में माता-पिता की सेवा करना तथा पिता की मृत्यु के पश्चात् उनके द्वारा छोड़ी गई जिम्मेदारियों को पूरा करना पुत्र का कर्त्तव्य होता है। जो व्यक्ति ऐसा नहीं करता है, उसे अवश्य पितृदोष की पीड़ा भोगनी पड़ती है चाहे उसकी जन्मपत्रिका में पितृदोष दिखाई न दे। बहुत से व्यक्ति इस तथ्य का उपहास करते दिखाई देते हैं कि अगर माता-पिता की सेवा न की जाये तो पितृदोष कैसे हो जायेगा? यह उपहास का नहीं, समझने का विषय है। प्रत्येक माता-पिता अपनी संतान को जन्म देकर उचित पालन-पोषण करते हैं, शिक्षा दिलाते हैं, बड़ा होने पर विवाह करते हैं, प्रत्येक क्षेत्र में बेटा आगे बढ़े, इसका पूरा प्रयास करते हैं, तब पुत्र का भी दायित्व बनता है कि वह वृद्धावस्था में माता-पिता को असहाय एवं उपेक्षित अवस्था में नहीं छोड़े और उनकी मृत्यु के पश्चात् परिवार की समस्त जिम्मेदारियों को पूरा करे। पिता की मृत्यु के पश्चात् बेटा उनके द्वारा छोड़ी गई सम्पत्ति का अधिकारी बन जाता है तो उनके द्वारा अपने पीछे छोड़ी गई जिम्मेदारियों को पूरा क्यों नहीं करे?

आगामी अध्यायों में व्यक्ति को प्रभावित करने वाले विभिन्न पितृदोषों की विवेचना करने के साथ ही उनके समाधान हेतु किये जाने वाले उपायों को भी अलग-अलग अध्यायों में दिया गया है। मानवीय आधार पर किये जाने वाले विशिष्ट उपायों का एक अलग अध्याय है, इस अध्याय में जिन उपायों का प्रयोग बताया गया है, उन्हें सभी को करना चाहिये, चाहे उन पर पितृदोष की कोई समस्या हो अथवा न हो। इसके बाद आप स्वयं देखेंगे कि आपका जीवन कितना सुखमय होता चला जायेगा?

पितृदोष के कारण आती हैं- आर्थिक समस्यायें

पितृदोष जैसी अदृश्य बाधा कई बार आर्थिक समस्या का कारण भी बनती है। आर्थिक समस्या से तात्पर्य यह नहीं है कि पितृदोष के कारण व्यक्ति की आय ही बाधित हो जाती हो। आर्थिक समस्या से तात्पर्य है कि उसे जीवन में जब-जब धन की आवश्यकता महसूस हो, तब-तब उसके पास धन नहीं हो और आय के समस्त स्रोत भी बाधित हो जायें। हालांकि ऐसा होना पितृदोष के रूप में एकमात्र कारण नहीं है, परन्तु यह बाधा जब पितृदोष के रूप में होती है, तो ऐसी अनेक समस्यायें आती हैं, जिसकी हमने कल्पना भी नहीं की है।

घर में चाहे सभी सदस्य मिलकर श्रेष्ठ धनार्जन करें और उत्तम आय प्राप्त होती रहे, परन्तु पितृदोष के कारण जब आर्थिक समस्या उत्पन्न होती है, तो उसका कारण यही होता है कि वह समस्त धन व्यर्थ के कार्यों में व्यय हो जाता है। घर में धन की बरकत नहीं रहती। वह धन बीमारी में अथवा ऐसे कार्यों में व्यय होता है, जिसके बारे में हमने पूर्व कल्पना नहीं की हो। ऐसा एक बार नहीं, वरन् अनेक बार होता है। इससे धीरे-धीरे यह लगने लगता है कि कोई न कोई अदृश्य बाधा ही है जिसके कारण घर में सभी के द्वारा धनार्जन करने के पश्चात् भी धन संचय नहीं हो पा रहा है।

पितृदोष के कारण जब आर्थिक समस्या होने लगती है, तो प्रारम्भ में यह सामान्य सी लगती है, परन्तु धीरे-धीरे यह समस्या विकट होती चली जाती है। आपके वाहन, घर इत्यादि में ऐसे-ऐसे नुकसान होने लगते हैं कि अनावश्यक रूप से उन पर पैसा खर्च करना पड़ता है। कई बार तो राजकीय दण्ड के रूप में भी व्यर्थ में धन देना पड़ता है। निष्कर्ष यही है कि घर में उत्तम आय होने के पश्चात् भी जब धन संचय किसी भी रूप में नहीं हो और यह स्थिति लगातार अनेक वर्षों तक बनी रहे, तो यह समझ जाना चाहिये कि इस प्रकार की बाधा पितृदोष के कारण भी उत्पन्न हो सकती है। इसका एक उदाहरण मैंने एक परिवार में देखा था। उस परिवार में तीन व्यक्ति कमाने वाले थे। उसके पश्चात् भी घर में धन की बरकत नहीं हो पा रही थी। घर का निर्माण कार्य भी अधूरा ही था। घर में सभी प्रकार की भौतिक सुख-सुविधायें नहीं थी, हालांकि उनके द्वारा अपने पितरों की सन्तुष्टि के निमित्त सभी कार्य करवाने का प्रयास किया जाता रहा था, परन्तु यह पर्याप्त नहीं था। कितने ही वर्षों तक घर में तीन सदस्यों के कमाने के पश्चात् भी धन की बरकत नहीं हो पा रही थी। उन तीनों भाइयों की जन्मपत्रिका का अध्ययन करने के पश्चात् मुझे यह ज्ञात हुआ कि सभी की जन्मपत्रिका में पितृदोष विद्यमान है और इस कारण उनके घर में धन की बरकत नहीं हो पा रही है, हालांकि वे अपने कार्यक्षेत्र से भी उतने अधिक संतुष्ट नहीं थे, परन्तु उनका काम चल रहा था।

उनके साथ सबसे बड़ी समस्या यह थी कि हर महीने कोई न कोई ऐसा अनावश्यक व्यय अचानक आ जाता था जिसमें काफी पैसा खर्च हो जाता था। वे चाहकर भी अपना मकान पूरा नहीं बनवा पा रहे थे। इसके अतिरिक्त भी धन की कमी के कारण बहुत सारे कार्य अधूरे पड़े हुए थे। उनकी जन्मपत्रिका में पितृदोष है, ऐसा जानने के पश्चात् मैंने उनको पितृदोष से सम्बन्धित कुछ निवारण बताये। यह निवारण के उपाय सभी को करने के लिये कहा। जैसे ही उन्होंने पितृदोष की मुक्ति के लिये उपाय करना प्रारम्भ किया, तो उनके जीवन में समस्यायें अधिक बढ़ने लगी। पहले माह में अत्यधिक धन खर्च हुआ। इसका कारण यह था कि उनके पितृदोष वाली समस्या गम्भीर थी। यह क्यों थी, इसे ज्ञात कर पाना सरल नहीं था। जैसे-तैसे उन्होंने अपने उपायों में निरन्तरता रखी तो उन्हें दूसरे महीने से ही लाभ नज़र आने लगा।

उन्होंने मुझे बताया कि वे जो पितरदोष मुक्ति के उपाय अब तक करते रहे थे, वे महज खानापूर्ति ही थे। उनके पिता के निधन को आठ वर्ष का समय गुजर चुका था। उनके निधन के पश्चात् ही आर्थिक समस्यायें बढ़ी थीं, इससे पूर्व सभी कार्य सहजता से हो जाया करते थे। हालांकि परिवार बढ़ने के साथ खर्चे बढ़े थे, परन्तु जो बचत पूर्व में होती थी, वह कुछ वर्षों से अत्यधिक प्रभावित हो रही थी। पितृदोष निवारण का उपाय करने के पश्चात् उन्हें लाभ होने लगा और कुछ ही माह पश्चात् स्थिति बिलकुल अनुकूल हो गयी। पितृदोष के कारण व्यक्ति का आर्थिक पक्ष भी कहीं न कहीं अवश्य ही प्रभावित हो जाता है।

पितृदोष के कारण आर्थिक उन्नति प्रभावित होने के पश्चात् घर में कितना ही धन हो, इसके उपरांत भी कोई भी कार्य सुचारु रूप से नहीं हो पाता। जब किसी कार्य के लिये धन की आवश्यकता होती है, तभी आर्थिक स्थिति डांवाडोल हो जाती है। पितृदोष जैसी अदृश्य बाधा में यह समझ पाना मुश्किल हो जाता है कि क्यों जीवन में धनार्जन के पश्चात् भी इस स्थिति का सामना करना पड़ रहा है?

पितृदोष में आर्थिक समस्या तब अधिक होती है, जब हमारे पूर्वजों का मोह अपनी सम्पत्ति से अधिक रहता हो अथवा उसके वंशजों के द्वारा गलत संसाधनों के द्वारा आय प्राप्ति के प्रयास किये जा रहे हों। ऐसा विशेष परिस्थिति में होता है। सामान्यत: पितर असंतुष्ट होने पर भी घर में बरकत को रोक देते हैं। जिस घर में पितृदोष के कारण आर्थिक समस्या रहती हो उसको पहचानने का सही उपाय यही है कि उस घर में अन्न सही रूप से सुरक्षित नहीं रहता। खाने-पीने की वस्तुयें प्रयोग में लेने से अधिक फेंकनी पड़ती हैं। बीमारी के इलाज अथवा व्यर्थ के कार्यों पर धन खर्च होता है। बेवजह ऐसे खर्च उत्पन्न हो जाते हैं, जिसकी पूर्व में कल्पना भी नहीं की गई हो। घर में बार-बार वस्तुओं का नुकसान होता है। ऐसी आर्थिक समस्या से निपटने के लिये पितृदोष का निवारण होना आवश्यक है।

आर्थिक समृद्धि हेतु उपाय

पितृदोष के कारण जब व्यक्ति की आर्थिक स्थिति प्रभावित होती है, तो ऐसी स्थिति में निम्नांकित उपायों के द्वारा अनुकूलता प्राप्त की जा सकती है:-

1. जीवन में धन समृद्धि के लिये लक्ष्मी जी की पूजा उपासना के साथ ही पितरों की कृपा प्राप्त होना भी आवश्यक होता है। जब पितृदोष के कारण आर्थिक स्थिति प्रभावित हो, तो शुक्रवार के दिन से यह प्रयोग प्रारम्भ किया जाना उत्तम है। शुक्रवार के दिन यदि अमावस्या हो, तो यह मुहूर्त अतिश्रेष्ठ होगा। इसके अलावा दीपावली का दिन इस हेतु उत्तम होता है। उक्त शुभ मुहूर्त में प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होने के पश्चात् माँ लक्ष्मी और अपने पितरों को खीर का नैवेद्य अर्पित करें। यदि घर में खीर बनाना सम्भव नहीं हो, तो बाजार से मावे से बनी सफेद बर्फी सवा सौ ग्राम लाकर भी अर्पित की जा सकती है। यह प्रयोग लगातार सात शुक्रवार तक करना है। नैवेद्य के साथ एक गिलास जल भी अर्पित करें। नैवेद्य अर्पित करने के पश्चात् निम्नांकित मंत्र की तीन मालाओं का जप स्फटिक अथवा कमलगट्टे की माला से करें। साथ ही यथासंख्या पितृगायत्री मंत्र का जप भी करें-

मन्त्र : **ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः।**

इन दोनों मंत्रों का जप करने के पश्चात् लक्ष्मी जी और अपने पितरों से आर्थिक समस्या के निवारण की प्रार्थना करें। इस प्रयोग से शीघ्र ही आपको उत्तम लाभ होगा। पितरों और लक्ष्मी को चढ़ाया गया भोग स्वयं और घर के परिजन ग्रहण करें।

2. यह प्रयोग पितृदोष सम्बन्धी आर्थिक समस्या के निवारण के लिये अतिश्रेष्ठ है। इस प्रयोग को आप किसी विशेष मुहूर्त पर अथवा शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार से प्रारम्भ कर सकते हैं। सर्वप्रथम आपको गुग्गुल, छाड़छड़ीला, कर्पूर काचरी, लाल रंग के पुष्प और रुद्राक्ष की माला के रूप में सामग्री एकत्र करनी है। इस प्रयोग को रात्रिकाल में करना है। सर्वप्रथम स्नानादि द्वारा पवित्र होकर लाल वस्त्र धारण करें। तत्पश्चात् पश्चिम दिशा में चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर लक्ष्मी जी के विग्रह अथवा चित्र को स्थापित करें। लक्ष्मी जी का पूजन-अर्चन करने के दौरान लाल पुष्प अर्पित करें। सम्भव हो, तो लाल पुष्पों की माला ही अर्पित करें। तत्पश्चात् गुग्गुल, छाड़छड़ीला, कर्चूर काचरी को मिला लें और उस मिश्रण की 108 गोलियां बना लें। द्रव्य के रूप में घी मिला लें। अब कंडे को प्रज्वलित करें और अग्रांकित मंत्र का 108 बार उच्चारण करते हुए उक्त सामग्री कंडे पर डालते जायें। यह प्रयोग प्रत्येक शनिवार की रात्रि को लगातार 11 शनिवार तक करें। जब इस प्रयोग की शुरूआत किसी विशेष

मुहूर्त से हो, तो नित्य 11 दिनों तक यह प्रयोग किया जाना चाहिये।

मंत्र-**ॐ पद्मावति पद्मनेत्रे पद्मासने लक्ष्मीदायिनी वांछा भूत प्रेत निग्रहणी सर्वशत्रु संहारिणी दुर्जन मोहिनी ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रीं श्रीं पद्मावत्यै नमः।**

इस प्रयोग से न केवल पितृदोष निवारण होगा वरन् लक्ष्मी का आशीर्वाद मिलने के साथ ही घर की अदृश्य बाधायें भी समाप्त हो जायेंगी और आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।

3. घर में जब पितृदोष के कारण आर्थिक समस्या उत्पन्न हो रही हो तथा कर्ज सम्बन्धी समस्या बहुत अधिक बढ़ गयी हो, तो ऐसी स्थिति में यह प्रयोग करना आपके लिये श्रेष्ठ होगा। इस प्रयोग के प्रभाव से ऋण सम्बन्धी समस्या का धीरे-धीरे निवारण होने लग जायेगा। यह प्रयोग शुक्लपक्ष के बुधवार से प्रारम्भ किया जा सकता है। बुधवार के दिन सवा सौ ग्राम मूँग के लड्डू लाकर नैवेद्य के रूप में अपने द्वार पर लगे गणेशजी को अर्पित करें, साथ ही हरी दूब भी अर्पित करें। तत्पश्चात् अपने पूजन कक्ष में स्थापित गणेश जी के विग्रह अथवा चित्र के समक्ष मोदक का नैवेद्य और दूब अर्पित करते हुए अपनी कर्ज सम्बन्धी समस्या के निवारण की प्रार्थना करें और मन ही मन **ॐ गणेश ऋणं छिन्दि वरेण्यं हुं नमः फट्** मंत्र का उच्चारण करते रहें। यह प्रयोग लगातार 21 बुधवार तक करने से कर्ज सम्बन्धी समस्या से मुक्ति मिलने लग जायेगी और भगवान गणेश की कृपा से आर्थिक उन्नति होगी।

4. जब किसी व्यक्ति को पितृदोष के कारण वित्तीय समस्या का सामना करना पड़े, तो उसके लिये लक्ष्मी जी को प्रसन्न करना असम्भव हो जाता है। ऐसी स्थिति में धनार्जन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार की समस्याओं से मुक्ति के लिये पितरों के साथ लक्ष्मीजी को प्रसन्न करना आवश्यक हो जाता है। यह प्रयोग लक्ष्मीजी के साथ पितरों को प्रसन्न करने वाला है। इस प्रयोग को आप दीपावली अथवा किसी भी अमावस्या के दिन प्रारम्भ कर सकते हैं। इस हेतु चाँदी की एक छोटी डिब्बी बनवा लें। जिस दिन प्रयोग करना हो, उस दिन इस डिब्बी को स्वच्छ करें और अपने पूजन कक्ष में रख दें। प्रयोग के समय इस डिबिया में थोड़ा सा नागकेसर, तुलसी के पत्ते, कचनार के पत्ते और बिल्व पत्र रख लें। तत्पश्चात् माँ लक्ष्मी तथा पितरों का पूजन करें। उनके पूजन के साथ ही उस डिबिया का भी पूजन करें। पूजन के पश्चात् वह डिबिया लाल कपड़े में लपेटकर धन रखने वाले स्थान पर रख दें। प्रत्येक अमावस्या पर उसमें रखी सामग्री को परिवर्तित कर दें। तुलसी, नागकेसर, कचनार इत्यादि के पत्ते अमावस्या से एक दिन पहले एकत्रित करें। यह प्रयोग करने से शीघ्र ही आपकी आर्थिक समस्या का समाधान हो जायेगा।

5. यह प्रयोग आपको आर्थिक समस्याओं से उबारकर शीघ्र आर्थिक सम्पन्नता देने

वाला हैं। दीपावली, होली, महाशिवरात्रि, श्रीकृष्णजन्माष्टमी, अक्षयतृतीया, रविपुष्य योग, गुरुपुष्य योग इत्यादि शुभ मुहूर्त में यह प्रयोग किया जा सकता है। यह प्रयोग आपको रात्रिकाल में करना है। प्रयोग से पहले 21 काले अकीक रत्न, काला कपड़ा, काली हल्दी एकत्रित कर लें। सर्वप्रथम 21 काले अकीक और काली हल्दी का पूजन करें। पूजन रोली, मौली, चावल, पुष्प और धूप-दीप से करें। तत्पश्चात् उन्हें काले कपड़े में लपेटकर पोटली बना लें और घर के पूर्व और उत्तर दिशा वाले कोने में ले जाकर गाड़ दें। यदि इस दिशा में कहीं कच्ची भूमि नहीं हो, तो किसी भारी वस्तु से दबाकर ऐसे स्थान पर रखें ताकि कोई इस पोटली को निकाल नहीं सके। प्रत्येक वर्ष उक्त दिवस पर अथवा दीपावली वाले दिन इस पोटली की पूजा उपासना करें और पुनः उसी स्थान पर दबा कर रख दें। इस प्रयोग से आपके जीवन में चल रही धन सम्बन्धी समस्या का अन्त हो जायेगा। यदि किसी कारणवश आपकी आय बाधित हो रही है, तो वह भी खुल जायेगी और आप अनुकूलता महसूस करेंगे।

6. घर में आर्थिक समृद्धि के लिये यह उपाय बहुत ही सरल और लाभदायक है। अशोक का वृक्ष घर में लगाना शुभ माना जाता है। विशेष अवसरों पर अशोक वृक्ष के पत्ते बंदनवार के रूप में लगाना भी अत्यन्त शुभ माना जाता है। यह प्रयोग आप किसी भी शुभ मुहूर्त में कर सकते हैं। विशेष रूप से दीपावली एवं अक्षयतृतीया के दिन यह उपाय करना श्रेष्ठ फलदायक होता है। इस हेतु अशोक के इतने पत्ते एकत्र कर लें जिससे आपके मुख्य द्वार की बंदनवार बन जाये। सायंकाल गोधूली बेला में अशोक के पत्तों को पहले स्वच्छ जल से धो लें तत्पश्चात् प्रत्येक पत्ते पर **श्रीं** लिखे। श्रीं लिखते समय निरन्तर माँ लक्ष्मी का ध्यान करें। जब बन्दनवार पूरी बना लें तो इसे मुख्य द्वार पर लगा लें। साथ ही मन ही मन माँ लक्ष्मी का ध्यान करते हुए उनको अपने घर में आमंत्रित करें। इस प्रयोग से आपकी आर्थिक समस्या दूर होगी और सम्पन्नता आयेगी। यह बन्दनवार प्रत्येक शुक्रवार को सायंकाल भी लगाई जा सकती है। एक बन्दनवार को एक सप्ताह से अधिक नहीं रखें और उतारने के पश्चात् उसको बहते जल में प्रवाहित कर दें अथवा पीपल के वृक्ष पर अर्पित कर दें।

7. यह उपाय धनागम में वृद्धि करके पितृदोष, ऊपरी बाधा जैसी समस्याओं के कारण आने वाली आर्थिक समस्याओं को दूर करता है। यह उपाय आपको होली, दीपावली, अक्षयतृतीया, रविपुष्य, गुरुपुष्य इत्यादि शुभ मुहूर्त पर करना है। इस प्रयोग के लिये तीन छोटे मिट्टी के कलश और दो अन्य पात्र लें। अब 800 ग्राम साबुत उड़द, 900 ग्राम लाल मसूर, 300 ग्राम चने की दाल, पाँच प्रकार का अनाज जिसमें प्रत्येक की मात्रा 125 ग्राम हो, सवामीटर काला कपड़ा, सवा किलो नमक, चार नारियल और 125 ग्राम साबुत उड़द और काले तिल का मिश्रण बना लें।

रात्रिकाल में पूजन कक्ष में उक्त सामग्री को जमा लें। भगवान गणेश का ध्यान

करते हुए मिट्टी के पात्रों में क्रमशः एक में 800 ग्राम साबुत उड़द, दूसरी में 900 ग्राम मसूर और तीसरी में 300 ग्राम चने की दाल डाल दें और उस पर एक-एक नारियल रख दें। एक अन्य पात्र में पाँच प्रकार के अनाज को जमा लें तथा दूसरे पात्र में काला कपड़ा रखकर उसमें 125 ग्राम साबुत उड़द और काले तिल के मिश्रण को रखकर उसके साथ नमक और एक नारियल भी रख दें। अब तीनों मिट्टी के कलश, अनाज मिश्रण और काले कपड़े में रखी सामग्री का पंचोपचार अर्थात् रोली, मौली, चावल और धूप-दीप से पूजन करें। पूजन से पहले कलशों पर स्वस्तिक बनायें। पूजन के पश्चात् मिट्टी के कलश उसी स्थिति में अपने रसोईघर में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ उन्हें बार-बार हटाना अथवा छूना न पड़े। पंच अनाज को अब काले कपड़े वाली पोटली में मिला लें और पोटली किसी चौराहे पर ले जाकर रख आयें। उसके साथ जो नारियल था, उसको वहीं फोड़ कर रख दें। इस क्रिया के पश्चात् बिना मुड़े अपने घर आ जायें और घर में आने से पहले अपने पैर धो लें।

इस प्रयोग से आपकी धन बाधा दूर हो जायेगी और घर में धन की बरकत होगी। अदृश्य बाधाओं के कारण होने वाली आर्थिक समस्याओं का भी निवारण होगा। यह प्रयोग आप वर्ष में एक बार किसी शुभ मुहूर्त पर कर सकते हैं। जब दूसरी बार यह प्रयोग करें तो पुराने मिट्टी के कलश और उसमें रखी सामग्री को पीपल पर अर्पित कर आयें। इससे आपकी आर्थिक स्थिति को किसी की नज़र भी नहीं लगेगी और धनार्जन में निरन्तरता रहेगी।

8. यदि आपको यह अनुभव होता हो कि घर में वास्तुदोष के कारण अथवा किसी अदृश्य बाधा के कारण आपको आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ रहा है, तो यह उपाय श्रेष्ठ फलदायक सिद्ध होगा। इस उपाय से कर्ज सम्बन्धी समस्या का भी समाधान होगा। आपको शुक्ल पक्ष के शुक्रवार अथवा दीपावली, अक्षयतृतीया जैसे शुभ मुहूर्त वाले दिन प्रातःकाल स्नानादि के पश्चात् यह उपाय करना है। इस हेतु चाँदी का एक ऐसा पात्र लें जिसमें उसका ढक्कन भी हो। अब भगवान गणेश और माँ लक्ष्मी का ध्यान करते हुए उसमें गंगाजल डाल दें और गंगाजल में एक फिरोजा रत्न भी डूबो दें। अब उस पात्र को बंद कर अपने पूजन कक्ष में अथवा घर के ईशान कोण में किसी सफेद कपड़े में लपेटकर रख दें। इस प्रयोग से आपको आर्थिक समृद्धि मिलेगी और कर्ज सम्बन्धी समस्या से भी छुटकारा मिलेगा।

9. आर्थिक समृद्धि के लिये पीपल वृक्ष पर दीप दान का प्रयोग अत्यधिक श्रेष्ठ माना जाता है। पीपल में पितर, समस्त देवी देवता, गुरु ग्रह इत्यादि का वास माना जाता है। इसलिये कोई भी प्रयोग हो, उसमें पीपल वृक्ष की पूजा-उपासना श्रेष्ठ मानी गई है। आप जब पीपल वृक्ष के समक्ष दीपदान का प्रयोग करें तो वह सायंकाल किसी शुभ मुहूर्त से प्रारम्भ करना है। शुक्ल पक्ष के गुरुवार से अथवा दीपावली, होली, अक्षयतृतीया

इत्यादि शुभ मुहूर्त से यह प्रयोग प्रारम्भ किया जा सकता है। यदि आप नित्य दीप दान करने में सक्षम नहीं हैं, तो गुरुवार एवं शुक्रवार को अवश्य यह प्रयोग करें। इस हेतु मिट्टी के दीयों का प्रयोग किया जा सकता है। दीप दान में गाय के घी का प्रयोग करें। जब भी यह प्रयोग करें, सर्वप्रथम जल से पीपल को सींचें तत्पश्चात् दीपक प्रज्वलित करें और अपने पितर, माँ लक्ष्मी, गुरु एवं शुक्र का ध्यान करते हुए पीपल की तीन परिक्रमायें करें। तत्पश्चात् हाथ जोड़कर चुपचाप बिना किसी से बात करें घर आ जायें। इस प्रयोग से पितृदोष के कारण होने वाली आर्थिक बाधायें धीरे-धीरे समाप्त होने लग जायेंगी और आप अनुकूलता महसूस करेंगे। इस प्रयोग से सभी देवी-देवता और पितर प्रसन्न होकर आपको आशीर्वाद प्रदान करेंगे।

10. यदि आपको जीवन में निरन्तर धन की कमी अनुभव होती हो, तो अपने घर में सफेद रंग का पेंट करवायें, क्योंकि श्वेत रंग में माँ लक्ष्मी का वास माना जाता है और लक्ष्मी की कारक वस्तुयें जैसे एकाक्षी नारियल, धनदायक कौड़ियां, दक्षिणावर्ती शंख, गोमतीचक्र इत्यादि अवश्य रखें। उक्त सभी सामग्रियां लाल कपड़े में लपेटकर धन रखने वाले स्थान पर अथवा पूजन कक्ष में रखनी चाहिये और नित्य इनका धूप-दीप दिखाकर पूजन करना चाहिये।

11. जिन व्यक्तियों को पितृदोष के कारण आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा हो उनको दीपावली वाले दिन दोपहर के समय अपने पितरों के निमित्त श्राद्धकर्म अवश्य करना चाहिये और श्रद्धानुसार दान एवं दक्षिणा भी अवश्य देनी चाहिये। श्राद्धकर्म में ब्राह्मण भोजन आवश्यक होता है। साथ ही सभी श्राद्धकर्म से सम्बंधित नियमों का पालन करना भी आवश्यक होता है।

पितृदोष के कारण होती हैं- पारिवारिक समस्यायें

किसी भी घर में पारिवारिक समस्यायें होना साधारण बात है, लेकिन ऐसी समस्यायें जब अपने चरम पर पहुँच जायें और परिजनों के मन में एक-दूसरे के प्रति नफरत की भावना घर कर जाये, तो ऐसी स्थिति में इसका कारण पितृदोष हो सकता है। भारत में पिछले कुछ दशकों से पारिवारिक समस्यायें बढ़ी हैं, हालांकि इसका कारण समाज में हो रहे परिवर्तन हैं, परन्तु पितृदोष वह बाधा होती है, जिसके कारण जब पारिवारिक समस्या उत्पन्न होने लगती हैं, तो सब कुछ अनुकूल करने का प्रयास कर लेने के पश्चात् भी परिजनों में मतैक्य नहीं हो पाता।

पितृदोष के कारण जब किसी घर में पारिवारिक समस्यायें उत्पन्न होती हैं, तो एक-दूसरे के विचार से परिजन सहमत नहीं हो पाते हैं। किसी के द्वारा प्रस्तावित सुझाव को दूसरा सिरे से निरस्त कर देता है। इससे उन परिजनों के मध्य वैमनस्यता बढ़ जाती है। अनेक बार तो ये पारिवारिक समस्यायें इतनी विकट हो जाती हैं कि इसके कारण परिजनों को अलग तक होना पड़ जाता है। पितृदोष के कारण परिजनों के मन में ऐसे विचार उत्पन्न हो जाते हैं जिससे वे एक-दूसरे से नफरत करने लग जाते हैं। स्नेह की भावना समाप्त हो जाती है। कोई भी धार्मिक अथवा मांगलिक कार्य मिल-जुलकर सम्पन्न नहीं हो पाता। घर में सबकी रसोइयां अलग हो जाती हैं। यदि समर्थ हों, तो दूसरे घर में रहने के लिये चले जाते हैं।

पितृदोष के कारण पारिवारिक समस्यायें क्यों होती हैं, इसका मुख्य कारण यह है कि सभी परिजनों का मिलकर अपने पूर्वजों के प्रति, जो जिम्मेदारियां हैं, उन्हें भलीभांति रूप से नहीं निभा पाना। वर्तमान में पारिवारिक समस्याओं में विवाह के पश्चात् वैवाहिक जीवन से सम्बन्धित परेशानियां अधिक बढ़ी हैं। प्रत्येक स्थिति में इसका कारण पितृदोष नहीं होता है, लेकिन लेकिन कहीं न कहीं पितृदोष की समस्या अवश्य होती है। विवाह हो जाने के पश्चात् जब बिना किसी कारण के किसी परिवार में अचानक समस्यायें बढ़ने लग जायें, तो इसका दोष नई वधू को देने का भी प्रयास होने लगता है। ऐसा मान लिया जाता है कि बहू के पांव परिवार के लिये शुभ नहीं है लेकिन ऐसा सोचना पूर्णत: गलत होता है। अनेक बार यह देखा जाता है कि पितर अपने घर में आने वाले नये सदस्य के माध्यम से अपनी बात को कहना चाहते हैं, इसलिये वे उसके माध्यम से ऐसी समस्याओं को उत्पन्न करते हैं। जब घर में पारिवारिक समस्यायें उत्पन्न होने लगती हैं, तो यह समझ पाना कठिन हो जाता है कि इसका कारण पितृदोष है। इस कारण को जान लेने के पश्चात् जैसे ही इसके निवारण हेतु उपाय किये जाने लगते हैं, तो

स्वतः ही परिजनों के मध्य चल रही सभी प्रकार की समस्यायें समाप्त होने लग जाती हैं और वे मिल-जुलकर रहने लगते हैं। इसके कई उदाहरण मैंने देखे हैं, जहाँ पर पितृदोष के कारण पारिवारिक समस्या रह रही हो।

एक परिवार में माता-पिता अपने दो पुत्रों और उनके परिवार के साथ संयुक्त परिवार के रूप में रह रहे थे। उनके पौत्र एवं पौत्रियां भी हो चुकी थीं। काफी वर्ष अनुकूल रहने के पश्चात् अचानक ही उनके घर में परिजनों के मध्य वैचारिक मतभेद रहने लगे। माता-पिता को यह समझ में नहीं आया कि वे किसका साथ दें और किसका नहीं? समस्या इतनी बढ़ने लगी कि भाइयों ने घर छोड़कर अलग रहने की बात कह दी। माता-पिता ने अथक प्रयास किया कि कोई भी बेटा घर छोड़कर अलग नहीं रहे, क्योंकि इससे उनका समाज में मान-सम्मान कम हो जायेगा और लोग तरह-तरह की बातें करेंगे। इसका कारण पितृदोष हो सकता है, इसकी कल्पना उन्होंने कभी भी नहीं की थी।

पिछले कुछ वर्षों से उनके यहाँ पर प्रत्येक वर्ष होने वाला पितृकार्य भाइयों द्वारा एक-दूसरे पर छोड़ा जा रहा था। माता-पिता वृद्ध हो चुके थे, इसलिये वे अपने पुत्रों से यह अपेक्षा रखते थे कि वे उनका सभी कार्य सम्भाल लें। घर के धार्मिक कार्य भी उनके पुत्र और पुत्रवधुयें सम्पन्न करें। पुत्रों ने पितृकार्य को करने में लापरवाही बरती थी। पिछले दो वर्षों से श्राद्ध का कार्य भी सुचारू रूप से नहीं हो पा रहा था। इसके अतिरिक्त पुण्यतिथि पर होने वाले श्राद्धकर्म को करना ही बंद कर दिया था। यही कारण था कि उन्हें पितृदोष के कारण पारिवारिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। उन दोनों भाइयों की जन्मपत्रिका में पिछले दो वर्षों से दशायें भी प्रतिकूल ग्रहों की चल रही थी, इस कारण यह समस्या और भी अधिक बढ़ चुकी थी। स्थिति यह आ गयी थी कि वे घर छोड़कर दूसरे स्थान पर रहने लगे। इससे वे कई प्रकार की समस्याओं से घिर गये। घर से दूर होने के पश्चात् तो जो पितृकार्य जैसे-तैसे हो रहा था, वह भी बाधित हो गया। इससे पितृदोष कम होने के स्थान पर और गम्भीर हो गया। अब पारिवारिक स्थिति यह हो चुकी थी कि उन दोनों भाइयों ने आपस में मिलना-जुलना बंद कर दिया था। दोनों एक साथ एवं एक समय पर अपने माता-पिता के घर में मिलने नहीं आते थे। माता-पिता भी इस चिंता से अत्यधिक दुःखी थे। कुछ वर्ष पश्चात् उनके पारिवारिक गुरु का आना हुआ। उन्होंने जब उस घर के सुख को छिन्न-भिन्न होते हुए देखा, तो समझ गये कि इसका कारण पितृदोष ही है। उन्होंने यह जान लिया था कि पिता के समान पुत्रों ने पितृकार्य को भलीभांति रूप से नहीं किया था। उन्होंने पूरे परिवार को एक ही स्थान पर एकत्रित होने को कहा। गुरु के आदेश पर दोनों बेटे अपने पिता के घर में परिवार सहित पहुँचे, तब उनके गुरु ने यह बताया कि उनके पूर्वज उनसे असंतुष्ट हैं और यही कारण है कि घर में सुख बाधित हुआ था। आप लोग इस घर से दूर रहकर भी बिलकुल संतुष्ट

नहीं हो सकते हैं, वरन् बाहर रहने के पश्चात् आपके जीवन में समस्यायें और भी अधिक बढ़ी होंगी। यहाँ तक कि आप लोगों का वैवाहिक जीवन भी बाधित हो गया होगा।

अपने गुरु की बात सुनकर दोनों भाइयों को अपनी गलती का अहसास हुआ। अब उन्होंने पुनः अपने घर में वापिस आने के बारे में सोचा और अपने पिता के समान ही सभी धार्मिक कार्य और पितृकार्यों को सुचारू रूप से करने के बारे में विचार किया। शीघ्र ही अपने पितरों की पुण्यतिथि पर आने वाले श्राद्ध में उन्होंने श्रद्धा के साथ कार्य सम्पन्न किया और यथाशक्ति पितरों के नाम से दान-पुण्य का कार्य भी किया। इससे उनके घर में परिजनों के मध्य चल रहा मन-मुटाव काफी हद तक समाप्त हो गया। अब वे समझ गये कि आखिर क्यों उन्हें इस प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ा।

पितृदोष के कारण जब किसी व्यक्ति को पारिवारिक समस्या का सामना करना पड़ता है, तो उसे विभिन्न प्रकार के अपयश भी झेलने पड़ते हैं। कई बार तो यह स्थिति बहुत ही विकट हो जाती है। परिजन एक-दूसरे का नुकसान तक करने की सोचने लगते हैं और नीचा दिखाने के लिये किसी भी स्थिति में जाने को तत्पर रहते हैं। ऐसी स्थिति का लाभ उठाकर दूसरे लोग उन परिजनों के मध्य और अधिक दूरियां बढ़ा देते हैं। इससे पितृदोष कम होने के स्थान पर बढ़ जाता है और उन्हें आर्थिक और अन्य रूपों में भी नुकसान पहुँचने लगता है, इसलिये ऐसी स्थिति में सर्वप्रथम यह जानने का प्रयास करना चाहिये कि परिवार में चल रही समस्याओं का कारण कहीं पितृदोष तो नहीं है?

कुछ परिवारों के सदस्यों में आपस में ही बनती नहीं है। विचार भिन्नता एवं विरोध करने की भावना परिवारजनों के मध्य तनाव तथा क्लेश का वातावरण बनाये रखती हैं। ऐसे परिवारों में अनेक प्रकार की समस्यायें प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से देखने को मिलती है। ऐसा माना जाता है कि जिस परिवार में अधिक तनाव एवं क्लेश रहता है, वहाँ पर धन सम्बन्धी समस्याओं के साथ-साथ अन्य अनेक प्रकार की समस्यायें हमेशा ही बनी रहती हैं। परिवार में क्लेश का कारण केवल पितृदोष को मानने के स्थान पर प्रत्येक सदस्य अपना आत्मविश्लेषण करे कि इस समस्या में उसका कितना योगदान है? यदि प्रत्येक सदस्य अपनी गलतियों को सुधार लें, तो परिवार में होने वाली क्लेश तथा समस्यायें समाप्त होने लगती हैं।

पारिवारिक सुख प्राप्ति हेतु उपाय

पितृदोष के कारण जब किसी परिवार में परिजनों के मध्य अत्यधिक समस्यायें पनप जायें अर्थात् लगातार वैचारिक मतभेद रहने के कारण समस्या रहती हो, तो निम्नांकित उपाय करने से लाभ होता है :

1. परिवार में परिजनों के मध्य सामंजस्य नहीं होने के अनेक कारण होते हैं, लेकिन पितृदोष के कारण पारिवारिक सुख बाधित होता है, तो बेवजह परिजन एक दूसरे के शत्रु हो जाते हैं। यह एक गम्भीर समस्या है। इसके निवारण के लिये यह उपाय करना श्रेष्ठ फलदायी सिद्ध होगा। शुक्ल पक्ष के गुरुवार के दिन से प्रारम्भ करते हुये जब तक आपकी इस समस्या का निवारण नहीं हो जाये तब तक आपको यह उपाय जारी रखना है। इस हेतु प्रातःकाल अपने घर के पूजनकक्ष में रामदरबार के समक्ष बैठकर यह उपाय करना है। उपाय से पूर्व स्नानादि से निवृत्त होकर पीले वस्त्र धारण करें और मन में भगवान श्रीराम तथा उनके साथ सीताजी, लक्ष्मणजी, हनुमानजी इत्यादि का स्मरण करते हुये रोली, मौली, धूप-दीप और अक्षत अर्पित करें। तत्पश्चात् निम्नलिखित चौपाई का 108 बार जप करें। जप करने से पूर्व भगवान राम से अपने परिजनों में सौहार्द की प्रार्थना करें। तत्पश्चात् यह क्रम नित्य करें। यदि प्रातःकाल समय नहीं मिल पाये तो सायंकाल भी यह उपाय किया जा सकता है। इस उपाय को प्रारम्भ करने से पूर्व अपने पितरों को जलांजलि देना नहीं भूलें। जलांजलि से तात्पर्य दायें हाथ में जल लेकर पितृतीर्थ वाले हाथ के हिस्से किसी पात्र में गिराने से होता है। पितृतीर्थ हाथ में तर्जनी अंगुली के मूल में होता है। जलांजलि देते समय **पितृभ्यः स्वधा** का उच्चारण भी करें। ऐसा करने से पितर बहुत प्रसन्न होते हैं। जलांजलि देते समय आपक चेहरा दक्षिण दिशा की ओर होना चाहिये।

चौपाई : **जेहि के जेहि पर सत्य सनेहु। सो तेहि मिलहिं न कछु संदेहु।**

2. परिवार के विघटन और पारिवारिक सुख की समस्या अधिकांश लोगों के जीवन में आती है। इससे तो भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण और भगवान शिव भी नहीं बच पाये। महत्त्पूर्ण बात यह है कि जैसे ही पारिवारिक सुख में किसी प्रकार की समस्या हो, तो उससे सम्बन्धित उपाय प्रारम्भ करें और परिजनों के मध्य सम्प्रेषण की कमी नहीं होने दें। सम्प्रेषण की कमी एक गम्भीर पारिवारिक क्लेश को उत्पन्न करती है। सम्प्रेषण की कमी से तात्पर्य परिजनों से एक-दूसरे से कम बात करना अथवा बात नहीं करना होता है। यदि आपके घर में इस प्रकार की समस्या उत्पन्न हो रही हो, तो इसके लिये यह उपाय करने से लाभ होगा। यह उपाय आपको किसी शुभ बुधवार के

दिन से प्रारम्भ करना है। शुभ बुधवार से तात्पर्य शुक्ल पक्ष में आने वाले बुधवार अथवा नवरात्र, होली, दीपावली के दिन यदि यह दिवस हो, तो उससे होता है। बुधवार के दिन भगवान गणेश के मन्दिर में जाकर उनसे परिवार में पनप रही समस्या के निवारण की प्रार्थना करें और विषम संख्या में जैसे 7, 11 अथवा 21 बुधवार के व्रत का संकल्प लें। गणेशजी को नैवेद्य में मोदक अर्पित करें। उस दिन से ही बुधवार का व्रत प्रारम्भ कर दें। इस दिन भगवान गणेश की प्रसन्नता के लिये उनके किसी मंत्र अथवा स्तोत्र का पाठ भी अवश्य करें। सायंकाल एक समय भोजन ग्रहण करें और उससे पूर्व भी भगवान गणेश का पूजन अवश्य करें। आप अन्य परिजनों को भी यह व्रत करने का परामर्श दे सकते हैं। इस व्रत के प्रभाव से सम्प्रेषण श्रेष्ठ होता है और परिजनों के मध्य चल रही वैमनस्य की भावना दूर हो जाती है। भगवान गणेश को प्रथम पूज्य माना जाता है। वे सभी प्रकार की समस्याओं को हरने वाले हैं। उन्हें वाणी के नैसर्गिक कारक बुध का अधिदेवता भी माना जाता है। इसलिये इस उपाय से घर में परिजनों के मध्य पनपने वाला वैमनस्य दूर होकर स्नेह का संचार होने लगता है।

3. जिस घर में नियमपूर्वक पितृकर्म होता है, वहाँ परिजनों में किसी प्रकार की समस्या नहीं होती है। पितृदोष के कारण उसी स्थिति में पारिवारिक सुख बाधित होता है, जब किसी घर में पितृकर्म में पूर्ण तत्परता नहीं बरती जा रही हो। यदि इस कारण आप अपने घर में पितृदोष सम्बन्धी समस्या अनुभव कर रहे हैं, तो इस स्थिति में यह उपाय आपके लिये अनुकूल फलकारक सिद्ध होगा। यह उपाय आप अमावस्या से प्रारम्भ कर सकते हैं। उपाय बहुत ही सरल है, लेकिन इसमें आपके विश्वास तथा तत्परता का होना आवश्यक है। आपके घर में सभी परिजन मिलकर भी यह उपाय कर सकते हैं। इस हेतु आप सभी को मिलकर श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ करना है। यदि पूरी गीता का पाठ सम्भव नहीं हो, तो सप्तम अध्याय का पाठ भी किया जा सकता है। पाठ केवल संस्कृत के श्लोकों के रूप में नहीं करें, वरन् उसका अपनी क्षेत्रीय भाषा में भी अनुवाद अवश्य करते हुये पाठ करें। श्रीमद्भगवद्गीता के क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। इस पाठ को करने से पितर प्रसन्न होते हैं और परिजनों के मध्य चलने वाली समस्या भी दूर हो जाती है। अमावस्या पर प्रारम्भ करने के पश्चात् यह कार्य नित्य किया जा सकता है। यदि नित्य सम्भव नहीं हो, तो प्रत्येक अमावस्या पर अवश्य करें।

4. यदि आपको ऐसा अनुभव होता है कि किसी अदृश्य बाधा के कारण आपका पारिवारिक सुख प्रभावित हो रहा हो, तो ऐसी स्थिति में यह उपाय करना आपके लिये अच्छा रहेगा। यह उपाय अमावस्या से प्रारम्भ करना है। इस हेतु गुड़ के शिवलिंग का निर्माण करें। अब शिवलिंग का पंचोपचार अर्थात् चन्दन, मौली, चावल, अक्षत और धूप-दीप से पूजन करने के पश्चात् उसके समक्ष भगवान शिव के किसी स्तोत्र का पाठ

करें। पूजन के पश्चात् इस शिवलिंग को जल में प्रवाहित कर दें अथवा पीपल के वृक्ष पर रख आयें। अगली अमावस्या पर फिर इसी प्रकार शिवलिंग बनाकर उसका पूजन कर यह प्रक्रिया करनी है। इस उपाय से आपकी पारिवारिक समस्या धीरे-धीरे दूर हो जायेगी। यदि आप गुड़ का शिवलिंग बनाने में सक्षम नहीं है, तो ऐसी स्थिति में भगवान शिव के मन्दिर में जाकर शिवलिंग का पूजन करना चाहिये तथा मीठे दूध से शिवलिंग का अभिषेक करना चाहिये। भगवान शिव से जब इस समस्या के निवारण की प्रार्थना की जायेगी, निश्चित रूप से पारिवारिक समस्यायें समाप्त होने लगेंगी। यह उपाय आपको तब तक जारी रखना है, जब तक कि यह अनुभव नहीं होने लगे कि आप इस समस्या से पूर्ण रूप से उभर चुके हो। यदि समस्या का निवारण फिर भी न हो, तो अमावस्या के दिन दोपहर के समय शिवलिंग का सरसों के तेल और काले तिल से अभिषेक करना चाहिये। यह गम्भीर पितृदोष सम्बन्धी समस्या को भी दूर करने वाला उपाय है। इस उपाय के साथ पितरों से सम्बन्धित अन्य पितृकर्मों को भी करना आवश्यक होता है, तभी अनुकूल फल प्राप्त हो पाते हैं।

5. यदि आप शक्ति साधक हैं और आपके घर में पारिवारिक सुख में किसी प्रकार की समस्या उत्पन्न हो रही है, तो यह उपाय आपके लिये अनुकूल फलकारक रहेगा। यह उपाय आप नवरात्र में अथवा शुक्ल पक्ष के शुक्रवार से प्रारम्भ कर सकते हैं। इस हेतु नवदुर्गा का पूजन करने के पश्चात् निम्नलिखित दुर्गासप्तशति के मंत्र का जप करना है। सर्वप्रथम माँ दुर्गा के नवरूपों वाले चित्र की स्थापना अपने पूजन कक्ष में कर लें। चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर उस चित्र की स्थापना करें। अब नवदुर्गा का ध्यान करते हुये उनका धूप-दीप दिखाकर पूजन करें और उन्हें बर्फी का नैवेद्य अर्पित करें। तत्पश्चात् इस मंत्र का 108 बार उच्चारण करना है। एक बार उपाय प्रारम्भ करने के पश्चात् नित्य इस उपाय को जारी रखें। यदि यह सम्भव नहीं हो, तो प्रत्येक शुक्रवार को यह प्रयोग अवश्य करें। इस प्रयोग से माँ शक्ति की कृपा से आपकी यह समस्या शीघ्र ही दूर हो जायेगी और आपके घर में प्रसन्नता का वातावरण बनेगा।

मंत्र : **सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।**
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।।

6. यदि आपके घर में कोई एक परिजन अथवा किसी भाई का परिवार पारिवारिक सुख में समस्या उत्पन्न कर रहे हों, जैसा कि आजकल विवाह हो जाने के बाद अक्सर घरों में होने लगता है, तो ऐसी स्थिति में यह उपाय करना आपके लिये अनुकूल फलदायी रहेगा। यह उपाय घर के मुखिया को अथवा घर के सभी परिजनों को मिलकर करने से शीघ्र लाभ होता है। इससे परिजनों के मध्य चल रही आपसी समस्यायें भी दूर हो जाती हैं। इस उपाय का श्रेष्ठ मुहूर्त नवरात्र हैं। इस हेतु आप गुप्त अथवा सामान्य नवरात्र ग्रहण कर सकते हैं। उपाय प्रथम नवरात्र से ही प्रारम्भ करना है। इस उपाय के

अन्तर्गत रामचरितमानस का नवाह्न परायण पाठ सभी को मिलकर करना है। यह उपाय सम्पूर्ण नवरात्र में जारी रहना चाहिये। इस पाठ में प्रतिदिन आपको दो से तीन घण्टे का समय लगेगा। पाठ प्रारम्भ करने से पहले भगवान श्रीराम के सम्पूर्ण परिवार का पूजन करने के साथ ही हनुमान जी को यह पाठ सुनने के लिये आमंत्रित करना चाहिये और सभी का पूजन-अर्चन भी करना चाहिये। नित्य घर में बना नैवेद्य भगवान श्रीराम एवं अन्य को अर्पित करें और पूर्ण तन्मयता के साथ पाठ करें। पाठ प्रारम्भ करने से पूर्व पारिवारिक सुख की कामना का संकल्प अवश्य लें, इससे आपको शीघ्र ही लाभ होगा। यदि आप यह उपाय अन्य मुहूर्त पर प्रारम्भ करना चाहते हैं, तो इस हेतु शुक्ल पक्ष का गुरुवार श्रेष्ठ मुहूर्त है। इस दिन घर के मुखिया का चन्द्रबल देखकर उपाय प्रारम्भ कर सकते हैं। इस उपाय से शीघ्र ही आपकी मनोकामना पूर्ण होगी और परिजनों के मध्य पुनः सामंजस्य स्थापित होगा।

7. पारिवारिक सुख में जब परिजनों के सामंजस्य के साथ रहने पर भी छोटी-छोटी बातों के कारण समस्या उत्पन्न होती हो, तो ऐसी स्थिति में यह उपाय आपके परिवार के लिये अनुकूल सिद्ध होगा। अनेक बार ऐसी स्थितियां उत्पन्न होती हैं कि हम घर के बाहर आने वाली समस्या के कारण चिड़चिड़े हो जाते हैं और सारा क्रोध अपने परिजनों पर निकालते हैं, क्योंकि परिजनों के रूप में हमें क्रोध उतारने का सरल माध्यम मिल जाता है। वास्तव में इससे घर में परिजनों के मध्य समस्या बढ़ती है और झगड़े शुरू हो जाते हैं। इस समस्या से मुक्ति के लिये यह उपाय अनुकूल फलकारी सिद्ध होगा। इस हेतु जितने भी घर के वयस्क परिजन हैं, उतनी संख्या में दोमुखी रुद्राक्ष की आवश्यकता होगी। दोमुखी रुद्राक्ष चन्द्रमा का कारक रुद्राक्ष होता है, जो शिव और शिवा का संयुक्त रूप भी है। इस रुद्राक्ष को चाँदी के लॉकेट में बनवा लें। जिस सोमवार के दिन प्रदोष अथवा पूर्णिमा हो, उस दिन विशेष प्रयोग के साथ यह रुद्राक्ष सभी परिजनों को धारण करना है। ज्योतिष में चन्द्रमा का संचरण स्थल और वास पितृलोक में माना है, इसलिये भी दोमुखी रुद्राक्ष का प्रयोग इस दृष्टिकोण से श्रेष्ठ माना जाता है। शुभ मुहूर्त वाले दिन सभी परिजन पूजन कक्ष में एकत्र होकर भगवान शिव और शिवा अर्थात् पार्वती जी का पूजन अर्चन करें। तत्पश्चात् भगवान शिव एवं माँ पार्वती से अपनी पारिवारिक समस्या के निवारण की प्रार्थना करते हुये उन दोमुखी रुद्राक्षों का भी पूजन करें। पूजन के पश्चात् सभी परिजन यह रुद्राक्ष गले में धारण कर लें। रुद्राक्ष चाँदी अथवा सोने की चैन अथवा काले धागे में धारण किया जा सकता है। एक बार धारण करने के पश्चात् प्रत्येक सोमवार के दिन भगवान शिव और पार्वतीजी के मन्दिर में जाकर अथवा घर पर ही आशीर्वाद अवश्य लें। यह रुद्राक्ष धारण करने के पश्चात् मानसिक शांति मिलेगी और परिजनों के मध्य चलने वाला सभी प्रकार का तनाव समाप्त होकर सामंजस्य बढ़ेगा।

8. जिन परिवारों में परिजनों के मध्य अकारण वैर बढ़ रहा हो, उन्हें यह उपाय करने से उत्तम लाभ मिलेगा। यह एक सामान्य उपाय है। इस हेतु आपको अपने घर के पूजन कक्ष में नवदुर्गा में स्कन्दमाता का चित्र स्थापित करना है और उनका ध्यान करते हुये उस चित्र का नित्य दर्शन करना है। शक्ति का स्कन्दमाता रूप में वे स्कन्द अर्थात् कार्तिकेय जी को गोद में लिये बैठी हुई हैं। उनकी चार भुजायें हैं, जिनमें से एक में कार्तिकेय हैं, दो हाथों में कमल पुष्प हैं तथा एक हाथ अभयमुद्रा के रूप में उठा हुआ है। माँ स्कन्दमाता के ध्यान से मानसिक शांति मिलती है, इस कारण मन में किसी प्रकार की कलुषता नहीं रहती। जिन घरों में काफी समय से परिजनों में मतभेद रह रहे हों, वहाँ माँ का यह चित्र ऐसे स्थान पर भी लगाया जा सकता है, जहाँ से आते-जाते सभी की दृष्टि पड़ती हो। इनके दर्शन से मन में चल रही अशांति और मानसिक कलुषता समाप्त हो जाती है। माँ स्कन्दमाता का ध्यान इस प्रकार है :

ध्यान : **सिंहासनगता नित्यं पद्माश्चिकरद्वया।**
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी।।

9. यदि किसी परिजन की मृत्यु के कुछ समय पश्चात् ही इस प्रकार की समस्या उत्पन्न हो रही हो, तो ऐसी स्थिति में पितृदोष की शांति अतिआवश्यक हो जाती है, तभी इस समस्या से मुक्ति प्राप्ति सम्भव है। ऐसी स्थिति में मृतक परिजन के लिये सभी कर्म अर्थात् श्राद्ध इत्यादि के पश्चात् भी अनुकूलता नहीं हो पा रही हो, तो **पितृसूक्त** का पाठ और **पितृगायत्री** का नित्य जप करने से लाभ होता है। इनका पाठ और जप करने से मृतक परिजन की आत्मा को संतुष्टि मिलती है और वह किसी प्रकार का अशुभ फल प्रदान नहीं करती। इनका पाठ आप अमावस्या से प्रारम्भ करें और नित्य एक बार पितृसूक्त का पाठ और यथाशक्ति पितृगायत्री का जप करें। यह उपाय करने के पश्चात् कुछ ही दिनों में यह अनुभव करेंगे कि जिस प्रकार की समस्या आपके घर में हो रही थी, वह अब काफी हद तक समाप्त हो गयी है। इससे आपके मन को भी शांति मिलेगी।

पितृदोष के कारण आती हैं-भवन सुख प्राप्ति में बाधायें

अपना मकान होना वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति का सपना होता है, लेकिन अनेक बार सब कुछ अनुकूल होते हुए भी व्यक्ति को अपने मकान का सुख प्राप्त नहीं हो पाता है। भवन सुख प्राप्ति में पितृदोष भी अनेक बार बाधक बन जाता है। यहाँ भवन सुख से तात्पर्य अपने भवन के सुख से है। अनेक लोगों के पास भवन निर्माण के लिये भूमि होती है अथवा भवन खरीदने के लिये धन होता है, लेकिन फिर भी भवन सुख की प्राप्ति नहीं हो पाती। पितृदोष का भवन सुख में बाधक बनने के अनेक कारण होते हैं। कई बार स्वयं का भवन होते हुए भी व्यक्ति उसमें रह पाने में सक्षम नहीं हो पाते। पितृदोष उस स्थिति में भवन सुख में बाधक बन जाता है, जब किसी व्यक्ति के पितर अपनी सम्पत्ति के प्रति विशेष मोह रखते हों और उस सम्पत्ति पर कोई अपना अधिकार जमा ले अथवा उसका गलत प्रयोग करे। ऐसी स्थिति में वे अपने परिजनों को भवन सुख प्राप्ति के लिये तड़पाते हैं, हालांकि भवन सुख नहीं मिलने के अन्य कारण भी होते हैं, परन्तु इनमें पितृदोष कारण बन जाये, तो इसका हल निकालना अत्यधिक कठिन हो जाता है।

पूर्वजों की सम्पत्ति को बेच देने के कारण भी पितृदोष उत्पन्न हो सकता है। अनेक बार पूर्वजों का विशेष मोह अपनी जमीन और जायदाद से जुड़ा हुआ रहता है। ऐसी स्थिति में वे नहीं चाहते हैं कि उनकी जमीन और जायदाद को बेचा जाये, लेकिन व्यक्ति अपने स्वार्थ अथवा धन की आवश्यकता की पूर्ति के लिये जब जमीन-जायदाद बेच देता है, तो उसे नई जमीन अथवा भवन बनवाने में अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, हालांकि यह ज्ञात होना कठिन है कि किसी जमीन अथवा जायदाद से उसके पूर्वज का मोह है अथवा नहीं? इस हेतु यही श्रेष्ठ है कि आप अपने पितृकार्यों को पूर्ण तत्परता से करते रहें और ऐसी कोई जमीन अथवा जायदाद, जो अपने पूर्वजों की है, वह किसी परिस्थितिवश बेचनी पड़े, तो उससे पूर्व अपने पूर्वजों से प्रार्थना अवश्य करें। साथ ही यह भी प्रार्थना करें कि वे शीघ्र आपको श्रेष्ठ जमीन और भवन प्राप्त करवायें।

वर्तमान में अनेक समस्याओं से ग्रस्त लोग अपने मूल स्थान छोड़कर अन्य स्थानों की ओर पलायन कर रहे हैं। आजीविका निर्वहण के लिये ऐसा करना मजबूरी है। साथ ही अपनी आने वाली पीढ़ी के लिये सुनहरे भविष्य हेतु ऐसा किया जाना आवश्यक हो गया है। ऐसी स्थिति में जब व्यक्ति अपने पूर्वजों की जमीन को बेचता है अथवा उनका भलीभांति रूप से सार-संभाल नहीं कर पाता है, तो उसे नये भवन सुख की प्राप्ति में अत्यधिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

मेरे एक परिचित हैं राधेश्याम। उनकी सरकारी नौकरी थी। जीवन में धन की कमी नहीं रही। नौकरी के साथ ही अन्य संसाधनों से भी आय प्राप्त होती रही थी। काफी वर्षों तक उन्होंने सरकारी भवन में निवास किया। जब नौकरी को कुछ वर्ष रह गये, तो

स्वयं का भवन बनाने के लिये प्रयास किये। इस हेतु जमीन भी खरीद कर रखी हुई थी। जब उन्होंने उस जमीन पर भवन बनाने का प्रयास किया, तो किसी ने कहा कि इसे बेचकर दूसरी जमीन पर भवन बनवायें, तो बहुत अच्छा रहेगा, क्योंकि इसका दाम बहुत अच्छा मिल जायेगा और इसके दाम में ही दूसरी जमीन और भवन का खर्चा निकल जायेगा। इस प्रलोभन से राधेश्याम ने अपनी जमीन बेच दी। जमीन बेचने के बाद बना-बनाया मकान अथवा जमीन खरीदने का बहुत प्रयास किया, परन्तु सफलता प्राप्त नहीं हो पायी। जो भी जमीन देखने जाते, उसमें किसी न किसी प्रकार की कमी महसूस होती। आखिर एक भवन उन्होंने अपने रहने के लिये खरीद लिया, लेकिन जैसे ही उसमें रहना प्रारम्भ किया, तो एक वर्ष के भीतर ही उसे छोड़ना पड़ा। कारण उस मकान में आने के पश्चात् उनका परिवार अत्यधिक कष्टों से गुजरने लगा था। स्वास्थ्य और आर्थिक परेशानियां लगातार रहने लगीं। इस हेतु उस मकान को दोष देना गलत था, क्योंकि इससे पहले रहने वाले परिवार को वहाँ किसी भी प्रकार की समस्या नहीं थी। आखिर राधेश्याम के जीवन में इस प्रकार की समस्यायें क्यों उत्पन्न हो रही थी, इसका कारण जानने के लिये जब प्रयास किया, तो ज्ञात हुआ कि उनका भवन सुख पितृदोष के कारण बाधित हो रहा था। जब तक उसकी शांति नहीं की जाये, तब तक उन्हें गृहसुख प्राप्त नहीं हो पायेगा। इसकी शांति के लिये उन्हें गाँव जाकर अपने पुराने मकान में पितरों के निमित्त शांति कर्म करना चाहिये, ऐसी राय राधेश्याम को दी गई।

राधेश्याम ने पितृदोष निवारण के परामर्श के अनुसार गाँव जाकर पितरों की शांति के निमित्त उपाय किये और पितरों को अपने साथ नये मकान में आने के लिये आमंत्रित किया, साथ ही शीघ्र ही नये मकान की प्राप्ति के लिये प्रार्थना की। अपने पुराने मकान को बेचने के बाद काफी समय उन्होंने किराये के मकान में बिताया था। अत्यधिक परेशान होकर ही उन्होंने यह कार्य किया था, लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि पितरों की शांति कराने के कुछ समय पश्चात् ही उन्हें मनोनुकूल मकान की प्राप्ति हो गयी। अब वे इस घर में पिछले पाँच वर्षों से शांतिपूर्वक रह रहे हैं और अपने पितरों के निमित्त सभी कार्यों को पूर्ण तत्परता से कर रहे हैं। राधेश्याम से जब मेरी मुलाकात हुई, तब उन्होंने अपने साथ घटित सभी बातें बताई थी। इस बात में किसी प्रकार का संशय नहीं होना चाहिये कि चाहे हम आजीविका के लिये कहीं पर भी चले जायें, लेकिन हमें अपने पूर्वजों को नहीं भूलना चाहिये। हमारे गाँव अथवा कस्बों में जो पुराने मकान हैं, उनकी देखभाल भलीभांति रूप से करनी चाहिये। यदि उन्हें बेचना भी पड़े, तो अपने पूर्वजों से इसके निमित्त प्रार्थना करनी चाहिये और अपने नये आवास पर पूर्वजों को आमंत्रित करके स्थापित करना चाहिये। ऐसा करने से पितृदोष के कारण गृहसुख में बाधा उत्पन्न नहीं होगी। आसानी से कम प्रयासों में ही गृहसुख प्राप्ति हो जायेगी। वैसे भी वर्तमान में शहरों में स्वयं के मकान का सपना देखना अत्यधिक कठिन हो गया है। शहरों में जमीन और भवनों की कीमतें आसमान को छू रही है, ऐसे में पितृदोष के कारण यदि आपका भवन सुख बाधित हो जाये, तो इससे अधिक और क्या कष्ट होगा?

भवन सुख प्राप्ति हेतु उपाय

कोई भी व्यक्ति जीवनभर किराये के मकान में रहकर सुख की प्राप्ति नहीं कर सकता। प्रत्येक व्यक्ति की यह चाह होती है कि उसका एक मकान हो, चाहे वह छोटा ही क्यों न हो, किन्तु यह कामना सभी की पूर्ण हो, यह सम्भव नहीं है। यहाँ पर कुछ ऐसे विशेष उपायों के बारे में बताया जा रहा है, जिनका प्रयोग कर आप भवन सुख की प्राप्ति कर सकते हैं-

1. अपना मकान बनाना प्रत्येक व्यक्ति का सपना होता है। व्यक्ति अपने जीवन की सबसे बड़ी पूंजी अपना मकान बनाने में लगा देता है। जब पूंजी हो, लेकिन फिर भी भवन सुख प्राप्त नहीं हो पाये अर्थात् बार-बार प्रयास के पश्चात् भी अपने मकान का सपना पूरा नहीं हो पा रहा हो, तो ऐसी स्थिति में यह उपाय करना आपके लिये लाभदायक सिद्ध होगा। इस उपाय को किसी शुभ मुहूर्त अथवा शुक्ल पक्ष के द्वितीय मंगलवार से प्रारम्भ कर सकते हैं। इस हेतु आपको अपने पूजन कक्ष में **मंगल यंत्र** की स्थापना करनी होगी और उसका नित्य पूजन करना होगा। यंत्र को मंगलवार के दिन शुभ मुहूर्त में स्वयं के चन्द्रबल देखकर स्थापित करें। यंत्र को लाल वस्त्र पर स्थापित कर उसका रोली, मौली, अक्षत, धूप, दीप इत्यादि से पूजन करें। पूजन के पश्चात् निम्नांकित मंत्र की 11 मालाओं का जप करना है। एक बार प्रारम्भ करने के पश्चात् इस उपाय को लगातार तब तक करते रहें, जब तक कि आपकी मनोकामना पूर्ण नहीं हो जाये। इस उपाय के साथ ही मंगलवार के दिन आपको भगवान शिव के मन्दिर में जाकर पूरे शिव परिवार का जलाभिषेक करना है और अपने स्वयं के भवन की प्रार्थना भी करनी है। वैसे आप भगवान शिव के मंदिर में नित्य जाकर भी प्रार्थना कर सकते हैं, लेकिन नित्य सम्भव नहीं हो, तो मंगलवार के दिन अवश्य जायें।

मंत्र- **ॐ सरवन भव।**

2. आप यदि अपना पैतृक मकान बेचकर दूसरा भवन क्रय करने जा रहे हैं, तो इस हेतु अपने पितरों से आशीर्वाद और आज्ञा अवश्य प्राप्त कर लें, अन्यथा वे आपके इस कार्य में बाधक बन सकते हैं। वर्तमान में ऐसा बहुत होता है कि माता-पिता अथवा अपने घर के बुजुर्ग व्यक्ति के मरते ही उनकी सम्पत्ति को बेच दिया जाता है, इससे उनके पितर योनि में होने पर वे अप्रसन्न हो सकते हैं। यदि अपने पैतृक भवन अथवा भूमि को बेचने में और नया भवन में बनाने में आपको समस्या का सामना करना पड़ रहा है, तो इस स्थिति में आपके लिये यह उपाय अनुकूल सिद्ध होगा। इस उपाय को आप किसी माह की अमावस्या के दिन दोपहर के समय कर सकते हैं। उपाय करते समय

घर में पितरों के स्थान अथवा पूजन स्थल में दक्षिणाभिमुख होकर एक चौकी की स्थापना करें। चौकी पर सफेद वस्त्र बिछाकर पितृयंत्र स्थापित करें। पितृयंत्र का उल्लेख इस पुस्तक में किया गया है।

यंत्र की स्थापना करने के पश्चात् अपने पितरों का ध्यान करते हुये यन्त्र का पूजन करें और अपने पितरों के निमित्त तर्पण करते हुये अन्य पितृकर्म सम्पन्न करें। इस पूजन को प्रारम्भ करने से पहले ही संकल्प में अपनी भवन सुख अथवा भूमि प्राप्ति अथवा बेचने सम्बन्धी समस्या का उच्चारण अथवा स्मरण कर लें। पितरों के निमित्त कर्म के पश्चात् यथाशक्ति **पितृस्तोत्र** और **पितृगायत्री** का पाठ करें। पूजन पूर्ण होने के पश्चात् ब्राह्मण भोजन करवायें और पितृयंत्र की स्थापना अपने पितरों के स्थान पर अथवा पूजन कक्ष में कर दें और उसका नित्य पूजन करें। इस प्रयोग से आपकी भवन सुख सम्बन्धी समस्या का शीघ्र ही निवारण हो जायेगा। जब आपकी मनोकामना पूर्ण हो जाये तो पितरों को धन्यवाद देते हुये उस यंत्र का पूजन लगातार जारी रखा जा सकता है, क्योंकि उनके पूजन से पितृकृपा सदैव बनी रहेगी।

3. भवन सुख प्राप्ति में यदि आपको धन सम्बन्धी समस्या का सामना करना पड़ रहा है, तो ऐसी स्थिति में यह उपाय करना आपके लिये अनुकूल सिद्ध होगा। अनेक बार ऐसा होता है कि हमारा जैसा भवन बनाने का सपना होता है, वैसा भवन खरीदने के लिये हमारे पास धन नहीं होता और धन की व्यवस्था भी कहीं से हो नहीं पाती। ऐसी स्थिति में यह उपाय आपके लिये अत्यधिक श्रेष्ठ फल देने वाला होगा। यह उपाय आपको किसी शुभ मुहूर्त अर्थात् नवरात्र, होली, दीपावली, अक्षयतृतीया, गुरुपुष्य, रविपुष्य इत्यदि शुभ मुहर्त में करना है। पूजन कक्ष में पूर्वाभिमुख होकर चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर माँ लक्ष्मी के विग्रह अथवा चित्र की स्थापना करें और उनका पूजन करें। माँ लक्ष्मी के पूजन के साथ ही श्रीयंत्र का पूजन-अर्चन अवश्य करें। तत्पश्चात् दुर्गासप्तशती के चतुर्थ अध्याय का एक पाठ करें। इस पूजन कार्य से पूर्व संकल्प में अपनी मनोकामना माँ लक्ष्मी से कहें और शीघ्र भवन सुख प्राप्ति की प्रार्थना भी करें। चतुर्थ अध्याय के पाठ के पश्चात् आप श्रीयंत्र का श्रीसूक्त का पाठ करते हुये दूध से अभिषेक करें।

यह उपाय आपको लगातार 21 दिनों तक करना है। चाहें तो अपनी मनोकामना पूर्ण नहीं होने तक भी कर सकते हैं। इस उपाय से शीघ्र ही आपकी भवन सुख की मनोकामना पूर्ण हो जायेगी और इस हेतु आने वाली धन सम्बन्धी समस्या का कहीं न कहीं से निवारण हो जायेगा। जब आपकी इच्छा पूर्ण हो जाये तो एक बार दुर्गासप्तशति के पाठ से माँ लक्ष्मी का अनुष्ठान अवश्य सम्पन्न करायें।

4. स्वयं का भवन होना प्रत्येक व्यक्ति का सपना होता है। अनेक बार अपने सगे-सम्बन्धियों से छले जाने के कारण, पितृदोष, ऊपरी बाधा जैसी अदृश्य समस्याओं के

कारण भवन सुख प्राप्त नहीं हो पाता है। ऐसी स्थिति में यह उपाय करना आपके लिये अनुकूल रहेगा। यह प्रयोग हनुमान और रामचरितमानस के श्रेष्ठ और सिद्ध मन्त्रों से सम्बन्धित है। यह उपाय आप नवरात्र, हनुमान जयंती जैसे शुभ और श्रेष्ठ मुहूर्त पर करें तो शीघ्र अनुकूल फल प्राप्त होता है। उक्त के अतिरिक्त शुक्ल पक्ष के द्वितीय मंगलवार अथवा गुरुवार से भी यह उपाय प्रारम्भ किया जा सकता है। इस हेतु पूर्वाभिमुख होकर चौकी पर लाल और सफेद वस्त्र बिछाकर रामदरबार के चित्र अथवा विग्रह की स्थापना कर भगवान राम और हनुमान जी का पूजन करें और उन्हें नैवेद्य अर्पित करें। संकल्प में अपनी भवन सुख सम्बन्धी समस्या के निवारण की प्रार्थना को बोलें। तत्पश्चात् निम्नांकित चौपाई की एक माला का जप नित्य करें और चौपाइयों का दस बार उच्चारण करते हुये हवन भी नित्य करें। यह उपाय आपको लगातार तब तक करना है, जब तक कि आपकी समस्या का निवारण नहीं हो जाये। कुछ ही दिनों में आपको अनुकूलता अनुभव होने लगेगी। इस चौपाई के सम्पुटित रामचरितमानस के पाठ से भी श्रेष्ठ लाभ और अनुकूलता मिलती है। अत: रामचरितमानस का नवाह्न परायण अथवा मास परायण सम्पुटित पाठ भी किया जा सकता है।

चौपाई–

पवन तनय बल पवन समाना। बुद्धि विवेक बिग्यान निधाना।।
कवन जो काज कठिन जग माहीं। जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं।।
प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा।।

5. भूमिसुख प्राप्ति का नैसर्गिक कारक मंगल को माना जाता है और भवन सुख एवं भौतिक सुख प्राप्ति का नैसर्गिक कारक शुक्र होता है। इन दोनों का सम्बन्ध भवन के रसोईघर से होता है। मंगल का संचरण स्थल अग्नि वाले स्थल होते हैं और शुक्र आग्नेय दिशा का स्वामी होने के साथ ही स्त्री कारक ग्रह भी है। उक्त दोनों ग्रहों का अकारक होना भूमि और भवन सुख में बाधायें उत्पन्न करता है। यदि आपकी जन्मपत्रिका में उक्त दोनों ग्रह विपरीत स्थिति में हैं, तो निश्चित है कि आपको भवन सुख प्राप्ति में बाधायें आयेंगी। ऐसी स्थिति में इन दोनों ग्रहों का उपाय करना आवश्यक होता है। इस हेतु यह उपाय आपके लिये अनुकूल सिद्ध होगा। इससे आप दोनों ग्रहों की अनुकूलता प्राप्त करेंगे। अपने रसोईघर में कदापि पूजन स्थल अथवा पितरों का स्थान नहीं बनवायें और रसोईघर की पवित्रता का भी विशेष ध्यान रखें। किसी शुभ मुहूर्त में एक लाल कपड़े में मंगल यंत्र जो ताम्रपत्र अथवा भोजपत्र पर बना हो, नारियल, 125 ग्राम मसूर की दाल, मैनसिल पत्थर डालकर बाँध लें। अब उस पोटली को किसी मिट्टी के बर्तन में रखकर अपनी पत्नी अथवा माँ के हाथ से रसोईघर में चूल्हे के आस-पास ऐसे स्थान पर रखवायें जहाँ पर कोई उसे बार-बार छू न सके और सबकी नज़र में नहीं आता हो। इस सामग्री प्रत्येक नवरात्र में परिवर्तित करें और पुराने सामान में से यंत्र को अलग निकाल

कर शेष सामग्री को पानी में प्रवाहित करें। इस उपाय को पुन: करते समय यंत्र पुराना ही काम में लें, शेष सभी सामग्रियां नई प्राप्त करें। इस उपाय से मंगल की अनुकूलता होने के कारण आपको शीघ्र ही श्रेष्ठ भवनसुख की प्राप्ति होगी। यह प्रयोग किसी भूमि को बेचने में आने वाली समस्या के निमित्त भी कर सकते हैं। इस उपाय से इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि आपका रसोईघर वास्तु नियमों के अनुसार बना हुआ होना चाहिये अन्यथा इस उपाय का अधिक लाभ आपको प्राप्त नहीं हो पायेगा।

6. यदि अपना कोई भवन अथवा जमीन को बेचना चाहते हैं, परन्तु वह बिक नहीं पा रही है, उसे बेचने में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समस्या का सामना करना पड़ रहा है, तो ऐसी स्थिति में आपको यह उपाय करने से लाभ होगा। यह उपाय शुक्ल पक्ष के द्वितीय मंगलवार को करें। यदि किसी मंगलवार के दिन कृष्णपक्ष अथवा शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि आती हो, तो यह उपाय उस दिन करने से शीघ्र ही उत्तम लाभ प्राप्त होता है। आपको मंगलवार को सूर्योदय होते ही एक घण्टे के भीतर यह उपाय करना है। जब उपाय करना हो, तब एक लाल कपड़े में त्रिकोणाकार मंगल यंत्र, मसूर की दाल तथा मैनसिल लेकर पोटली बना लें और उस जमीन अथवा घर जो बिक नहीं पा रहा है, उसके आग्नेय कोण में गाड़ दें। यदि वहाँ कोई गाड़ने वाला स्थान नहीं है, तो ऐसी स्थिति में उस पोटली को ऐसे स्थान पर रखें जहाँ उस पर किसी की दृष्टि नहीं पड़ती हो। पोटली रखते समय मन ही मन अपनी मनोकामना को बोलें। यदि यह समस्या पितृदोष के कारण उत्पन्न हो रही है, तो ऐसी स्थिति इस उपाय से आपको कोई न कोई रास्ता अवश्य नज़र आ जायेगा। जब उस भूमि अथवा भवन के बिकने का सौदा तय हो जाये और इस बाबत कुछ धन भी आ जाये, तब पोटली वहाँ से हटा देना चाहिये। हटाने के पश्चात् उसे जल में प्रवाहित करें अथवा पीपल के वृक्ष के नीचे खोलकर यंत्र के अतिरिक्त वस्तुओं को वहाँ छोड़ दें और यंत्र को अपने घर लाकर पूजन स्थल में रख दें। यह सामान्य उपाय बहुत उत्तम परिणाम देने वाला है। इस प्रयोग के समय प्रयोगकर्ता अपने चन्द्र बल अर्थात् चन्द्रमा की शुभता-अशुभता का विचार भी अवश्य कर ले।

7. आप अपना भवन बनवा चुके हैं, लेकिन किसी कारणवश आपको भवन सुख मिल नहीं पा रहा है अर्थात् आप अपने भवन में रह नहीं पा रहे हैं, तो ऐसी स्थिति में आपको यह उपाय करना अनुकूल होगा। कार्यक्षेत्र के कारण भवन से दूर रहना, बच्चों की शिक्षा, माता-पिता का स्वास्थ्य इत्यादि अनेक कारण हो सकते हैं जिससे आपको घर से दूर रहना पड़ सकता है। आपके भाग्य में जब भवन सुख नहीं होता है, तो ऐसी समस्यायें आती हैं। इस समस्या के निवारण के लिये यह उपाय करें, आपको लाभ होगा। नवरात्र में प्रथम दिवस अथवा शुक्ल पक्ष के द्वितीय शुक्रवार से अथवा शुभ मुहूर्त में अपना चन्द्रबल देखकर यह उपाय प्रारम्भ करें। सर्वप्रथम पूर्वाभिमुख होकर चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर माँ दुर्गा के विग्रह अथवा चित्र की स्थापना कर उसका पूजन

करके उन्हें नैवेद्य एवं ताम्बूल अर्पित करें। तत्पश्चात् अग्रांकित मंत्र का नित्य तीन माला जप करें। जप रुद्राक्ष की माला से करना उत्तम है। यह उपाय नवरात्र पर्यन्त करें और अष्टमी अथवा नवमी तिथि को हवन एवं कुमारी पूजन भी अवश्य करें। कुमारी पूजन से तात्पर्य आठ वर्ष से छोटी कन्या का पूजन और उसे उपहार प्रदान कर भोजन कराने से होता है। इस प्रयोग को करते समय संकल्प में अपने भवन सुख में आने वाली बाधा नाश की प्रार्थना भी अवश्य करें। यदि यह उपाय आप नवरात्र के अतिरिक्त अन्य मुहूर्त में सम्पन्न कर रहे हैं, तो 11 दिन तक यह अनुष्ठान जारी रखें। अन्तिम दिन हवन और कुमारी पूजन अवश्य करें। इस प्रयोग से आपके भवन सुख में आ रही समस्या कुछ दिनों में समाप्त हो जाती है अथवा कोई न कोई अनुकूलता मिलने से इस समस्या से मुक्ति मिल जाती है।

मंत्र- **सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।**
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।।

8. भवन सुख प्राप्त नहीं होना दुर्भाग्य के साथ हमारे पूर्व जन्म के कर्मों से भी जुड़ा हुआ हो सकता है। यह उपाय आपके कर्मों में शुद्धता लाकर भवन सुख की प्राप्ति करवाने वाला है। यह उपाय बहुत ही सरल और सामान्य है, लेकिन इसके परिणाम अतिश्रेष्ठ हैं। इस उपाय को दीपावली अथवा शुक्रवार से प्रारम्भ करना है। शुक्रवार शुक्लपक्ष का हो, तो अधिक उत्तम है। यह उपाय जिस मुहूर्त से प्रारम्भ करें, उससे लगातार सात शुक्रवार तक जारी रखें। इस उपाय में आपको किसी गरीब व्यक्ति को भोजन करवाना है और गाय को रोटी के साथ गुड़ मिलाकर खिलाना है। गाय सफेद हो, तो अधिक अच्छा होगा। यदि आप सक्षम हैं, तो एक से अधिक लोगों को भी भोजन करवा सकते हैं। इस प्रयोग के समय यह अपने भवन सुख की मनोकामना मन में रखें। इससे आपकी भवन सुख की इच्छा शीघ्र ही पूर्ण होगी। इस उपाय को करने से पहले माँ लक्ष्मी और अपने पितरों के निमित्त भी बर्फी का नैवेद्य अर्पित करना चाहिये। इस उपाय से शीघ्र ही आपकी मनोकामना पूर्ण होगी। वैसे घर में बनने वाले भोजन में सदैव प्रथम ग्रास के रूप में गाय के निमित्त और तत्पश्चात् कुत्ते के लिये ग्रास निकालने की परम्परा हमारे यहाँ वर्षों से है। इन उपायों का हमें अत्यधिक अनुकूल फल प्राप्त होता है।

पितृदोष के कारण संतानोत्पत्ति में बाधा

पितृदोष संतानोत्पत्ति में बाधा उत्पन्न कर सकता है, इस तथ्य को अनेक प्राचीन ग्रंथों में भी उल्लिखित किया गया है। इस विवरण में ज्योतिष विषय का बृहत्पाराशरहोराशास्त्र ग्रंथ भी उल्लेखनीय है। इस ग्रंथ में माता, पिता, भाई, पत्नी इत्यादि के कारण उत्पन्न होने वाले पितृदोषों का श्राप दोषों के रूप में उल्लेख किया है।

पितृदोष अदृश्य बाधा होने के कारण जब सन्तान सुख की प्राप्ति में बाधक बनता है, तो उसे पहचानना बहुत ही मुश्किल है। अनेक परिवारों में यह देखा जाता है कि विवाह होने के काफी समय पश्चात् भी सन्तानोत्पत्ति नहीं हो पाती। इस हेतु जब चिकित्सकीय परामर्श लिया जाता है, तो विभिन्न जांचों के पश्चात् चिकित्सक इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि पति अथवा पत्नी में ऐसी कोई शारीरिक समस्या नहीं है जो संतान सुख में बाधक बने अर्थात् वे शारीरिक रूप से सन्तानोत्पत्ति के लिये एकदम ठीक थे किन्तु फिर भी संतान सम्बन्धी समस्या निरन्तर बनी रहती है। ऐसी स्थिति में पितृदोष संतानोत्पत्ति में बाधक हो सकता है।

पितृदोष जब संतानसुख में बाधक होता है, तब यह समस्या परिवार के किसी एक युगल में नहीं वरन् उस परिवार में दूसरे लोगों में भी देखी जा सकती है। कई बार तो ऐसा अनेक पीढ़ियों तक होता है। ऐसी स्थिति में लोग सन्तान गोद लेकर अपना वंश आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं, लेकिन गोद आने वाले व्यक्ति के भी संतानोत्पत्ति नहीं होती। यह पितृदोष से सम्बन्धित एक विकट समस्या है, जिसका उपाय नहीं किया जाये, तो पूरा वंश समाप्त हो जाता है।

वर्तमान में संतानोत्पत्ति नहीं होने के अनेक कारण हैं। खान-पान का बिगड़ना, अधिक आयु में विवाह होना, कम संतानोत्पत्ति की इच्छा रखना इत्यादि। इनके अलावा भी अन्य अनेक समस्यायें हैं, जिसके कारण संतानोत्पत्ति बाधित हो सकती है। इनमें पितृदोष सबसे अधिक गम्भीर समस्या है। जब यह किसी व्यक्ति के साथ जुड़ जाती है, तो उसका जीवन नरकमय हो जाता है। बहुत सारा धन चिकित्सकीय परामर्श में खर्च होने के पश्चात् भी लाभ प्राप्त नहीं होता। चिकित्सक सदैव यही कहते हैं कि आप दोनों संतानोत्पत्ति के दृष्टिकोण से बिलकुल स्वस्थ हैं, लेकिन संतान नहीं होने का कारण ज्ञात नहीं हो पा रहा है। ऐसी विकट स्थिति में पितृदोष का निवारण ही एकमात्र उपाय बच जाता है।

पितृदोष से संतानोत्पत्ति बाधित होने के अनेक उदाहरण मिल जाते हैं। गया श्राद्ध की महिमा में श्रीमद्देवीभागवत पुराण में यह कथन है कि जिस व्यक्ति को संतान सुख

में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न हो रही हो, उसे गया में जाकर श्राद्ध करने से निश्चित ही अपने वंश को चलाने वाले श्रेष्ठ पुत्र की प्राप्ति होती है। इसका अर्थ यही है कि प्राचीनकाल में भी श्राद्ध और पितृकर्म का महत्त्व था और इसके महत्त्व को संतान सुख से भी जोड़ा गया था। कहने का अर्थ है कि यदि संतानोत्पत्ति में किसी प्रकार की बाधा हो, तो अपने पितरों से इस हेतु प्रार्थना अवश्य करनी चाहिये।

इससे सम्बन्धित एक घटना की जानकारी मुझे एक व्यक्ति ने दी थी। उसे विवाह के कुछ वर्ष पश्चात् ही संतति के रूप में कन्या की प्राप्ति हुई। दूसरी संतान प्राप्ति के लिये जब प्रयास किये गये, तो संतान सुख प्राप्त नहीं हो पा रहा था। इस हेतु चिकित्सकीय परामर्श लिया गया, परन्तु इससे भी कोई लाभ नहीं हो पाया। कुछ वर्ष पश्चात् जब वे दूसरी संतान की आशा छोड़ चुके थे, तो उस दौरान उन्होंने गयाजी जाकर अपने पितरों का श्राद्धकर्म किया। इस श्राद्ध के कुछ माह पश्चात् ही उन्हें यह ज्ञात हुआ कि उनकी पत्नी गर्भवती है। कुछ समय पश्चात् उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई। इससे उनके आनंद की सीमा नहीं रही। उन्हें यह ज्ञात हो गया कि पितरों की भक्ति सभी प्रकार के सुख देने वाली है, हालांकि यह व्यक्ति किसी प्रकार के पितृदोष से पीड़ित नहीं था, परन्तु पितरों के कारण पुत्र रत्न की प्राप्ति भी हो सकती है, पुराणों में उल्लिखित यह तथ्य गलत नहीं है। इस चमत्कार को इस व्यक्ति ने महसूस किया था।

पितृदोष के कारण जब संतानोत्पत्ति बाधित होती है, तो व्यक्ति चाहे कितना ही क्यों न प्रयास कर ले, उसे संतान सुख प्राप्त नहीं हो पाता। पितृदोष के कारण संतान के नहीं होने सम्बन्धित योग अनेक जन्मपत्रिकाओं में देखे जा सकते हैं। मेरे पास ऐसे बहुत सारे लोग आये हैं, जिनकी जन्मपत्रिका में इस प्रकार का दोष था और पितृदोष का निवारण करवाने के पश्चात् उन्हें शीघ्र ही संतान सुख की प्राप्ति हो गई। पितर संतान सुख को बाधित क्यों करते हैं, इसका मुख्य कारण यह होता है कि वे आपसे किसी न किसी रूप में संतुष्ट नहीं हैं और वे नहीं चाहते हैं कि आपका वंश आगे बढ़े। प्राचीनकाल से पितृदोष के रूप में संतान का नहीं होना एक प्रमुख पितृश्राप के रूप में जाना जाता रहा है। इसके फलों को साक्षात् रूप में अनेक लोगों ने अनुभव किया है।

पितृदोष के कारण से संतानबाधा के अनेक उदाहरण हमारे आपके समक्ष समय-समय पर उपस्थित होते हैं। इनमें से एक उदाहरण का उल्लेख करना आवश्यक रहेगा। एक दम्पती को विवाह के 12 वर्षों के बाद तक संतान सुख की प्राप्ति नहीं हो सकी। संतान प्राप्ति के लिये अनेक बार विभिन्न चिकित्सकों से मिलकर उन्होंने अपना शारीरिक परीक्षण करवाये, जाँच में पता चला की उन्हें किसी भी प्रकार की शारीरिक समस्या नहीं है अर्थात् संतानोत्पत्ति के लिये पति-पत्नी दोनों ही सक्षम थे। इसके उपरांत भी संतान सुख प्राप्त न होना एक अविश्वसनीय घटना बन गई थी। संतान प्राप्ति के लिये दम्पती ने अनेक पीर-मजारों, दरगाहों पर मत्था टेका तथा अनेक मन्दिरों में जाकर मन्नतें

भी मांगी। इन सबका कोई लाभ दिखाई नहीं दे रहा था। इस बीच वे दो-तीन ज्योतिषियों से भी मिले। उनके द्वारा बताये गये उपाय भी किये किन्तु परिणाम नकारात्मक ही बने रहे। एक दिन चारों तरफ निराश होकर वह दम्पती मेरे पास अपनी जन्मपत्रिका दिखाने के लिये आये। उनकी जन्मपत्रिका का अध्ययन करने के पश्चात् पितृदोष से सम्बन्धित योग मिले, जो संतान सुख को बाधित कर रहे थे। आश्चर्य की बात तो यह थी कि उनकी पत्नी की जन्मपत्रिका में भी इस प्रकार के योग विद्यमान थे। मैंने जब उनसे यह पूछा कि आपके कोई भाई अथवा बहिन हैं, जिन्हें संतानोत्पत्ति से सम्बन्धित बाधा हो रही हो, तो उन्होंने मुझे बताया कि मेरे छोटे भाई के विवाह को 4 वर्ष हो चुके हैं और उसे भी अभी तक संतान सुख की प्राप्ति नहीं हो पायी है। इससे यह निश्चय हो गया था कि वह जातक पितृदोष के कारण संतान सुख से वंचित थे और उनके छोटे भाई को भी इस दोष के कारण संतान नहीं हो पा रही थी, हालांकि उनके छोटे भाई की जन्मपत्रिका में इस प्रकार के दोष नहीं थे, परन्तु उस घर में रहने के कारण उसे भी यह फल प्राप्त हो रहा था। इस दोष के निवारण के लिये सभी परिजनों ने मिलकर पितृदोष की शांति की। साथ ही पितरों की सन्तुष्टि के लिये जो भी प्रमुख उपाय थे, वे सभी किये। इसी कार्य का यह फल रहा कि आने वाले 2 वर्षों में उन दोनों भाइयों को संतान सुख की प्राप्ति हो गयी।

पितृदोष के कारण संतान सुख बाधित होने की केवल यह एक घटना ही मैंने नहीं देखी है, वरन् अनेक लोगों की जन्मपत्रिकाओं में मैंने इस प्रकार के दोष देखे हैं। क[illegible] बार ऐसा भी होता है कि स्त्री गर्भधारण तो करती है, लेकिन किसी न किसी कार[illegible] उसका गर्भपात हो जाता है जबकि चिकित्सकों के पास गर्भपात होने का कोई ठोस कारण नहीं होता। अनेक स्त्रियों को मृत संतान पैदा होती है। इसका कारण भी पितृदोष हो सकता है। पितृदोष एक ऐसी गम्भीर समस्या है, जिसका सीधा प्रभाव अपने वंश वृद्धि को लेकर हो सकता है। पितर सीधे रूप में अपने परिजनों को प्रभावित कर सकते हैं। वे जहाँ हित करते हैं, वहीं अहित भी कर सकते हैं। इसलिये प्रत्येक कार्य के साथ ही अपनी वंश वृद्धि के लिये भी पितरों से प्रार्थना अवश्य करनी चाहिये और उन्हें हर प्रकार से संतुष्ट रखने का प्रयास करना चाहिये।

सन्तान सुख प्राप्ति हेतु उपाय

संतान प्राप्ति व्यक्ति के जीवन का विवाह के पश्चात् सर्वोच्च लक्ष्य रहता है। संतान प्राप्ति के पश्चात् व्यक्ति का वंश आगे चलता है तथा अपने अनेक दायित्वों की पूर्ति भी इसके पश्चात् ही सम्भव होती है। वैसे संतान के रूप में पुत्र की ही आकांक्षा अधिक की जाती है लेकिन जब संतान सुख किसी भी प्रकार से बाधित हो रहा हो, तो कन्या संतान प्राप्ति पर भी दम्पती को ऐसा लगता है कि मानो उन्हें दुनियाभर की खुशिया प्राप्त हो गई हों। यहाँ पर संतान सुख प्राप्ति के लिये कुछ ऐसे विशिष्ट उपायों के बारे में बताया जा रहा है जिनका प्रयोग करने से संतान सुख में आने वाली बाधाओं का निवारण हो सकेगा-

1. पितृदोष के कारण सन्तान सुख से सम्बन्धित समस्या भी होती है। जब किसी पति-पत्नी में कोई शारीरिक कमी नहीं होते हुये भी सन्तानोत्पत्ति नहीं हो पाती, तो यह इस बात का संकेत हो सकता है कि यह समस्या असामान्य एवं गम्भीर है। कई बार ऐसा देखा जाता है कि दम्पती अपना उपचार चिकित्सक से करवाते हैं, लेकिन उन्हें उस चिकित्सा से कोई लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। पितृदोष के कारण जब सन्तान सुख बाधित होता है, तब भी इसी प्रकार की समस्यायें आती हैं। पितृदोष का निवारण किये बिना समस्या ज्यों कि त्यों बनी रहती है। यदि आपके जीवन में इस प्रकार की समस्या है और आपको लगता है कि पितृदोष के कारण आपका सन्तानसुख बाधित हो रहा है, तो ऐसी स्थिति में यह उपाय करना आपके लिये लाभदायक सिद्ध होगा। यह उपाय आपको अमावस्या के दिन करना है। अमावस्या के दिन दोपहर के समय अपने पितरों के निमित्त तर्पण, ब्राह्मण भोजन, दान इत्यादि करने के पश्चात् भगवान शिव के मन्दिर में जाकर अथवा घर पर ही शिवलिंग के समक्ष भगवान शिव से अपने पितृदोष के निवारण और सन्तान सुख प्राप्ति की प्रार्थना करें। तत्पश्चात् शिवलिंग का गाय के दुग्ध से अभिषेक करें। शिवलिंग का अभिषेक करते समय भगवान शिव के मंत्र अथवा स्तोत्र का पाठ करें। यदि पुष्पदन्त कृत **शिवमहिम्नस्तोत्र** से भगवान शिव की महिमा और अभिषेक किया जाये तो अत्यधिक श्रेष्ठ होता है। भगवान शिव का पूजन करने के पश्चात् उनसे अपने पितृदोष निवारण और सन्तानसुख की प्रार्थना करें। इस उपाय के साथ यदि प्रदोष का व्रत किया जाये तो उसके अत्यधिक अनुकूल परिणाम प्राप्त होते हैं।

2. सन्तान सुख में होने वाली बाधाओं के निवारण के लिये **गर्भगौरी रुद्राक्ष** का धारण करना भी उत्तम माना जाता है। यह एक विलक्षण रुद्राक्ष होता है, जिसमें एक रुद्राक्ष बड़ा और एक छोटा होता है। बड़ा रुद्राक्ष माँ पार्वती का प्रतीक माना जाता है और छोटा रुद्राक्ष भगवान गणेश का प्रतीक होता है। इस रुद्राक्ष को किसी शुभ मुहूर्त में धारण

करना चाहिये। शुभ मुहूर्त से तात्पर्य धारणकर्ता के चन्द्रबल और धारण करते समय के मुहूर्त होता है। शुक्ल पक्ष में सोमवार, पूर्णिमा, प्रदोष तिथि, नवरात्र, होली, महाशिवरात्रि जैसे शुभ मुहूर्त में यह रुद्राक्ष धारण से विशेष लाभ होता है। रुद्राक्ष धारण के साथ माँ पार्वती और भगवान गणेश की नित्य पूजा उपासना भी करनी चाहिये, तभी इसके अनुकूल फल पूर्ण रूप से प्राप्त हो पायेंगे। इस रुद्राक्ष के प्रभाव से आपको यदि किसी अदृश्य बाधा के कारण सन्तानसुख सम्बन्धी समस्या हो रही है, तो उसका निवारण भी हो जायेगा।

3. विवाह के पश्चात् काफी वर्षों तक यदि आपका सन्तान सुख बाधित रहे और किसी भी उपाय का लाभ नहीं मिल पा रहा हो, तो ऐसी स्थिति में गया श्राद्ध करना आपके लिये अनुकूल फलकारक सिद्ध होगा। गया श्राद्ध से तात्पर्य गया जाकर अपने पूर्वजों के निमित्त श्राद्ध करने से होता है। गया एक प्रसिद्ध पितृतीर्थ है जहाँ पितरों के साथ हिन्दू धर्म के सभी देवी-देवताओं का निवास माना जाता है। वहाँ जाकर अपनी सन्तानोत्पत्ति की कामना से अपने पितरों के निमित्त विधि-विधान से श्राद्धकर्म सम्पन्न करवाया जाता है, तो पितर प्रसन्न होकर सन्तति सुख का वरदान देते हैं। गया श्राद्ध में कुछ विशेष नियमों का पालन किया जाना आवश्यक होता है, जिनका विवरण गया श्राद्ध से सम्बन्धित अन्य अध्याय में दिया गया है। पुराणों में भी गया श्राद्ध से सन्तान सुख की प्राप्ति का चामत्कारिक फल बताया गया है। सन्तान में भी पुत्र सुख प्राप्ति के दृष्टिकोण से गया श्राद्ध करने का विशेष महत्त्व है।

4. सन्तान की कामना करने वाले दम्पतियों को जब सन्तान सुख प्राप्त नहीं होता है, तो उनके लिये जीवन के सभी सुख फीके हो जाते हैं। अनेक दम्पतियों के साथ यह समस्या रहती है कि पत्नी गर्भवती हो जाती है, लेकिन प्रसव से पहले ही कोई न कोई समस्या होने से गर्भपात जैसी स्थिति का सामना करना पड़ता है। कुछ मामलों में बार-बार मृत शिशु उत्पन्न होते हैं। इनका कारण और निवारण चिकित्सकों के पास भी नहीं होता है। अच्छा खान-पान, भलीभाँति देखभाल करने के पश्चात् भी अनेक बार ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ता है। इस समस्या से मुक्ति के लिये लड्डू गोपाल जी की उपासना करना श्रेष्ठ फलकारक होता है। लड्डू गोपाल भगवान श्रीकृष्ण का बालरूप है, जिसकी उपासना से न केवल सन्तान सुख प्राप्त होता है वरन् अनेक मनोकामनायें भी पूर्ण होती हैं। इनकी उपासना में यह नियम आवश्यक होता है कि आप जिस प्रकार एक शिशु का ध्यान रखते हैं, वैसे ही इनकी उपासना में भी भाव ऐसे ही होने चाहिये। भोजन से लेकर सोने और जगाने जैसे सभी नियमों का पालन करना आवश्यक होता है। नियमित रूप से इनके लिये नैवेद्य और भोजन की व्यवस्था होनी चाहिये। लड्डू गोपाल के पूजन के साथ ही **सन्तान गोपाल स्तोत्र** और उनके मंत्र का जप भी करना चाहिये।

घर में लड्डू गोपाल जी की स्थापना विशेष मुहूर्त में करने से लाभ होता है। श्रीकृष्णजन्माष्टमी, नवरात्र, होली, दीपावली, अक्षयतृतीया, श्रावणीपूर्णिमा जैसे मुहूर्त बाल गोपाल की स्थापना के दृष्टिकोण से अनुकूल हैं। लड्डू गोपाल जी की स्थापना के साथ ही **सन्तानगोपाल यंत्र** की स्थापना भी करनी चाहिये। उनका नित्य ध्यान और मंत्र का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है। सन्तान गोपाल मन्त्र का जप पत्नी एवं पति दोनों को करना चाहिये। आप इससे सम्बन्धित अनुष्ठान भी अपने घर में सम्पन्न करवा सकते हैं। इस अनुष्ठान में निम्नांकित मंत्र के सवालक्ष जप और उसके दशांश के तर्पण, मार्जन, हवन और ब्राह्मण भोजन से विशेष लाभ होता है। सन्तान गोपाल मंत्र के जप **पुत्रजीवा माला** से करने पर विशेष लाभ होता है।

ध्यान- **ॐ विजयेन युतो रथस्थितः प्रसमानीय समुद्रमध्यतः।**
प्रददत्तनयान् द्विजन्मने स्मरणीयो वसुदेवनन्दनः।।

मंत्र- **ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।**
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

5. सन्तान सुख प्राप्ति के उपायों में भगवान राम की उपासना भी श्रेष्ठ फलकारक मानी जाती है। रामचरितमानस के मंत्रों से यदि किसी विशिष्ट कामना को लेकर सन्तान सुख प्राप्ति के उपाय किये जायें तो उत्तम फल मिलते हैं। इस हेतु निम्नांकित मंत्र का सम्पुट लगाकर रामचरितमानस का नवाह्न अथवा मासपारायण पाठ करने से लाभ होता है। यदि रामचरितमानस का पाठ नहीं कर सकें तो निम्नांकित मंत्र की नित्य तीन माला जप से मनोकामना पूर्ण होती है। यह उपाय किसी विशिष्ट मुहूर्त से प्रारम्भ करना चाहिये। नवरात्र, गुरुपुष्य, रविपुष्य, होली, अक्षयतृतीया इत्यादि मुहूर्त इस मंत्र जप के लिये श्रेष्ठ हैं। इन मुहूर्त में प्रातःकाल चौकी पर पीला वस्त्र बिछाकर रामदरबार का चित्र स्थापित कर उनका पंचोपचार पूजन करें, तत्पश्चात् रामचरितमानस का निम्नांकित मंत्र से सम्पुटित करके पाठ करें अथवा जप करें। इस उपाय से शीघ्र ही आपकी मनोकामना पूर्ण होगी।

मन्त्र- **प्रेम मगन कौसल्या निसि दिन जात न जान।**
सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान।।

6. पितृदोष के कारण जब सन्तान सुख प्रभावित होता है, तो उसमें पितरों की कृपा प्राप्ति होने पर ही सन्तान सुख की प्राप्ति सम्भव हो पाती है। पितृदोष की प्रकृति भिन्न-भिन्न होती है, जो ग्रहों से बनने वाले पितृदोष के योगों से जानी जा सकती है। सामान्यतः पितृदोष सूर्य, चन्द्रमा, गुरु, शनि, राहु अथवा केतु के कारण निर्मित होता है। पितृदोष की प्रकृति जानकर उसके निवारण के लिये विशिष्ट उपाय करने से सन्तान प्राप्ति बाधा दूर हो जाती है। जब पंचम अथवा एकादश भाव में सूर्य स्थित होकर सन्तान सुख को बाधित

करे तो भगवान सूर्य और भगवान विष्णु की उपासना करनी चाहिये। अपने पूजन स्थल पर दोनों का विग्रह अथवा चित्र स्थापित कर उनका नित्य पूजन करें और **आदित्यहृदय स्तोत्र** एवं **विष्णुसहस्रनाम** का पाठ करें तथा अमावस्या के दिन ब्राह्मण भोजन करवायें। यदि सन्तान भाव में चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा की दृष्टि हो, तो भगवान शिव का पूजन-अर्चन करने से लाभ होता है। चन्द्रमा से सम्बन्धित पितृदोष निवारण के लिये गंगा, यमुना जैसी पवित्र नदियों में स्नान करना और चन्द्रमा के यंत्र का पूजन करना उत्तम होता है। इससे चन्द्रमा के फल अनुकूल हो जाते हैं। गुरु पंचम भाव को प्रभावित करता हो, तो उसकी अनुकूलता के लिये अमावस्या पर ब्राह्मण भोज और उनको वस्त्र, स्वर्ण, रजत इत्यादि के दान और भगवान श्रीकृष्ण के पूजन से लाभ मिलता है। पंचम अथवा पंचमेश जब शनि से पीड़ित होकर पितृदोष का निर्माण करता हो, तो उसके निवारण के लिये भगवान शिव के मन्दिर की स्थापना में सहयोग, हरिवंश पुराण का श्रवण, सार्वजनिक निर्माण में सहयोग करने से लाभ होता है। साथ ही अमावस्या के दिन पितरों के निमित्त तर्पण कार्य और दान करना चाहिये। यदि राहु अथवा केतु से पंचम भाव प्रभावित हो, तो माँ मनसा और सर्प के पूजन के साथ ही पितरों के निमित्त श्राद्ध कर्म करना चाहिये। किसी गरीब कन्या के विवाह में सहयोग करने से भी राहु-केतु के नकारात्मक फल अनुकूल होते हैं। गोशाला में गायों के निमित्त दान देना, शिवालय अथवा भगवान विष्णु के मन्दिर निर्माण में आर्थिक सहयोग करने से भी अनुकूलता मिलती है। उक्त सभी उपायों में हरिवंशपुराण का श्रवण सन्तान सुख प्राप्ति के उपायों में श्रेष्ठ माना गया है। उक्त सभी उपाय शुभ मुहूर्त में प्रारम्भ करने चाहिये। यदि आपको अपना जन्मविवरण ज्ञात नहीं है, तो ऐसी स्थिति में शुभ मुहूर्त में अपने घर अथवा किसी धार्मिक स्थल पर हरिवंशपुराण का पाठ करायें। पाठ के साथ ही ब्राह्मण भोज भी करवायें तो शीघ्र ही सन्तान सुख की प्राप्ति होगी।

7. सन्तान सुख में बाधा एक गम्भीर समस्या है। इस समस्या का सामना स्वयं भगवान श्रीकृष्ण को भी करना पड़ा था। भगवान श्रीकृष्ण ने सन्तान प्राप्ति के लिये भोलेनाथ शिव की उपासना की थी। भगवान शिव ने उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर उन्हें कामदेव का अवतार प्रद्युम्न को श्रीकृष्ण को पुत्र रूप में प्रदान किया था। भगवान शिव ही त्रिदेवों में ऐसे देव हैं, जिनका परिवार पुत्र और पौत्रों से परिपूर्ण है। भगवान शिव की उपासना प्राचीन काल से ही विभिन्न कामनाओं के लिये करने की परम्परा रही है। सन्तान सुख में यदि सभी उपाय करने के पश्चात् भी लाभ प्राप्त नहीं होता है, तो ऐसी स्थिति में भगवान शिव के निमित्त लघुरुद्र और मृत्युंजय मंत्र की उपासना से आपकी मनोकामना अवश्य पूर्ण होगी। भगवान शिव अपने नाम के समान भक्तों का कल्याण करने वाले हैं। भले ही उन्होंने स्वयं किसी सुख का भोग नहीं किया हो, परन्तु अपने

भक्तों को वे सभी प्रकार का सुख प्रदान करते हैं। आप यदि सन्तान सुख प्राप्ति के सभी प्रकार के उपाय कर चुके हैं, लेकिन फिर भी आपकी मनोकामना पूर्ण नहीं हो पायी है, तो ऐसी स्थिति में लघुरुद्र और मृत्युंजय मंत्र के जप से लाभ सम्भव है। लघुरुद्र से तात्पर्य रुद्राष्टाध्यायी के एकादश पाठ से भगवान शिव की स्तुति होती है। लघुरुद्र शुक्ल पक्ष के सोमवार, प्रदोष, नवरात्र, महाशिवरात्रि, अक्षयतृतीया, रविपुष्य, गुरुपुष्य जैसे मुहूर्त पर करवाया जा सकता है। महामृत्युंजय के जप आप स्वयं रुद्राक्ष की माला से नित्य कर सकते हैं। उक्त के अतिरिक्त सोमवार और प्रदोष का व्रत करने से भी लाभ होता है। उक्त उपाय के अतिरिक्त नित्य भगवान शिव की प्रसन्नता के लिये शिवमहिम्नस्तोत्र का पाठ भी करना चाहिये।

८. सन्तान सुख बाधित होने की स्थिति में मैं आपको जो उपाय बता रहा हूँ, इसे करने से लाभ होता है। यह एक सामान्य उपाय है, लेकिन इसके परिणाम अत्यधिक चामत्कारिक हैं। जिन दम्पती को सन्तान सुख प्राप्त नहीं हो रहा हो, तो पति-पत्नी दोनों गुरुवार के दिन प्रात:काल जाकर पीपल के वृक्ष पर जलार्पण करें और घी का दीपक प्रज्वलित करें। तत्पश्चात् पीपल के वृक्ष की तीन परिक्रमायें करें। यह उपाय नित्य करना है। इससे शीघ्र सन्तान में होने वाली बाधा का पता चल जाता है और उसके निवारण के पश्चात् सन्तान सुख प्राप्त हो जाता है। पीपल में पितरों और देवताओं का वास माना जाता है। इसलिये पीपल के वृक्ष पर जल सिंचन को उत्तम माना जाता है।

९. ज्योतिष में सन्तान भाव का नैसर्गिक कारक गुरु ग्रह माना जाता है। जब किसी दम्पती को सन्तान सुख से सम्बन्धित समस्या हो, तो गुरुवार के दिन किये जाने वाले उपायों से विशेष लाभ होता है। सन्तानसुख की प्राप्ति के लिये गुरुवार का व्रत और इस दिन भगवान श्रीकृष्ण की पूजा उपासना करनी चाहिये और उनके मंदिर में जाकर आशीर्वाद लेना चाहिये। सन्तान सुख से सम्बन्धित जो भी उपाय हों, वह पति और पत्नी दोनों करें, तब ही उत्तम लाभ प्राप्त हो पाता है। उक्त उपाय के साथ पाँचमुखी रुद्राक्ष भी पति एवं पत्नी दोनों को धारण करना चाहिये। इससे सन्तान सुख में जो भी बाधा होती है, वह समाप्त हो जाती है।

पितृदोष के कारण बाधित होती है- व्यापार उन्नति

पितृदोष के कारण अनेक समस्याओं के साथ ही व्यापार की उन्नति भी बाधित हो सकती है। विशेष रूप से ऐसा व्यापार जो अपने पूर्वजों के द्वारा स्थापित किया गया था, परन्तु वंशजों के द्वारा अथक प्रयासों के उपरान्त भी धीरे-धीरे बर्बाद हो जाता है। व्यापार में पितृदोष के कारण अवनति होने के कई कारण होते हैं, जिनमें सबसे मुख्य कारण यही होता है कि जब व्यक्ति अपने पूर्वजों की अपेक्षा व्यापार की उन्नति में पूर्ण तत्परता नहीं रखते और ज्यादा लाभ के लालच में अनैतिक कार्य करते हैं, तो वह व्यापार चौपट होने लगता है। अनेक बार यह भी देखा जाता है कि व्यक्ति अपने पूर्वजों के व्यापार की तरफ बिलकुल ध्यान नहीं देते हैं। ऐसी स्थिति में वह व्यापार तो चौपट होता ही है, साथ ही जो कार्य वह स्वयं कर रहा होता है, वह भी बर्बाद हो जाता है। ऐसी स्थिति में वह व्यक्ति किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाता है कि उसे कौनसा कार्य करना चाहिये और कौनसा कार्य नहीं करना चाहिये?

अनेक बार पितृदोष होने पर उक्त कारण के अतिरिक्त भी व्यापार चौपट होने लग जाता है। कई बार पिता की मृत्यु के पश्चात् बेटा पिता के द्वारा स्थापित व्यापार का मालिक तो बन जाता है, किन्तु व्यापार द्वारा अर्जित धन का प्रयोग अपने छोटे भाई-बहिनों, माँ आदि पर न करके अपने सुख भोग के लिये करने लगता है। घर में धन की कमी के कारण अन्य सदस्य काफी परेशान रहने लगते हैं किन्तु बेटे पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इस स्थिति से पितर कुपित होकर उसके व्यापार में बाधायें उत्पन करने लगते हैं। परिणामस्वरूप धीरे-धीरे व्यापार चौपट होने लगता है। कई बार चोरी होने, आग लगने अथवा अन्य किसी प्रकार की दुर्घटना से भी व्यापार प्रभावित होने लगता है। इसके अलावा मजदूर वर्ग का शोषण और समाज तथा कानून के विरुद्ध कार्य करना इसके मुख्य कारण होते हैं। ऐसी स्थिति में व्यापार से कमाया गया सारा धन सुख-समृद्धि के स्थान पर बर्बादी लेकर आता है। उस घर में सभी लोग परेशान होने लगते हैं। आय के सभी साधन बाधित हो जाते हैं, इसलिये जिन घरों में पूर्वज अपने श्रेष्ठ सिद्धान्तों पर चलते रहे हों और पितरों के रूप में आकर आशीर्वाद प्रदान कर रहे हों, उन्हें कदापि लोभ-लालच के वशीभूत होकर कार्य नहीं करना चाहिये।

पितृदोष के कारण व्यापार में समस्या आने की एक घटना के बारे में जानने का अवसर मुझे मिला था। एक बहुत ही सम्पन्न व्यापारी थे। उन्होंने अपनी मेहनत से शून्य से शुरूआत करके करोड़ों रुपये कमाये थे। अपनी मृत्यु से पहले उन्होंने अपने परिजनों को सभी उत्तम सुविधायें प्रदान की थी। व्यापार सुचारू रूप से और श्रेष्ठ प्रकार से चल

रहा था। समाज में भी बहुत नाम था। उनका यश सभी लोग मानते थे। मृत्यु के पश्चात् कुछ समय तो उनका व्यापार सही चला, परन्तु धीरे-धीरे व्यापारिक लाभ प्रभावित होने लगा। इसका मुख्य कारण यह था कि उनके वंशज व्यापार सम्बन्धी मूल कार्य को छोड़कर जीवन में और अधिक धन कमाना चाहते थे और इसके लिये उन्होंने अनैतिक मार्गों का सहारा लिया था। सट्टेबाजी का कार्य करने के कारण उनका बहुत सारा धन बर्बाद हो चुका था। धीरे-धीरे व्यापार चौपट होने लग गया था। अन्त में स्थिति ऐसी आ गयी थी कि केवल खर्चा चलाने जितना ही धनार्जन हो पा रहा था। तब उन्होंने इस समस्या का कारण जानना चाहा। उन्हें ज्ञात हुआ कि यह सभी पितृदोष के कारण हो रहा है। उनके पिता पितरों में हैं और वह उनके द्वारा किये जाने वाले व्यापारिक कार्यों से संतुष्ट नहीं हैं, इस कारण उनका व्यापारिक लाभ धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। ऐसा ज्ञात होने के पश्चात् भी उन्होंने अपने व्यवहार में परिवर्तन करने का कोई प्रयास नहीं किया, यह अलग बात है कि उन्होंने अपने पिता की संतुष्टि के लिये सभी प्रकार के श्राद्धकर्म और अन्य उपाय करवाये। इस कारण कुछ समय तो व्यापार अनुकूल चलता रहा, लेकिन कुछ दिनों बाद पुन: पहले जैसी ही समस्या उत्पन्न होने लगी। इस बार तो व्यापार बिलकुल ही बर्बाद हो गया।

इस घटना से यह तथ्य पूर्णत: स्पष्ट हो जाता है कि पितृदोष के कारण जब व्यापारिक लाभ प्रभावित हो रहा हो, तो केवल पितरों की सन्तुष्टि कर देना ही पर्याप्त नहीं होता है, वरन् अपने कर्मों में नैतिकता लाना भी आवश्यक है। हमारे पितर हमसे यही आशा रखते हैं कि हम सदा सद्मार्ग पर चलते हुए धनार्जन करें, क्योंकि गलत तरीके से कमाया हुआ धन कहीं न कहीं हमारे लिये परेशानी का कारण बनता है अथवा आगे चल कर बन सकता है। अक्सर देखा जाता है कि जो व्यापारी अनैतिक कार्यों से धन कमाते हैं, वे अपने पितरों और देवी-देवताओं को सन्तुष्ट रखने का पूरा प्रयास करते हैं, फिर भी उनकी समस्याओं का कभी अंत नहीं होता। इसका मुख्य कारण यही है कि वे अपने कर्मों में पवित्रता नहीं ला पाते हैं। जब तक कर्मों में पवित्रता नहीं लायेंगे, तब तक इसी प्रकार की समस्या उत्पन्न होती रहती है।

जब आप अपने पिता अथवा पितामह के व्यापार को सम्भाल रहे हैं, तो यह आवश्यक हो जाता है कि आप उनके सिद्धान्तों को अपनायें और उनके विपरीत कार्य नहीं करें। अधिक लाभ के मोह में किया गया गलत कार्य आपके लिये नुकसानदेह हो सकता है। व्यापारिक लाभ को बढ़ाने के लिये प्रयास अवश्य करना चाहिये, परन्तु इसके लिये अपने पितृकर्मों के साथ ही नैतिक मार्ग को अपनाना भी आवश्यक है। कई बार यह देखा जाता है कि पितर अपने द्वारा समृद्ध किये गये व्यापार से इतना अधिक मोह रखते हैं कि उसे परिवर्तित होते हुए अथवा गलत राह पर चलते हुए नहीं देख पाते हैं। उनकी यही स्थिति व्यापारिक उन्नति में पितृदोष का कारण बन जाती है।

व्यापार में अनुकूलता हेतु उपाय

जिन व्यक्तियों की जीविका का आधार उनका अपना व्यवसाय ही होता है, ऐसे में उनके व्यवसाय में आने वाली किसी भी प्रकार की बाधा उन्हें विचलित कर सकती है। व्यक्ति की समस्त आर्थिक आवश्यकताओं की निर्बाध रूप से पूर्ति होते रहे, इसलिये व्यापार में अनुकूलता हेतु यहाँ कुछ विशिष्ट उपायों के बारे में बताया जा रहा है-

1. पितृदोष अथवा अन्य अदृश्य बाधाओं के कारणों से जब व्यापार प्रभावित होता है, तो व्यापारिक लाभ पर अत्यधिक नकारात्मक प्रभाव पर पड़ता है। यदि आपको अपने व्यापार में इस प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ रहा है, तो यह उपाय आपके लिये अनुकूल फलदायक सिद्ध होगा। इस उपाय के प्रभाव से व्यापार पर पड़ने वाला नकारात्मक प्रभाव समाप्त हो जायेगा। यह प्रयोग दीपावली, दशहरा, होली, महाशिवरात्रि जैसे मुहूर्त में प्रारम्भ करना लाभदायक है। इस प्रयोग के लिये आपको गुलाल, छाड़छड़िला, काली गुंजा, कर्पूर काचरी तथा रुद्राक्ष की माला की आवश्यकता होगी। रुद्राक्ष की माला से जप करने हैं। शेष सामग्री को एकत्रित कर इसका मिश्रण कर लें। उक्त मुहूर्त में अर्धरात्रि के समय रुद्राक्ष की माला से निम्नांकित मंत्र का जप करना चाहिये। जप करने के पश्चात् उक्त सामग्री अभिमंत्रित हो जायेगी। इसके बाद इस सामग्री को अपने व्यापार स्थल पर छिड़क दें। लगातार सात रात्रियों तक यह प्रयोग जारी रखें। दूसरे दिन के पश्चात् मंत्र के केवल दस बार जप करके वस्तु अभिमंत्रित करनी है और अपने व्यापार स्थल पर छिड़कनी है। छिड़की हुई सामग्री को झाड़ू से निकालकर फेंक देना चाहिये। यह उपाय करने के दौरान इसकी चर्चा किसी से भी नहीं करें। यह प्रयोग करने के पश्चात् आपकी व्यापार सम्बन्धी समस्या का निवारण होने लगेगा।

मंत्र- **ॐ दक्षिण भैरवाय भूत-प्रेत-बन्ध तन्त्र बन्ध निग्रहणी सर्वशत्रु संहारिणी कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।**

2. आपके व्यापार पर जब लक्ष्मी जी की कृपा नहीं हो, अर्थात् व्यापार के कारण उत्तम धनार्जन नहीं हो पा रहा हो अथवा धनार्जन होने पर भी व्यापार से प्राप्त धन के कारण घर में बचत नहीं हो पा रही हो, संचित धन भी नहीं बढ़ रहा हो, तो ऐसी स्थिति में यह उपाय आपके लिये अनुकूल फलदायक सिद्ध होगा। यह उपाय माँ लक्ष्मी से आशीर्वाद प्राप्ति के लिये है। दीपावली, आश्विन पूर्णिमा अथवा अक्षयतृतीया के दिन आप यह उपाय कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त शुक्रवार के दिन रोहिणी नक्षत्र होने पर भी यह उपाय किया जा सकता है। इस दिन अपने व्यापार स्थल में स्फटिक अथवा अन्य धातु में बना श्रीयंत्र आपको लक्ष्मी पूजन के पश्चात् स्थापित करना है। श्रीयंत्र

स्थापित करने के लिये उसका पंचोपचार पूजन करने के अतिरिक्त निम्नलिखित मंत्र की एक माला जप अवश्य करना है। जप स्फटिक की माला से ही करें। साथ ही माँ लक्ष्मी का पूजन-अर्चन कर उन्हें नैवेद्य अर्पित करें। पूजन के पश्चात् माँ लक्ष्मी के विग्रह अथवा चित्र की स्थापना वहाँ के पूजन स्थल पर करें और श्रीयंत्र भी वहीं स्थापित कर दें। इस मंत्र का चालीस दिनों तक नित्य एक माला जप करते रहें। इस मंत्र के प्रभाव से ही शीघ्र ही आपकी मनोकामना पूर्ण हो जायेगी और आपके व्यापार पर माँ लक्ष्मी का पूरा आशीर्वाद बना रहेगा। यदि कभी व्यापारिक लाभ में किसी तरह की समस्या आये तो इस मंत्र के दोबारा प्रयोग से उस समस्या का शीघ्र ही समाधान हो जायेगा।

मंत्र- **ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीमेव कुरु कुरु वांछितमेव ह्रीं ह्रीं नमः।**

3. यह उपाय व्यापार को नज़र लगने अथवा अन्य अदृश्य बाधाओं से सम्बन्धित निवारण के दृष्टिकोण से अनुकूल है। इस उपाय को करने के पश्चात् व्यापार बन्धन जैसी समस्या से भी मुक्ति मिल जाती है। यह उपाय रविपुष्य, गुरुपुष्य, दीपावली, होली, अक्षयतृतीया जैसे शुभ मुहूर्त में किया जा सकता है। जिस दिन यह प्रयोग करना हो, उसके दो दिन पहले नौ गुणा नौ आकार का चाँदी से निर्मित स्वस्तिक यंत्र बनवा लेना चाहिये। इस यंत्र को मुहूर्त के दो दिन पहले रोली मिश्रित जल में डाल दें। मुहूर्त वाले दिन यंत्र को निकालकर शुद्ध जल से और पंचामृत से स्नान करवायें। तत्पश्चात् मन ही मन **माँ लक्ष्मी** के बीज **श्रीं** का जप करते हुये स्वस्तिक पर केसर से **श्रीं** लिखें और अपने व्यापारस्थल में ऐसे स्थान पर स्थापित कर दें जहाँ प्रत्येक आने जाने वाले व्यक्ति की दृष्टि उस यंत्र पर पड़े। इस प्रयोग से आपका व्यापारिक लाभ बढ़ने के साथ ही व्यापार पर कभी नज़रदोष एवं अन्य समस्या नहीं होगी। दीपावली पर उस स्वस्तिक की पूजा और पंचामृत से उसका अभिषेक करना नहीं भूलें। साथ ही उसे नित्य धूप और दीप भी अवश्य दिखायें।

4. व्यापार समृद्धि से सम्बन्धित यह उपाय भले ही बड़ा सरल हो, लेकिन इसके परिणाम अत्यधिक उत्तम होते हैं। यह उपाय दीपावली, अक्षयतृतीया और आश्विन पूर्णिमा पर किया जाये तो उत्तम है। इस दिन सायंकाल गोधूलि बेला में पीपल वृक्ष पर एक सुपारी, घी का दीपक और तांबे का सिक्का अर्पित करना है तथा अपने व्यापारिक लाभ की प्रार्थना करनी है। सर्वप्रथम पीपल वृक्ष में विद्यमान सभी देवी-देवता और पितरों से आशीर्वाद लें। तत्पश्चात् घी का दीपक प्रज्वलित करें और व्यापारिक उन्नति की प्रार्थना करते हुये सुपारी और तांबे का सिक्का अर्पित करके पीपल वृक्ष की तीन परिक्रमायें करें। परिक्रमा करने के पश्चात् एक पीपल के पत्ते को अपने साथ लेकर आयें और जल से धोकर उस पर **श्रीं** लिखकर उसे अपनी गद्दी अथवा गल्ले में रख दें। अगले वर्ष अथवा उक्त शुभ मुहूर्त में यह प्रयोग पुनः करते समय उस पुराने पत्ते को पीपल पर

छोड़कर नया पत्ता ले आयें और स्वच्छ कर **श्रीं** लिखकर उसी प्रकार स्थापित कर दें। इस प्रयोग से आपको अपने व्यापार में श्रेष्ठ लाभ प्राप्त होगा और धन में वृद्धि भी होगी।

5. यदि आप साझेदारी में व्यापार करते हैं और साझेदारों से अक्सर आपका मनमुटाव रहता है अथवा अन्य प्रकार की समस्या आ रही है, तो ऐसी स्थिति में यह उपाय करना आपके लिये अनुकूल रहेगा। यह उपाय आप शुक्ल पक्ष के किसी गुरुवार अथवा दीपावली, होली, अक्षयतृतीया जैसे श्रेष्ठ मुहूर्त में कर सकते हैं। इस हेतु आपको कच्चा सूत और रोली की आवश्यकता होगी। यह प्रयोग उक्त दिन रात्रि के समय करें। अपने साझेदार से भी इस प्रयोग की चर्चा करें और चाहें तो उसे भी इस प्रयोग में सम्मिलित किया जा सकता है। मुहूर्त वाले दिन रात्रिकाल में कच्चा सूत लेकर अपने पूजन कक्ष में बटना चाहिये और उसमें रोली के छींटे लगाने चाहिये। यह प्रयोग करते समय माँ लक्ष्मी का ध्यान और उनके किसी मंत्र का उच्चारण करना चाहिये। उस सूत को अगले दिन अपने व्यापार स्थल पर लगाना चाहिये। इस प्रयोग के पश्चात् आपके और साझेदारों के मध्य किसी प्रकार का मनमुटाव अथवा स्वार्थ की भावना नहीं पनपेगी। यह प्रयोग प्रत्येक वर्ष अथवा दीपावली वाले दिन करना चाहिये। इससे आपका व्यापारिक लाभ उत्तम रहेगा और आप सभी साझेदार मिलकर अपने व्यवसाय वृद्धि में प्रयास करेंगे।

6. यदि आपकी दुकान किसी कारणवश नहीं चल पा रही है अर्थात् ग्राहक आपकी दुकान पर नहीं आते हैं, तो अपनी बिक्री बढ़ाने के लिये यह उपाय करना आपके लिये अनुकूल सिद्ध होगा। इस हेतु आपको एकाक्षी नारियल, गोमती चक्र और कौड़ियों की आवश्यकता होगी। ये सभी सामग्रियाँ माँ लक्ष्मी की कारक मानी जाती हैं। इनकी स्थापना और पूजन से आय में निरन्तरता और माँ लक्ष्मी की कृपा रहती है। ये सभी वस्तुयें शुभ मुहूर्त में आपको अपनी दुकान के पूजा स्थल में स्थापित करनी हैं। इस उपाय को करने के लिये दीपावली, होली, अक्षयतृतीया, गुरुपुष्य, रविपुष्य जैसे मुहूर्त उत्तम हैं। इन मुहूर्त में प्रात:काल अथवा शुभ मुहूर्त में उक्त सामग्री को सामने रखकर सिंदूर में गाय का घी मिलाकर उसका लेप एकाक्षी नारियल, गोमती चक्र और कौड़ियों पर करें। लेप के साथ ही इन पर चाँदी का वर्क भी लगायें। तत्पश्चात् इन वस्तुओं का पंचोपचार से पूजन करते हुये इनमें माँ लक्ष्मी का आवाहन करें। अब इन्हें दुकान में स्थित पूजा घर में स्थापित कर दें और नित्य दुकान खोलने के पश्चात् और सायंकाल इन्हें धूप-दीप दिखायें। इस प्रयोग से आपकी दुकान की बिक्री बढ़ जायेगी और आप श्रेष्ठ व्यापारिक लाभ अर्जित करेंगे। इन वस्तुओं के साथ स्फटिक श्रीयंत्र की स्थापना भी अवश्य करें।

7. व्यापार में उन्नति के लिये व्यापारकारक नैसर्गिक ग्रहों का अनुकूल होना आवश्यक है। जब व्यापारककारक नैसर्गिक ग्रह बुध और शुक्र विपरीत फलकारी हों,

तो ऐसी स्थिति में व्यापारिक उन्नति बाधित हो जाती है। जब पितृदोष के कारण व्यापार प्रभावित होता है, तो ऐसी स्थिति में भी इन ग्रहों का यह फल नकारात्मक हो जाता है। इन ग्रहों की अनुकूलता के साथ ही पितृदोष निवारण के उपाय से व्यापार में चल रही समस्याओं का अन्त हो जाता है। शुक्ल पक्ष शुक्रवार के दिन यह उपाय करना उत्तम है। उपाय के अन्तर्गत चाँदी की अँगूठी में फिरोजा रत्न का निर्माण करवाकर मध्यमा अंगुली में धारण करने के साथ ही इन दोनों ग्रहों के जप, पितृगायत्री और माँ लक्ष्मी के मंत्र अथवा स्तोत्र का पाठ करने से लाभ होता है। बुध एवं शुक्र के मंत्रों के जप तीन-तीन माला करने चाहिये और एक माला पितृगायत्री का जप करना चाहिये। फिरोजा रत्न धारण करने के पश्चात् यह उपाय नित्य तब तक करें जब तक इस समस्या का समाधान नहीं हो जाये। यह उपाय करने से शीघ्र ही आपके व्यापार में चल रही समस्याओं का अन्त हो जायेगा।

8. व्यापार अनुकूल चलते-चलते जब अचानक व्यापारिक लाभ प्रभावित होने लगे और यह समस्या निरन्तर अनेक दिनों तक बनी रहे तो यह समझ जाना चाहिये कि अपने व्यापार में अनुकूलता के लिये अब आपको कोई न कोई उपाय अवश्य करना पड़ेगा, क्योंकि अपने अन्य प्रयास व्यक्ति पहले से ही कर चुका होता है। व्यापार जब पितृदोष के कारण प्रभावित हो, तो उसकी अनुकूलता के लिये अपने पितरों को प्रसन्न करना आवश्यक है। उनकी प्रसन्नता केवल पितृकार्यों से नहीं होती है, वरन् उनके आदर्शों का पालन भी आवश्यक है। जब यह व्यापार उन्हीं के द्वारा स्थापित हो, तो उनके नियमों के विरुद्ध नहीं जाना चाहिये। यदि आप अपने व्यापार में ऐसा कर चुके हैं और आपको इस परिवर्तन के पश्चात् लगातार व्यापार में हानि का सामना करना पड़ रहा है, तो सर्वप्रथम अपनी गलती को सुधारते हुये सही करें और अपने पितरों से अनुकूल फल प्राप्ति के लिये यह उपाय करें। यह उपाय अमावस्या के दिन करना है। जब आप उपाय प्रारम्भ करें, तो सबसे पहले अपने व्यापार स्थल अथवा दुकान को प्रात:काल जल से शुद्ध करें। पूरे व्यापार स्थल पर गंगाजल तथा पीली सरसों का छिड़काव पितृगायत्री मंत्र का जप करते हुये करें। यह उपाय लगातार तीन अमावस्या पर करें। साथ ही अपने व्यापार स्थल पर दोपहर के समय गुग्गुल की धूप प्रज्वलित कर अपने पितरों का स्मरण करते हुये उनसे व्यापारिक लाभ की प्रार्थना करें। इस उपाय से शीघ्र ही आपको अनुकूलता मिलेगी और आपके पितर व्यापारिक लाभ में सहयोग करेंगे, इससे आपकी इस समस्या का समाधान होगा।

9. यदि आप अपने व्यापारिक लाभ से संतुष्ट नहीं हैं और अत्यधिक निवेश के पश्चात् भी लाभ प्राप्त नहीं हो पा रहा है, तो ऐसी स्थिति में आपको यह उपाय करने से लाभ होगा। दीपावली, होली, अक्षयतृतीया जैसे श्रेष्ठ मुहूर्त के दिन अपने व्यापार स्थल पर स्फटिक श्रीयंत्र और स्वर्णाकर्षण भैरव यंत्र की स्थापना कर उनकी नित्य पूजा

उपासना और विशेष मुहूर्त पर अभिषेक करने से आपको उत्तम लाभ होगा। श्रीयंत्र में माँ लक्ष्मी का वास माना जाता है और स्वर्णाकर्षण भैरव का वास उनके यंत्र में। इन दोनों की स्थापना से आपको माँ लक्ष्मी और स्वर्णाकर्षणभैरव जी का आशीर्वाद मिलेगा। इन यंत्रों को नित्य धूप-दीप दिखायें तथा श्रीसूक्त तथा स्वर्णाकर्षणभैरव के स्तोत्र का पाठ करें। इस उपाय से शीघ्र ही अनुकूलता मिलेगी और आपको उत्तम व्यापारिक लाभ प्राप्त होने लगेगा।

10. व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिये विभिन्न प्रकार के उपायों में **मणिभद्र** की उपासना श्रेष्ठ मानी जाती है। मणिभद्र लोकपाल कुबेर के महामंत्री हैं और श्रेष्ठ लाभ प्राप्ति कराने वाले हैं। उनकी मंत्र उपासना ग्रहण, गुरुपुष्य, रविपुष्य, दीपावली, होली इत्यादि मुहूर्त पर करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस हेतु रुद्राक्ष की माला से कुबेर यंत्र के समक्ष मणिभद्र के मंत्र का जप करना चाहिये और कुबेर तथा मणिभद्र के निमित्त पंचोपचार पूजन के साथ नैवेद्य अर्पित करना चाहिये। यह उपासना रात्रि के समय करनी चाहिये। यह साधना तब तक करें जब तक आपको अपने व्यापार में श्रेष्ठ लाभ प्राप्त न होने लगे। मणिभद्र का मंत्र निम्नांकित है-

मंत्र- **ॐ नमो मणिभद्राय नमः पूर्णाय नमो महायक्ष सेनाधिपतये मोटमोटधराय स्वाहा।।**

11. व्यापार में अक्सर अनेक समस्यायें रहती हैं। अनेक बार ऐसा होता है कि आपका प्रतिद्वंद्वी आपसे आगे बढ़ने के लिये सभी प्रकार के प्रयास करता है। इन प्रयासों से कभी-कभी आपको हानि भी हो सकती है अथवा इन प्रयासों का उद्देश्य आपको हानि पहुँचाना ही होता है। व्यापार में ऐसी भावना गलत नहीं है, परन्तु जब कोई आगे बढ़ने के लिये गलत प्रयास करे तो यह अनैतिक है। कुछ मामलों में प्रतिद्वंद्वी अभिचार कर्म का प्रयोग भी अपनी सफलता के लिये कर लेते हैं, ऐसी स्थिति में इस प्रकार के प्रतिद्वंद्वियों से बचने के लिये सदैव तत्पर होना चाहिये। यदि आपको कोई इस प्रकार की हानि पहुँचा रहा है, तो उसके निवारण के लिये यह उपाय करना आपके लिये अनुकूल होगा। इस हेतु होली, महाशिवरात्रि, गुरुपुष्य, रविपुष्य जैसे मुहूर्त पर सायंकाल किसी सूनसान स्थान पर स्थित कुएं पर जाकर सरसों के तेल का मिट्टी का दीपक प्रज्वलित करें और अपने व्यवसाय की रक्षा के लिये प्रार्थना करें। इस उपाय को उक्त मुहूर्त से प्रारम्भ करते हुए नित्य 21 दिनों तक करना चाहिये।

पितृदोष के कारण होता है- विवाह में विलम्ब

भारतीय संस्कृति में सभी परिवारों के लिये अपनी संतान का उपयुक्त आयु में विवाह यदि नहीं हो, तो यह एक चिंताजनक स्थिति हो जाती है। विवाह को षोडश संस्कारों में सबसे प्रमुख माना गया है। विवाह से व्यक्ति का वंश आगे बढ़ता है और गृहस्थ आश्रम में प्रवेश के पश्चात् वह अपने जीवन की सभी कामनाओं को पूर्ण करता है। वर्तमान में विवाह में विलम्ब होना एक सामान्य बात हो गई है। अब विवाह 25 से 30 वर्ष के मध्य की आयु तक सम्पन्न होने लगे हैं अर्थात् विवाह की औसत आयु यही हो चुकी है। अनेक बार प्रयासों के पश्चात् भी जब किसी व्यक्ति का विवाह नहीं हो पाता है, तो इसके अनेक कारणों में पितृदोष भी एक कारण हो सकता है।

जिस घर में पितृदोष होता है, वहाँ पर सही आयु में विवाह नहीं हो पाना भी एक समस्या रहती है। पितृदोष से पीड़ित होने पर चाहकर भी कहीं पर रिश्ता तय नहीं हो पाता है। यदि तय भी हो जाये, तो विवाह से पूर्व ही उस रिश्ते में अनेक प्रकार की समस्यायें आने लगती हैं। ऐसी स्थितियां उत्पन्न होने लगती हैं कि वह रिश्ता टूट जाता है। कभी-कभी अनुकूल रिश्ता नहीं मिलने पर व्यक्ति समझौता करके ऐसे साथी से विवाह कर लेता है, जिससे उसे सन्तुष्टि नहीं हो पाती और जीवन में अनेक प्रकार की समस्यायें आने लगती हैं। इससे वैवाहिक जीवन दुविधा में पड़ जाता है और व्यक्ति को जीवनसाथी से मुक्ति के लिये तलाक लेना पड़ता है। पितृदोष होने पर घर में जब किसी नये सदस्य का आगमन होता है, तो उस सदस्य के मन में अनजाना भय रहने लगता है। उस घर का पितृदोष उसके मन को परिवर्तित कर देता है। उसके स्वास्थ्य तक को प्रभावित कर देता है। इसलिये वैवाहिक जीवन सामान्य नहीं रह पाता।

पितृदोष होने पर विवाह विलम्ब के अनेक कारण हो सकते हैं। अधिकतर मामलों में यह देखा जाता है कि लड़का अथवा लड़की दिखने में सुन्दर होते हैं, पढ़े-लिखे होते हैं, अच्छा परिवार होता है, समाज में उत्तम प्रतिष्ठा होती है, उसके पश्चात् भी विवाह के अनुकूल रिश्ते नहीं आते हैं। यदि आ भी जाते हैं, तो जन्मपत्रिका मिलान नहीं होना अथवा अन्य प्रकार की समस्यायें आने लगती हैं। ऐसी स्थिति में क्या किया जाये, यह सोचते हुए व्यक्ति परेशान हो जाता है। जब आयु अधिक बढ़ जाती है, तो विवाह नहीं होने से उस व्यक्ति के माता-पिता अत्यधिक चिंतित हो जाते हैं। अधिक आयु में विवाह होना अच्छा नहीं समझा जाता है। इसलिये प्रत्येक माता-पिता यह चाहते हैं, उनकी संतान का उपयुक्त आयु में विवाह हो जाये और उसे शीघ्र ही संतान सुख की प्राप्ति हो जाये। पितृदोष इस स्थिति में अत्यधिक बाधक सिद्ध होने लग जाता है।

विवाह विलम्ब में दो प्रकार की स्थितियां देखने को मिलती हैं। पहली स्थिति में कन्या अथवा पुरुष के लिये अच्छे सम्बन्ध आते हैं किन्तु उस समय वे विवाह करने को तैयार नहीं होते हैं। वे चाहते हैं कि अभी विवाह करने से अनेक समस्यायें उत्पन्न होने लगेंगी। कुछ युवक चाहते हैं कि वे अपने व्यवसाय अथवा नौकरी प्राप्ति से पहले विवाह नहीं करेंगे। कन्याओं में भी न्यूनाधिक रूप से इसी प्रकार की स्थिति दिखाई देती है। बाद में जब वे विवाह करने को तैयार होते हैं तो उनके लिये या तो अच्छे रिश्ते नहीं आते हैं, आते हैं तो किन्हीं अप्रत्यक्ष कारणों से टूट जाते हैं। भरसक प्रयास करने पर भी दिन पर दिन विवाह में विलम्ब होता चला जाता है। बाद में काफी प्रयास करने के बाद ही विवाह सम्बन्ध बन पाते हैं। इस बारे में अनेक विद्वानों का यह विचार है कि विवाह के लिये अवसर आने पर भी इसके लिये तैयार न हो पाना भी पितृदोष के कारण ही होता है, और बाद में सम्बन्ध न होने की स्थिति में पितृदोष का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। कुछ व्यक्ति इन स्थितियों को पितृदोष के साथ जोड़कर नहीं देखते हैं।

किसी घर में पितृदोष होने पर विवाह विलम्ब होना स्वाभाविक है, परन्तु विवाह विलम्ब पितृदोष के कारण ही हो रहा है, यह जानना कठिन हो जाता है। पितृदोष होने पर न केवल घर में किसी एक विवाह योग्य व्यक्ति के विवाह में समस्या आती है वरन् अन्य सदस्यों के विवाह सम्बन्धों में भी किसी न किसी प्रकार की समस्या रहती है। मान लीजिये किसी परिवार में भाई और बहिन की आयु विवाह के योग्य है, तो उन दोनों के ही विवाह में समस्या रहती है। उपयुक्त रिश्ते नहीं आ पाते हैं। यदि आते हैं, तो उनमें किसी न किसी प्रकार की कमी रहती है। ऐसे में पितृदोष निवारण ही एकमात्र उपाय रह जाता है, जिससे उनका शीघ्र विवाह हो सके।

पितृदोष के कारण जब विवाह विलम्ब होता है, तो शीघ्र विवाह के लिये किये जाने वाले उपाय विफल सिद्ध होते हैं। जन्मपत्रिका में विवाह के कारक ग्रह को बलिष्ठ करना, उसके निमित्त व्रत-उपवास करना, शीघ्र विवाहदायक विभिन्न प्रकार के उपाय, मंत्र जप इत्यादि करने से परिणाम प्राप्त नहीं हो पाते हैं। ऐसी स्थिति में समझ जाना चाहिये कि पितृदोष ही वह बाधा है, जो आपके विवाह विलम्ब का कारण बन रही है।

एक परिवार में तीन भाई-बहिन थे। दो बहिनें और एक भाई। एक बहिन का उपयुक्त आयु में विवाह हो गया था। उसके पश्चात् उनके माता-पिता, दोनों की कुछ वर्षों के अन्तराल में मृत्यु हो गई। इस कारण उन दोनों भाई-बहिनों के विवाह में कुछ विलम्ब हुआ। कुछ समय पश्चात् उन दोनों के विवाह के लिये उनके अन्य नजदीकी रिश्तेदारों ने प्रयास करने प्रारम्भ किये, परन्तु कुछ विशेष सफलता नहीं मिल पायी। उन दोनों भाई-बहिनों ने श्रेष्ठ विद्याध्ययन के पश्चात् उत्तम स्थान पर नौकरी भी प्राप्त कर ली

थी और पूर्वजों की उत्तम सम्पत्ति भी थी। इस प्रकार आर्थिक समस्या के नहीं होते हुए भी उनके जीवन में विवाह विलम्ब जैसी समस्या आ रही थी। दोनों की आयु 30 वर्ष से ऊपर हो चुकी थी। रिश्तेदार अपने विभिन्न प्रयासों के पश्चात् थक चुके थे। अब तो उन्होंने उन दोनों के विवाह की चर्चा करनी ही बंद कर दी थी। ऐसी स्थिति में उन दोनों भाई-बहिनों को यह समझ नहीं आ रहा था कि उनके विवाह में इतनी समस्यायें क्यों आ रही हैं? इस दौरान उन्होंने शीघ्र विवाह के लिये सभी प्रकार के व्रत, जप, मंत्र अनुष्ठान सभी कर लिये थे, परन्तु इसके पश्चात् भी विवाह नहीं हो पा रहा था। जो भी रिश्ता आता, उसमें किसी न किसी प्रकार की समस्या रहती। अब तो उन दोनों ने निश्चित कर लिया कि यदि अपनी जाति में विवाह नहीं हो, तो अन्य जाति के रिश्ते को भी वे स्वीकार कर लेंगे, परन्तु अभी भी कोई उपयुक्त रिश्ता नहीं आ रहा था।

कुछ समय पश्चात् उनकी मुलाकात एक ज्योतिर्विद से हुई। उन्होंने विवाह नहीं होने का कारण पितृदोष को बताया और उससे सम्बन्धित उपाय करने को कहा। इस हेतु उन्होंने कुछ उपाय भी किये, परन्तु कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। इस दौरान वे जन्मपत्रिका परामर्श के लिये मेरे सम्पर्क में आये। उन्होंने अपनी उपयुक्त समस्या मुझे बतायी। मैंने उनकी जन्मपत्रिका का अध्ययन कर यह जान लिया कि उनके विवाह नहीं होने में निश्चित ही पितृदोष ही एक कारण बना हुआ है, परन्तु उन्होंने जो पितृदोष निवारण के लिये उपाय किये थे, वे पर्याप्त नहीं थे। इस कारण ही उनको इन उपायों से कोई लाभ नहीं हुआ। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए मैंने पितृदोष निवारण के कुछ महत्त्वपूर्ण उपाय बताये, जो उन्होंने निरन्तर तीन माह तक किये। इसके प्रभाव से बहिन का रिश्ता कुछ समय ही पश्चात् निश्चित हो गया। भाई का रिश्ता तय होने में काफी समय लग गया, लेकिन विवाह होने के पश्चात् अब वे भाई एवं बहिन, दोनों प्रसन्न हैं।

इस उदाहरण से यह ज्ञात होता है कि कभी-कभी पितृदोष केवल विवाह विलम्ब का कारण भी बन जाता है। उसके नकारात्मक फल अन्य क्षेत्रों की बजाय केवल इसी रूप में प्राप्त होने लग जाते हैं, ऐसे में अपने पितरों से शीघ्र विवाह हेतु प्रार्थना के साथ ही उनके निमित्त अन्य प्रकार के उपाय करने से लाभ होता है।

शीघ्र विवाह हेतु उपाय

व्यक्ति के समस्त प्रकार के सुख एवं दु:ख उसके जीवन के साथ हमेशा जुड़े रहते हैं। जब संतान की प्राप्ति सहज रूप में हो जाती है, तो आगे चलकर कुछ दम्पतियों को उनके विवाह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कई बार ऐसे उदाहरण देखने में आते हैं, जब उनकी संतानें, चाहे वह पुत्र हो अथवा कन्या, पूर्ण रूप से विवाह योग्य होने के उपरान्त भी वैवाहिक सम्बन्ध नहीं बन पाते हैं। विवाह सम्बन्धों में अनेक प्रकार की अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न होने वाली समस्यायें दु:ख का बड़ा कारण बन जाती हैं। यहाँ पर संतानों के विवाह में किसी प्रकार की बाधायें उत्पन्न न हों, इस बारे में कुछ विशिष्ट उपायों के बारे में उल्लेख किया जा रहा है। यह उपाय कन्या एवं पुत्र के लिये अलग-अलग रूप से बताये जा रहे हैं-

कन्या के शीघ्र एवं मनोनुकूल विवाह हेतु उपाय

1. पितृदोष के कारण जब किसी कन्या का विवाह बाधित होता है, तो सब कुछ अनुकूल होते हुये भी वर की प्राप्ति नहीं हो पाती और अनेक प्रयासों के पश्चात् भी रिश्ता तय नहीं हो पाता। अधिक आयु होने के पश्चात् चिन्ता बढ़ने लगती है और ऐसी स्थिति में कैसा भी रिश्ता मिले, उससे विवाह करने के प्रयासों में भी सफलता नहीं मिलती है। ऐसी कन्यायें जिनका अधिक आयु हो जाने कारण अभी तक विवाह नहीं हुआ है और शीघ्र विवाह के जो उपाय उसने किये उनमें सफलता नहीं मिल पायी है, तो ऐसी स्थिति में यह उपाय करने से लाभ होगा। इस उपाय को स्वयं वह कन्या करे। शुक्लपक्ष के गुरुवार से स्वयं का चन्द्रबल देखकर उपाय प्रारम्भ करना है। गुरुवार के दिन प्रात:काल पीले पुष्प, केसर, गाय का घी, मिट्टी का दीपक, धूप इत्यादि सामग्री एकत्रित कर लें। प्रयोग वाले दिन पीले वस्त्र धारण करें। जल में केसर और पीले पुष्प मिला लें। प्रात:काल सूर्योदय के पश्चात् पीपल वृक्ष के नीचे जाकर सर्वप्रथम पीपल में उपस्थित समस्त पितर और देवी-देवताओं का आवाहन करें और अपनी मनोकामना पूर्ण करने की प्रार्थना करें। मिट्टी के दीपक में गाय के घी और बत्ती से दीपक प्रज्वलित करें। पीले पुष्प अर्पित करें और कुछ पुष्प जल पात्र में डाल दें। अब पीपल वृक्ष की परिक्रमा करते हुये **पितृगायत्री मंत्र** का उच्चारण करते हुये जलपात्र में से जल पीपल पर अर्पित करें। अन्त में पुन: अपनी मनोकामना का स्मरण करें और पीपल में विद्यमान सभी पितर और देवी-देवताओं को प्रणाम करके घर आ जायें। उस दिन का व्रत करें और दोपहर के समय अपने पितरों के निमित्त केसर मिश्रित खीर अथवा दूध से बने मिष्टान्न का भोग

लगायें। सायंकाल जब भोजन ग्रहण करें तो पितरों को अर्पित नैवेद्य प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हुये पितरों से अपनी मनोकामना शीघ्र पूर्ण करने की प्रार्थना करें और भोजन ग्रहण कर लें। इस उपाय को लगातार ग्यारह गुरुवार तक करना है। यदि किसी गुरुवार को किसी कारणवश आप यह उपाय नहीं कर पायें तो अपने व्रत को खण्डित समझते हुए अगले गुरुवार से पुन: उपाय प्रारम्भ कर दें।

2. जिन कन्याओं को मनोनुकूल वर प्राप्ति में समस्या आ रही है, उन्हें यह उपाय करने से उनकी मनोकामना पूर्ण होती है। अनेक बार ऐसा होता है कि विवाह के लिये रिश्ते तो बहुत आते हैं, लेकिन किसी न किसी कारण से रिश्ता बन नहीं पाता है। ऐसी स्थिति में यह उपाय करने से शीघ्र विवाह के योग बनते हैं। यह उपाय किसी शुभ मुहूर्त जैसे होली, दीपावली, महाशिवरात्रि, श्रावणी पूर्णिमा, रविपुष्य, गुरुपुष्य, अक्षयतृतीया जैसे मुहूर्त से प्रारम्भ किया जा सकता है। श्रावण माह इस प्रयोग के लिये सबसे श्रेष्ठ माना जाता है। सामान्य मुहूर्त में प्रदोष तिथि भी ग्राह्य है। जिस दिन यह उपाय करना हो उस दिन रात्रिकाल में मिट्टी की एक हांडी, लाल वस्त्र, सात कालीमिर्च, सात नमक की साबुत डलियां, कुंकुम इत्यादि सामग्री एकत्रित कर लें। रात्रिकाल में हांडी में नमक की डलियां, कालीमिर्च को रख दें और उसका मुंह लाल कपड़े से ढककर बांध दें। अब हांडी पर कुंकुम से सात बिन्दिया लगायें। उसे अपने सामने रखकर अपने विवाह की कामना करते हुये निम्नांकित मंत्र के नित्य 11 माला जप करें। मंत्र में जहां **अमुक** शब्द आया है, वहाँ पर अपने नाम का उच्चारण करें। यह प्रयोग लगातार सात अथवा जिस दिन मंगलवार, शनिवार अथवा अमावस्या आये उस दिन तक करें। अन्तिम दिन अर्थात् मंगलवार, शनिवार अथवा अमावस्या वाले दिन वह हांडी किसी चौराहे पर छोड़ आयें। यदि स्वयं जाने में सक्षम न हों, तो घर के किसी परिजन के द्वारा भी इसे छुड़वाया जा सकता है। इसे रात्रि के समय ही चौराहे पर रखें। यदि तीन माह में रिश्ता तय नहीं हो, तो इस उपाय को किसी विशेष मुहूर्त जैसे होली, दीपावली, ग्रहण, महाशिवरात्रि के दिन करें और उसी दिन हांडी को चौराहे पर जाकर छोड़ आयें। इस प्रयोग से आपकी मनोकामना शीघ्र ही पूर्ण हो जायेगी और मनोनुकूल वर की प्राप्ति होगी। किसी व्यक्ति विशेष को पति के रूप में प्राप्त करने के लिये भी यह उपाय किया जा सकता है।

मंत्र– **ॐ गौरी आवे। शिव जो ब्यावे। अमुक को विवाह तुरन्त सिद्ध करे। जो देर होए, तो शिव को त्रिशूल पड़े, गुरु गोरखनाथ की दुहाई फिरै।**

3. मनोनुकूल जीवनसाथी की प्राप्ति और विवाह के पश्चात् वैवाहिक जीवन की मधुरता के लिये यह प्रयोग अनुकूल होता है। **गौरीशंकर रुद्राक्ष** जो भगवान शिव और माँ पार्वती युगल रूप माना जाता है, उसे सिद्ध करके धारण करने विवाह से सम्बन्धित अनुकूल फल मिलते हैं। अविवाहित कन्याओं को योग्य वर और विवाहित स्त्रियों के

लिये वैवाहिक सुख में अनुकूलता रहती है। गौरीशंकर रुद्राक्ष को चाँदी के लॉकेट में बनवाकर लाल अथवा पीले धागे में सोमवार, प्रदोष, पूर्णिमा, महाशिवरात्रि जैसे श्रेष्ठ मुहूर्त पर धारण करना चाहिये। धारण करने से पहले रुद्राक्ष की पूजा एवं शुद्धिकरण भी आवश्यक होता है। इस हेतु गौरीशंकर रुद्राक्ष को गंगाजल और पंचामृत से शुद्ध करने के पश्चात् उसमें माँ पार्वती और भगवान शिव का अर्धनारीश्वर रूप का आवाहन करें और शिव और शिवा मानते हुये रुद्राक्ष का पूजन करें। साथ ही माँ पार्वती और भगवान शिव के मंत्र का रुद्राक्ष की माला से जप करें। तत्पश्चात् अपने विवाह की कामना करते हुये गौरीशंकर रुद्राक्ष को गले में धारण कर लें। कन्या के समान पुरुष भी शीघ्र विवाह की कामना से गौरीशंकर रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

अर्धनारीश्वर रूप का ध्यान-

नीलप्रवालरुचिरं विलसत्त्रिनेत्रं पाशारुणोत्पलकपालत्रिशूलहस्तम्।
अर्धाम्बिकेशमनिशं प्रविभक्तभूषं बालेन्दुबद्धमुकुट प्रणमामी रूपम्।।

भगवान शिव का मंत्र- **ॐ नमः शिवाय।**

माँ पार्वती का मंत्र- **ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।**

4. अनेक बार ऐसी स्थिति होती है कि आप जिस व्यक्ति से विवाह करना चाहते हैं, उसमें अनेक प्रकार की समस्यायें आती हैं। कभी आपके घर वाले इस रिश्ते को स्वीकार नहीं करते, तो कभी लड़के के घर वाले रिश्ते को मान्यता नहीं देते हैं, ऐसी स्थिति में यह मुश्किल हो जाता है कि विवाह कैसे हो? समाज की मान्यताओं के कारण अधिकतर युगल स्वेच्छा से प्रेम विवाह नहीं करना चाहते। वे चाहते हैं कि हमारे परिजन सहमत हों, तो ही विवाह करें। ऐसी स्थिति जिन कन्याओं के सामने आये, उनके लिये यह उपाय उत्तम फलकारी है। यह उपाय नवरात्र, मंगलवार से युक्त अष्टमी तिथि, गुरुपुष्य जैसे श्रेष्ठ मुहूर्त से प्रारम्भ करना चाहिये। यह प्रयोग दशमहाविद्याओं में से एक **मातंगी देवी** से सम्बन्धित है, जो मतंग ऋषि की कन्या थी। शुभमुहूर्त में चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर माँ मातंगी का विग्रह अथवा चित्र स्थापित करें और रोली, मौली, चावल, धूप, दीप और नैवेद्य से पूजन करने के पश्चात् निम्नांकित मंत्र की रुद्राक्ष की माला से नित्य 11 माला से जप करें। इस प्रयोग से शीघ्र ही आपकी मनोकामना पूर्ण होगी। इस प्रयोग में एक तथ्य का ध्यान रखें कि जो भी नैवेद्य और अन्य पदार्थ माँ मातंगी के निमित्त अर्पित करें, उसे स्वयं ग्रहण न करके पूजन के पश्चात् किसी सुनसान स्थान पर छोड़ आयें और पीछे मुड़कर नहीं देखें।

मंत्र- **ॐ मातंग्यै च विद्महे उच्छिष्टचाण्डाल्यै च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।**

5. शीघ्र विवाह और अनुकूल वर प्राप्ति की कामना रखने वाली कन्याओं को गुरुवार का व्रत अवश्य करना चाहिये। यदि जन्मपत्रिका में गुरु प्रतिकूल स्थिति में हो, तो

गुरुवार के दिन गुरु की कारक वस्तुओं का दान करना चाहिये। इस हेतु पीले वस्त्र में चने की दाल, गुरु का यंत्र, गुड़, मंत्र और स्तोत्र की पुस्तक, कांसा इत्यादि का दान करें। साथ ही गुरु की अनुकूलता के लिये केले की जड़ गुरुवार के दिन दोपहर के समय में पीले वस्त्र में बायीं भुजा में धारण करनी चाहिये। यदि आपकी जन्मपत्रिका में गुरु अनुकूल फलकारक हो, तो पुखराज रत्न स्वर्ण की अँगूठी में बायें हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण करने से लाभ होता है। गुरु का मंत्र **ॐ बृं बृहस्पते नमः** का नित्य जप करें। गुरु की अनुकूलता होने पर आपको शीघ्र ही अनुकूल वर की प्राप्ति हो जायेगी।

पुरुष के शीघ्र विवाह एवं सुखी दाम्पत्य जीवन हेतु उपाय

1. जब किसी लड़के की जन्मपत्रिका में पितृदोष विद्यमान होता है, तो इससे उसके जीवन का कोई भी क्षेत्र प्रभावित हो सकता है। विवाह विलम्ब भी पितृदोष के कारण होना सम्भव है। प्रत्येक माता-पिता की यह कामना रहती है कि उनकी सन्तान का सही आयु में विवाह हो जाये जिससे वे अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त हो सकें। ऐसे में अधिक आयु तक भी विवाह नहीं होने पर चिन्ता बढ़ती जाती है। जिन लड़कों का विवाह किसी कारणवश अधिक आयु होने पर भी सम्पन्न नहीं हुआ है, उनके लिये यह उपाय करना श्रेष्ठ होगा। इस उपाय से शीघ्र ही मनचाही, योग्य, कुशल एवं संस्कारित कन्या पत्नी रूप में प्राप्त होगी। यह प्रयोग नवरात्र, रविपुष्य, गुरुपुष्य इत्यादि शुभ मुहूर्त में प्रारम्भ करना है। आप जब भी उपाय प्रारम्भ करें, तब उत्तराभिमुख होकर निम्नांकित मंत्र का नित्य 10 माला जप करें। नौ दिन तक जप करने के पश्चात् दसवें दिन से प्रातःकाल उठते ही मुख प्रक्षालन के पश्चात् सात बार अंजली में जल भरकर मंत्र का मानसिक जप करते हुये जल को ग्रहण कर लें और उत्तराभिमुख होकर नित्य एक माला का जप करते रहें। इस प्रयोग के प्रभाव से शीघ्र ही आपकी मनोकामना पूर्ण होगी और आपका विवाह ऐसी कन्या के साथ सम्पन्न होगा, जो सभी गुणों में सर्वसम्पन्न होगी।

मंत्र- **ॐ विश्वावसु नाम गंधर्व कन्या नामाधिपति।**
सरूपा सलक्षान्त देहिमे नमस्तस्मै विश्वावसवे स्वाहा।।

2. यह उपाय उन सभी पुरुषों को करना चाहिये, जिन्हें मनोनुकूल पत्नी की प्राप्ति में समस्या हो रही हो। आप जिस कन्या से विवाह करना चाहते हैं अथवा जैसी पत्नी की कल्पना आपने की है, वैसी कन्या से आपका विवाह नहीं हो पा रहा है, तो ऐसी स्थिति में यह उपाय आपके लिये अत्यधिक शुभफलकारी सिद्ध होगा। यह उपाय नवरात्र में करना उत्तम है, क्योंकि इस उपाय का सम्बन्ध शक्ति साधना से ही है। नवरात्र के अतिरिक्त शुक्ल पक्ष के शुक्रवार से भी यह उपाय प्रारम्भ किया जा सकता है। इस हेतु निम्नांकित मंत्र का रुद्राक्ष अथवा लाल चंदन की माला से जप करना उत्तम है। शुभ मुहूर्त

में पूर्वाभिमुख होकर चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर माँ दुर्गा की प्रतिमा अथवा चित्र स्थापित करें और निम्नांकित मंत्र की 11 माला का नित्य जप करें। यह प्रयोग नवरात्र में नौ दिन तक और अन्य मुहूर्त से प्रारम्भ करने पर सात दिन तक करने के पश्चात् कुल जप के दशांश का तर्पण, मार्जन, हवन करें और ब्राह्मण भोजन करवायें। इस अनुष्ठान के पश्चात् भी नित्य एक माला का जप तब तक करते रहें जब तक आपको मनोनुकूल जीवनसाथी की प्राप्ति नहीं हो जाये। इस मंत्र से सम्पुटित करके दुर्गासप्तशति का पाठ करवाने से मनोकामना शीघ्र पूर्ण होती है। आपके द्वारा किये गये प्रयोग से यदि लाभ नहीं हो, तो ऐसी स्थिति में इस मंत्र के सम्पुटन से दुर्गासप्तशति का एक पाठ करवायें। इस पाठ से शीघ्र ही आपकी मनोकामना पूर्ण हो जायेगी।

मंत्र- **पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।**
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्।।

4. पुरुष के लिये नवग्रहों में शुक्र स्त्री का कारक माना जाता है। शुक्र का जन्मपत्रिका में नकारात्मक होना अथवा अशुभ होना वैवाहिक सुख को बाधित करता है। इससे विवाह में विलम्ब अथवा वैवाहिक जीवन में समस्यायें उत्पन्न होने लगती हैं। जिन लड़कों की जन्मपत्रिका में शुक्र की नकारात्मक स्थिति हो उन्हें शुक्र की अनुकूलता के लिये उपाय करने चाहिये। इसके लिये हीरा अथवा ओपल रत्न धारण करना, शुक्र की कारक वस्तुओं का दान करना, माँ लक्ष्मी की पूजा-उपासना करना, छहमुखी रुद्राक्ष धारण करना श्रेष्ठ माना जाता है। शुक्र यदि शुभ भावों का स्वामी होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण भाव में हो, तो हीरा अथवा ओपल रत्न मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिये। साथ ही शुक्रवार का व्रत करना चाहिये। एक समय भोजन करें और माँ लक्ष्मी को खीर अथवा बर्फी का भोग लगायें। शुक्र अशुभ भावों का स्वामी होने पर उसकी कारक वस्तुओं श्वेत वस्त्र, चाँदी, चावल, सुगंधित पदार्थ, शुक्र यंत्र इत्यादि का दान करना चाहिये तथा छहमुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिये। शुक्र से सम्बन्धित सभी उपाय शुक्रवार के दिन करने चाहिये। इन उपायों से शुक्र अनुकूल होकर शुभफल प्रदान करता है और शीघ्र विवाह एवं वैवाहिक सुख में अनुकूलता देता है।

5. यदि पितृदोष अथवा किसी अदृश्य बाधा के कारण आपका विवाह विलम्ब हो रहा हो, तो यह उपाय करना आपके लिये अनुकूल फलकारक रहेगा। जब अच्छे रिश्ते बिना किसी विशेष कारण के हाथ से निकल जायें या बिलकुल रिश्ते की बात नहीं चले तो समझ जाना चाहिये कि कोई न कोई समस्या अवश्य है। पितृदोष से इसका सम्बन्ध होने पर इस दोष का निवारण एवं पितरों की प्रसन्नता के लिये उनके निमित्त श्राद्ध कर्म करना और अन्य पितृकर्म करने से अनुकूलता मिल जाती है, लेकिन विशेष परिस्थितियों में साधारण उपायों से फल नहीं मिलता। ऐसी स्थिति में विशेष उपाय करना चाहिये।

यह उपाय अमावस्या के दिन करने से लाभ मिलता है। इस हेतु पितृयंत्र को चाँदी में बनवाकर अमावस्या के दिन उस यंत्र को छहमुखी रुद्राक्ष के साथ स्थापित करके पितरों की प्रसन्नता के लिये **पितृस्तोत्र** का पाठ करना चाहिये। पितृयंत्र की स्थापना इसलिये आवश्यक है, क्योंकि इसमें पितरों का वास माना जाता है। यह प्रयोग अमावस्या से प्रारम्भ करते हुये नित्य 21 दिनों तक करना है। अनुष्ठान के पश्चात् छहमुखी रुद्राक्ष को धारण कर लें और पितृयंत्र को अपने पितरों के स्थान में रखकर उसका नित्य पूजन करें। इस उपाय से शीघ्र ही विवाह नहीं होने सम्बन्धी समस्या का समाधान हो जायेगा और मनोनुकूल कन्या के साथ आपका विवाह सम्पन्न होने के अवसर निर्मित होने लगेंगे।

6. शीघ्र विवाह एवं उत्तम वैवाहिक सुख के लिये यह उपाय श्रेष्ठ फलकारी है। नवरात्र, दीपावली अथवा अन्य शुभ मुहूर्त में यह उपाय करना है। इस हेतु उक्त मुहूर्त में माँ लक्ष्मी अथवा माँ दुर्गा के मंदिर में जाकर उन्हें लाल गुलाब की माला चढ़वायें और वहीं बैठकर दुर्गासप्तशति के चतुर्थ अध्याय का पाठ करें। पाठ करने से पहले अपनी विवाह सम्बन्धी कामना को माँ के समक्ष प्रकट करें। यह उपाय एक बार प्रारम्भ करने के पश्चात् सात शुक्रवार को प्रातःकाल करें। यदि प्रथम उपाय वाले दिन कोई और दिवस हो, तो अगले शुक्रवार से छह बार यह उपाय करना चाहिये। इस उपाय से शीघ्र ही आपके रिश्ते की बात चलेगी और अनुकूल स्थान पर रिश्ता तय हो जायेगा। लाल गुलाब के पुष्प के अतिरिक्त आप कमलगट्टे की माला भी माँ लक्ष्मी अथवा माँ दुर्गा को अर्पित कर सकते हैं।

7. पुरुष को शीघ्र विवाह की कामना से शुक्रवार, पंचमी तिथि और रोहिणी नक्षत्र का व्रत करने से लाभ होता है। ये तीनों व्रत माँ लक्ष्मी और शुक्र की अनुकूलता के लिये किये जाते हैं। शुक्ल पक्ष के शुक्रवार और पंचमी तिथि के दिन से व्रत प्रारम्भ किया जा सकता है। इन व्रतों में एक समय भोजन करना चाहिये। प्रातःकाल शीघ्र विवाह की कामना करते हुये माँ लक्ष्मी के व्रत का संकल्प लें। सायंकाल दूध से बना कोई मिष्टान्न माँ लक्ष्मी को अर्पित करने के पश्चात् स्वयं ग्रहण करें। इस व्रत के प्रभाव से शीघ्र ही आपका विवाह सम्पन्न होने के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा पत्नी के रूप में रूपवती और भाग्यवान कन्या की प्राप्ति होगी।

पितृदोष के कारण आती हैं- नौकरी प्राप्ति में बाधायें

किसी व्यक्ति के जीवन में यदि उपयुक्त कार्यक्षेत्र नहीं हो, तो उसके लिये जीवन जीना दूभर हो जाता है। संचित धन-सम्पत्ति में से व्यक्ति अधिक दिनों तक अपना खर्चा नहीं चला सकता। कार्यक्षेत्र से न केवल व्यक्ति की भौतिक उन्नति होती है, वरन् व्यस्त रहने के साथ ही वह विभिन्न प्रकार के अनुभव भी प्राप्त करता है। वर्तमान में कार्यक्षेत्र के रूप में नौकरी प्राप्ति के लिये अधिकतर लोग तत्पर रहते हैं। उत्तम विद्याध्ययन के पश्चात् व्यक्ति की यह लालसा रहती है कि उसे ऐसी नौकरी प्राप्त हो, जिसके माध्यम से वह श्रेष्ठ धनार्जन प्राप्त कर सके। इस हेतु वह कड़े परिश्रम के साथ विद्याध्ययन करता है। ऐसी स्थिति में जब उसे मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति नहीं हो, तो वह मायूस हो जाता है। ऐसे बहुत सारे व्यक्ति देखे जा सकते हैं, जो काबिल और बुद्धिमान होते हुए भी मनोनुकूल नौकरी प्राप्त नहीं होने के कारण परेशान रहते हैं। उनकी यह कामना रहती है, जब तक उपयुक्त कार्यक्षेत्र नहीं मिल जाता है, तब तक वे विवाह भी नहीं करेंगे। इस कारण माता-पिता के लिये भी अपनी संतान के कार्यक्षेत्र का प्रभावित होना चिंता का विषय बन जाता है।

वर्तमान में बाल्यावस्था से ही माता-पिता अपनी संतान की शिक्षा के प्रति चिंतित रहते हैं। उनकी यह कामना रहती है कि उनकी संतान श्रेष्ठ शिक्षार्जन करे और उसके बाद वह ऐसी नौकरी करे जिससे उसे अपने जीवन में आर्थिक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़े। अनुकूल शिक्षार्जन करने के पश्चात् भी जब किसी व्यक्ति को मनोनुकूल नौकरी प्राप्त नहीं होती है, तो यह चिंता का विषय बन जाता है। अनेक बार यह समस्या पितृदोष के कारण भी हो सकती है। जब कोई पितर अपने वंशजों से असन्तुष्ट रहता है, तो विभिन्न प्रकार से अपने परिजनों को परेशान करता है। नौकरी प्राप्ति में बाधा भी इसी प्रकार की एक समस्या है।

जब किसी व्यक्ति के जीवन में पितृदोष के कारण नौकरी प्राप्ति में बाधायें आती हैं, तो उसे किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त नहीं हो पाती है। यदि वह प्रतियोगिता परीक्षा उत्तीर्ण करके नौकरी प्राप्त करने का प्रयास करता है, तो अन्तिम क्षणों में जाकर उसका सारा परिश्रम विफल हो जाता है। वह चाहे कितनी भी मेहनत क्यों न करे, परीक्षा में उसका प्रदर्शन प्रभावित हो जाता है। यदि प्रतियोगिता परीक्षा उत्तीर्ण भी कर ले, तो साक्षात्कार में समस्या उत्पन्न हो जाती है। जीवन में अनेक विफलतायें मिलने के कारण व्यक्ति हताश हो जाता है और उसे यह लगने लग जाता है कि उसका दुर्भाग्य ही है कि इतना परिश्रम एवं प्रयास करने के उपरान्त भी सफलता प्राप्त नहीं हो पा रही है। ऐसे में

वह विभिन्न प्रकार के उपाय करके सफलता प्राप्ति के लिये प्रयास करता है।

पितृदोष से पीड़ित व्यक्ति को यदि नौकरी प्राप्त हो भी जाये, तो वह उससे सन्तुष्ट नहीं रहता। नौकरी में समय पर धन की प्राप्ति नहीं हो पाती है। वह नौकरी करते हुए अत्यधिक मानसिक समस्याओं से गुजरने लगता है। ऐसे में उसे वह नौकरी छोड़नी पड़ती है। घर की परिस्थितियां भी अनेक बार नौकरी में बाधक बन जाती हैं। जब कोई व्यक्ति पितृदोष से पीड़ित होता है, तो उसकी नौकरी को घरेलू समस्यायें प्रभावित करने लगती हैं। उसे मजबूरी में नौकरी छोड़नी पड़ती है। पितृदोष के कारण कार्यक्षेत्र में एक प्रकार की नहीं, अनेक प्रकार की समस्यायें होती रहती हैं। अनेक ऐसे अभ्यर्थी देखे जा सकते हैं, जिनमें ज्ञान की कोई कमी नहीं होती, उनके परामर्श से अनेक अभ्यर्थी कार्यक्षेत्र प्राप्ति में सफल हो चुके होते हैं, परन्तु स्वयं उसे अपने जीवन में अत्यधिक परिश्रम के पश्चात् भी मनोनुकूल सफलता नहीं मिल पाती है। इसका कारण पितृदोष हो सकता है।

पितृदोष से पीड़ित वे युवा, जिन्हें कार्यक्षेत्र के लिये संघर्षरत देखा जाता है, ऐसे कुछ उदाहरण मैंने भी देखे हैं। उन युवाओं को अपने पूर्वजों के श्राप के कारण जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अनेक बार ऐसा देखा जाता है कि किसी परिवार में कोई भी व्यक्ति उत्तम कार्यक्षेत्र प्राप्त नहीं कर पाता है। उन सभी में से जब कोई एक अपने जीवन में कठोर परिश्रम के पश्चात् उत्तम नौकरी प्राप्ति के लिये प्रयास करता है, तो उसे भी सफलता प्राप्त नहीं हो पाती। एक ऐसा ही युवक मेरे पास जन्मपत्रिका परामर्श के लिये आया था। उसने अपने जीवन में बाल्यावस्था से ही श्रेष्ठ शिक्षार्जन के साथ अनेक उपलब्धियां प्राप्त की थी। उसके परिवार में चाचा, ताऊ, पिता, उनके बच्चे और उसके भाई-बहिनों में से कोई भी एक ऐसा व्यक्ति नहीं था, जिसे मनोनुकूल कार्यक्षेत्र प्राप्त हुआ हो अर्थात् किसी का अच्छा कार्यक्षेत्र हो। इस कारण उन लोगों की आर्थिक स्थिति भी अत्यधिक दयनीय हो गई थी। उनके परिवार में विवाह सम्बन्ध भी नहीं हो पा रहे थे और भी अनेक समस्यायें चल रही थीं। ऐसे में उस युवा को सात वर्षों तक लगातार प्रतियोगिता परीक्षायें देते हुए समय बीत गया, परन्तु अभी तक कोई भी मनोनुकूल नौकरी प्राप्त नहीं हो पायी। यहाँ तक कि निजी क्षेत्र में भी कोई अच्छी नौकरी प्राप्त नहीं हो पायी थी। यदि मिली भी तो उसे पारिवारिक समस्याओं के कारण बीच में ही छोड़ना पड़ा था। ऐसे में वह युवक यह समझ नहीं पा रहा था कि उसे अपने जीवन में इतनी अधिक समस्याओं का सामना क्यों करना पड़ रहा था? मैंने उसकी जन्मपत्रिका का अध्ययन किया। उसकी जन्मपत्रिका में पितृदोष विद्यमान था। एक ऐसा पितृदोष, जो उनके सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित कर रहा था। उस युवक की आयु 30 वर्ष हो चुकी थी। वह कुछ महत्त्वपूर्ण नौकरी प्राप्ति के लिये अधिक आयु होने

के कारण पात्र नहीं था। ऐसे में उसके पास बहुत कम अवसर बचे थे, जिससे कि वह मनोनुकूल नौकरी प्राप्त कर सके। मैंने उस व्यक्ति को उसके पितृदोष के बारे में बताया और साथ ही यह राय भी दी कि इसके निवारण के उपाय उसको अकेले नहीं करने हैं, वरन् इसके लिये अपने परिवार के सभी सदस्यों को शामिल करना होगा। सभी परिजन मिलकर यदि पितृदोष निवारण के उपाय करें, तो शीघ्र लाभ की प्राप्ति होगी। मैंने उसे पितृदोष की समस्या के निवारण के लिये कुछ उपाय बताये, जो उसने अपने परिजनों के साथ मिलकर पूर्ण श्रद्धा के साथ सम्पन्न किये। यह आश्चर्य की बात थी कि अगले छह माह में ही उसे शिक्षक की नौकरी प्राप्त हो गयी। इससे वह बहुत प्रसन्न था और उसने और श्रेष्ठ नौकरी प्राप्ति के लिये प्रयास किये तथा शीघ्र ही उसका चयन प्रशासनिक अधिकारी के रूप में हुआ।

ऐसे अनेक अभ्यर्थी एवं व्यक्ति देखे जा सकते हैं, जिनके जीवन में पितृदोष के कारण कार्यक्षेत्र में समस्यायें रहती हैं। पितृदोष के कारण व्यक्ति चाहे कोई भी कार्य कर ले, उसे सफलता प्राप्त नहीं हो पाती। चाहे कृषि का कार्य हो अथवा पशुपालन का, यदि पितृदोष होता है, तो ऐसे कार्यों में भी समस्यायें आने लग जाती हैं। खेती का खराब हो जाना, पशुओं का दूध नहीं देना, लगातार बीमार रहना इत्यादि अनेक समस्याओं से इस प्रकार का कार्यक्षेत्र प्रभावित रह सकता है। ऐसे में जब तक पितृदोष का निवारण नहीं कर लिया जाये, तब तक कार्यक्षेत्र में कोई भी अनुकूलता नहीं मिलती।

विशेष– वर्तमान में अधिकांश युवाओं का आकर्षण नौकरियों के प्रति बढ़ा है। इसके कारण भी हैं। सभी के लिये अपना व्यवसाय करना सम्भव नहीं है। पैतृक व्यवसाय को अधिकांश युवा अपनाना नहीं चाहते हैं। इसके अलावा व्यवसाय में अत्यधिक धन की आवश्यकता रहती है और किसी भी कारण से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से हानि की आशंका हमेशा बनी रहती है। नौकरी में ऐसी समस्यायें देखने में नहीं आती हैं। प्रत्येक माह एक निश्चित राशि वेतन के रूप में मिल जाती है और इसी में व्यक्ति अपने परिवार का बजट बना लेता है। नौकरियों के प्रति बढ़ते आकर्षण के कारण ही आज नौकरियां कम तथा अभ्यर्थियों की संख्या अधिक होने लगी है। इसके कारण नौकरी प्राप्ति में समस्यायें अधिक रहने लगी हैं। इसके साथ जब पितृदोष भी हो तो नौकरी प्राप्ति सम्बन्धित समस्यायें बहुत अधिक हो जाती हैं। ऐसे में इनसे मुक्ति के लिये कुछ विशिष्ट उपाय करने पर ही लाभ की प्राप्ति सम्भव हो सकती है।

नौकरी प्राप्ति के उपाय

जिन युवाओं के पास अच्छी नौकरी प्राप्ति की सभी प्रकार की योग्यता होने के पश्चात् भी नौकरी नहीं मिल पा रही, उनके लिये यहाँ कुछ विशेष उपायों के बारे में बताया जा रहा है, जिनका प्रयोग करने से नौकरी प्राप्ति सम्बन्धी समस्या का शीघ्र ही निवारण सम्भव हो सकेगा-

1. पितृदोष के कारण जब नौकरी प्राप्ति में समस्या आती है, तो विद्या उत्तम होते हुये भी नौकरी प्राप्त नहीं हो पाती है। नौकरी प्राप्त हो जाये तो उससे सन्तुष्टि नहीं होती। यदि ऐसी स्थिति से आपको गुजरना पड़ रहा है, तो यह उपाय करना आपके लिये अनुकूल सिद्ध होगा। यह उपाय आपको अमावस्या के दिन करना है। यदि कोई अमावस्या गुरुवार के दिन हो, तो अत्यधिक उत्तम मुहूर्त है। अमावस्या के दिन दोपहर के समय पीपल के वृक्ष पर जाकर अपने पितरों का स्मरण करते हुये उन्हें हाथ में पितर तीर्थ से जल अर्पण करें और उत्तम कार्यक्षेत्र प्रदान करने की प्रार्थना करें। तत्पश्चात् घी का दीपक प्रज्वलित कर पीपल के वृक्ष पर अपने पितरों का स्मरण करते हुये सूत की डोरी लपेटें और पीपल की तीन बार परिक्रमा करें। इस उपाय के साथ ही आपको अपने पितरों के निमित्त अन्नदान भी करना चाहिये। यह उपाय लगातार तीन अमावस्या पर करने से उत्तम लाभ प्राप्त होगा। यदि मनोनुकूल कार्यक्षेत्र की प्राप्ति इस दौरान न हो पाये अथवा प्राप्त कार्यक्षेत्र से आप संतुष्ट नहीं हों, तो ऐसी स्थिति में इस उपाय की अवधि बढ़ायी जा सकती है। इस उपाय के साथ ही नित्य पीपल वृक्ष पर जल अर्पित करते रहना चाहिये। यह कार्य प्रात:काल अथवा सायंकाल किया जा सकता है। इस उपाय के साथ इस तथ्य अवश्य ध्यान रखें कि आपकी जन्मपत्रिका में कार्यक्षेत्र के कारक ग्रह भी बली हों, इसलिये उनकी अनुकूलता के लिये भी उपाय करना आवश्यक होता है।

2. वर्तमान में उत्तम कार्यक्षेत्र नहीं मिलना एक गम्भीर समस्या है। जब दुर्भाग्य और अदृश्य बाधायें इस क्षेत्र को प्रभावित करती हैं तो सामान्य कार्यक्षेत्र मिलना भी असम्भव हो जाता है। ऐसी स्थिति में यह उपाय करने से लाभ होता है। यह उपाय आप गुरुपुष्य, रविपुष्य, धनत्रयोदशी, होली, दीपावली जैसे मुहूर्त में करें तो श्रेष्ठ लाभ होता है। उक्त में से किसी भी शुभ मुहूर्त में रात्रि के समय एक बेदाग बिजोरा नींबू और एक चाकू लेकर चौराहे पर जायें। अपने मन में कार्यक्षेत्र से सम्बन्धित समस्याओं के बारे में सोचते हुये उस नींबू के चार बराबर टुकड़े करके चारों दिशाओं में फेंक दें। यह प्रयोग करने के पश्चात् घर लौटते समय पीछे मुड़कर नहीं देखें। घर आकर हाथ पैर और मुँह धोने के

पश्चात् घर में प्रवेश करें। इस प्रयोग के पश्चात् आपको प्रत्येक माह में आने वाली कृष्ण और शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि का व्रत करना है। यह व्रत तब तक करना है, जब तक आपको मनोनुकूल कार्यक्षेत्र नहीं प्राप्त हो जाये। पंचमी तिथि के व्रत में दिन में एक समय भोजन करें और उससे पूर्व देवी के किसी भी मंदिर में जाकर उनसे आशीर्वाद लें और बर्फी का नैवेद्य अर्पित करें।

3. वर्तमान में आय के दृष्टिकोण से अनेक क्षेत्र हैं। किसी भी व्यक्ति के लिये सबसे महत्त्वपूर्ण निर्णय अपने कॅरियर के क्षेत्र का चयन करना होता है जो उसकी रुचि का हो। यह सभी के लिये सम्भव नहीं हो पाता है। ऐसी स्थिति में हम अपनी नौकरी से उत्तम आय होने पर भी संतुष्ट नहीं हो पाते हैं। अपनी रुचि का कार्यक्षेत्र प्राप्त करने के लिये यह उपाय श्रेष्ठ है। इसका प्रयोग उन्हें करना चाहिये जो अपना कार्यक्षेत्र प्राप्ति का प्रयास प्रारम्भ करने जा रहे हैं। यह उपाय नवरात्र में करना है। नवरात्र के अतिरिक्त शुक्ल पक्ष के शुक्रवार से भी प्रारम्भ किया जा सकता है। नवरात्र में नौ दिन और अन्य मुहूर्त में सात दिन इस उपाय को प्रतिदिन करें। इस हेतु आपको गुड़हल अथवा लाल गुलाब के 108 पुष्पों की माला बनवाकर माँ दुर्गा को अर्पित करनी है। इसके लिये आप ऐसे मन्दिर जायें, जहाँ आपकी माला को माँ दुर्गा के विग्रह पर चढ़ाया जा सके। यह उपाय करते समय अपने मन में माँ दुर्गा से यह प्रार्थना करें कि आपको अपनी प्रकृति के अनुसार श्रेष्ठ नौकरी प्राप्त हो। इस उपाय से शीघ्र ही आपकी मनोकामना पूर्ण होगी। यह उपाय इस स्थिति में भी किया जा सकता है, जब आप अपनी नौकरी से संतुष्ट नहीं हों और अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन चाहते हों।

4. कार्यक्षेत्र प्राप्ति के रूप में वर्तमान में सरकारी नौकरी का आकर्षण अधिकतर युवाओं में होता है। इसके लिये वे विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षायें देते हैं और उत्तीर्ण भी कर लेते हैं, लेकिन उन्हें साक्षात्कार में असफलता के कारण नौकरी की प्राप्ति नहीं हो पाती है। ऐसे अभ्यर्थियों का मस्तिष्क और स्मृति क्षमता श्रेष्ठ होती है, लेकिन आत्मविश्वास कमजोर होता है। इस कारण वे अपना ज्ञान और क्षमता दूसरे के समक्ष प्रदर्शित नहीं कर पाते हैं। ऐसे लोगों के लिये यह उपाय करना उत्तम होगा। इस उपाय के अन्तर्गत बुधवार का व्रत करना और भगवान गणेश की प्रसन्नता के लिये **गणेशसंकटनाशक स्तोत्र** का पाठ करना उत्तम है। बुधवार का व्रत शुक्ल पक्ष के द्वितीय बुधवार से प्रारम्भ करना है। उक्त स्तोत्र के साथ ही **ॐ गं गणपतये नमः** का मंत्र मन ही मन जप करते रहें। व्रत वाले दिन एक दिन भोजन करें और भगवान गणेश के मन्दिर में जाकर उनका आशीर्वाद लें। गणेशजी को लड्डू का नैवेद्य अर्पित करें साथ ही दूब भी चढ़ायें। सात बुधवार के व्रत करने के पश्चात् आप अनुकूलता अनुभव करने लगेंगे और इस दौरान होने वाले नौकरी हेतु साक्षात्कार में सफलता के मार्ग प्रशस्त होंगे।

5. कार्यक्षेत्र चाहे सरकारी क्षेत्र का हो या निजी क्षेत्र का, श्रेष्ठ कार्यक्षेत्र की प्राप्ति के

लिये अभ्यर्थियों को अनेक प्रतियोगिताओं से गुजरना ही पड़ता है। जो स्वयं को इन प्रतियोगिता में आगे रख पाता है, वही उत्तम कार्यक्षेत्र प्राप्त कर पाता है। प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त करने के लिये आपको हजारों और अनेक बार तो लाखों अभ्यर्थियों को पीछे करते हुये आगे निकलना होता है। ऐसे अभ्यर्थी जिन्हें अत्यधिक परिश्रम करने के पश्चात् भी प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता नहीं मिल पा रही है, उन्हें यह उपाय करने से लाभ प्राप्त होगा। इस उपाय के लिये शुक्लपक्ष का रविवार अथवा रविपुष्य वाला दिन उत्तम है। इस दिन अभिजित् मुहूर्त में भगवान सूर्य के विग्रह अथवा चित्र के समक्ष एकमुखी अथवा बारहमुख रुद्राक्ष को रखें और पूजन करें। पूजन के पश्चात् **आदित्यहृदय स्तोत्र** का एक पाठ करें। इस उपाय के साथ ही रविवार का व्रत भी करें। व्रत में एक समय बिना नमक वाला भोजन ग्रहण करें। यह उपाय प्रारम्भ करने के पश्चात् लगातार 21 रविवार तक करना है। **आदित्यहृदय स्तोत्र** का पाठ नित्य करें और प्रात:काल भगवान सूर्य को अर्घ्य भी दें। इस उपाय के दौरान ही आपको मनोनुकूल सफलता प्राप्त होने के अवसर निर्मित होने लगेंगे। एकमुखी अथवा बारहमुखी रुद्राक्ष जो आपने भगवान सूर्य के साथ रखा है, उसे प्रथम दिन की पूजा के साथ ही धारण कर लें। इस प्रयोग से आपके आत्मविश्वास में वृद्धि के साथ भाग्य का भी पूर्ण सहयोग मिलेगा और प्रतियोगिता परीक्षा में मनोनुकूल सफलता प्राप्त होगी। इस सफलता में बाधक सभी प्रकार की समस्याओं का निवारण होगा।

6. जब उत्तम कॅरियर प्राप्ति में आपके आत्मविश्वास के साथ आपकी प्रतिभा में कमी भी कारण हो, तो उत्तम नौकरी की प्राप्ति कठिन हो जाती है। बाल्यावस्था अथवा किशोरावस्था में जब हम शिक्षार्जन पर अधिक परिश्रम नहीं करते तो यह कमी हमारे श्रेष्ठ कार्यक्षेत्र प्राप्ति में बाधक होती है। ऐसी स्थिति में हमें पहले अपनी वह कमी दूर करनी होती है, जो हम पहले कर चुके हैं। विषयों का समझ नहीं आना, कमजोर स्मृति और लेखन में कमी ऐसी समस्यायें हैं, जो उत्तम कॅरियर प्राप्ति में बाधक होती हैं। ऐसी समस्या होने पर यह उपाय करना अत्यधिक अनुकूल रहता है। इस उपाय से स्मृति शक्ति, लेखन क्षमता इत्यादि गुण उत्पन्न होने से नौकरी प्राप्त करना सरल हो जाता है। इस हेतु शुभ मुहूर्त में लहसुनिया रत्न निर्मित गणपती लॉकेट को गणेश रुद्राक्ष के साथ धारण करने से लाभ होता है। शुक्ल पक्ष का बुधवार और रविपुष्य, गुरुपुष्य, होली, दीपावली, गणेशचतुर्थी जैसे श्रेष्ठ मुहूर्त में लहसुनिया गणपति लॉकेट एवं गणेश रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है। इसके धारण के साथ ही यदि बुधवार का व्रत और भगवान गणेश की पूजा-उपासना की जाये तो परिणाम और अधिक श्रेष्ठ रहते हैं। इसके लिये भगवान गणेश के स्तोत्र से उनकी उपासना करनी चाहिये और प्रत्येक बुधवार उनके मंदिर में जाकर आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिये।

7. आपकी शिक्षा उत्तम रही है और वे सभी गुण भी विद्यमान हैं, जो श्रेष्ठ नौकरी

प्राप्ति में सहायक हो सकते हैं, फिर भी आपकी मनोनुकूल नौकरी नहीं लग पा रही है, तो ऐसी स्थिति में आत्मविश्वास कमजोर हो जाता है और अपने अंदर विद्यमान गुणों को भी पहचान नहीं पाता। इस समस्या के कारण ढूँढ़े जायें तो बहुत सारे तथ्य सामने आते हैं, लेकिन इनका समाधान एक ही है, हनुमान जी की उपासना और वह भी सुंदरकाण्ड से। सुंदरकाण्ड द्वारा हनुमत् उपासना से न केवल आत्मविश्वास प्रबल होता है, वरन् ऊपरी बाधा, अभिचार कर्म और अन्य अदृश्य बाधाओं का प्रभाव भी समाप्त हो जाता है। सुंदरकाण्ड का पाठ करना यदि आपके लिये नित्य सम्भव नहीं हो, तो मंगलवार, शनिवार, नवरात्र, हनुमान जयंती पर अवश्य करें। यह पाठ आप हनुमान जी के मंदिर में जाकर अथवा घर में हनुमान जी के विग्रह अथवा चित्र के समक्ष भी कर सकते हैं। इसके लिये विग्रह अथवा चित्र को दक्षिणामुखी स्थिति में स्थापित करने के पश्चात् उनका पूजन करना चाहिये और सुंदरकाण्ड का पाठ करना चाहिये। यह प्रयोग निरन्तर करने से शीघ्र ही आत्मविश्वास प्रबल होगा और आपको अपने कॅरियर में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त होगी। यह प्रयोग वे व्यक्ति भी कर सकते हैं, जिन्हें अपनी नौकरी में मनोनुकूल उन्नति प्राप्त नहीं हो पा रही है।

८. यदि बहुत सारे साक्षात्कार देने के पश्चात् भी आपकी नौकरी नहीं लग पा रही है, तो ऐसी स्थिति में यह उपाय करना आपके लिये अनुकूल रहेगा। यह उपाय आपको अष्टमी तिथि युक्त मंगलवार के दिन करने से विशेष लाभ होगा। इसके अतिरिक्त होली, दीपावली, हनुमान जयंती इत्यादि शुभ मुहूर्त पर भी किया जा सकता है। इस हेतु हनुमान जी के मंदिर में जाकर उन्हें चोला चढ़ाना चाहिये और एक लाल ध्वजा पर **जय श्रीराम** लिखें और हनुमान जी के मंदिर में किसी ऊँचे स्थान पर लगा दें। इस प्रयोग के प्रभाव से आपकी नौकरी सम्बन्धी समस्या समाप्त हो जायेगी। इसके पश्चात् आप जिस नौकरी के लिये प्रयास करेंगे, उसमें आपको उत्तम सफलता प्राप्ति के अवसर निर्मित होंगे। सम्भव है कि शीघ्र ही नौकरी भी प्राप्त हो जाये।

९. यदि आप अपनी नौकरी में प्राप्त आय से खुश नहीं है और आय वृद्धि के सभी प्रयास कर चुके हैं, तो ऐसी स्थिति में यह उपाय करना आपके लिये अनुकूल फलदायक सिद्ध होगा। इस हेतु आपको माँ लक्ष्मी की प्रसन्नता के लिये रोहिणी व्रत करना चाहिये। यह व्रत एक माह में एक बार जिस दिन रोहिणी नक्षत्र आता है, उस दिन होता है। इस दिन प्रातःकाल श्वेत वस्त्र धारण कर सर्वप्रथम माँ लक्ष्मी का पूजन करें और उन्हें खीर का प्रसाद चढ़ायें। यदि खीर बनाना सम्भव नहीं हो, तो मावे से बनी बर्फी अर्पित करें। साथ ही माँ लक्ष्मी की प्रसन्नता के लिये किसी स्तोत्र का पाठ अथवा मंत्र का जप भी करना चाहिये। इस दिन एक समय भोजन करें और माँ लक्ष्मी को अर्पित प्रसाद ग्रहण करें। इस व्रत से माँ लक्ष्मी प्रसन्न होकर मनचाही इच्छा पूर्ण करती हैं और आय प्राप्ति में

भी वृद्धि होती है।

10. मनोनुकूल कार्यक्षेत्र प्राप्ति के लिये प्रत्येक व्यक्ति अपने सामर्थ्य के अनुसार प्रयास करता है, परन्तु सफलता प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त नहीं हो पाती है। यदि हम अपने अनुकूल समय में कोई अच्छा निर्णय लें, तो वह हमारे लिये अत्यधिक लाभदायक सिद्ध होता है। इसके विपरीत एक गलत निर्णय हमारे कॅरियर को प्रतिकूल दिशा में ले जाता है। जब पितृदोष के कारण ऐसा होता है, तो हमारे सभी प्रयास विफल सिद्ध होते हैं। ऐसे में पितृदोष का निवारण श्रेष्ठ कॅरियर प्राप्ति के लिये आवश्यक हो जाता है। पितृदोष निवारण के साधारण उपायों के साथ ही उनसे सम्बन्धित ग्रहों को अनुकूल कर लें तो कॅरियर सम्बन्धी समस्या समाप्त हो जाती है। चन्द्रमा और शुक्र, इन दो ग्रहों का संचरण स्थल पितृलोक माना जाता है। जन्मपत्रिका में यदि ये दोनों ग्रह नकारात्मक स्थिति में हों, तो व्यक्ति का कार्यक्षेत्र विभिन्न कारणों से प्रभावित रहता है। इन दोनों ग्रहों को अनुकूल करने से लाभ होता है। चन्द्रमा मन और एकाग्रता का कारक है तथा शुक्र धन और समृद्धि का कारक होकर विद्याध्ययन और कॅरियर को प्रभावित करते हैं। इन दोनों की अनुकूलता के लिये भगवान शिव एवं शक्ति की अराधना श्रेष्ठ उपाय है। इसलिये शिव परिवार के विग्रह अथवा चित्र की स्थापना अपने घर में कर उनका नित्य पूजन करने से विशेष लाभ होता है। साथ ही दोमुखी और छहमुखी रुद्राक्ष भी धारण करें। चन्द्र एवं शुक्र ग्रहों के मंत्र **ॐ सों सोमाय नमः** तथा **ॐ शुं शुक्राय नमः** का जप करें। इस उपाय से आपको कुछ समय में भी मनोनुकूल कार्यक्षेत्र की प्राप्ति हो जायेगी।

11. उत्तम कॅरियर प्राप्ति के लिये रामचरितमानस के चामत्कारिक मंत्र का प्रयोग शीघ्र सफलता देने वाला होता है। यह प्रयोग आप नवरात्र, हनुमान जयंती, दीपावली, होली इत्यादि शुभ मुहूर्त में प्रारम्भ कर सकते हैं। एक बार प्रयोग प्रारम्भ करने के पश्चात् जब तक सफलता प्राप्त नहीं हो, तब तक निरन्तर यह प्रयोग करते रहें। इस हेतु शुभ मुहूर्त में चौकी पर पीला वस्त्र बिछाकर रामदरबार की स्थापना करें और उनका पूजन करने के पश्चात् निम्नांकित रामचरितमानस मंत्र की एक माला का जप करें। जप रुद्राक्ष की माला से करना उत्तम है। इस मंत्र के सम्पुट से रामचरितमानस का पाठ किया जाये तो उत्तम कॅरियर प्राप्ति के दृष्टिकोण से उत्तम है।

मंत्र- **बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।।**
गई बहोर गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू।।

शारीरिक समस्याओं का कारण बनता है- पितृदोष

पितृदोष के कारण जीवन में अनेक समस्याओं के साथ ही शारीरिक समस्या भी हो सकती है। पितृदोष कदापि किसी व्यक्ति के मृत्यु का कारण नहीं बनता, परन्तु पितृदोष के कारण जब शारीरिक समस्या होती है, तो वह मृत्युतुल्य कष्ट के समान अवश्य हो सकती है। जब कोई व्यक्ति इस प्रकार की शारीरिक समस्या से गुजरता है, तो वह चाहे कितने ही चिकित्सकों का परामर्श क्यों न ले ले, उसकी बीमारी का सही रूप में इलाज कोई भी नहीं कर पाता है। चिकित्सकों को उसकी बीमारी का कारण ही समझ में नहीं आता है। पितृदोष से शारीरिक पीड़ा होने पर कई बार तो स्थिति यहाँ तक पहुँच जाती है कि व्यक्ति अपने पलंग से नीचे उतरने के लिये भी सक्षम नहीं रह पाता। उसके हाथ-पैर चलना बंद हो जाते हैं, मुँह से आवाज नहीं निकलती। ऐसे में जब वह चिकित्सक के पास जाकर इलाज करवाता है, तो उसे कोई लाभ नहीं होता। चिकित्सक जो दवाइयां देता है, उनसे बीमारी घटने के स्थान पर बढ़ने लगती है और वह पहले से भी अधिक परेशान होने लगता है।

पितृदोष के कारण घर में किसी एक सदस्य अथवा उससे अधिक सदस्यों का भी स्वास्थ्य प्रभावित रह सकता है। अनेक बार ऐसा भी होता है कि एक सदस्य ठीक होने लगता है, तो दूसरा दूसरा बीमार हो जाता है। शारीरिक रुग्णता के कारण आर्थिक स्थिति भी डांवाडोल हो जाती है। व्यक्ति अपने जीवन में अन्य किसी कार्य को सम्पन्न कर पाने में असफल हो जाता है। उसका सारा समय बीमारी से लड़ने में अथवा परिजनों का इलाज करवाने में ही निकल जाता है।

पितृदोष के कारण जब कोई शारीरिक समस्या उत्पन्न होती है, तो वह अत्यधिक रहस्यमयी होती है। पीड़ा एक जैसी नहीं होती। कभी सिर में दर्द होना, तो कभी हाथ-पैरों में दर्द होना। कभी भूख नहीं लगती है, तो कभी पेट में दर्द हो जाता है। इस प्रकार व्यक्ति के शरीर में अनेक व्याधियां हो जाती हैं। वह चाहे कितने ही अच्छे ढंग से जीवनचर्या को सुधार कर लें, परन्तु फिर भी उसे किसी प्रकार का लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। ऐसे में अपने पितरों की कृपा के अलावा कोई ऐसा मार्ग नहीं है, जिससे उसे लाभ प्राप्त हो सके। कुछ स्थितियों में इस प्रकार की समस्या का कारण ऊपरी बाधा भी हो सकता है, परन्तु प्रेतदोष के कारण होने वाली शारीरिक बाधायें अलग प्रकार की होती हैं। उनमें रोग की प्रचण्डता अधिक रहती है। साथ ही रुग्ण व्यक्ति अक्सर उग्र हो जाता है और अजीबोगरीब हरकतें भी करने लगता है। पितृदोष के कारण जब शारीरिक

समस्या रहती है, तो उसमें रोग की प्रचण्डता अधिक नहीं रहती। व्यक्ति को बीमारियां भी बदलती रहती हैं। पितृदोष और प्रेतदोष, दोनों ही बीमारियों का इलाज चिकित्सकों के पास नहीं होता है।

अनेक बार यह भी देखा जाता है कि व्यक्ति जैसे ही अपने घर में प्रवेश करता है, उसका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो जाता है, घर से दूर रहने पर उसे किसी प्रकार की समस्या नहीं रहती है। इसका कारण भी पितृदोष हो सकता है। इससे सम्बन्धित एक घटना मुझे एक जातक ने बतायी थी। उनके घर में इस प्रकार की समस्या रह चुकी थी। उनके विवाह के पश्चात् लगभग तीन वर्ष बाद उनकी पत्नी के साथ इस प्रकार की समस्या हुई थी। वे पितरों को नहीं मानते थे और न ही उनके निमित्त किसी प्रकार का कोई कर्म करते थे। यहाँ तक कि श्राद्ध भी नहीं करते थे। विवाह के तीन वर्ष पश्चात् उनकी पत्नी को अचानक शारीरिक समस्यायें रहने लगीं। पेट में अत्यधिक दर्द रहना, पाँव में सूजन रहना, सिर में दर्द बने रहना जैसी समस्यायें अक्सर रहने लगी थीं। इस कारण वह अपना कोई भी कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न नहीं कर पाती। हाथों में इतनी शक्ति नहीं रह पाती थी कि वह छोटे से छोटा कार्य भी कर सके, परन्तु आश्चर्य की बात यह थी कि इस प्रकार की समस्या तब तक ही रहती थी, जब तक वह उस घर में रहती। घर से बाहर निकलते ही स्वास्थ्य एकदम अनुकूल हो जाया करता था। यह समस्या होने पर जातक ने अपनी पत्नी का इलाज शहर के अनेक चिकित्सकों से करवाया, परन्तु किसी भी प्रकार की चिकित्सा से कोई लाभ प्राप्त नहीं हो पाया। परेशानी वैसी की वैसी ही थी। उनके परिजनों को यह लगने लगा था कि उनकी पत्नी जान-बूझकर ऐसा कर रही है, ताकि वह घर के कार्यों से बच सके। अपनी पत्नी की यह स्थिति देखकर वह जातक अत्यधिक चिंतित हुए। कुछ लोगों ने उन्हें यह बताया कि इस समस्या का कारण आपके पितर हैं। आप उनके निमित्त कोई भी कर्म नहीं कर रहे हैं, इसलिये वे आपसे नाराज हैं। इस कारण उक्त समस्यायें आपकी पत्नी के साथ घट रही हैं। इसके उपरान्त भी उन्होंने इस बात को स्वीकार नहीं किया। कुछ समय पश्चात् एक दुर्घटना में उनकी एक पैर की हड्डी टूट गयी। उन्हें दो महीने तक घर पर रहकर विश्राम करना पड़ा। धीरे-धीरे उन्हें यह अनुभव होने लगा था कि शायद वे अपने पितरों को नहीं मानते हैं इस कारण ही उनके जीवन में इस प्रकार की समस्यायें आ रही हैं। आने वाले समय में घर में अन्य परिजनों के स्वास्थ्य में भी लगातार समस्यायें रहने लगी थीं। पत्नी का स्वास्थ्य दिनोंदिन सही होने के स्थान पर बिगड़ता जा रहा था। समझ ही नहीं आ रहा था कि आखिर स्वास्थ्य की प्रतिकूलता का क्या कारण है?

आने वाले समय में उन्होंने पितृदोष के निवारण के लिये उपाय प्रारम्भ कर दिये। अब नियमित रूप से पितृकर्म करने के साथ-साथ घर में पितरों का आवाहन और

स्थापना करने के पश्चात् उनके निमित्त पूजन-अर्चन प्रारम्भ कर दिया। श्राद्ध कर्म भी करने लगे। इससे कुछ ही समय पश्चात् उन्हें अनुकूलता मिलने लगी और वे इस समस्या से उभर गये। अब उनके घर में कोई भी सदस्य किसी भी प्रकार की शारीरिक समस्या से पीड़ित नहीं रहता। पत्नी को जो शारीरिक समस्या चल रही थी, वह पूर्ण रूप से समाप्त हो चुकी थी। इस घटना से उन्हें यह अनुभव हो गया था कि पितर असन्तुष्ट होने पर शारीरिक रूप से भी पीड़ित कर सकते हैं।

इस उदाहरण से यह ज्ञात होता है कि पितृदोष होने पर व्यक्ति के जीवन में अनेक समस्याओं के साथ शारीरिक रुग्णता भी रह सकती है। इसलिये जब घर के किसी सदस्य को कोई रहस्यमयी बीमारी लगातार रहने लगे, जिसका इलाज चिकित्सक भी नहीं कर पा रहे हैं, तो ऐसी स्थिति में अपने पितरों से स्वास्थ्य की अनुकूलता के लिये प्रार्थना अवश्य करनी चाहिये। हो सकता है कि आपकी प्रार्थना से इस समस्या का शीघ्र ही कोई निवारण हो जाये। पितरों में यह शक्ति होती है कि वे हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकें। यदि उनकी कृपा हम पर बनी रहे, तो समझो कि हमें अनेक शारीरिक समस्याओं से छुटकारा मिल जायेगा।

विशेष- वर्तमान में व्यक्ति का स्वस्थ रहना परिवार एवं समाज के लिये अत्यन्त आवश्यक है। किसी भी रोग से पीड़ित व्यक्ति के उपचार में अत्यधिक धन का व्यय होने के साथ-साथ उसकी परिचर्या में पूरे परिवार को लगना पड़ता है, रोगी व्यक्ति के कारण घर में मनाये जाने वाली खुशियां भी प्रभावित होती हैं। घर में एक ऐसा सन्नाटा व्याप्त हो जाता है जो वहाँ रहने वाले प्रत्येक सदस्य को प्रभावित करता है। स्वास्थ्य सम्बन्धी किसी भी समस्या को हमारे यहाँ प्रारम्भ में गम्भीरता से नहीं लिया जाता। रोग की उपेक्षा की जाती है। जब रोग पीड़ा देने लगता है, तब इसके उपचार के बारे में विचार किया जाता है। ऐसी स्थिति में कई बार रोग को दूर होने में काफी समय लग जाता है और इससे रोगी को पर्याप्त पीड़ा भी होती है। अगर रोगी पितृदोष से पीड़ित हो तो रोग की पीड़ा कई गुणा तक बढ़ जाती है। रोग का प्रारम्भिक स्तर पर उपचार करने पर शीघ्र ही लाभ प्राप्त होने लगता है। रोग का समय पर निदान एवं उपचार न होना भी बहुत बड़ा दोष बन जाता है। किसी भी रोग की स्थिति में अविलम्ब इसके निदान एवं उपचार पर ध्यान दें।

स्वास्थ्य की अनुकूलता हेतु उपाय

1. पितृदोष के कारण जब स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी होती है, तब ऐसे रोग होने लगते हैं, जिनका निदान होने के पश्चात् उचित चिकित्सा के उपरांत भी रोग ठीक नहीं होता है। ये रोग अनेक बार इतने भीषण होते हैं, जिनके कारण पीड़ित व्यक्ति का नित्य कर्म करना भी कठिन हो जाता है। यदि ऐसी समस्या से कोई व्यक्ति पीड़ित है, तो उसे यह उपाय करने से लाभ होगा। इस हेतु अपने पितरों की प्रसन्नता के लिये अमावस्या के दिन यह प्रयोग करना है। इस दिन दोपहर के समय अपने पितरों के निमित्त श्राद्ध कर्म और दान इत्यादि पितृकर्म के साथ घर का पवित्रिकरण करें। पवित्रिकरण से तात्पर्य शुद्धि से है। इस दिन प्रातःकाल पूरे घर को स्वच्छ कर गंगाजल और पीली सरसों का छिड़काव करें। दोपहर के समय अपने पितरों का आवाहन कर उनसे घर में व्याप्त नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने एवं घर में सभी परिजनों को उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करने की प्रार्थना करें। ब्राह्मण भोजन करवाकर उन्हें अपनी श्रद्धानुसार दक्षिणा प्रदान करें तथा **पितृगायत्री मंत्र** का मानसिक जप करते हुये पितरों से आशीर्वाद की कामना करें। इस प्रयोग से प्रसन्न पितर आपके घर में सभी परिजनों को उत्तम स्वास्थ्य सुख प्रदान करेंगे।

2. यदि किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य में सदैव किसी न किसी प्रकार की समस्या रहती है, तो इससे घर के अन्य परिजनों की दिनचर्या भी प्रभावित होती है। कुछ परिवारों में ऐसा देखा जाता है कि सदैव कोई न कोई परिजन किसी रोग से पीड़ित रहता है। इस समस्या से मुक्ति के लिये घर में ऐसी सकारात्मक ऊर्जा की आवश्यकता होती है, जिससे घर में कोई व्यक्ति बीमार नहीं पड़े। इस हेतु नवरात्र जैसे शुभ मुहूर्त अथवा सामान्य दिनों में भी शुक्ल पक्ष के शुक्रवार से यह प्रयोग प्रारम्भ किया जा सकता है। इस हेतु आप स्वयं **दुर्गासप्तशति** का पाठ करें अथवा पण्डित जी से करवायें। यह पाठ निम्नांकित मंत्र के सम्पुटन से करवाने पर लाभ होता है। यदि आप सम्पुटित पाठ कुछ समय पश्चात् करवाना चाहते हैं, तो ऐसे में इस मंत्र का नित्य जप करने से भी उत्तम लाभ होता है। शुक्लपक्ष के द्वितीय शुक्रवार से इस मंत्र का जप प्रारम्भ करें। पूर्वाभिमुख होकर माँ दुर्गा के विग्रह अथवा चित्र का पूजन करने के पश्चात् उन्हें नैवेद्य अर्पित कर नित्य एक माला जप करने से श्रेष्ठ लाभ होता है। जप रुद्राक्ष की माला से करने हैं। यदि रोगी व्यक्ति स्वयं यह उपाय करने में सक्षम नहीं है, तो उसके परिजनों में से कोई भी यह उपाय कर सकता है। मंत्र का जप तब तक नित्य करें, जब तक उत्तम स्वास्थ्य लाभ प्राप्त नहीं हो जाये। नवरात्र आने पर इस मंत्र के सम्पुटन से पाठ करवायें जिससे घर में किसी व्यक्ति को स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या नहीं हो।

मंत्र- **रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।**
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।

3. स्वास्थ्य में अनुकूलता के लिये विभिन्न प्रकार की साधनायें और अन्य प्रयोग बताये जाते हैं। विभिन्न देवी-देवताओं में नृसिंह भगवान ऐसे इष्ट हैं, जिनकी उपासना न केवल विभिन्न प्रकार के कष्ट वरन् स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियों से व्यक्ति को दूर रखती है। नृसिंह भगवान विष्णु का सबसे रौद्र रूप हैं, जो उन्होंने हिरण्यकशिपु के वध के समय धारण किया था। भगवान नृसिंह की उपासना उनके भक्त को अदृश्य बाधा और किसी प्रकार की अन्य समस्या से होने वाली शारीरिक पीड़ाओं से बचाती है। जो साधक भगवान नृसिंह की उपासना नित्य करता है, उसे कदापि जीवन में ऊपरी बाधा और अभिचार कर्म के कारण शारीरिक समस्या का सामना नहीं करना पड़ता। आदिगुरु शंकराचार्य ने भी अपने शरीर की रक्षा के लिये एक बार भगवान नृसिंह की प्रार्थना और उपासना करते हुये **लक्ष्मीनृसिंह स्तोत्र** की रचना की थी, जिसके प्रभाव से उन्हें उत्तम स्वास्थ्य लाभ हुआ। इसी लक्ष्मीनृसिंह स्तोत्र का जो साधक नित्य एक पाठ करता है, उसे जीवन में कदापि स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रतिकूलता का सामना नहीं करना पड़ता। बड़े से बड़े कष्ट भी केवल छूकर निकल जाते हैं। इस स्तोत्र का पाठ किसी शुभ मुहूर्त से प्रारम्भ करते हुये नित्य करने चाहिये। यदि स्तोत्र का पाठ करना सम्भव नहीं हो, तो ऐसी स्थिति में **ॐ लक्ष्मीनृसिंहाय नमः** मंत्र का जप करते हुये भगवान नृसिंह का ध्यान करना चाहिये। अपने पूजन कक्ष में नृसिंह भगवान का विग्रह अथवा चित्र लगाकर उनका नित्य पूजन-अर्चन करना चाहिये। इस प्रयोग से साधक को स्वास्थ्य में अनुकूलता अनुभव होगी और परिवार में भी सभी परिजनों का स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा।

4. जब किसी व्यक्ति को ऐसा रोग हो जाये जिसका निदान चिकित्सकों के पास नहीं हो अथवा रोग असाध्य हो, तो ऐसी स्थिति के स्वामी संजीवनी विद्या में भगवान मृत्युंजय ही ऐसे देव हैं, जो अभयदान दे सकते हैं। भगवान शिव को इसलिये मृत्युंजय देव कहा जाता है, क्योंकि वे मरणासन्न व्यक्ति को भी जीवन जीने के लिये स्वस्थ कर सकते हैं। भगवान शिव ने अनेक बार पृथ्वी और उस पर रहने वाली मनुष्य जाति का उपकार किया है। इसलिये जब हम उत्तम स्वास्थ्य प्राप्ति के लिये सभी प्रयास कर चुके होते हैं, तो अन्त में भगवान् शिव ही हैं, जो इस समस्या का निदान कर सकते हैं। महामृत्युंजय, मृत्युंजय अथवा लघु मृत्युंजय का जप मानवजाति के लिये संजीवनी औषधि के समान है। इसके जप और भगवान शिव के पूजन से असाध्य रोग भी दूर किये जा सकते हैं। यदि आपके परिवार में कोई व्यक्ति किसी रोग से ग्रस्त है और बहुत प्रयासों के पश्चात् भी उसे उत्तम स्वास्थ्य लाभ प्राप्त नहीं हो पा रहा है, तो ऐसी स्थिति में अग्रांकित मंत्रों में से किसी एक का अपने सामर्थ्य के अनुसार जप करने से लाभ होता

है। यह उपाय महाशिवरात्रि, नवरात्र, होली, दीपावली जैसे श्रेष्ठ मुहूर्त के अतिरिक्त सोमवार और प्रदोष तिथि से चन्द्रबल देखकर प्रारम्भ किया जा सकता है। यह उपाय शिवालय अथवा अपने घर के पूजन कक्ष में करना चाहिये। शिवलिंग का पूजन करने के पश्चात् रुद्राक्ष की माला से जप करना चाहिये। इस हेतु भगवान शिव का महामृत्युंजय रूप का ध्यान करना चाहिये। निश्चित संख्या में जप करने के पश्चात् उसके दशांश का तर्पण, मार्जन, हवन और ब्राह्मण भोज करना चाहिये।

भगवान शिव का मृत्युंजय रूप का ध्यान–

हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलयं द्वाभ्यां वहन्तं परम्।
अंकन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलासकान्तं शिवं
स्वच्छाम्भोजगतं रवेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे।।

महामृत्युंजय मंत्र– **ॐ हौं जूं सः। ॐ भूर्भुवः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूं हौं ॐ।**

लघु मृत्युंजय मंत्र– **ॐ हौं जूं सः।।**

5. अनेक बार नज़र दोष एवं अन्य कारणों से भी स्वास्थ्य प्रभावित हो जाता है। ऐसी स्थिति में कोई भी औषधि अपना प्रभाव नहीं दिखा पाती है। यह समस्या किसी भी आयुवर्ग वाले व्यक्तियों में हो सकती है। इसके प्रभाव को समझना कठिन होता है, लेकिन जब कोई चिकित्सा से लाभ न हो, तो यह समझ में आ जाता है कि यह नज़रदोष अथवा अन्य कोई अदृश्य बाधा के कारण उत्पन्न शारीरिक व्याधि है। इस प्रकार स्वास्थ्य प्रभावित होने पर घर के किसी सदस्य को रोगी का उसारा करके निवारण करना चाहिये। उसारा से तात्पर्य अपने दायें हाथ में निश्चित वस्तु रखकर रोगी व्यक्ति के सिर पर से घुमाने से होता है। उसारे के समय रोगी को पूर्वाभिमुख होकर बैठाना चाहिये। उसारे के समय हाथ में सूखी हुई मिर्च और काले तिल रखने चाहिये। उसारा करने के पश्चात् सूखी मिर्च और काले तिलों को जला देना चाहिये। जलाने की प्रक्रिया घर के बाहर करनी चाहिये। यदि किसी प्रकार की तेज गंध नहीं आये और अग्नि जलते समय भीषण ध्वनि करे तो समझ जाना चाहिये कि यह कोई नज़रदोष अथवा किसी अदृश्य बाधा का प्रभाव था, जो समाप्त हो गया। सामान्यत: यह समस्या शिशु, नवविवाहिता अथवा आपके द्वारा किसी बड़ी उपलब्धि प्राप्त करने के पश्चात् अधिक हो सकती है। इसके कुप्रभाव से बचने के लिये **तीनमुखी रुद्राक्ष** और **नज़रबट्टू** धारण करना चाहिये। इसके अतिरिक्त काला मोती भी नज़रदोष निवारण में उत्तम माना जाता है। अनेक बार ऐसा भी होता है कि जिस रोग को हम नज़रदोष मानकर चल रहे हैं, वह किसी अदृश्य

बाधा के कारण उत्पन्न हुई समस्या होती है। ऐसी स्थिति में रोगी को न तो किसी चिकित्सा से लाभ होता है और न नज़रदोष के परिहार से। ऐसे रोगियों को पंचमुखी हनुमत् कवच से सिद्ध जल पिलाना चाहिये अथवा इस कवच से सिद्ध ताबीज धारण करवाना चाहिये। अदृश्य बाधा से ग्रस्त व्यक्ति लहसुन और हींग की गन्ध से बहुत बेचैन हो जाते हैं, अत: इन दोनों की गंध को सुंघाने से रोगी अत्यधिक बैचेन होकर तड़पड़ाये तो इस ऊपरी बाधा समझना चाहिये और इसके निवारण के लिये उपाय करने चाहिये।

6. जीवन में सदा स्वास्थ्य अनुकूल बना रहे और किसी प्रकार कि अन्य बाधाओं के कारण स्वास्थ्य प्रभावित नहीं हो, इस हेतु घर की पवित्रता रखी जानी बहुत ही आवश्यक होती है। आप अपने घर में जब ईशान और आग्नेय कोण में किसी प्रकार की गंदगी अथवा कबाड़ रखेंगे, तो वह आपके लिये स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी का कारण बन सकती है। आग्नेय कोण में अपशिष्ट और कबाड़ का होना स्त्रियों के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है और ईशान कोण में गंदगी होने पर घर के पुरुषों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव होता है। इन दिशाओं की पवित्रता का विशेष ध्यान रखना आवश्यक होता है। केवल दीपावली जैसे विशिष्ट पर्व पर हम अपने पूरे घर की सफाई करते हैं। दीपावली के अतिरिक्त भी माह में एक बार अपने घर में उन कोनों की सफाई अवश्य करें, जहाँ आप प्रतिदिन नहीं कर पाते हैं। अनेक बार हमें पता नहीं चलता और ऐसे स्थानों पर नकारात्मक शक्ति वाले जीव-जन्तु अपना घर बना लेते हैं। मकड़ी के जाले इकट्ठे हो जाते हैं, वे भी हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। पितरों का स्थान परिंडे में माना जाता है। जिस घर में परिण्डा होने पर उसकी स्वच्छता का विशेष ध्यान नहीं रखा जाता, वहाँ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें अधिक रहती हैं। जहाँ भी पीने हेतु जल रखा जाये, वहाँ जल की स्वच्छता का होना आवश्यक होता है। इसलिये उक्त सभी सिद्धांतों को ध्यान में रखने पर घर में सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है और इस कारण किसी परिजन का स्वास्थ्य प्रभावित नहीं होता।

7. पहला सुख निरोगी काया माना जाता है। हम कितना भी अच्छा खा लें, पी लें, लेकिन यदि मन अस्वस्थ है, तो आप कभी शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं हो सकते। मन का उच्चाटन होने से विभिन्न प्रकार के अवसाद हमारे मन-मस्तिष्क में घर कर जाते हैं, अनेक रोग हमारे शरीर में उत्पन्न होने लगते हैं। जिन व्यक्तियों का चन्द्रमा और लग्नेश ग्रह कमजोर होता है, वे अवसाद का शिकार शीघ्र होते हैं। यदि आप भी अक्सर अवसाद से सम्बन्धित समस्या से ग्रस्त रहते हैं, तो आपके लिये रुद्राक्ष धारण करना उत्तम है। अवसाद से बचाव के लिये दोमुखी और सातमुखी रुद्राक्ष धारण करना श्रेष्ठ माना जाता है। दोमुखी चन्द्रमा और सातमुखी शनि का कारक होता है। इन रुद्राक्षों को धारण करने से व्यक्ति गम्भीर समस्या में पड़ने पर भी अवसाद से बचा रहता है और

अपने मस्तिष्क की एकाग्रता से किसी भी प्रकार की सामान्य अथवा जटिल समस्या से उभर जाता है। रुद्राक्ष धारण के साथ भगवान शिव की उपासना करना श्रेष्ठ होता है। भगवान शिव की उपासना के लिये शिवमंदिर में जाकर शिवलिंग का जलाभिषेक करना और उनके किसी मंत्र का जप अथवा स्तोत्र का पाठ करना श्रेष्ठ होता है। उक्त उपायों के साथ ही चंदन का तिलक भी अपने ललाट पर करने से लाभ होता है। रुद्राक्ष अवसाद से बचाने के साथ ही हृदय रोगियों के लिये भी उत्तम माना जाता है। यह मनुष्यों की मानसिक शक्ति को प्रबल करता है, जिससे व्यक्ति गहन चिन्ता वाले समय में भी सोच-विचारकर निर्णय लेने की क्षमता रखता है। रुद्राक्ष सोमवार, प्रदोष तिथि, पूर्णिमा, गुरुपुष्य, रविपुष्य, महाशिवरात्रि, नवरात्र जैसे श्रेष्ठ मुहूर्तों में धारण करना चाहिये।

८. जीवन में अनेक बार ऐसी स्थिति आती है, जब हम स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से परेशान रहते हैं। स्वास्थ्य की अनुकूलता के लिये अनेक ऐसी साधनायें हैं, जो हमें सभी प्रकार के रोगों के साथ नज़रदोष, ऊपरीबाधा, पितृदोष के कारण होने वाले रोगों से बचाती हैं। इन साधनाओं में पंचमुखीहनुमत्कवच, रामरक्षास्तोत्र, अमोघशिवकवच, लक्ष्मीनृसिंह स्तोत्र इत्यादि सिद्ध स्तोत्र एवं कवच का पाठ उत्तम फल देने वाला माना जाता है। आप यदि इनका पाठ नित्य साधना के रूप में करते हैं, तो आपको किसी प्रकार का रोग पीड़ा नहीं देगा और मारकेश ग्रह की दशा में भी शारीरिक रूप से कोई गम्भीर समस्या नहीं होगी। उक्त के अतिरिक्त भी ऐसे अनेक सिद्ध स्तोत्र हैं, जिनका पाठ हमें शारीरिक समस्याओं से बचाने वाला है। नेत्ररोगों के लिये चाक्षुषोपनिषद् का पाठ, हाथ और कंधों से सम्बन्धित समस्या के लिये हनुमानबाहुक का पाठ श्रेष्ठ फलकारक माने जाते हैं। इसके अतिरिक्त ऐसे अनेक शाबर मंत्र हैं, जिनका नित्य पाठ करने से कोई शारीरिक समस्या नहीं होती। ऐसे ही एक शाबर मंत्र का उल्लेख किया जा रहा है, जिसके जप से स्वास्थ्य अनुकूलता मिलती है और कोई गम्भीर शारीरिक समस्या नहीं होती। इस मंत्र का जप होली, नवरात्र, महाशिवरात्रि, दीपावली, गुरुपुष्य, रविपुष्य जैसे श्रेष्ठ मुहूर्त से किया जा सकता है। जप रुद्राक्ष की माला से करने हैं। इस मंत्र का जप किसी शिवालय में किया जाये तो श्रेष्ठ है अथवा घर में स्फटिक अथवा लहसुनिया का शिवलिंग स्थापित कर जप करें। इससे सभी प्रकार के शारीरिक कष्ट समाप्त हो जाते हैं और भविष्य में स्वास्थ्य अनुकूल बना रहता है।

मंत्र- **ॐ श्रीं ग्लौं स्वाहा शरभ शालुवाय स्वाहा ग्लौं श्रीं हूं ह्रीं ॐ।।**

ज्योतिष में पितृदोष का विचार

जन्मपत्रिका में व्यक्ति के आगामी जीवन के सभी प्रकार के शुभाशुभ फलों को जाना जा सकता है। ग्रह स्थितियों के आधार पर ही फलों की प्राप्ति होती है। इनमें पितृदोष भी एक ऐसा अशुभ योग है, जो विशेष ग्रह स्थितियों में निर्मित होता है। इस अशुभ योग के कारण व्यक्ति को अनेक प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते हैं। जीवन में अनुकूल दशा तथा अनुकूल गोचर होने पर भी उसका जीवन अनेक समस्याओं से ग्रस्त रहता है। ऐसी स्थिति में पितृदोष का निवारण करने के पश्चात् ही अनुकूलता प्राप्त होती है। पितृदोष विभिन्न ग्रह स्थितियों में अनेक कारणों से उत्पन्न होता है।

जन्मपत्रिका में लग्न, द्वितीय पंचम, अष्टम और द्वादश भाव को विशेष रूप से पितृदोष में विचारणीय माना जाता है। लग्न भाव से स्वयं का विचार किया जाता है। द्वितीय भाव से कुटुम्ब का विचार करते हैं। पंचम भाव से संतान तथा पूर्वजन्मों का विचार करते हैं। अष्टम भाव अत्यधिक गूढ़ भाव है, इससे मृतक परिजनों तथा पितामह, प्रपितामह इत्यादि का विचार करते हैं और द्वादश भाव से मुक्ति अथवा मोक्ष का विचार करते हैं। पितृदोष में इन भावों का विचार इसलिये किया जाता है, क्योंकि इनसे विभिन्न प्रकार के श्रापों के कारण उत्पन्न होने वाला पितृदोष ज्ञात किया जा सकता है।

जन्मपत्रिका में पितृदोष में ग्रहों में सूर्य, चन्द्रमा, गुरु, शनि और राहु-केतु की स्थितियां विचारणीय मानी जाती हैं। सूर्य पिता का, चन्द्रमा माता का, गुरु पूर्वजों का तथा शनि-राहु-केतु स्वयं के शुभाशुभ कर्मों के फलों को दर्शाते हैं, इसलिये पितृदोष में इन ग्रहों का विचार किया जाता है। इन ग्रहों के साथ ही इनकी राशियों का भी विचार करते हैं। पितृदोष में कर्क, सिंह, धनु, मकर, कुम्भ एवं मीन राशियां विचारणीय मानी जाती हैं। उपर्युक्त ग्रहों, राशियों तथा भावों की विशेष स्थितियां पितृदोष का कारण बनती हैं।

पितृदोष का प्रभाव कब होगा, यह जानने के लिये दशाओं तथा गोचर का विचार करना चाहिये। जो ग्रह पितृदोष का कारण बनता है, उसकी दशा अथवा अन्तर्दशा में और प्रतिकूल गोचर में व्यक्ति को पितृदोष की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। पितृदोष से सम्बन्धित विभिन्न योगों का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है, जिनकी जन्मपत्रिका में ऐसे योग होते हैं, उन्हें अशुभ समय में पितृदोष की समस्या रहती है:-

1. जन्मपत्रिका में राहु-चन्द्रमा की युति पंचम भाव में बनती हो, लग्न तथा लग्नेश पापग्रहों से पीड़ित हों तथा अशुभ स्थान में स्थित हों, तो इस स्थिति में व्यक्ति को पितृदोष के कारण समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस योग में यदि पंचम भाव में शुक्र की राशि हो, तो जीवनसाथी से सम्बन्धित पितृदोष होता है।

2. जन्मपत्रिका में सूर्य अथवा उसकी राशि सिंह के द्वितीय और द्वादश भावों में पापग्रह हो अर्थात् वे पापकर्तरि के मध्य हो, लग्न, पंचम अथवा नवम भाव में उनकी स्थिति हो और शनि तथा राहु से उनका किसी प्रकार का संबंध बनता हो, तो ऐसी स्थिति में पूर्वज जैसे पिता, पितामह अथवा प्रपितामह के कारण पितृदोष उत्पन्न होता है।

3. जन्मपत्रिका में अष्टम भाव का स्वामी पंचम भाव में स्थित हो तथा सप्तम भाव में शुक्र और शनि की युति बन रही हो, साथ ही लग्न भाव में गुरु और राहु की युति हो, तो ऐसी स्थिति में जीवनसाथी से सम्बन्धित पितृदोष हो सकता है।

4. जन्मपत्रिका में गुरु निर्बल होकर राहु से युति करते हुए लग्न, पंचम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में स्थित हो, तो किसी पुरुष व्यक्ति के कारण पितृदोष उत्पन्न होता है।

5. जन्मपत्रिका में पंचम भाव में सूर्य तुला राशि में तथा कुंभ नवांश में स्थित हो और पंचम भाव पापकर्तरि योग से पीड़ित हो, तो ऐसी स्थिति में पिता अथवा पितामह के कारण पितृदोष उत्पन्न होता है।

6. षष्ठ भाव का स्वामी पंचम भाव में स्थित हो और दशम भाव का स्वामी षष्ठ भाव में हो, साथ ही राहु और गुरु की युति बनती हो, तो ऐसी स्थिति में किसी पुरुष के कारण पितृदोष बनता है।

7. चन्द्रमा पापकर्तरि योग से पीड़ित हो अर्थात् चन्द्रमा से द्वादश और द्वितीय भाव में पापग्रह स्थित हो, तो ऐसी स्थिति में चन्द्रमा त्रिक भावों में हो और चन्द्रमा पर पापग्रहों का प्रभाव भी हो, तो स्त्री से सम्बन्धित पितृदोष होता है।

8. गुरु जन्मपत्रिका में सिंह राशि में स्थित होकर सूर्य अथवा पंचमेश से युति करता हो और लग्न एवं पंचम भाव में पापग्रह स्थित हो, तो किसी पुरुष व्यक्ति के कारण पितृदोष होता है।

9. जन्मपत्रिका में राहु और गुरु की युति अष्टम अथवा द्वादश भाव में हो और सूर्य मंगल और शनि से उनका संबंध बनता हो, साथ ही लग्न तथा पंचम भाव का भी पापग्रहों से सम्बन्ध हो, तो किसी पुरुष व्यक्ति के कारण पितृदोष होता है।

10. जन्मपत्रिका में सूर्य अष्टम भाव में स्थित हो, पंचमेश ग्रह राहु के साथ स्थित हो और शनि पंचम भाव से सम्बन्ध बनाता हो, तो पितृदोष के कारण जीवन में कई प्रकार की समस्यायें रहती हैं।

11. राहु चतुर्थ भाव में स्थित हो, चन्द्रमा निर्बल होकर पंचम भाव में हो और शनि एकादश भाव में स्थित हो, तो किसी स्त्री के कारण पितृदोष होता है।

12. पंचम भाव में शनि हो, लग्न में राहु हो और अष्टम भाव में गुरु हो, तो व्यक्ति को किसी पुरुष के कारण पितृदोष का सामना करना पड़ता है।

13. सप्तमेश अष्टम भाव में स्थित हो, शुक्र पंचम भाव में स्थित हो और गुरु पापग्रहों से युत होकर त्रिक भाव में हो, तो व्यक्ति को जीवनसाथी के कारण पितृदोष की

पीड़ा भोगनी पड़ती है।

14. जन्मपत्रिका में पंचम भाव में बुध की राशि हो अर्थात् मिथुन अथवा कन्या राशि हो, साथ ही शनि और राहु पंचम भाव् में, मंगल और बुध द्वादश भाव में हो, तो व्यक्ति को भाइयों के कारण पितृदोष जैसी बाधा से सामना करना पड़ता है।

15. पंचम भाव में शनि स्थित हो, मंगल और चन्द्रमा की युति अष्टम भाव में बन रही हो और तृतीयेश नीच राशिगत होकर निर्बल हो, तो भाइयों के कारण पितृदोष उत्पन्न होता है।

16. जन्मपत्रिका में यदि तृतीयेश पंचम भाव में राहु और मंगल से युति करे तथा पंचमेश अष्टम भाव में स्थित हो, तो व्यक्ति को अपने भाइयों से सम्बन्धित पितृदोष का सामना करना पड़ता है।

17. शनि और चन्द्रमा की युति पंचम भाव में वृश्चिक राशि में हो, मंगल और राहु युति करते हुए लग्न, अष्टम अथवा द्वादश भाव में स्थित हो, तो किसी स्त्री के कारण पितृदोष की बाधा का सामना करना पड़ता है।

18. लग्न पापकर्तरि योग से पीड़ित हो, चन्द्रमा निर्बल होकर सप्तम भाव में स्थित हो तथा राहु और शनि की युति पंचम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में बनती हो, तो किसी स्त्री के कारण पितृदोष जैसी समस्या रहती है।

19. षष्ठेश तथा अष्टमेश युति करते हुए लग्न में स्थित हों, गुरु और चन्द्रमा की युति पंचम भाव में बनती हो और वे पापग्रहों से सम्बन्ध बनाते हों, तो किसी स्त्री के कारण पितृदोष की समस्या भोगनी पड़ती है।

20. चन्द्रमा और शनि युति करते हुए पंचम भाव में स्थित हों और पंचमेश अष्टमेश से युति करते हुए अशुभ भावों में हों, तो व्यक्ति को पितृदोष का सामना करना पड़ता है।

21. गुरु और राहु की युति द्वितीय अथवा द्वादश भाव में हो और अष्टमेश व तृतीयेश युति करते हुए पंचम अथवा नवम भाव में स्थित हों, तो व्यक्ति को पितृदोष के कारण विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

22. चतुर्थ भाव में पंचमेश राहु से युति करे और अष्टमेश तथा लग्नेश की स्थिति द्वादश भाव में हो, तो व्यक्ति को रहस्यमयी पितृदोष का सामना करना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति के पितर उसके द्वारा किये जाने वाले पितृकर्मों से संतुष्ट नहीं होते हैं।

23. चतुर्थ भाव में गुरु और राहु की युति बनती हो तथा अष्टमेश तृतीयेश से युति करते हुए अशुभ भावों में हो, तो व्यक्ति को पितृदोष के कारण अनेक दु:खों का सामना करना पड़ता है।

24. जन्मपत्रिका में नवम भाव में लग्नेश और अष्टमेश की युति हो तथा पंचम भाव में राहु, गुरु अथवा शनि के साथ स्थित हो, तो व्यक्ति को अपने कर्मों के कारण पितृदोष का सामना करना पड़ता है।

25. अष्टम भाव में गुरु-राहु की युति हो और शनि पंचम भाव में स्थित हो, तो पितरदोष के कारण ऊपरी बाधा के योग होते हैं। ऐसे योग में पितर अपने वंशजों से अप्रसन्न होकर उन्हें पीड़ित करते हैं। इस कारण घर में अशान्ति रहती है। कई बार ये आवाहन पर अपने वंशजों के शरीर में भी आ जाते हैं। इससे व्यक्ति को अत्यधिक मानसिक और शारीरिक पीड़ा का सामना करना पड़ता है।

26. बृहद्पाराशरहोराशास्त्र में पूर्वजन्म के श्राप योगों का उल्लेख किया है। ये श्राप योग भी ऊपरी बाधा के समान ही होते हैं। बृहद्पाराशरहोराशास्त्र में ऐसे श्राप योगों को पुत्र प्राप्ति की बाधा के साथ जोड़ा गया है। वास्तविकता में ऐसे योगों में केवल पुत्र बाधा ही नहीं, अपितु कई प्रकार की समस्यायें होती हैं। इन श्राप योगों में पूर्वजन्म के श्राप के अतिरिक्त पितृश्राप, मातृश्राप, भ्रातृश्राप, मातुलश्राप, ब्रह्मश्राप, पत्नीश्राप इत्यादि का उल्लेख करते हुये इनके ज्योतिषीय ग्रह योगों को बताया गया है।

27. सूर्य अपनी नीचराशि तुला में स्थित होकर पंचम भाव में तथा शनि के नवांश में हो, साथ ही पापकर्तरी योग अर्थात् चतुर्थ एवं षष्ठ भाव में मंगल, शनि आदि पापग्रह हों, तो पितृश्राप के कारण पुत्र हानि अथवा पुत्र का अभाव होता है। ऐसे योग में व्यक्ति पितर बाधा के कारण मानसिक एवं आर्थिक रूप से अत्यधिक परेशान रहता है।

28. सूर्य यदि पंचम भाव का स्वामी होकर त्रिकोण भावों में स्थित हो और पापकर्तरी योग से ग्रस्त हो, तो पितृश्राप के कारण संतानोत्पत्ति में अनेक प्रकार की बाधायें रहती हैं।

29. लग्न तथा पंचम भाव में पापग्रह स्थित हों अथवा इन भावों को देखते हों, गुरु सिंह राशि में तथा पंचमेश सूर्य से युत हो, तो पितृश्राप के कारण अत्यधिक पीड़ा होती है और संतान भी नष्ट हो जाती है।

30. लग्नेश बलहीन होकर पंचम भाव में स्थित हो, पंचमेश सूर्य के साथ स्थित हो एवं लग्न तथा पंचम में पापग्रह हों, तो पितृश्राप के कारण संतान उत्पत्ति में समस्यायें होती हैं।

31. दशमेश पंचम में अथवा पंचमेश दशम भाव में हो तथा लग्न एवं पंचम भावों पर पापीग्रहों का साया हो, तो व्यक्ति धनवान होकर भी पितृश्राप के कारण पुत्र सुख से वंचित रहता है।

32. दशमेश मंगल पंचमेश के साथ हो तथा लग्न, पंचम एवं दशम भाव में पापग्रह हों, तो पितृश्राप के कारण संतान बाधा होती है।

33. पुत्र कारक ग्रह पीड़ित हों, दशमेश त्रिक (6, 8, 12) भावों में हो तथा लग्न एवं पंचम भावों पर पापग्रहों का साया हो, तो पितृश्राप के कारण संतान सुख की प्राप्ति नहीं हो पाती है।

34. लग्न एवं पंचम भाव में सूर्य, मंगल तथा शनि स्थित हों और अष्टम भाव में राहु

तथा द्वादश भाव में गुरु हो, तो पितृश्राप के कारण संतानोत्पत्ति में बाधायें उत्पन्न होती हैं।

35. लग्न में पापग्रह हों, पंचमेश राहु युक्त हो, अष्टम भाव में सूर्य तथा पंचम भाव में शनि हो, तो संतान सुख में पितृश्राप के कारण समस्या होती है।

36. व्ययेश लग्न में, अष्टमेश पंचम में तथा दशमेश अष्टम भाव में हो, तो पितृश्राप के कारण संतान सुख की प्राप्ति नहीं हो पाती।

37. षष्ठेश पंचम में, दशमेश षष्ठ भाव में, पुत्रकारक ग्रह राहु से युत हो, तो पितृश्राप के कारण संतान सुख में बाधा होती है।

38. पंचमेश चन्द्रमा नीच राशिस्थ (वृश्चिक राशि में) अथवा पापकर्तरी योग से ग्रस्त हो, साथ ही चतुर्थ-पंचम भावों में पापग्रह हों, तो मातृश्राप के कारण संतानोत्पत्ति में बाधायें होती हैं।

39. पंचम भाव में वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा हो, एकादश भाव में शनि हो तथा चतुर्थ भाव में पापग्रह हों, तो मातृश्राप के कारण संतान प्राप्ति सम्बन्धी समस्या होती है।

40. लग्नेश नीच राशिस्थ हो, पंचमेश त्रिक (6, 8, 12) भावों में हो तथा चन्द्रमा पापग्रहों के साथ स्थित हो, तो मातृश्राप के कारण संतान सुख से वंचित रहना पड़ता है।

41. पंचमेश यदि चन्द्रमा, शनि, राहु तथा मंगल के साथ नवम अथवा पंचम भाव में हो, तो मातृश्राप के कारण सन्तान बाधा रहती है।

42. चतुर्थेश मंगल शनि-राहु से युक्त हो तथा लग्न एवं पंचम भाव में सूर्य-चन्द्रमा स्थित हों, तो मातृश्राप के कारण संतान सुख की प्राप्ति नहीं हो पाती।

43. लग्नेश तथा पंचमेश षष्ठ भाव में हों, चतुर्थेश अष्टमेश भाव में हो और अष्टमेश-दशमेश लग्न में स्थित हों, तो मातृश्राप के कारण सन्तति की हानि एवं अनेक प्रकार की समस्यायें होती हैं।

44. पापग्रहों से युत गुरु-चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित हों, षष्ठ तथा अष्टम भाव का स्वामी लग्न भाव में हो एवं चतुर्थेश व्यय स्थान में हो, तो मातृश्राप के कारण संतान की हानि है।

45. राहु चतुर्थ भाव में, शनि पंचम भाव में, षड्बल में हीन चन्द्रमा सप्तम भाव में हो तथा लग्न पापकर्तरी योग से पीड़ित हो, तो व्यक्ति को संतान सुख की प्राप्ति नहीं होती है।

46. चतुर्थेश त्रिक (6, 8, 12) भावों, में, अष्टमेश पंचम में, पंचमेश अष्टम में हो और चन्द्रमा त्रिक (6, 8, 12) भावों में हो, तो संतान सुख की प्राप्ति में बाधायें होती हैं।

47. कर्क लग्न में मंगल तथा राहु स्थित हों और चन्द्रमा तथा शनि पंचम भाव में हों, तो मातृश्राप के कारण सन्तानोत्पत्ति नहीं हो पाती अथवा अत्यधिक समस्याओं के पश्चात् संतान सुख की प्राप्ति होती है।

48. लग्न-पंचम-अष्टम तथा द्वादश भाव में मंगल, राहु, सूर्य तथा शनि स्थित हों, साथ ही चतुर्थेश एवं लग्नेश त्रिकगत (6, 8, 12) हों, तो मातृश्राप के कारण सन्तानोत्पत्ति

नहीं हो पाती।

49. मंगल-राहु तथा गुरु की युति अष्टम भाव में स्थित हो एवं पंचम भाव में शनि-चन्द्रमा की युति हो, तो मातृश्राप के कारण सन्तानोत्पत्ति में बाधायें होती हैं।

50. कई बार भ्रातृश्राप के कारण भी पितरदोष उत्पन्न हो जाते हैं। सम्पत्ति के लालच में अथवा भाइयों के मध्य वैमनस्य होने पर जब कोई भाई काल का ग्रास बन जाता है, तो मुक्ति नहीं मिलने पर अपने भाई को कष्ट पहुँचाता है। ऐसे ही कुछ योगों की व्याख्या बृहत्पाराशरहोराशास्त्र में उल्लिखित है। जैसे तृतीयेश पंचम भाव में मंगल राहु के साथ स्थित हो तथा लग्नेश एवं पंचमेश अष्टम भाव हो, तो भ्रातृश्राप के कारण सन्तति नाश होता है।

51. लग्न तथा पंचम भाव में मंगल-शनि हों, सहजेश नवम भाव में रहे और भ्रातृकारक ग्रह अष्टम भाव में स्थित हो, तो भ्रातृश्राप के कारण सन्तति क्षय होती है।

52. चन्द्रमा-मंगल युति करते हुये अष्टम भाव में हों, गुरु अपनी नीचराशि (मकर) में स्थित होकर तृतीय भावगत हो और शनि पंचम भाव में स्थित हो, तो भ्रातृश्राप के कारण संतान नाश के योग बनते हैं।

53. पंचमेश अष्टम भाव में पापग्रह के साथ हो, लग्न का स्वामी द्वादश भाव में हो तथा मंगल पंचम भाव में हो, तो भ्रातृश्राप के कारण संतान सुख में पीड़ा रहती है।

54. लग्न तथा मंगल, दोनों पापकर्तरी योग से ग्रस्त हों अर्थात् पापग्रहों के मध्य हो और दोनों भावों के स्वामी त्रिक (6, 8, 12) भाव में हों, तो भ्रातृश्राप के कारण संतान का अभाव रहता है।

55. दशम भाव का स्वामी तृतीय भाव में पापग्रहों के साथ हो और शुभग्रह मंगल के साथ पंचम भाव में स्थित हो, तो भ्रातृश्राप के कारण संतान की हानि होती है।

56. बुध की राशि (मिथुन-कन्या) पंचम भाव में हो और उसमें शनि-राहु हों और द्वादश भाव में बुध-मंगल हों, तो भ्रातृश्राप के कारण संतान नाश होता है।

57. लग्नेश सहज भाव में और सहजेश (तृतीयेश) पंचम भाव में हो तथा लग्न, तृतीय तथा पंचम भाव में पापग्रह हों, तो भ्रातृश्राप के कारण संतानहीनता होती है।

58. तृतीयेश अष्टम भाव में, पुत्रकारक ग्रह पंचम भाव में राहु-शनि से युक्त अथवा द्रष्ट हो, तो भ्रातृश्राप के कारण संतान नाश होता है।

59. अष्टमेश पंचम भाव में तृतीयेश के साथ हो और अष्टम भाव मंगल-शनि से युक्त हो, तो भ्रातृश्राप से संतान हानि होती है।

60. पितृ-मातृ-भ्रातृश्राप के समान ही पत्नीश्राप के कारण भी पितृदोष हो सकता है। जब पत्नी की अकाल मृत्यु हो जाये और उसकी आत्मा को भी मोक्ष नहीं मिले, तो वह प्रेतलोक में चली जाती है और अपने पति को अनेक प्रकार की समस्यायें देती है। पत्नीश्राप के कारण अनेक प्रकार की समस्यायें होती हैं। बृहत्पाराशरहोराशास्त्र के

अनुसार सप्तमेश पंचम में, शनि सप्तमेश के नवांश में और पंचमेश अष्टम भाव में हो, तो पत्नीश्राप के कारण संतति की हानि होती है।

61. सप्तमेश अष्टम भाव में, अष्टमेश पंचम में तथा पुत्रकारक ग्रह पापग्रहों के साथ हो, तो पत्नीश्राप के कारण सन्तति का नाश होता है।

62. शुक्र पंचम भाव में, सप्तमेश अष्टम भाव में और पुत्रकारक ग्रह पापग्रहों के साथ हों, तो पत्नीश्राप के कारण सन्तति की हानि होती है।

63. द्वितीय भाव में पापग्रह स्थित हों, सप्तमेश अष्टम भाव में हो और पंचम भाव पापग्रहों से युक्त हो, तो पत्नीश्राप के कारण संतान नाश होता है।

64. शुक्र नवम भाव में हो, सप्तमेश अष्टमेश हो और लग्न-पंचम भावों में पापग्रह हों, तो पत्नीश्राप के कारण संतान की हानि होती है।

65. भाग्येश शुक्र हो, पंचमेश शत्रुराशिगत हो और लग्नेश-गुरु-सप्तमेश त्रिक (6, 8, 12) भावों में हो, तो पत्नीश्राप के कारण पुत्र का अभाव रहता है।

66. उच्चराशिगत (वृषभ राशिगत) अथवा तुला राशिगत चन्द्रमा राहु से युति करते हुये पंचम भाव में स्थित हो तथा लग्न, द्वितीय एवं द्वादश भावों में पापग्रह स्थित हों, तो पत्नीश्राप के कारण सन्तति का नाश होता है।

67. सप्तम भाव में शनि-शुक्र से युति करते हुये स्थित हो तथा अष्टमेश पंचम भाव में हो, साथ ही राहु-सूर्य की युति लग्न में हो, तो पत्नीश्राप से पुत्र हानि समझनी चाहिये।

68. धन भाव में मंगल, द्वादश भाव में गुरु, पंचम में शुक्र शनि-राहु से युत अथवा द्रष्ट हो, तो पत्नीश्राप के कारण संतान की हानि हो जाती है।

69. धनेश एवं सप्तमेश अष्टम भाव में हो, पंचम भाव में मंगल तथा लग्न भाव में शनि हो। साथ ही पुत्रकारक ग्रह पापयुक्त हों, तो पत्नीश्राप के कारण वंश नहीं चल पाता है।

70. पंचमेश तथा सप्तमेश अष्टम भाव में स्थित हों, लग्न में राहु, पंचम भाव में शनि तथा भाग्य भाव में मंगल हो, तो पत्नीश्राप के कारण सन्तति की हानि समझनी चाहिये।

71. पत्नीश्राप का अधिकतर फल द्वितीय विवाह के पश्चात् अनुभव में आता है। पत्नीश्राप को ही पतिश्राप के रूप में भी देखा जा सकता है। यह श्राप जीवनसाथी से सम्बन्धित कहा जा सकता है, जो उसकी अकाल मृत्यु हो जाने पर घटित हो सकता है।

जन्मपत्रिकाओं में पितृदोष

व्यक्ति के जीवन में घटित होने वाली अधिकांश घटनाओं का सम्बन्ध ग्रहों की स्थिति एवं दशाओं के साथ अवश्य रहता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति की जन्मपत्रिका में स्थित ग्रहदशा उसके जीवन में आने वाली घटनाओं का संकेत करती है। पितृदोष को भी इससे अलग करके नहीं देखा जा सकता है। इस बारे में पूर्व में उल्लेख किया गया है कि कुछ ज्योतिषी पितृदोष को ज्योतिष का विषय मानते हैं और कुछ नहीं मानते हैं। पुस्तक में ऐसे अनेक सामान्य उपायों के बारे में उल्लेख किया गया है जिनका प्रयोग करके कोई भी व्यक्ति अपनी जन्मपत्रिका को देखे बिना पितृदोष के दुष्प्रभावों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है, लेकिन जो व्यक्ति ज्योतिष के आधार पर पितृदोष का विश्लेषण एवं समाधान प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिये यहाँ पर कुछ ऐसी कुण्डलियों के बारे में बताया जा रहा है, जिनमें पितृदोष विद्यमान दिखाई देता है। यह अध्याय ज्योतिष के उन जिज्ञासु व्यक्तियों एवं विद्वानों के लिये है, जो जन्मपत्रिकाओं के आधार पर पितृदोष का अध्ययन एवं विश्लेषण करना चाहते हैं। इस अध्याय में कुछ ऐसी प्रमुख कुण्डलियों के बारे में बताया गया है, जिनमें ग्रहों की विभिन्न भावों में स्थिति पितृदोष का कारण बनती दिखाई देती है–

कुण्डली संख्या-1
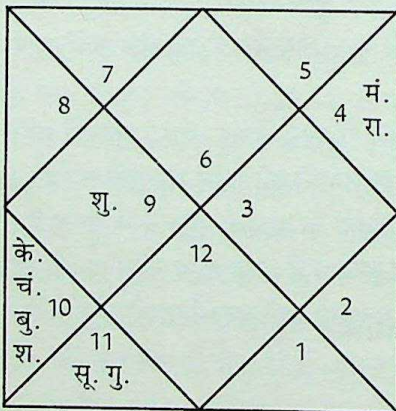
जातक

जन्म दिनांक : 21 फरवरी, 1963

जन्म समय : 20:05 बजे

जन्म स्थान : जयपुर (राज.)

विश्लेषण– प्रस्तुत जन्मपत्रिका वाले जातक का जन्म कन्या लग्न और मकर नवांश में हुआ था। यह जातक अपने जीवन में लगभग 10 वर्ष तक पितृदोष से पीड़ित रहा। सन् 1981 से प्रारम्भ हुई राहु की महादशा वर्ष 1999 तक रही। इस अवधि में पितृदोष के कारण जातक को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा। जातक की जन्मपत्रिका में अष्टमेश मंगल नीच राशिगत होकर एकादश भाव में राहु के साथ स्थित है, लग्नेश बुध स्वगृही शनि के साथ युति करते हुए पंचम भाव में है। साथ ही चन्द्रमा और केतु भी स्थित हैं। इस प्रकार

पितृदोष का योग इस जन्मपत्रिका में घटित हो रहा है। इस कारण जातक को कार्यक्षेत्र और विवाह सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ा। स्वास्थ्य भी प्रतिकूल रहा और परिवार में अनेक समस्यायें रहीं। राहु की महादशा समाप्त होने के पश्चात् जातक का जीवन अनुकूल होने लगा और वे पितृदोष के उपाय करने के पश्चात् इस पीड़ा से मुक्त हो गये। प्रारम्भ में जातक को पितरों पर विश्वास नहीं था, लेकिन जीवन में ऐसे-ऐसे अनुभव हुए कि उन्हें पितरों के अस्तित्व को स्वीकार करना पड़ा।

कुण्डली संख्या-2

जातक

जन्म दिनांक : 15 जून, 1952

जन्म समय : 06:00 बजे

जन्म स्थान : ग्वालियर (म.प्र.)

विश्लेषण- इस जातक का जन्म मिथुन लग्न और वृश्चिक नवांश में हुआ है। जातक को पितृदोष के कारण अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। विशेष रूप से इसका कॅरियर और आर्थिक स्थिति प्रभावित रही। शुक्र महादशा में शनि की अन्तर्दशा के दौरान पितृदोष की समस्या इतनी अधिक बढ गई थी कि इनके पितरों ने विभिन्न माध्यमों से अपनी पीड़ा का संदेश दिया। इससे इस जातक की समस्यायें और अधिक बढ़ गईं। इसने विभिन्न प्रकार के उपायों के द्वारा पितृदोष निवारण का प्रयास किया, लेकिन सफलता प्राप्त नहीं हो पायी। इसकी जन्मपत्रिका में अष्टमेश शनि चतुर्थ भाव में स्थित होकर दशम भाव स्थित चन्द्रमा और लग्नेश बुध को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। षष्ठेश मंगल पंचम भाव में और पंचमेश शुक्र द्वादश भाव में स्थित हैं। राहु नवम भाव में स्थित होकर अपने अशुभ फल प्रदान कर रहा है। उक्त सारी स्थितियां प्रबल पितृदोष का संकेत कर रही हैं। नवांश वर्ग में राहु का सूर्य को पीड़ित करना और शनि की लग्न पर दृष्टि यह दिखाती है कि पितृदोष के कारण जातक का जीवन नकारात्मक रूप से प्रभावित हुआ है। विशेष रूप से इसका प्रभाव उसके कॅरियर व आर्थिक पक्ष पर अधिक रहा।

कुण्डली संख्या-3

विश्लेषण- जातक का जन्म धनु लग्न और कर्क नवांश में हुआ है। इस जातक को पितृदोष सम्बन्धी समस्या नहीं थी, लेकिन पितर इनके परिवार के साथ किसी न किसी रूप में जुड़े हुए रहते थे। इनके पिता के देहान्त के पश्चात् उन पितरों ने इनके

जातक

जन्म दिनांक : 5 दिसम्बर, 1943

जन्म समय : 09:40 बजे

जन्म स्थान : आगरा (उ.प्र.)

शरीर के माध्यम से अपनी बात कहना प्रारम्भ कर दी। पितरों के शरीर में प्रवेश करने के कारण इन्हें अक्सर शारीरिक समस्याओं का सामना करना पड़ा, लेकिन पितरों से सम्बन्धित सभी कार्यों को तत्परता के साथ पूर्ण करने के कारण इन्हें अपने पितरों से अशुभ फल प्राप्त नहीं हुआ। इनकी जन्मपत्रिका में लग्नेश गुरु नवम भाव में स्थित है। अष्टम भाव में राहु, सप्तम भाव में शनि और द्वादश भाव में सूर्य की स्थिति पितृदोष की ओर संकेत करती है, परन्तु अपने पितरों के निमित्त प्रारम्भ से ही उपाय करने के कारण पितृदोष की समस्या से नुकसान नहीं हुआ। बुध महादशा में पितरों ने इनके माध्यम से अपने अन्य परिजनों से सम्प्रेषण प्रारम्भ किया। लगभग 30 वर्षों तक यह क्रम चलता रहने के पश्चात् शुक्र महादशा में गया श्राद्ध के द्वारा पितरों की मुक्ति के करवाने से वे इस स्थिति से बाहर आये। इस जन्मपत्रिका से यह भी ज्ञात किया जा सकता है कि पितर किन ग्रह स्थितियों वाले व्यक्ति के माध्यम से सम्प्रेषण का प्रयास करते हैं।

कुण्डली संख्या-4

जातक

जन्म दिनांक : 30 मार्च, 1966

जन्म समय : 12:19 बजे

जन्म स्थान : मुम्बई (महाराष्ट्र)

विश्लेषण– इस जातक का जन्म मिथुन लग्न और कुम्भ नवांश में हुआ है। इस व्यक्ति को पितृदोष के कारण अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। जन्मपत्रिका में बुध नीच राशिगत होकर दशम भाव में षष्ठेश मंगल और तृतीयेश सूर्य के साथ स्थित है। राहु द्वादश भाव में है और पंचमेश शुक्र अष्टम भाव में स्थित है। नवांश में भी शुक्र की स्थिति अष्टम भाव में है और इस वर्ग में मंगल और राहु की युति भी द्वादश भाव में हो रही है। इस जन्मपत्रिका

में प्रबल पितृदोष के योग नहीं बन रहे हैं, लेकिन जातक को यह महसूस होता है कि उसे जीवन में जब भी कोई बड़ी सफलता प्राप्त होती है, तो उसमें ऐसी बाधायें आ जाती हैं कि वह सफलता से वंचित रह जाता है। इस प्रकार की घटनाओं के बार-बार घटित होने से जातक बहुत निराश और मानसिक और शारीरिक रूप से परेशान हो जाता है। पितृदोष की पुष्टि इस बात से भी होती है कि जातक के परिवार में सभी भाइयों को इस प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। यहाँ तक कि जब-जब जातक ने अपना घर बनाने का प्रयास किया, तो उसमें भी ऐसी समस्यायें आयीं कि उसका घर नहीं बन पाया। एक बार जब गृहसुख की प्राप्ति भी हुई, तो परेशानियों के कारण उसे बेचना पड़ा। जातक को शनि महादशा और बुध महादशा में इस प्रकार की समस्याओं का सामना अधिक करना पड़ा है।

कुण्डली संख्या-5

जातक

जन्म दिनांक : 11 अप्रैल, 1965

जन्म समय : 12:57 बजे

जन्म स्थान : जोधपुर (राज.)

विश्लेषण- जातक का जन्म कर्क लग्न और कन्या नवांश में हुआ है। जन्मपत्रिका में अष्टमेश शनि अपने ही भाव में स्थित है तथा लग्नेश चन्द्रमा भी अपने ही भाव में स्थित है। पंचमेश मंगल द्वितीय भाव में वक्री होकर स्थित है तथा भाग्येश गुरु एकादश भाव में राहु के साथ युति कर रहा है। नवम भाव में बुध नीच राशिगत होकर शुक्र और सूर्य के साथ स्थित है। शुक्र की स्थिति यहाँ अपनी उच्च राशि में है। इस जातक को पितृदोष के कारण विवाह सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। आयु 45 वर्ष से अधिक हो चुकी है, लेकिन अभी तक विवाह नहीं हुआ है। छोटे भाई-बहिनों का भी विवाह नहीं हो पाया है। जातक की जन्मपत्रिका में बनने वाले अशुभ योगों के कारण उसे इस प्रकार के फलों का सामना करना पड़ा। पितृदोष की पुष्टि नवांश वर्ग में सप्तम भाव में चन्द्रमा, शनि, सूर्य और शुक्र की युति भी कर रही है। जातक को पितृदोष के कारण अन्य समस्याओं का सामना भी करना पड़ा है। जातक के लिये शुक्र महादशा का उत्तरार्ध, सूर्य-चन्द्रमा तथा मंगल की महादशा अशुभ फलकारक रही है। इन दशाओं के दौरान पितृदोष के कारण जातक को बहुत अधिक संघर्ष करना पड़ा है।

कुण्डली संख्या-6

जातक

जन्म दिनांक : 13 जनवरी, 1967

जन्म समय : 00:35 बजे

जन्म स्थान : मथुरा (उ.प्र.)

विश्लेषण– जातक का जन्म कन्या लग्न और सिंह नवांश में हुआ है। पहली पत्नी की मृत्यु के पश्चात् जब जातक ने दूसरा विवाह किया, तो उसके जीवन में विभिन्न प्रकार की समस्यायें रहने लगी। अच्छी नौकरी होने के बावजूद भी जातक कर्ज के शिकंजे में ऐसा फंसा की अपना स्वयं का घर तक बेचना पड़ा। दूसरी पत्नी से भी संतानसुख की प्राप्ति नहीं हो पायी। जातक की जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में शनि स्थित है और सप्तमेश गुरु वक्री होकर एकादश भाव में अपनी उच्च राशि में स्थित है। राहु अष्टम भाव में है और अष्टमेश मंगल लग्न में स्थित है। लग्नेश बुध चतुर्थ भाव में द्वादशेश सूर्य के साथ है। पंचम भाव में शुक्र चन्द्रमा से युति करते हुए स्थित है। जातक की पहली पत्नी का देहान्त गुरु महादशा में हुआ। इसी दशा में जातक ने द्वितीय विवाह किया। शनि की महादशा प्रारम्भ होने के पश्चात् जातक को पितृदोष की समस्या के कारण बहुत अधिक परेशानियां रहने लगी और उसने अब तक अपने जीवन में जितना भी धनार्जन किया था, वह शनि की महादशा के कुछ वर्षों के भीतर ही समाप्त हो गया। जातक नौकरी कर रहा है, लेकिन उसका स्वयं का घर नहीं है। संतान सुख की प्राप्ति में भी बाधायें रही। अनेक चिकित्सकों से परामर्श लेने के उपरान्त भी कुछ विशेष लाभ नहीं हुआ।

कुण्डली संख्या-7

जातक

जन्म दिनांक : 22 अक्टूबर, 1983

जन्म समय : 09:45 बजे

जन्म स्थान : नारनौल (हरियाणा)

विश्लेषण– जातक का जन्म वृश्चिक लग्न और इसी नवांश में हुआ है। वर्गोत्तमी नवांश में जन्म लेने के पश्चात् भी जातक का जीवन संघर्षमय बीत रहा है। इस जातक के परिवार में सभी व्यक्ति पितृदोष से पीड़ित होने के कारण

पांच भाइयों में एक भी अपने जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर पाया। सभी भाइयों के धनार्जन के पश्चात् भी घर का खर्चा तक नहीं निकल पाता। बड़े भाइयों के विवाह भी अत्यधिक विलम्ब और कठिनता से सम्पन्न हुए हैं। जातक की जन्मपत्रिका में दशमेश सूर्य तृतीयेश-चतुर्थेश शनि के साथ युति करते हुए स्थित है। लग्न में पंचमेश गुरु केतु के साथ स्थित है। दशम भाव में मंगल और शुक्र की युति हो रही है। भाग्येश चन्द्रमा षष्ठ भाव में स्थित होकर केमद्रुम योग बना रहा है। शनि, सूर्य और चन्द्रमा की स्थिति यह संकेत करती है कि जातक की जन्मपत्रिका में पितृदोष निर्मित हो रहा है। इस पितृदोष के कारण शुक्र और सूर्य की महादशा अशुभ फलकारक रही है, वहीं चन्द्रमा की महादशा प्रारम्भ होने के पश्चात् भी किसी प्रकार का विशेष लाभ नहीं हुआ। पितृदोष के कारण आर्थिक पक्ष सर्वाधिक रूप से प्रभावित है, साथ ही शारीरिक एवं पारिवारिक समस्यायें भी अनवरत रूप से जारी हैं।

कुण्डली संख्या-8

जातिका

जन्म दिनांक : 22 दिसम्बर, 1955

जन्म समय : 08:38 बजे

जन्म स्थान : अहमदाबाद (गुजरात)

विश्लेषण- जातिका का जन्म धनु लग्न और वृश्चिक नवांश में हुआ है। जातिका का जीवन पितृदोष के कारण अत्यधिक समस्याओं में बीता है। वैवाहिक जीवन असफल रहा। सन्तान भी साथ छोड़कर चली गई और जीवन में लोगों से धोखे मिले। जातिका की जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शनि और राहु की युति बन रही है। अष्टमेश चन्द्रमा चतुर्थ भाव में स्थित है। नवांश वर्ग में बुध और शनि की युति दशम भाव में हो रही है। मंगल जन्मपत्रिका में लाभ भाव में स्थित होकर पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। जातिका के लिये बुध, केतु और शुक्र की महादशायें अत्यधिक अशुभ फल वाली रही हैं। इस दौरान उन्हें अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ा और पितृदोष के कारण भी जीवन प्रभावित रहा।

कुण्डली संख्या-9

विश्लेषण- इस जातिका का जन्म वृषभ लग्न और मेष नवांश में हुआ है। इसे पितृबाधा के कारण विवाह में विलम्ब का सामना करना पड़ा और विवाह के पश्चात् भी

जातिका

जन्म दिनांक : 28 अगस्त, 1975

जन्म समय : 23:20 बजे

जन्म स्थान : नई दिल्ली
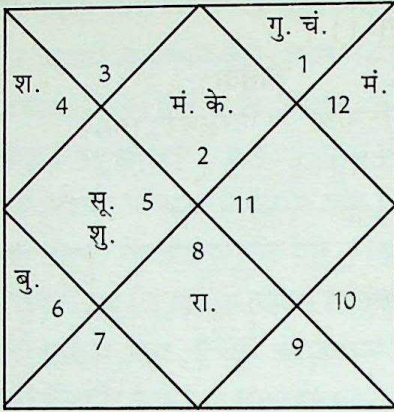
वैवाहिक जीवन में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इनके परिवार में अन्य लोगों के जीवन में भी इस प्रकार की समस्या चल रही है। इनकी जन्मपत्रिका में सप्तमेश –द्वादशेश मंगल लग्न में स्थित है और सप्तमस्थ राहु से पूर्ण रूप से द्रष्ट है। अष्टमेश गुरु द्वादश भाव में तृतीयेश चन्द्रमा के साथ स्थित है। पंचमेश बुध पंचम में है और चतुर्थ भाव में सूर्य तथा शुक्र की युति हो रही है। जातिका के लिए मंगल और राहु की महादशा अत्यधिक अशुभ फल वाली रही है। इस दशा के दौरान पितृदोष के कारण उसे इन समस्याओं का सामना करना पड़ा।

कुण्डली संख्या-10

जातक

जन्म दिनांक : 12 दिसम्बर, 1982

जन्म समय : 05:30 बजे

जन्म स्थान : अलीगढ़ (उ.प्र.)
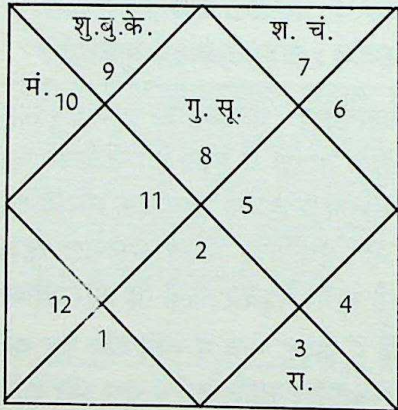
विश्लेषण– इस जातक का जन्म वृश्चिक लग्न और सिंह नवांश में हुआ है। जातक पितृदोष से पीड़ित है। इनके पितर असन्तुष्ट होकर इन्हें अनेक बार यह संदेश भी दे चुके हैं। पितृदोष के कारण जातक के विवाह में अनेक कठिनाइयां आई। इनकी बहिन का विवाह अधिक आयु होने के बाद भी नहीं हो पाया। विवाह के पश्चात् इसे संतानोत्पत्ति में भी समस्यायें रहीं। जातक की जन्मपत्रिका में शनि और चन्द्रमा की द्वादश भाव में युति हो रही है। चन्द्रमा भाग्येश होकर शनि के साथ स्थित है। राहु अष्टम भाव में स्थित है और द्वितीय भाव में शुक्र, बुध तथा केतु की युति हो रही है। ज़ातक के लिये शनि की महादशा अत्यधिक विपरीत फल वाली रही है। इस दशा के दौरान ही उसके पिता की मृत्यु हुई और उसे पितृदोष की समस्या से गुजरना पड़ा।

कुण्डली संख्या-11
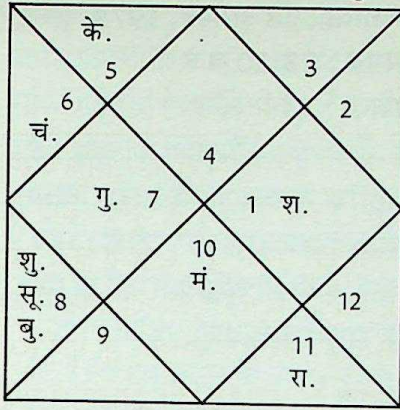
जातक

जन्म दिनांक : 4 दिसम्बर, 1969

जन्म समय : 22:05 बजे

जन्म स्थान : इन्दौर (म.प्र.)

विश्लेषण– जातक का जन्म कर्क लग्न और धनु नवांश में हुआ है। जन्मपत्रिका में अष्टमेश शनि वक्री और नीच राशिगत होकर दशम भाव में स्थित है। सप्तम भाव में उच्च राशिस्थ मंगल शनि से द्रष्ट होकर विराजमान है। राहु की स्थिति अष्टम भाव में है। पंचम भाव में सूर्य, शुक्र और बुध युति कर रहे हैं। तृतीय भाव में चन्द्रमा स्थित है। नवमेश गुरु चतुर्थ भाव में शनि से द्रष्ट होकर स्थित है। नवांश वर्ग में चन्द्रमा और शनि की युति सप्तम भाव में स्थित है। इस प्रकार पितृदोष का अशुभ योग निर्मित हो रहा है। जातक ने दो विवाह किये हैं। पहली पत्नी से तलाक हो गया और दूसरी पत्नी की मृत्यु हो गई। घर में अधिकतर परिजनों की अकाल मृत्यु हुई है। इनके घर में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं है, जिसका जीवन सामान्य रहा हो। सभी के जीवन में किसी न किसी प्रकार की समस्या अवश्य रही है। इनके कार्यक्षेत्र में भी अनेक प्रकार की समस्यायें रही हैं। जन्मपत्रिका में शनि की स्थिति पितृदोष का कारण बन रही है, वही राहु उसके नकारात्मक प्रभाव को बढ़ा रहा है। नवांश वर्ग भी इसी फल को दिखाता है। जातक के लिये राहु की महादशा अत्यधिक अशुभ फलकारी रही। इस महादशा के दौरान उसे दो बार अपने जीवनसाथियों के सुख से वंचित होना पड़ा। राहु के पश्चात् गुरु की महादशा में किसी प्रकार का शुभफल प्राप्त नहीं हो पाया।

कुण्डली संख्या-12
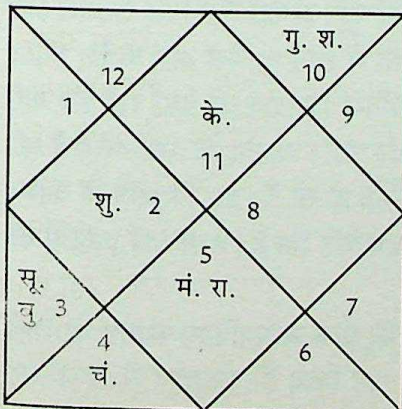
जातक

जन्म दिनांक : 13 जुलाई, 1961

जन्म समय : 22:25 बजे

जन्म स्थान : दिल्ली

विश्लेषण– जातक का जन्म कुम्भ लग्न और वृषभ नवांश में हुआ है। राहु और मंगल की युति सप्तम भाव में हो रही है। मंगल कर्मेश और तृतीयेश होकर सप्तम भाव में स्थित है। द्वादश भाव में गुरु नीच राशिगत और वक्री

होकर वक्री शनि से युति कर रहा है। लग्नेश का द्वादश भाव में स्थित होना अनुकूल नहीं कहा जा सकता, वहीं चन्द्रमा षष्ठेश होकर षष्ठ भाव में है और गुरु तथा शुक्र से युत है। अष्टमेश बुध सप्तमेश सूर्य के साथ पंचम भाव में स्थित है तथा शुक्र स्वराशिगत होकर चतुर्थ भाव में स्थित है। जातक की उक्त ग्रह स्थितियां पितृदोष को दर्शा रही हैं। विशेष रूप से राहु और मंगल की युति तथा गुरु एवं शनि की स्थितियां पितृदोष की ओर संकेत करती हैं। जातक का जीवन प्रारम्भ से ही पारिवारिक समस्याओं में उलझा रहा है। वैवाहिक जीवन भी प्रतिकूल रहा है। आर्थिक स्थिति हमेशा डांवाडोल रही है। आय से अधिक खर्चे रहे हैं। यही कारण है कि जीवन में उन्हें कभी भी सुख प्राप्त नहीं हो पाया। जीवन में बुध तथा केतु की महादशायें अत्यधिक अशुभ फल वाली रहीं।

कुण्डली संख्या-13

जातक

जन्म दिनांक : 1 अगस्त, 1978

जन्म समय : 01:57 बजे

जन्म स्थान : मुम्बई

विश्लेषण– जातक का जन्म वृषभ लग्न और वृषभ नवांश में हुआ है। वर्गोत्तमी लग्न में जन्म लेने के पश्चात् भी जातक का जीवन प्रारम्भ से ही समस्याओं में रहा है। जहाँ पारिवारिक सुख विभिन्न कारणों से बाधित रहा, वहीं आर्थिक स्थिति भी डांवाडोल रही। सबसे अधिक समस्या जातक के विवाह सम्बन्धी रही। इनके घर में इनसे बड़े और छोटे भाई-बहिनों का भी विवाह नहीं हो पाया। वहीं इनके विवाह की चर्चायें चली, लेकिन कोई भी अनुकूल परिणाम प्राप्त नहीं हो पाया। जातक की जन्मपत्रिका में पंचम भाव में मंगल और राहु की युति हो रही है। मंगल सप्तमेश और द्वादशेश होकर पंचम भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव में शनि भाग्येश और कर्मेश होकर बुध और शुक्र से युति कर रहा है। उक्त ग्रह स्थितियां पितृदोष को दर्शा रही हैं। यही कारण है कि जातक का पारिवारिक सुख बाधित रहा। जातक के भाई-बहिनों की जन्मपत्रिका में भी इसी प्रकार के अशुभ योग निर्मित हो रहे हैं। इस पितृदोष के कारण न केवल पारिवारिक सुख वरन् आर्थिक पक्ष भी प्रभावित रहा है। सभी भाई-बहिनों की आर्थिक स्थिति अनुकूल नहीं है।

उक्त उदाहरणों में कुछ व्यक्ति ऐसे थे, जो मेरे पास जन्मपत्रिका परामर्श के लिये आये थे और कुछ उदाहरण मैंने अन्य स्रोतों से प्राप्त किये हैं। पितृदोष से सम्बन्धित

अनेक जन्मपत्रिकाओं का अध्ययन करने के पश्चात् मेरा अनुभव यही है कि जब तक पितृदोष का परिहार नहीं कर लिया जाये, तब तक जीवन में अनुकूलता नहीं आ सकती। यदि अन्य ग्रह स्थितियां अनुकूल हों, तो कुछ सुख प्राप्त हो जाते हैं, परन्तु जब भी पितृदोष से सम्बन्धित अशुभ योग प्रभावी होता है, पुनः स्थितियां प्रतिकूल हो जाती हैं। इनमें से जिन-जिन व्यक्तियों ने पितृदोष का उपाय करने का प्रयास किया, उन्हें इसके शुभ परिणाम अवश्य प्राप्त हुए हैं। वास्तव में पितृदोष के उपाय इसके अशुभत्व को देखकर करना आवश्यक होता है। पितृदोष कैसा है, यह अनेक माध्यमों से जाना जा सकता है, जिनमें जन्मपत्रिका अध्ययन भी एक श्रेष्ठ माध्यम है। यह निश्चित है कि जब कोई पितृदोष से पीड़ित व्यक्ति अपने पितरों का सम्मान करता है और उनकी सन्तुष्टि के लिये विभिन्न प्रकार के उपाय करता है, तो उस व्यक्ति को उन उपायों का लाभ प्राप्त होने लग जाता है और जीवन में अनेक चामत्कारिक परिवर्तन भी होते हैं। ऐसा मैंने अनेक लोगों की जन्मपत्रिकाओं में पितृदोष और उपाय करने के पश्चात् वाले जीवन के आधार पर देखा और परखा है। वहीं जो लोग पितृदोष के निवारण हेतु किसी प्रकार का उपाय नहीं करते और न ही किसी माध्यम से ऐसा प्रयास करते हैं, उनके जीवन में यह समस्या अभिशाप बनकर रहती है।

जन्मपत्रिका में जब पितृदोष सम्बन्धी योग पहले से दृष्टिगोचर हो जाते हैं, तो ऐसी स्थिति उनका निवारण प्रारम्भ में ही कर लिया जाये, तो यह दोष अशुभ फल प्रदान नहीं करता है। जन्मपत्रिका में पितृदोष को परखना इतना सरल नहीं है, इस हेतु अत्यधिक अनुसंधान की आवश्यकता है। ये तथ्य विभिन्न जन्मपत्रिकाओं का अध्ययन करने के पश्चात् ही निश्चित हो पायेंगे, लेकिन यह निश्चित है कि ज्योतिष मानव की सभी समस्याओं के पूर्वाकलन में श्रेष्ठ सिद्ध हुआ है।

ऐसे पायें पितरों की कृपा एवं आशीर्वाद

यहाँ तक आते-आते पितरों पर की जा सकने वाली व्याख्या सम्पूर्ण हो जाती है। इस बात में किसी को भी किसी प्रकार की आपत्ति नहीं हो सकती कि कोई व्यक्ति इस पर विश्वास करे चाहे न करे, पितृदोष की समस्या न्यूनाधिक रूप से सभी के साथ जुड़ी रहती है और इसका प्रभाव भी अवश्य आता है। इस पुस्तक में विभिन्न अध्यायों में इस बात का बार-बार उल्लेख हुआ है कि आप पितरों का स्मरण करें, लाभ की प्राप्ति होगी, लेकिन फिर भी अनेक पाठकों के समक्ष यह प्रश्न खड़ा हो जाता है कि स्मरण कैसे करें? देवी-देवताओं अथवा अपने इष्ट की पूजा-उपासना हमारे जीवन का हिस्सा बन गई है, इसके लिये हमने अपने घरों में अपनी आवश्यकता के अनुसार पूजास्थल बना लिये हैं। व्यवसाय स्थल में भी पूजा का स्थान होता है। हमारे आस-पास भी अनेक मंदिर हैं जहाँ हम अपने आराध्य की पूजा आदि करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। पूजास्थल एवं मंदिरों के अभाव में पूजा आदि करना सम्भव नहीं है। अनेक विद्वान मानसिक पूजा अथवा मानस पूजा का विधान भी बताते हैं जिसके अन्तर्गत आप मानसिक रूप से अपने इष्ट का स्मरण कर सकते हैं, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। हमारी पूजा पद्धति तथा संस्कृति इस प्रकार की है कि हमें पूजा के लिये विशिष्ट वातावरण एवं स्थूल माध्यम चाहिये। घरों एवं व्यवसाय स्थलों तथा मंदिरों आदि में यह वातावरण एवं माध्यम मिल जाता है। हमारे जितने भी आराध्य अथवा इष्ट हैं, उनके चित्र अथवा उनकी प्रतिमायें हमारे पूजास्थलों में स्थापित होती हैं और उन्हीं के आगे नत-मस्तक होकर हम पूजा सम्पन्न करते हैं। पितरों के विषय में ऐसा सब नहीं होता है, तब पितरों की नियमित पूजा-स्मरण कैसे हो?

पितर एक अदृश्य शक्ति हैं जो परोक्ष रूप से अपना आशीर्वाद अथवा पीड़ा देते हैं। प्रत्यक्ष एवं स्थूल अस्तित्व न होने के कारण एक आम व्यक्ति इनकी पूजा-उपासना करने में असुविधा का अनुभव करता है। इसके अलावा पितरों को प्रसन्न करने का वर्ष भर में केवल एक ही दिन प्राप्त होता है। यह दिन श्राद्धपक्ष में ही मिलता है। अनिच्छा एवं विश्वास की कमी तथा व्यस्तता के कारण अनेक लोग विधि-विधान से अपने पितरों का श्राद्ध भी नहीं कर पाते हैं। इसके अलावा आज अधिकांश लोगों के बीच पितृदोष की समस्या बहुत अधिक उभर कर आ रही है। किसी व्यक्ति को पारिवारिक दु:ख अथवा क्लेश रहता है, विवाह बाधा अथवा विवाह विलम्ब, संतान सुख, व्यवसाय, स्वास्थ्य, दाम्पत्य, भवन सुख आदि में किसी प्रकार की समस्या दिखाई देती है तो वह तत्काल इस निर्णय पर पहुँच जाता है कि उसे पितृदोष के कारण ही कष्ट प्राप्त हो रहे हैं। इस बात

से इन्कार भी नहीं किया जा सकता कि इन सबके पीछे पितृदोष एक बड़ा कारण हो सकता है, इसलिये इसके समाधान के लिये कुछ ऐसे उपाय करना अत्यन्त आवश्यक है जिससे पितरों द्वारा प्राप्त होने वाली पीड़ा का शमन हो सके। इन उपायों के माध्यम से व्यक्ति केवल श्राद्ध के समय पितरों का स्मरण करने के स्थान पर चाहे जब उनका नाम ले सके, अपितु अपनी समस्या बता सके और उसे यह विश्वास हो सके कि पितरों की कृपा तथा आशीर्वाद उसके साथ है।

यहाँ आपको एक ऐसा उपाय बताया जा रहा है जिसके द्वारा आप न केवल पितरों की पूजा-अर्चना कर पायेंगे अपितु उनका आशीर्वाद भी मिलेगा और आप किसी भी प्रकार की समस्या से भी बचे रहेंगे। इसके लिये आप अपने भवन में एक पितृस्थान बनायें। इसके लिये विशेष कुछ नहीं करना है, केवल एक आला बनाना है। यह आला आमतौर पर आधे से एक फीट तक गहरा तथा एक फीट तक ऊँचाई लिये हो। यह आला मकान की सीमा में ही बनायें लेकिन अपने मकान के भीतर नहीं हो। इसे दक्षिण दिशा की तरफ बनवाना उत्तम रहता है। अगर दक्षिण में बनाना सम्भव न हो तो किसी भी दिशा में बनवा लें। अगर मकान में इस प्रकार का आला बनवाना सम्भव न हो तो बाजार से लकड़ी का बना हुआ एक मंदिर ले आयें। ऐसे मंदिर आमतौर पर व्यवसाय स्थल पर पूजा के लिये स्थापित किये जाते हैं। इसे अथवा बनाये गये आले को आप पितृस्थान मान सकते हैं। किसी भी अमावस्या के दिन आप अपने पितरों का आवाहन कर सकते हैं। इसके लिये दोपहर को कुतुपकाल के समय इस आले अथवा लकड़ी के मंदिर की सफाई करके एक दीपक लगायें, सुगंध वाली धूप लगायें। जल का एक लोटा रखें। अर्पित करने हेतु कोई भी सफेद रंग की भोज्य सामग्री रखें और मानसिक रूप से अपने ज्ञात-अज्ञात पितरों का स्मरण करते हुए उनका आवाहन करें और इस स्थान पर आने का निवेदन करें। मानसिक रूप से उन्हें अपनी कृपा तथा आशीर्वाद देने का निवेदन भी करें। फिर अपनी सामर्थ्य अनुसार **पितृगायत्री मंत्र** का जप करें। इसके बाद प्रत्येक दिन संध्या समय एक दीपक लगायें। दीपक परिवार का कोई भी सदस्य लगा सकता है। जल तथा भोज्य सामग्री केवल अमावस्या को ही अर्पित करनी है। भोज्य सामग्री बाद में किसी गाय को खिला दें और जल भरे लोटे का जल अपने मकान के बाहर-भीतर छिड़कें। बचा हुआ जल गमले में अथवा पीपल पर डाल दें। पितृगायत्री मंत्र का आप प्रतिदिन जप कर सकें तो ठीक है, अन्यथा अमावस्या को अवश्य करें। पितरों के इस स्थान पर किसी भी देव अथवा देवी की प्रतिमा अथवा चित्र आदि नहीं रखना है। इस स्थान की साफ-सफाई का ध्यान रखें, किसी प्रकार की गंदगी नहीं होनी चाहिये।

इस प्रकार से पितरों का स्थान बनाकर उनका आवाहन करने से तत्काल वे इस स्थान पर आ जायेंगे, यह आवश्यक नहीं है। वे कुछ समय के बाद आ सकते हैं और

इसमें कुछ विलम्ब भी हो सकता है लेकिन आपको इस बारे में अधिक चिंता अथवा सोच-विचार की आवश्यकता नहीं है। आपने जिस दिन से पितरों को अपने यहाँ स्थान दे दिया, आपकी तरफ से वे तभी से वहाँ आ गये समझें। इसलिये पूरी आस्था, श्रद्धा तथा विश्वास के साथ उनका स्मरण करते रहें, परोक्ष रूप से आपको इसके लाभ भी दृष्टिगोचर होने लगेंगे। इस बात का ध्यान रखें कि पितरों के प्रति आपकी श्रद्धा जितनी प्रगाढ़ होगी, लाभ भी उतने ही अधिक प्राप्त होंगे।

जो भी व्यक्ति इस प्रकार से अपने पितरों को अपने भवन में आवाहन करके स्थान देते हैं, उन्हें श्राद्धपक्ष में अपने ज्ञात-अज्ञात सभी पितरों का विधि-विधान से श्राद्ध सम्पन्न करना चाहिये। ऐसे लोगों पर पितरों की असीम कृपा तथा आशीर्वाद हमेशा ही बना रहता है जिससे वे जीवन में पर्याप्त उन्नति-प्रगति करते हुए समस्त प्रकार के भौतिक सुखों का भोग करते हैं। यहाँ एक बात का विशेष रूप से उल्लेख करना आवश्यक है कि जो व्यक्ति यह सोच रहे हैं कि वे अपने भवन में पितरों को स्थापित करके सभी प्रकार की कृपा एवं आशीर्वाद प्राप्त कर लेंगे, उन्हें इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि वे अपने जीवन में ऐसा कोई कार्य नहीं करें जिससे पितर रुष्ट हों। आपको जिन दायित्वों का पालन करना है, उनकी तरफ गम्भीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है। अगर आप परिवार के बड़े सदस्य नहीं हैं लेकिन आपने अपने भवन में पितरों को स्थान दिया है तो आपको भी अपने सभी प्रकार के दायित्वों का निर्वाह करना होगा। जो कुछ पितरों को पसंद नहीं है, अगर आप वही सब कुछ कर रहे हैं, तो भारी समस्या उत्पन्न हो सकती है। तब पितरों द्वारा पीड़ा एवं कष्ट हो सकता है।

यहाँ एक बात का तो अवश्य ही ध्यान रखना होगा कि दायित्वों के निर्वाह से अगर कोई बचना चाहता है अथवा जानते-समझते भी उनको पूरा नहीं करता है तो इसके विपरीत प्रभाव एवं परिणामों को भोगना ही पड़ता है। क्षणिक रूप से प्राप्त लाभ तथा दीर्घकाल की समस्यायें इसी का परिणाम होती है। जब हम सभी को आगे बढ़ना है, उन्नति करनी है, परिवार को एक सुखद एवं सुरक्षित भविष्य देना है तो इसके लिये अपने दायित्वों का पालन करना आवश्यक ही समझना चाहिये। हालांकि यह पुस्तक पितृदोषों के बारे में लिखी गई है लेकिन इसमें अनेक ऐसे संदेश भी हैं जिन्हें समझ कर अगर व्यक्ति उन पर चलने तथा उन्हें अपने जीवन में उतारने का प्रयास करे तो सुखद भविष्य उसकी प्रतीक्षा में ही रहेगा। हमारे पितर हम सभी पर पूर्ण कृपा करने को तत्पर रहते हैं, प्रश्न यह है कि उनकी कृपा प्राप्ति की योग्यता हमारे पास है अथवा नहीं? आप सभी को पितरों का आशीर्वाद प्राप्त हो, आपको जीवन में किसी प्रकार की कोई समस्या न आये, ऐसी मेरी प्रबल आकांक्षा एवं शुभकामनायें हैं।

– सुधाकर पुरोहित

* * *

निरोगी दुनिया प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

क्रम	पुस्तक	लेखक	मूल्य
1.	लाख टके के टोटके	आइडिया बाबा	195.00
2.	शिशु रोग एवं स्वास्थ्य	डॉ. सुरेश कुमार शर्मा	150.00
3.	काम विज्ञान	सुभाष चन्द्र झा	250.00
4.	जिन्दगी एक अवसर...	रवीन्द्र नाथ प्रसाद सिंह	295.00
5.	चमत्कारिक सरल प्रयोग	उमेश पाण्डे	100.00
6.	मरने से पहले...	मोहन कुमार कश्यप	195.00
7.	चमत्कारिक पुष्प	उमेश पाण्डे	130.00
8.	दिव्य सामग्रियों के चमत्कार	अमित कश्यप	130.00
9.	सही एवं सम्पूर्ण वास्तु	सुधाकर पुरोहित	195.00
10.	चमत्कारिक बीज	उमेश पाण्डे	195.00
11.	कैसे रहें स्वस्थ	उमेश पाण्डे	110.00
12.	विवाह कब होगा?	मृदुला त्रिवेदी - टी.पी. त्रिवेदी	175.00
13.	ग्रह गाथा- बृहस्पति	वागाराम परिहार	75.00
14.	पितृदोष : पीड़ा मुक्ति के उपाय	सुधाकर पुरोहित	130.00
15.	बड़े काम के छोटे-छोटे टिप्स	डिम्पल	150.00
16.	कल्याणकारी वृक्ष	उमेश पाण्डे	130.00
17.	शिव चरित	सुदर्शन सिंह 'चक्र'	175.00
18.	आपकी रसोई	रचना गौड़ भारती	195.00
19.	स्वाद की थाली	डिम्पल	225.00
20.	देखन में छोटे लगें...	शनिसाधक उपेन्द्र धाकरे	75.00
21.	सुख-समृद्धि के दुर्लभ उपाय	शनिसाधक उपेन्द्र धाकरे	75.00
22.	आपका भाग्य-आपके हाथ	शनिसाधक उपेन्द्र धाकरे	75.00
23.	कुछ मोती-कुछ सीप	शनिसाधक उपेन्द्र धाकरे	75.00
24.	धनदायक सरल प्रयोग	शनिसाधक उपेन्द्र धाकरे	75.00
25.	सौभाग्य प्राप्ति के दुर्लभ उपाय	शनिसाधक उपेन्द्र धाकरे	75.00
26.	श्राप मुक्ति के दुर्लभ उपाय	शनिसाधक उपेन्द्र धाकरे	90.00
27.	पूजा कैसे करें...	शनिसाधक उपेन्द्र धाकरे	195.00
28.	यंत्र शक्ति के चमत्कारिक उपाय	शनिसाधक उपेन्द्र धाकरे	90.00
29.	नज़रदोष...पीड़ा मुक्ति के दुर्लभ उपाय	शनिसाधक उपेन्द्र धाकरे	150.00
30.	विवाह एवं दाम्पत्य सुख	शनिसाधक उपेन्द्र धाकरे	110.00
31.	सोलह बाधक योग	शनिसाधक उपेन्द्र धाकरे	110.00
32.	सोलह संस्कार	शनिसाधक उपेन्द्र धाकरे	110.00
33.	नवग्रह दर्पण	शनिसाधक उपेन्द्र धाकरे	175.00
34.	सखी सहेली	शनिसाधक उपेन्द्र धाकरे	75.00
35.	उपवास एवं उपासना	शनिसाधक उपेन्द्र धाकरे	75.00
36.	शनि संकट निवारण	शनिसाधक उपेन्द्र धाकरे	75.00
37.	बंधन मुक्ति के अचूक उपाय	उमेश पाण्डे	110.00
38.	प्राचीन अनुभूत चिकित्सा प्रयोग	उमेश पाण्डे	90.00
39.	मसाले और आपका स्वास्थ्य	उमेश पाण्डे	130.00
40.	चमत्कारिक तेल	उमेश पाण्डे	130.00

41.	चमत्कारिक जड़ी-बूटियां	उमेश पाण्डे	130.00
42.	सुगम साधना	उमेश पाण्डे	75.00
43.	छोटी-छोटी बातें...	राकेश सोनी	75.00
44.	कर्ज से मुक्ति	राकेश सोनी-उपेन्द्र धाकरे	90.00
45.	दिव्य सामग्रियां-चामत्कारिक प्रयोग	राकेश सोनी	110.00
46.	भाग्य बदलें	राकेश सोनी	100.00
47.	हस्त विचार	राकेश सोनी - राजेश वर्मा	110.00
48.	लक्ष्मी प्राप्ति के सुगम उपाय	सुधाकर पुरोहित-पीयूष वशिष्ठ	110.00
49.	ऊपरी बाधा-पीड़ा मुक्ति के उपाय	सुधाकर पुरोहित	150.00
50.	मंत्र मंथन	मृदुला त्रिवेदी - टी.पी. त्रिवेदी	80.00
51.	मंत्र मंजूषा	मृदुला त्रिवेदी - टी.पी. त्रिवेदी	80.00
52.	दीपक तंत्रम्	रमेश चन्द्र श्रीवास्तव	175.00
53.	त्राटक साधना सिद्धि	रमेश चन्द्र श्रीवास्तव	75.00
54.	तंत्र के दिव्य प्रयोग	आर. कृष्णा	100.00
55.	हिमालय के सिद्ध योगी	डॉ. आर. कृष्ण	75.00
56.	मंगलदोष : पीड़ा एवं परिहार	वागाराम परिहार	80.00
57.	ग्रह गाथा- सूर्य	वागाराम परिहार	75.00
58.	ग्रह गाथा- चन्द्र	वागाराम परिहार	75.00
59.	ग्रह गाथा- मंगल	वागाराम परिहार	75.00
60.	ग्रह गाथा- बुध	वागाराम परिहार	75.00
61.	क्यों और कैसे...	मोहन कुमार कश्यप	80.00
62.	गहरे पानी पैठ...	मोहन कुमार कश्यप	75.00
63.	ऐसा भी होता है...	मोहन कुमार कश्यप	75.00
64.	गुप्त भारत की खोज	पॉल ब्रंटन	150.00
65.	नामांक बदलें-भाग्य बदलें	गुरधिक्षम सयल	130.00
66.	फेंगशुई के चमत्कार	डॉ. एस.सी. कुरसीज़ा	75.00
67.	फलों के द्वारा चिकित्सा	वैद्य गोपीनाथ पारीक 'गोपेश'	110.00
68.	जीवनरक्षक जड़ी-बूटियां	डॉ. आर.के. शर्मा	120.00
69.	पेट के रोग : सम्पूर्ण चिकित्सा	डॉ. आर.के. शर्मा	90.00
70.	मधुमेह : बचाव सम्भव है	डॉ. आर.के. शर्मा	100.00
71.	उच्च रक्तचाप	डॉ. आर.के. शर्मा	75.00
72.	पति-पत्नी और सेक्स	डॉ. आर.के. शर्मा-डॉ. एस.ए. जैदी	195.00
73.	सम्पूर्ण रोगों की सही चिकित्सा	डॉ. सुरेश कुमार शर्मा	110.00
74.	जटिल रोग : सम्पूर्ण चिकित्सा	सं. डॉ. सुरेश कुमार शर्मा	110.00
75.	भारतीय चिकित्सा पद्धतियों के कानून	सं. श्याम सुन्दर वशिष्ठ	100.00

प्राप्ति स्थल :

जयपुर बुक हाउस

389, जोशी भवन, मनिहारों का रास्ता, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर-3

फोन: ऑफिस: 0141-2321373 मो. 9352218776, 9799906705

E-mail : jaipurbookhouse05@yahoo.in

ये पुस्तकें भी पढ़ें
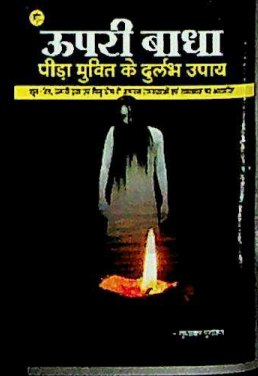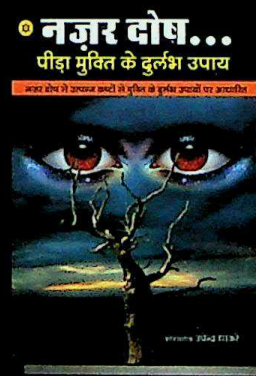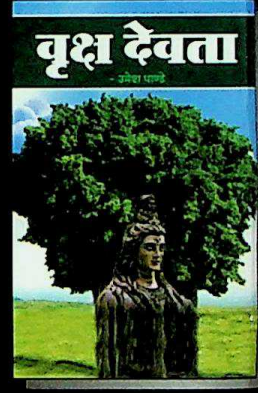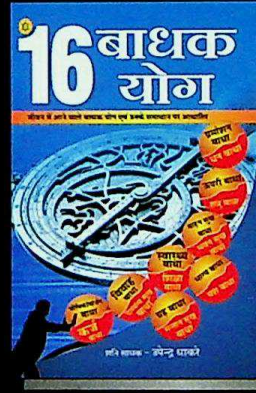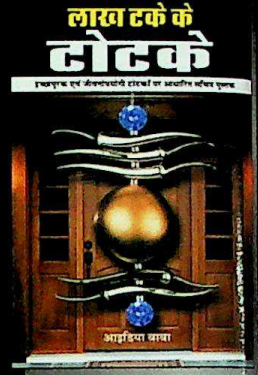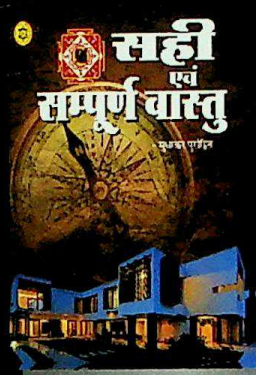
पढ़िये... आगे बढ़िये
NIROGI DUNIYA
ISBN 9789-38-51-51-13-2
9 789385 151132
Indology ₹ 150/-
www.nirogiduniya.com

निरोगी दुनिया प्रकाशन